

INDEX

1.बुनीयाद डालना	1
२. “आत्मिक मुकाबला” - जीवन का दूसरा पहलू	9
३.रेहमा - कहा गया शब्द	47
4.निर्जीव हो जाना	78
5.स्वपन और दर्शन अनदरूणी मनुष्य का परमेश्वर पर ध्यान लगाना	99
6.नए नियम कि मसीहत और नए युग का चलन	141
7. फरसई लीग परिशदाभा से चुद्ध	180
8.जानकारी-प्रभु वाक्य पर - सही तरह से फैसला करना	199
9.हबाकुक:दव्य दृष्टि, प्रतिभा और लेखन	215
10 .आत्मा से परिशुद्धात्मा तक चलना	222
11.प्रभु वाक्य सुनने के लिए रेडियो के तरफ मोड	226
12.प्यार में मिल जुलकर रहनो	233
13.परिशुद्धात्मा का निबंधन	235
14.नमूना से परिशुद्धात्मा से प्रार्थना करना	237
15.बैबिल के विरुद्ध परिशुद्धात्म अनुभव का परीक्षा	240
16.Chapter	246
17.आराधना के जगा (स्थान)	263
18.प्रार्शर्दना का वचन	269
19.कई प्रकार से प्रार्शर्दना	271
20.प्रार्शर्दना से प्रभावित (प्रकाश)	272
21.प्रार्शर्दना और क्रिया	274
22.वाक्य शरीर होना	276
23.प्रभु का सेवा मे रहना चाहिए	277

--	--

1. बुनीयाद डालना

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए पूर्वशर्त :

यह पाठ्य क्रम हर किसी के लिए वही है। इस पाठ्य क्रम में आप सीखोगे कि आत्मिक क्षेत्र में कैसे प्रवेश किया जाता है। वहाँ आप को पवित्र आत्मा और दुष्ट आत्मा, दोनों मिलेंगी। विना किसी बचाव कवच के आप आसानी से फंस जाएंगे और दुश्मन द्वारा नष्ट हो जाओगे। इसलिए परमेश्वर ने कुछ बहुत ही ज़रूरी और साफ मार्ग दर्शन बताया है जो आप को इस आत्मिक दुनिया में सुरक्षित तौर से ले जाएगा। वे यहाँ संक्षिप्त में दिए गए हैं।

- आप का मसीह में दुबारा जन्म लेना जरूरी है, जिस से आप अपने स्वार्थ के लिए जीवन व्यतीत करना छोड़ कर, कलवरी के खून से जो यीशु की ताकत मिलती है, उसे अपना वा है।
- आप यकीन करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का स्थिर वचन है।
- आप को मूल कार्यकाटी जातकारी गोनी चाहिए, कम से कम नए नियम की और बाकी की बाइबल पर भी कुछ कार्य कर रहे होंगे।
- आप उस के आधीन हैं जो परमेश्वर ने आप को वचन से दिखाया है।
- आप का किसी स्थानीय वीर्जाछर से संबंध रखना जरूरी है और यह भी कि आप वहाँ के आत्मिक अधीक्षक के आधीन रहें।

एक मसीही जो मसीहत में नया और जवान है, इन जरूरतों को पूरा कर सकता है। नए नियम को पढ़ने के लिये कवल डेढ़ दिन लगते हैं और बाकी जरूरतों को बातचीत द्वारा पूरा किया जा सकता है। यह अच्छा होगा कि जो लोग मसीह में नए आए हैं वे शुरू के दिनों से ही परमेश्वर के साथ बन्धुत्व को शुरू करें। वे उस शांति और आराम को पाएंगे जिस के लिए वे उत्सुक्त से लालासा करते थे।

आत्मिक कवच को स्थापित :

करना मैं समझवा हूँ कि यह बहुत ज़रूरी है कि हर कोई अपनी ज़िदगीयों में उन लोगों को स्थापित करे जो अधिकारी हों। बईबल कहती है कि हमें एक दूसरे के अधीन रहना है (ईफीसियों ५:२१)।

इब्रनियों १३:१७ कहवा है" अपन अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे इनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें नेखा देना पडगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठण्डी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं"।

इस का क्या उद्देश्य है कि हम परमेश्वर में अपने आप को किसी के अधीन हैं"? परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है (नीतिवचन ११:१४)" परमेश्वर के आत्मिक अधिकारी को रसलिए किया कि मैं इस धत्री तले स्वयं को धोखा न दे सकें और शैवान कि धोखा धड़ी सेभी बचे रहें।

यह उस वक्त बहुत ज़रूरी हो जाता है जब हम आत्मिक क्षेत्र में चलना शुरू करते हैं कल्पना करने लगते हैं और परमेश्वर कि अन्दरुणी आवाज़ को सुनते हैं। आत्मिक अधिकारी का कार्य है कि वह लिरक्ते में जो गलती होती है उसे पकड़ने में सहायता करता है और ज़रूरी हो तो वह कुछ देर रुक कर आगे पढते कि चेतावनी देता है। नए शिक्षाती परमेश्वर कि आवज़ को सुनना शुरू किया है, उन्हें आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देता है और आखासन देता है कि यह सच में परमेश्वर कि ही आवाज है।

इस रिश्ते का कन्द्र अधिकार नहीं दोस्ती है। वह जो किसी कि जिन्दगी में प्रभावकाटी तारसे आत्मि के चखाह बन सकता है, वह:

- **एक धना मित्र है** - वह जो अपनी भेड़ों को पहचानता है और भेड़े उस कि आवाज पहचानती हैं।
- वह गे है जो पुरी **बाईबल को मज़बूती से जानता है।**
- **इद्रीय ज्ञान है** - परमेश्वर कि आत्मिक आवाज अपने हृदय में सुन सकता है ।
- वह अपने आप को अपनी भेड़ों के आधीन करने के तैयार रहता है और अपने समय, औप्ताकत, को **इसतेमाल करता है ओर अपनी भेड़ कि खातिर अपना जीवन दान देने को भी तैयार रहता है ।**
- वह खुद **अधीन रहता है ।**

दुसरी तरफ भेड़ों अपने चखाह कि आवाज का आदर करती हैं । वह अपने चखा के पीछे जहा । भी वह ले जाए जाने को तैयार रहता है और अपने आप को उस के अधीन कर देता है जो उस के ऊपर है (इब्रानियों १३:१७) परमेश्वर न जो रक्षक वय उस क ऊपर नियुक्त किया है । महत्वपूर्ण फैसले का मतलब वह है जो उस के जीवन कि दिशा में एक बड़ा बदलाव लाण्गा, या उस गिन प्रभु कि सेवा में उस कि नौकरी में या किसी जगाह बड़ी पूँती लगाना जिस के कारण वह कई वर्षों तक वह वचनबद्ध रहेगा । (इस तरह, वह कोई, गलती नहीं कर पाएगा जिस के कारण उसे अपने जीवन के कई साल गरीबी में काटने पड़ेंगे) परमेश्वर कि आवाज को समझने के लिए भेड़ों ने भी उस के विचारों को लिखना और अगाही को चरवाहा को बताना शुरू कर दिया है बाकी वह सुरक्ष कवच तले उन्हें और विश्वास के साथ समझ सकें ।

हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारीयो के अधीन रहे क्यों कि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर कि और से न हो, और जो अधिकार है, व परमेश्वर के ठहराया हुए हैं । रोमियो १३.१). राजा का मन नालियों के जल के समान चहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ करता है उस के लिए जो उस के ऊपर है (। तिमोथि युस २छ१-४) वह विश्वास करता है कि परमेश्वर अपनी परीपूर्णता को मनुष्य कि अपूर्णता से पूरा करता है ।

यदी भेड़े अपने चरवाहा से कुछ जानना चाहती है तो वह उत्रे पुष्टीकरण या अनुकूल बनाने के लिए परमेश्वर कि सहायता लेता है । हव अपनी, भेड़ों के साथ वह बात को बाँटता है जो परमेश्वर मे उस के मन से बातचीत की / अगर कुछ

भिबुता है तो थोड़े दूबारा परमेश्वर के पास जाती हैं । यह जानने के लिए कि इस भिन्नता को कैसे ठीक किया जाए । वह फिर अपने चखाह कों बताता है कि इस भिन्नता को दूर करने के लिए परमेश्वर ने उस से क्या कहा/अगर परेशानी का कुछ हल वही मिल पाता है जो भेड़ को चरवाहा कि बात मान लेनी पदती है बशर्त है कि वह पवित्रशास्त्र का खण्डन न करे सिद्धांतो.

अधीकार के पे ज्यादा पूर्णता से पाठ 13 में बढ़ाया गया है और "इस्टीट्यूट औफ बेसिक चूथ कौनकि कौनफ्लिक्ट "में जो कि बिल गोथर्ड द्वारा लिखी गई है ।

क्या कोई कवच नहीं मिल पा रहा ?

कई लोगों को आत्मिक कवच ढूँढने में मुश्किल होती है । मैं आप को कुछ लाभ दायक संकेत बताता हूँ ।

पहले यह जान लीजिए कि ऐसा कोई निर्दोष व्यक्ति नहीं है जिस के अधीन आप अपने आप को सौंप सकते हैं । इस कारण आपन किसी अपूर्ण व्यक्तिको सौंप सकते हैं हय विश्वास सकते हैं कि परमेश्वर अपना परिपूर्णता का कार्य किसी अपूर्ण व्यक्ति के माध्यम से भी कर सकता है । यह भी देखीए कि परमेश्वर ने आप के चारों ओर पहले से ही लोगों के रखा हुआ है । यह ही सकता है कि आप अपना आत्मिक कवच इन्हीं में से किसी को पाएं । दोस्त, पती, घरेलू प्रार्थना धुण्ड के प्रतिनिधी, गुरुजन, उवयाजक, और पादरी आदी सब चुनने याग्य उम्मीदवार हो सकते हैं ।

मैं कितनों के आधीत हो सकता हूँ ?

दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात ठहराई जाएगी (श्रुतिस्थियों 13:1)

यहाँ यय सलाह दी जाती है कि हर व्यक्ति अपने आप को दूसरे दो या तीन लोगों के अधीन करे । जब किसी महत्वपूर्ण दीशाओ पर चलना पडता है तब जरूरी है कि तीनों की अनुमती होनी चाहिए । मैंने 1976 से अपने आप को तीन व्यक्तियों के अधीन सौंका है । पिछले तेराह वर्षों में इन्होंने मझे बड़ी गलतीयाँ करने से चेका है । यह अधीन करना सपन्द है ।

मैं किस के अधीन रहूँ ?

कुछ सम्बन्ध तो पहले से ही बने हुए हैं । जैसे कि माता-पिता, पति, मालिक, घरेलू प्रार्थना छुण्ड के प्रतिनिधी पादरी, गुरुजन आदी, सब का आप पर अधिकार और प्रभाव है' एक पत्नी को अपने पती के अधीन होना चाहिया । पत्नीयों को पादरी के अधीन होना चाहिए । हो सकता है कि पत्नी यह चाहती हो कि ऐसा कोई और मिले जिसे के अधीन वह अपने पत्रचार को सौंप सके । अपने पती के साथ मिल कर सहमत हो जाना चाहिए कि वह औरत कौन है जिस के साथ वह दोनों हि के लिए सुविधाजनक हौ ।

अकलमदी इस में होगी कि जिस के साथ हमें नज़दीकी आत्मिक रिश्ता बनाना है वह एक औरत हि हो आदमी नहीं यह विपरित चैन का न हो । विपरित चैन के होने से इस बात का बहत खतरा हो सकता है कि दोनो का शारिरिक सम्बन्ध बन जाए और यह विनाशक हो सकता है ।

क्या यह रखवाली करना न हआ ?

हाँ एंव न । जो रखवाली से सम्बंध रखने हैं, वे आत्मिक कवच और आत्मिक अधिकार कि वापसी लाते हैं ? यद एक साहासी प्रथन्न था परन्तु, कुछ किस्सों में यह प्रभाव जमाने में, न्यायपूर्णता में और एक नियंत्रण कि भावना में बदल जाता है । यीशु ने कहा है कि हम मूती पूजकों कि तराह दूसरों पर बल से शासन नहीं करते, परन्तु प्रेम के साथ एक दूसरे कि सेवा करते हैं । प्रेम में, प्रभावशाली, धमकीयों, यह दबाद बिलकुल निषेध है (1 पतरस 5:1-) । प्रेम प्रभावशाली, ताकतो के अमत्रित करता है । इसलिए मै फिर से कहता हूँ कि इन रिश्तों का केंद्र दोस्ती है अधिकार नहीं ।

आवो यह कहना चाहूँगा कि हमें अपने आत्मिक चरवाहो को बदलने कि छुट है जैसे जैसे हम आगे बढ़ते जाते और बढ़लते हैं वैसे वैसे पर अगर आप हर छः महीने में चरवाह बदलते हैं तो इसका मलतब है कि आप में हि जीवन मे कुछ समस्या है । परतु, अगर हर पाँच साल में आप चरवाह बदलते हैं तो. यह इस बात को बताता है कि आप के जीवन में बदलाव आ रहा है जिस के कारण नए सलाहकार कि आवश्यकता है। यह ज़रूरी है कि जब आप एक चरवाह धोड़ कर दूसरे चखाव कि ओर जएँ, तो आप कर्याप्त सुरक्षा कवच के बिना न रहें।

प्रार्थना:

परमेश्वर, हमें विश्वास है कि जैसा आप के पवित्र में बताया गया है, दाप अपना कार्य अधीकार के सिद्धांत के साथ करीए, और अपनी परिपूर्णता को हमारी अपूर्णता से करें। परमेश्वर कि महीमा हो, आमीन।

परमेश्वर कि आवाज़ को सुनने के लिए, सरसरी तौर पर चार मुख्य चाभीयाँ.

परमेश्वर कि आवाज़ को सुनने के लिए जिन चार मुख्य चाभीयों ने मेरे लिए और कई हज़ारों लोगो के लिए द्वार खोल हैं, हम उन एंक सर,की तौक,से देखते, हुए इस प्ररम्भिक पाठ को समाप्त करते हैं। हम इन के बारे मे गहराई से, आगे के पाठा में धहराई से बहस करेगो। बे यह हैं।

जैसे कि हबक्कूक में दर्शाया गया है	संक्षेप में वर्णित
"मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा....."	चाबी #1 परमेश्वर के सामने, अपने आप को शान्त करने के लिए एक शान्त जगह को चुनिए।
" और ताकता रहूँगा....."	चाबी # 2 प्रार्थना करते समय कल्पना पर ध्यान दें।
" मुझ से बह क्या कहेगा....."	चाबी # 3 परमेश्वर कि आवाज़ को स्वाभाविक विचारों के ज़रिए आने दें।
" यहाँवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे....."	चाबी # 4 परमेश्वर के वचनों को अपने पत्रों में लिखीए।

हबक्कूक २:१-२

चरवाह/ आत्मिक सुरक्षा देने वाले के हस्ताक्षर के लिए

ऊपर बताए गए अनुसार, आत्मिक चरवाह के कर्तव्य को समझते हुए, मैं यह सोचता हूँ की परमेश्वर ने मुझे चुना है कि मैं यह कर्तव्य.....कि जिदगी में, इस वक्त करूँ, और मैं कसम खाता हूँ कि मैं यह ज़िम्मेदारी पूरी इमानदारी के साथ निभाऊँगा।

यीशु मसीह कि देह मे, खुद आत्मिक मनुष्यो के अधीन हूँ। मैं यह जानता हूँ कि अधिकार का मतलब प्रभाव जमाना नहीं बरण सेवक नेतृता है, दाने अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन टयाग देना।

अगर मुझ से उस विषय पर परामर्श किया जाता है जिस कि मुझे जानकारी नहीं है, तो मैं दूसरे आत्मिक नेतृत्व कि ओर सलाह दूँगा, जो उस क्षेत्र में परीपूर्ण हो।

मेरे अधीन किसी भी व्यक्ति को वह नहीं करने दूँगा, जा पवित्रशास्त्र में विषेध है। अगर इन आदर्श को मैं नहीं रख परात हूँ, तो उपर्युक्त मनुष्य मेरी आत्मिक निगराणी से मुक्त हो किसी और चरवाह को खोज अस के अधीन हो सकता है।

दिनांक:.....

नाम:.....

कृपया इस फार्म की दो प्रतिलिपी बताएँ, तीकी दोवों दल जो इस रिश्ते में बन्द रहे हैं; हर एक क पास एक प्रतिलिपी हो। यह फार्म, चौथे हफते में, जब परमेश्वर से बधुत्व" कोर्स पढ़ाया जा रहा हो, तब प्रशिक्षक को बताया जाए, अगर विछार्थी इस कोर्स मे रहता चाहता। उपर्युक्त पृष्ठ कि प्रतिलिपी ली जाए और एक प्रतिलिपी आत्मिक चखार को दी जाए।

२. “आत्मिक मुकाबला” - जीवन का दूसरा पहलू

इसाई धर्म एक धर्म से कुछ ज्यादा है। !

ईसाई धर्म और दूसरे धर्मों में सब से बड़ा फर्क यह है कि ईसाई धर्म एक बहुत ही कूट नीतिशास्त्र से नियमों कि सूची और विचियाँ जो हमें माननी चाहिए, से कुछ बढ़ कर है और यह हमें आत्मिक अनुभव परमेश्वर के प्रेम के साथ देता है। हम केवल परमेश्वर को जानते नहीं बरन इससे महसुस करते हैं। हम न केवल पापीने कि प्रार्थना करते परंतु इसु की आत्मा कि साक्षी अपनी आत्म से देते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं (रोमियो ८:१६) हम न केवल पवित्रशास्त्र से मार्गदर्शन पान हैं बरन अपनी आत्मा से भी मार्गदर्शन पाते हैं जिस से हमारे भने में शान्ति मिलती है। हम पवित्र शास्त्र को न केवल एक आजीव पुस्तक कि तरह, जिस के सफेद पन्ने और काले अक्षर हैं पड़ते हैं, बरन हम उसे एक जीवित कि तरह महसुस करते हैं (इब्रानियों ४:१२) जब हम आत्मिक आबोक कि प्रार्थना करते हैं। तो परमेश्वर उसे हमारे लिए उज्ज्वलित करत हमारे हृदयों में प्रवेश करवाती है (इफिसियों १:१७) हम प्रार्थना केवल अपनी सुजी के लिए नहीं करते, बरन परमेश्वर हमारे मनों में डालवा है कि, हम दूसरी चीज़ के लिए भी प्रार्थना करें।

परमेश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा हमारे मनो में भेजी है जो "परमेश्वर पिता" कह कर चिल्लाती है (रोमियों ८:१५), ताकि हम परमेश्वर के साथ एक सीधा हमेशा के प्यार अनुभव कर सकें। यह नए नियाम कि बहुत

बड़ी देन है कि परमेश्वर उस समय मुनष्यों क हृदय में वास करता था। यह पवित्र शास्त्र में कई जगह बताया गया है। जैसे. यूहन्ना १४ १६-१८ मैं पिता से बितनी करूँगा और वह तुम्हें एक और साहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। आर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हैं क्यों कि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं तुम्हें अनाथ वहीं छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ।

कुरिन्थियों ६: १९ ‘ क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह
पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें
परमेश्वर कि ओर से मिला है। और तुम अपने नहीं हो?’

कुरिन्थियों ४:७ " परन्तु हमारे पास वह धन भट्ठी के बरननों है कि यह
असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही कि ओर से
उहरे।"

मुझे पूरा यकीन है कि सब मसीहो ने उस सच को अनुभव किया है जो
फिलिप्पियों ४:१३, में बताया गया है:"जी मुझ सामर्थ्य देता है उसमे मैं सब कुछ
कर सकता हूँ।"किसी समस्या का समाधान न कर पाने कि जो कमजोरी हम में है
। इस कारण हम ने अपनी अंतर आत्मा से मदद माँगी और उस की ताकत ने
हमारी कमजोरी के दूर किया, उस कि खुशी ने हमारे दुःख को एंव उस कि शान्ति
ने हमारी अंशान्ति को दूर किया ।

इस कारण मसीहत एक कूट नीतिशास्त्र से और धर्म से बड़कर है । यह
राजाओं के राजा के साथ एक प्यार का सम्बंध है । उसकी अदरुणी पवित्र आत्मा
के कारण यह एक सीधा अनुभव है, जो हमें, मुक्त में तौफे के तौर पर मिलता है ।

यह फिर मसीहत को दुनिया के सब धर्मों से ऊपर उठाता है और एक
आत्मिक अनुभव मैहसूस करवाता है । कुरिन्थियों २:१० कहता है जो बाते आँखे ने
नहीं देखी और कान ने नहीं सूनी और जो बाते मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं । वे ही
हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं । परन्तु परमेश्वर ने
उनको अपने आत्मा के द्वारा हम प्रगट किया, क्यों कि आत्मा सा बातें, वरन
परमेश्वर की गुढ़ बातें भी जाँचता "है ।".

दिल से दिल-मस्तिष्क से मस्तिष्क नहीं :

यह आत्मा हमें सच्चाई कि जानकारी अपने मनसे पता चलती है, दिमाग से नहीं । परमेश्वर हमें वह सब चीजे बताता है जो हम अपनी आँखों से या कानों से देखा या सुन नहीं सकते । वह अपनी आत्मा से हमारी आत्मा के जरीए यह करता है । इस का यह मतलब नहीं कि परमेश्वर के देवी प्रेरणा में आँखों, कानों यह दिमाग का कोई काम नहीं क्योंकि यह तो उसी कि रचना है, जितना कि हृदय और आत्मा । फिर भी इस का यह मतलब नहीं कि परमेश्वर कि योजना में मनुष्या के अंगों का (उस के शरीर, प्राण या आत्मा) कोई काम नहीं । परमेश्वर कहता है कि कुछ का वह आत्मा के ज़रिए प्रगट करता है, जिन्हें हमें पवित्रशास्त्र से तुलनाक कर के पर रवाना है, अपने दिमाग से अन्दर स्थित पवित्र आत्मा के कारण हम परमेश्वर के साथ सीधा बन्धुत्व रख सकते हैं । हमु उस कि आवाज सुन सकते हैं आत्मा मार्ग दिखाता है (रोमियों 8:14). हमें अंदरूनी चेतना का अनुभव होता है "अंतर्दृष्टि के द्वारा हम दैवी प्रेरणी पाते हैं और परमेश्वर हमें पवित्रशास्त्र को प्रज्वलित करता है । अंतर जान से हमें पवित्र आत्मा की प्रेरणा और परमेश्वर कि आवज सुनाई देती है । इस कारण, हमारी आत्मा भरा जीवन, परमेश्वर से मारा सम्बंध एक अंदरूनी अन्तरात्मव, आत्मिक; हृदय पूर्ण अनुभव है

पवित्र शास्त्र को न सिर्फ संहिता बनाना परन्तु उस का अनुभव करना ।

मैं बाईबल को विवेकिक तौर से, केवल अपना दिमाग लगा कर पढ़ सकता हूँ और परमेश्वर के बारे में कई हकीकत जान सकता हूँ । जैसे कि मैं यह जान सकता हूँ कि परमेश्वर मुझ से प्यार करता है । परन्तु क्यों कि प्रेम एक अन्द्गुणि अनुभव है मैं परमेश्वर के प्रेम को पूरी तरह अनुभव नहीं कर सकता जब तक वह मेरे मन को अपना प्यार से न धुम है मेरे ध्वावों को चंगा करे आदि मेरी सकती तोड़े । जब वह मुझे पूरी तरह भर दे और खुशी के आँसू मेरी, आँखों में छलकें, तब एक अंतरज्ञात आत्मिक अनुभाव के द्वारा मैं उस प्रेम को जिस के बारे में मैंने पढ़ा है, अनुभव होगा ।

पाश्चिमी मसीहों में आत्मा से परमेश्वर कि आत्मा का मिलन बहुत कम हो चुका है । क्यों कि ताकिकता ने पाश्चिमी दुनिया को पिछले कई सालों से काबू कर लिया है, इस कारण इसाई-सध भी इस कि चपेत में आ. गया है और उस ने आत्मिक कार्यो पर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना, देना चाहिए इसकारण, हम अकसर तार्किकता के कब्जे में आत्मिक जाने हैं और अपने पिता के साथ जो स्मंपूर्ण

रिश्ता हमारे पहले के इसाई संध ने बना रखा था, वह अब मिलकृत हि लापता है ।

उन्नचास प्रतिशत, नया नियम में हवाले आत्मिक अनुभवों को बताते है (ताकिक नही) । तार्किकता से जुड़ने का मलतब है कि नाय नियम कि मसिहत को आदा कर देना' अगर कोई अपने आप को परमेश्वर से अन्दरुनी तौर से नही जोड़ता, तो वह उल नौ पवित्र आत्मा के फलों को पाने का अवसर खो बैठता है (ज्ञान का शब्द, जानकारी के शब्द, विश्वास, चंगाई चमत्कार भविश्यवाणी, आत्माओं में अंतर बताना, पवित्र आत्मा कि जबान प्रकार, पवित्रआत्मा कि ज़बान को समझना); स्वपन और कल्पनाओं को सही मार्गदर्शन द्वारा पाना; सपूर्ण तौर से अर्थपूर्ण एव प्रभावकारी प्रार्थना भरा जीवन पाना परमेश्वर से बातचीत द्वारा बन्धुत्ववा रखाना, उस के साथ एक मजबूत रिश्ता कायम रखना और सच्ची आराधनाक अदरुणी फायदों कि पूर्णता से अनुभव करना ।

तार्किकता के कारण (जो विचार को ज्यादा महत्व दिया गया है) मसिहत और पाश्चिम दूनिया ये भूल गए है कि अपनी अंदरुणी जिन्दकी से कैसे व्यवहार किया जाए (जैसे कि हृदय, आत्मा, उपसचत, असर्चत)

क्यों कि इस सब क्षेत्रों से अपनी ज़िदगी कट चुकि है और इन की ओर ध्यान नहीं दिया गया है, 'न केवल पाश्चिमि समाझ परन्तु ईसाई धर्म के लोगों ने भी इन अन्दरुणी ताकतों से सफतला पूर्वक व्यवहार नही किया है (जैसे कि दबि हुई चोटे, डर, चिन्ता अन्धकार कि ताकते-दानव) और बचाव के ज्यादा से ज्यादा बहाने डूढ़ने लगे है जैसे कि मदिरा पीना,

नशीले पधार्थ, वासना पूर्ति करना और आत्म हत्या । कुछ नाड़ी से नशीले पदार्थ लेना शुरू कर देते हैं तो कुछ दिमाकी संतुलन रखो बैठते हैं और कुछ और तो गुप्त तौर से दैवी रहस्य को पाने में लग जाते हैं तो कुछ अपनी आत्मा कि अन्दरुणी इचधाको तृथ्य करना को लिए पूर्वी देशों के धर्म को अपनाते हैं ताकी जो तार्किकता मसिहत में नही मिलती उसे पा सकें ।

हमे परमेश्वर से आत्मिकता पाने के लिए सीधे तौर से दूबारा खोज करनी पड़ेगी और फिर से एक बार अपनी अंतर्ज्ञात आत्मिक अनुभावों को अपने आपक को सौंप देना है हमें अपनी आत्मिक ज्ञान इंद्रियों की दूबार खोज करनी है और उन्हें अपनी ज़िदगीयों से दूबारा अपनाना है ताकि हम परमेश्वर के यीशु मसीह के और पवित्र आत्मा, को चंगाई देने के लिए अधिकार दें ताकि व हमारी अंदर से अगुवाई

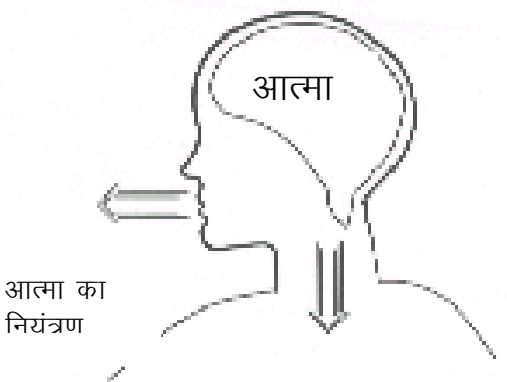
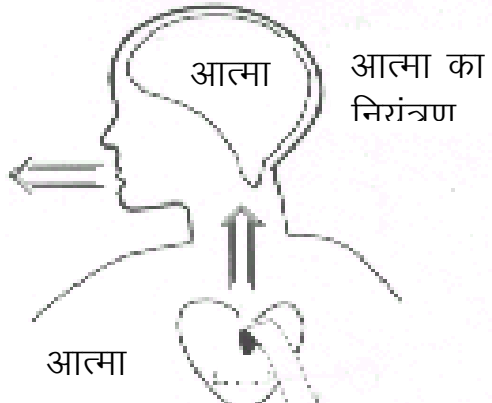
करें । उस में मसीह धर्म का कार्य है । परमेश्वर से सीधे अंदरूनी अनुभव के कारण हमें आत्मा प्राण और शरीर कि चंगाई मिलता है ।

अपनी बाईबल उठाईए और प्रार्थना पूर्वक । कुरिंथियों 18-2:16 तक पद कर ध्यान लगईए, परमेश्वर से प्रार्थना करिए कि वह आप को समझ प्रधान करें और इन वचनों पर आप को देवी प्रेरणा दे । इस रिक्त स्थान पर आप को जो विचार या देवी प्रेरणी मिल रही है, उसे लिखिए कृप्या अभी करिए ।

निम्न लिखित, संक्षिप्त में तुलना हैं, तार्किकता और आत्मा से आत्मा का मुकाबला" । में / इन दो दर्शन शास्त्रों कि सच्चाई को अपने जीवन से तुलना करने में अपना वक्त लीजिए देखिए कि आप कहाँ है?

बुद्धि और आत्मा (कुरिथियों 1:18-2:16)

आत्मिकता से संसार साधन का अनुभव करने के लिए कई पाश्चिमियों को यह निम्न लिखित करना होगा :

बुद्धि को राज गद्दि से उतारिए (तार्किकता)	आत्मा को राजसिंहासा पर बिठाना (आत्मा का नियंत्रण)
	
परिभाषा:- धार्मिक सच्चाई कि स्थापना तर्क को आधार बना कर भरोसा करना एक सिद्धांत कि तर्क अपने आप मे खुद एक ज्ञान के जरिया है जो उत्कृष्ट और आज़ाद है चेतना जाओं से । (वब्सटरज़ न्यू कौले जिएट शब्द कोरा) एतिहासिक पृष्ठाधार संक्षिप्त में: टॉमस ऐक्विनास (स: 1225-1274), एक तत्वज्ञानी एवं ब्रह्मज्ञानी ने मसीहि अनुभानों को तार्किकता से हाथों हाथलेने कि बुनिया डाली उस के जीवन के अंत में परमेश्वर ने उन्हें स्वनों, कल्पनाओं एवं दैवी प्रेरण (आत्मिक अनुभावों) द्वार बतलाया कि मसिहत को तार्किकता में बांध कर रखने कि अक्षार्मथता के बारे में लिखन के लिए उत्ते जित किया, तो उन्होने जवाब दिया: "मैं और ज्यादा नहीं कर सकता; ऐसी चीज़े मुझे पर प्रगत की गई है कि जो कुछ मैं ने लिखा है, वह सब एक तिनके के बराबर दिखाता है, और अब मैं अपने जीवन के अंतिम क्षण कि प्रतिक्षा कर रहा हूँ ।" (ब्रिटैनिका विश्वकोशा)	"जो बातें आँखे ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुनी और जो बातें मनुष्य के चित में नही चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने रखनेवालों के लिए तैयार की हैं । परन्त परमेश्वर ने उनको अपने आत्माक के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्यों कि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर कि गूढ़ बातें भी जाँचता है ।" (कुरिथियों 2:9,10) बाईबल के मनुष्यों ने विस्वास किया और परमेश्वर से सीधे संचार साधना का अनुभव किया । पूरा आधा नया नियम में आत्मिक अनुभव संमिलित हैं, चाहे वे पवित्र आत्मा, दूतों, दानवों, सौतान, स्वपनों, कल्पनाओं या पवित्र आत्मा के इनामों से सम्बंधित हों ।

दोनों प्रस्तावों के संक्षिप्त परिक्षण

१. सच्ची वास्तविकता शरिरिक दुनिया है ।	१. आत्मिक दुनिया सच्ची वास्तविकता है।
२. वास्तविकता को बुद्धि के द्वारा समझना ।	२. वास्तविकता को आत्मा से समझना ।
३. मेरा लक्ष्य बुद्धि को विकसित करना ।	३. मेरा लक्ष्य आत्मा को विकसित करना ।
४. मेरी बुद्धि जो बताती है, मैं उस के मुताबिक जीता हूँ ।	४. मेरे आत्मा जो बताती है, मैं उसके मुताबिक जीता हूँ ।
५. आत्मिक दुनिया सच्ची वास्तविकता है ।	५. मेरी आत्मा मुझे स्वैधिका, प्रवाहित विचार जो उस में परमेश्वर कि आत्मा ने रखे है, द्वारा प्रत्यक्ष करती है ।
६. वास्तविकता को आत्मा से समझना ।	६. मेरी बुद्धि को मैं शास्त्रीय विध्या में इस्तेमाल कर विकसित करता हूँ । ६. परमेश्वर से बातचीत द्वारा मेरी आत्मा विकसित होती है ।
७. मेरा लक्ष्य आत्माको विकसित करना ।	७. शिक्ष के भण्डार का विशलेषण कर दिशा पाई जा सकती है । बुद्धि से (लोगस) का बहाव होता है - लिखित, अभिलोखित शब्द । एक मसीहि जिस ने अपनी बुद्धि का विकास किया है वह लोगस के ज्ञान में बहता रहता है ।
८. मेरी आत्मा जो बताती है, मैं उस के मुताबिक जीता हूँ ।	८. आत्मा से रेहमा का बहाव होता है- परमेश्वर मुझ से उस वक्त म्चा बात चीत कर रहे हैं । एक मसीहि जिस ने अपनी बुद्धि का विकास किया है वह लोगस के ज्ञान में बहता रहता है ।
७. आत्मिक दुनिया सच्ची वास्तविकता है ।	७. परमेश्वर पर शांति से इंतज़ार करते हुए कि वह अपनि स्वैछिकता मेरे मन के विचारों में डाल कर, भार एंव कलपवा से दिश प्रप्त कि

	जा सकती है।
--	-------------

परमेश्वर हमें इस कारण वहीं बुला रहे कि हम अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करें था आत्मा का, बरण दोनों बुद्धि एवं आत्मा का। बाईवल का चिन्तन बुद्धि के विशलेषण को दिल कि स्वेच्छ को जोड़ता है(था दोनो दालांव बाथों तरफ के दिमाग की क्रिया)

यीशु ने अपनी व्यक्तिगत जीवन में तार्किकता और आत्मिकता का बहुत ही अत्तम संतुलन जोड़ा था। किसी का जीवन पूरी तरह से सुधारी और संतुलित की जा सकती है यदी वह नए नियम क मसीहियों क जीवन से मेल रकती होतो।

मसीही होते का यह मललब वही कि आप अपने दिमाग को निकाल बाहर फँकें। जैसे आप परमेश्वर के

नज़दीक पहुँचते हैं। वैसे आप के दिमाग का इस्तेमाल ज्यादा होता है, म्योंकि अव दीमाग के उस कि सही जगाह मिल गई है। हालाँ कि वह आग ही है जो दैवी प्रेरणा कि प्रगती करता है परन्तु वह अंग नहीं है जो दैवी प्रेरणा को स्वीकार करती है। वह आत्मा है। दिमाग और अत्मा एक साथ कामकरते है। आप के मार्ग में दिशा, आप को रेहमा से, आत्मा द्वारा मिलती है। आप का दिमाग निरंतर जॉच के कार्य में जुटा रहता है, और सुरक्ष करता है, रेहमा और लोमो में तुलता करने में। दैवि प्रेरणा खुद तर्करहित नहीं है। परन्तु वह अतिरिक्त तार्किक है। दूसरी तरह से कहा जाए तो, दैवी प्रेरणा सूर्खता नहीं है, उस ने केवल आत्मिक दुनिया कि वास्त वित्ता को लिया है और यह तार्किता को तर्करहित नजर आता है, जिस ने अपना उद्देश्य केवल भौतिक दुनिया तक सिमित कर रखा है।

जैसे कि, अब्राहम और साराह के लिए वह विश्वास, कि ९० वर्ष कि आयु में उन के बच्चा होते वाला था, एक तार्किक है यदि आप कि दुनिया भौतिक दुनिया तक सीम्ति हो तो। परन्तु, यदि आप विश्वास रखते है तो परमेश्वर अपनी आलौ किक शाक्ति आप के स्वभा विकता में डाल देगा और वह जो उस ते कहा कि वह एक बच्चा देने वाला है, तब यह पूर्णता से तर्किक (या अतिरिक्त तार्किक) हो जाता है, कि आप बच्चे का विश्वास करे।

दो विरोधी सांसारिक दृष्टि

तिम्नि लिखिते दो संसारिक दृष्टियाँ हैं जिन्हें आप अपना सकते हैं। कवल एक ही सही है, परन्तु मैं दोनों के बारे में आप को बताता हूँ। ताकि आप अपने जीवन को परख सके और अपनी हैसियत को जान ते और फिर निर्णय लें कि आप को म्या चाहिए।

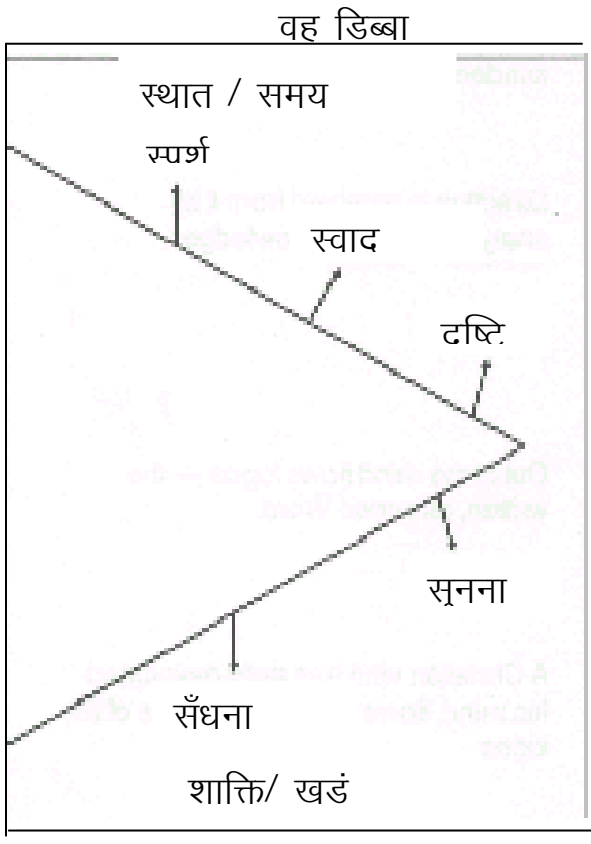
एक सांसारिक दृष्टि - तार्किकता

इस सांसारिक दृष्टि में यह विश्वास रखते हैं कि मनुष्य एक डिब्ब में रहता है। यह एक स्थान/ समय/शक्ति/ खंड का डिब्बे है। यह असली दुनिया की पूर्णग है। मनुष्य इस दुनिया को अपनी पाँचों बाहारी इंद्रियों से महसूस करता है: स्पर्श, स्वाद, दृष्टि, सुनता एवं सूँघना। यदि उसे इस डिब्बे को छोड़ कर आत्मिक दुनिया कि ओर यात्रा करनी हो तो, उसे ऐसा लगेगा, जैसे कि आत्मिक दुनिया है हि नही या अगर वह है तो उस को जान नही सकते।

यह सांसारिक दृष्टि मुझे इसाई धर्म ने उस वक्त सिखाई जब मैं बचाया गया। उन्होंने आत्मिक दुनिया को माना तो परन्तु यह भी कहा कि उस कि उस को इस वितरण मे जान नही सकते। मुझे यह बताया गया कि इस उर्म मे परमेश्वर से सीधा सम्पर्क रखने कि ज़रूरत नही। हम बाईबल द्री गई है और इस कारण परमेश्वर से सम्पर्क रखते कि कोई ज़रूरत नहीं। मुझे यह भी सिखाया गया था कि मैं स्वपनों में। कल्पनाओं में था परमेश्वर कि आवाज़ सुनने में, या ज़बानों में, या चंगाई में या चमत्कारों में था पवित्र आत्मा कि किसी भी भोटों में विश्वास न करु। मेरे दिमाग ने तो इस पाठ को अपना लिया था, परन्तु मेरा मन परमेश्वर से सीधे आत्मिक सम्पर्क के लिए भूखा रहा, और वह किसी और बस्तु से तुप्तन होता।

पहली संसारिक दृष्टि

आत्मिक दुनिया न है न उस कि जानकारी है।



एक दूसरी सांसारिक दृष्टि - ताकिता/ रहस्यगत का मिश्रण

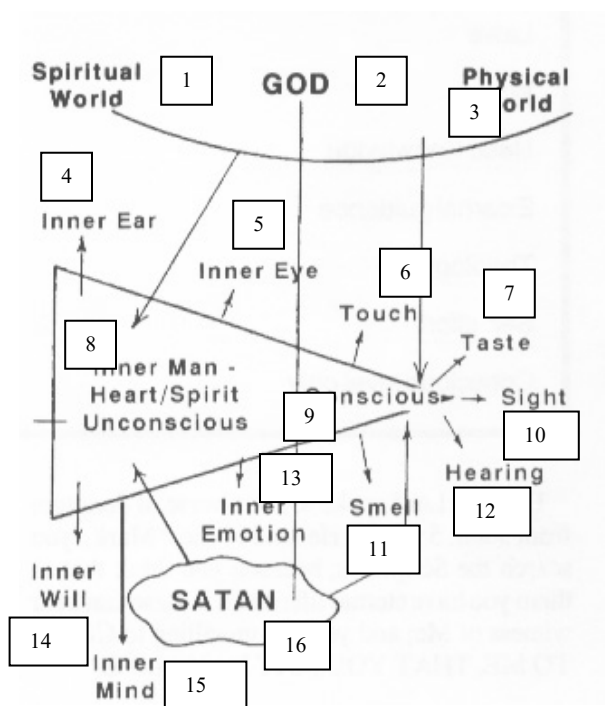
रहस्यवाद ऐसा शब्द है जिसे मे ज्यादा इस्तेमाल मे नहीं लाता, इसाई धर्म के कारण और पूर्वी रहस्यवाद को मसीही रहस्यवाद से अलग न रख पाने के कारण। जैसे कि पवित्रशास्त्र में बताया गया है मसीह, का ज्यादा सम्पक आत्मा से होवा है जब परमेश्वर, स्वर्गदूतों, स्वपनों। कल्पनाओं, अपनी आवाज ऐव आतिरिक्त स्वाभाविक घटनाओं द्वारा मनुष्य से मिलता है।

इस सांसारिक दृष्टि में यह विश्वास है कि यहाँ पर भौतिक एवं आत्मिक, दोनो दुनिया पाई जाती है। मनुष्य एक सचैत द्रव्य है, जिस कि पाँच इंद्रियाँ बाहारी दुनिया का स्पर्श करती है: स्पर्श, स्वाद, दृष्टि, सुनना एवं सुघंद। फिर भी, इस सांसारिक दृष्टि में मनुष्य कि पहचान यह भी है कि उस के पास हृदय और आत्मा दानों है। पौलुस ने रोमियों ७:२२ में उसे " भीतरी मनुष्यत्व" कहा है। मनुष्य के इस भाग में भी पाँच इंद्रियाँ है। वे है: मन कि आँखें, जोस्वपन एवं कल्पना दे रवती है। मन के कान, जो परमेश्वर कि आवाज़ सुनते है(और तो और शैतान, स्वर्ग दुतों एवं दावगों (के भी आवाज): भीतरी बुद्धि, जो सोचने और गहराई से विचार करती है, (जैसे कि पवित्र शास्त्र लुका २:१९ में कहता है कि "मरियम यह सब बाते अपन मन में रख कर सोचती रही") भीतरी इच्छा, जहा मनुष्य वचनबद्ध हो सकता है जैसे कि पौ लुस ने किया था जब आत्मा मे ठान कि यरुशलेम को जाऊँ (प्रेरितों के काम १९:२१)"। और मन कि भावना, जहाँ मनुष्य स्पर्श एवं मह सूस करता है स्वखात्किमान परमेश्वर के बहाव को। जैसे कि प्रेम। खुशी एवं शांति, सब परमेश्वर कि भाक्ताएँ हैं जो हमपरे अन्दर बढ़ती हैं, पवित्र आत्मा के फल के रूप में। पवित्र आत्मा, हमारी आत्मा से मिलती है (१ कुरिथियों ६:१७) और इस कारण हम परमेश्वर कि भावनाओं का अनुभव

करते है अपनी भाविक आत्मा के द्वारा, जिसे कि परमेश्वर ने रचा है चुनने और उस कि पवित्र आत्मा जो हमें वास करती है, बढ़ान के लिए।

इस सांसारिक दृष्टि में। पाँच इंद्रियाँ एक दुनिया का स्पर्श करने के वजाए, हमारे पास हैं दस इंद्रियाँ जो दो दुनियाओं को स्पर्श करती हैं। यह स्पष्ट है कि यह मनुष्य उस तार्किक मनुष्य कि निस्वत एक ज्यादा भरपूर एवं ज्यादा सम्पूर्ण

निम्नलिखित चित्र में दूसरा सांसारिक दृष्टि की रूप रेखा है



- १ आत्मिक दुनिया
- २ परमेश्वर
- ३ भौतिक दुनिया
४. भीतरी कान
५. भीतरी आँख
६. स्पर्श
७. स्वाद
८. आत्मा
९. सुनना
१०. सचैत
११. भीतरी मनुष्य का मन/ आत्मा
१२. सुधदं
१३. भीतरी भावना
१४. शैतान
१५. भीतरी बुद्धि
१६. भीतरि इच्छा

आप कि सांसारिक दृष्टि क्या है?

आप इस सांसारिक दृष्टि में आराम से रह सकेंगे? क्या अपनी बाहारी इंद्रियो से प्रतिवाद करते हुए आप ज्यादा सुविदाजानक महसूस करते हैं, या आप आंद्रणी इंद्रियों के साथ आराम मेहसूस करते हैं? अगर आप इस तरह नहीं जी पा रहें हैं जैसे आप ने जीना है, तो आप अपने आप को बदल सकते हैं। पहले, यह मान लीजिए, कि आप वह वही हैं जो आप बना जाहते हैं और परमेश्वर से माफी माँगीए कि आप बहक गए थे अपनी संस्कृती कि तर्किकता से। दूसरा, परमेश्वर से कहिए कि वह आप में बदलाव लाए, आप के चगा करे, और आप के मन कि आँखों और कानों को वापस दे। तब पदना ज़ारी करे और हम आप को ज़रूरी मदद देंगे, इस बदलाव के लिए/ मुझे यह बदलाव दस साल पहले करना पडा, इस कारण मैं वादा करता हँ कि यह मुमकिन हँ।

तार्किक मसीहत के आगे जाना

जैसे मैं तार्किक मसीहत से हट कर आत्मिक मसीहत कि ओर जाने लगा, परमेश्वर ने मुझे नीचे दिए गए केंद्र, दिए जो रमेर बदलाव कि चाल में मेरी मदद करेंगे।

तार्किक मसीहत	आत्मिक मसीहत
१. नितिशास्त्र के कूट	१. शक्ति जो भीतर कार्य करती है।
२. कानून	२. धनिष्ठता (पिता परमेश्वर)
३. कार्य	३. (दुल्हिन कि शादी)
४. प्रमुख जानकारी	४. प्रजवल्लीत सच्चाई
५. बाहारी मार्ग प्रदर्शन	५. साक्षी देना
६. धर्म शास्त्र	६. आत्मा से मुकाबला
७. स्वयं प्रयत्न	७. शक्ति का जुड़ना
८. केवल सचैत स्तर	८. स्वपनें, कल्पवांछें, बन्धुत्व

तब परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के वचन यूहन्ना ५:३९,४०, के द्वारा मुझ से बात चीत की उन्हो ने कहा, मार्क, तु मवित्र शास्त्र खोजते हो, क्योंकि तुम सोचते हो कि उन में अनंत जीवन है, और यह मेरी साक्षी है, और तुम मेरे पास आने से कतराते हो, " मेरे पास आओ, ताकि तुम आनंत जीवन पाओगे".

मुझे ऐसा लगा जैसे कि एक तलवाप मुझ पर चल पड़ी है। यकीनन। मैंने बाईबल से आत्याधिक प्यार किया था। मेरे प्यार ने पवित्र शास्त्र को एक परमेश्वर को बना दिया था, एक पुस्तक क बजाए जिस में परमेश्वर ने उन के साथ दूसरे लोगों के अनुभव के बारे मे लिखा है। परमेश्वर के साथ जिने के बजाए मैं बाईबल के साथ जी रहा था। मेरे अन्दर एक चुबन मेहसूस हुई जब मैंने यह जाना कि यह वचन यीशु ने अपने समाज के फरीसियों के बारे में कहे था। मैं परमेश्वर के साथ विवाद करने लगा। कि मैं एक फरीसी नहीं हूँ। पर जब मैं उसे वह बताने लगा। जो मैं परता रहा हूँ। तो परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यही सब फरीसी भी करते थे। मैं डर गया, यह सच हो सकता है कि मैं एक फरीसी हूँ। मैंने ध्यान

दिया कि सब से ज्यादा जो फरीसी पसन्द करते थे, वह न्याय था। उन्होंने उसे याद किया। उस के बारे में बताया, उस में वे जीने लगे और दूसरो के सिखाने लगे। यह मेरा संपूर्ण विवरण था। मुझे यह सिखाया गया कि मैं बाईबल ने न्याय के मुताबिक जीऊँ बजाँ इस के कि मैं पवित्र आत्मा से धनिष्ठता रखूँ। मैंने यह नदी सीखा था कि यह सच्चाई को जानूँ कि मसीह मरा ताकी मैं पवित्र आत्मा को लगातार अनुभव करूँ और उसी में जीऊँ, उपक्षा किसी कूट के,

" मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य क आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्यों कि वह न उसे देखता है, और न उसे जानता है; तुम जानते हो, क्यों कि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा" (यूहन्ना १४:१६,१७)।

पश्चताप कि प्रार्थना करिए।

मैंने पश्चताप किया, एक फरीसी का जीवन जीने के लिए परमेश्वर और बाईबल को एक आराध्य वस्तु समझने के लिए माफी माँगी। मैंने यह फैसला किया कि मैं वचनबद्ध हो उस कि ओर जाऊँगा और पवित्र शास्त्र जो मेरे मन के अन्दर कार्य कर रहा है, उस पर विश्वास करूँगा। यह मेरे लिए एक नयी शुरुआत थी।

यदि आप इसी वक्त एक प्रार्थन करना चाहते हैं तो आगे पढ़ने से पहले, यहाँ रुकिये और परमेश्वर के साथ कुछ समय बिताईए।

दिमाग के बायाँ व दाहिने आर्द्धत के कार्यों का वाद विवाद

दिमाग के बायाँ व दाहिने कार्यों के बारे में अधिक ब अरछे शोछ के लिए, व्यावहारिक व सरल जानकारी के लिए और दिमाग के कम इस्तेमाल वाले हिस्से का काम में लाने कि जानकारी के लिए पढीण होल बेन थिंकिंग. जैकलिन वण्डर वा प्रिसिल्ला डोनोवैत द्वारा लिखित व बैलावार्न बुक्स १९८४, द्वारा प्रकाशित (णसीही पुस्तक वहीं है)।

आप इसे विचित्र समझ रहे होंगे कि आत्मिकता और परमेश्वर कि आबाज सुनने के बाद विवाद के बीचों बीच हम दिमाग के बायाँ व दाहिना अर्द्ध वृत्त के कार्य के बारे में विवाद करें। मुझे यह पढ़ते हुए अच्छा ब दिल चस्प लगग है जब मैं मसीहत के अलावा कुछ पढ़ाई करता हूँ, यह जानने के लिए कि मसीहत कि ओर जो मैं चल रहा हूँ वह सही दिशा और सही बढ़ते कदम है या नहीं। दिमाग के बायाँ व दाहिना अर्द्धवृत्त के कार्यों के बारे में जो पढ़ाई है, वह भी उन में से एक है।

१९८१ में, रॉजर स्पैरी ने नोबल पीस प्राइज़ जीता था, अपने बायाँ व दाहिने अर्द्धवृत्त दिमाग के कार्यों के अनुभवों पर। यह बात कि खोज कि गई है कि चाहे हम दोनों तरफ के दिमाग के भागों का इस्तेमाल करते हैं। परन्तु फिर भी हम किसी एक तरफ ज्यादा झुकाव डालते हैं। जो तक्शा आगले पृष्ठ ये दिया गया है, वह एक चित्रमय दृश्य दिखलाता है कि दिमाग का हर अर्द्धवृत्त क्या दर्शाता है। कृपया थोड़ा वक्त ले और उसे इस वक्त परीक्षण करीए।

आप देखेंगे कि दिमाग का बायाँ अर्द्धवृत्त मुख्यरूप से विश्लेषण संबंधी कार्यों करता है और दाहिना अर्द्धवृत्त अंतर्ज्ञात एवं कल्पना संबंधी कार्यों से।

जब मैं ने अमरिका में लोगों के वर्ग का सर्वेक्षण किया तो जाना कि लगभग ६०% लोग बायें दिमाग के कार्यों कि तरफ झुके हुए हैं और ४०% दाहिने दिमाग के कार्यों ओर। (जब आस्ट्रेलिया के लोगों के वर्ग का सर्वेक्षण किया तो मैंने देखा कि प्रतिक्षत एक दम पलट गए थे, एक दिलचस्प बात जो जीवन के सामयिक जीवन के मार्ग का प्रतिबिम्ब है)। के कुछ हि हैं जो यह बताते हैं कि उन के पास दोनों का सेतुलन है। यह असंतुलन इस कारण हो सकता है कि हमारे शैक्षणी संहति यह समझती है कि पढ़ना, लिखन एवं गणित (आवश्यक पाठ्य, कम जो बायें दिमागी कार्यों से संबन्ध रखता है) को ज्यादा मान्यता दी जाती है प्रभावकारी जीवन के लिए, बजाए कला, संगीत एवं नाटक के (चुने हुए पाठ्य क्रम जो दिमाग के दाहिनी भाग के कार्य है)

दिमाग के बाये तरफ के कार्यों परमेश्वर इतना ज्यादा प्रभात है कि बैज्ञानिकों ने यह खोज निकाला है कि शिक्षा के वर्षों में दिमाग का बायाँ हिस्सा दाहिने हिस्से से ज़रासा बड़ा हो जाता है।

मनोबैज्ञानिक यह बताते हैं उन के भुताबिक आधिकतर लोग, हमारे समाज

में, नाड़ी के नशा करने कले है। गेरे हिसाब से इस नशे इतनी तादाद में फैलने का मतलब है कि दोनों तरफ के दिमाग के हिस्सों को संतुलित न कर पाना।

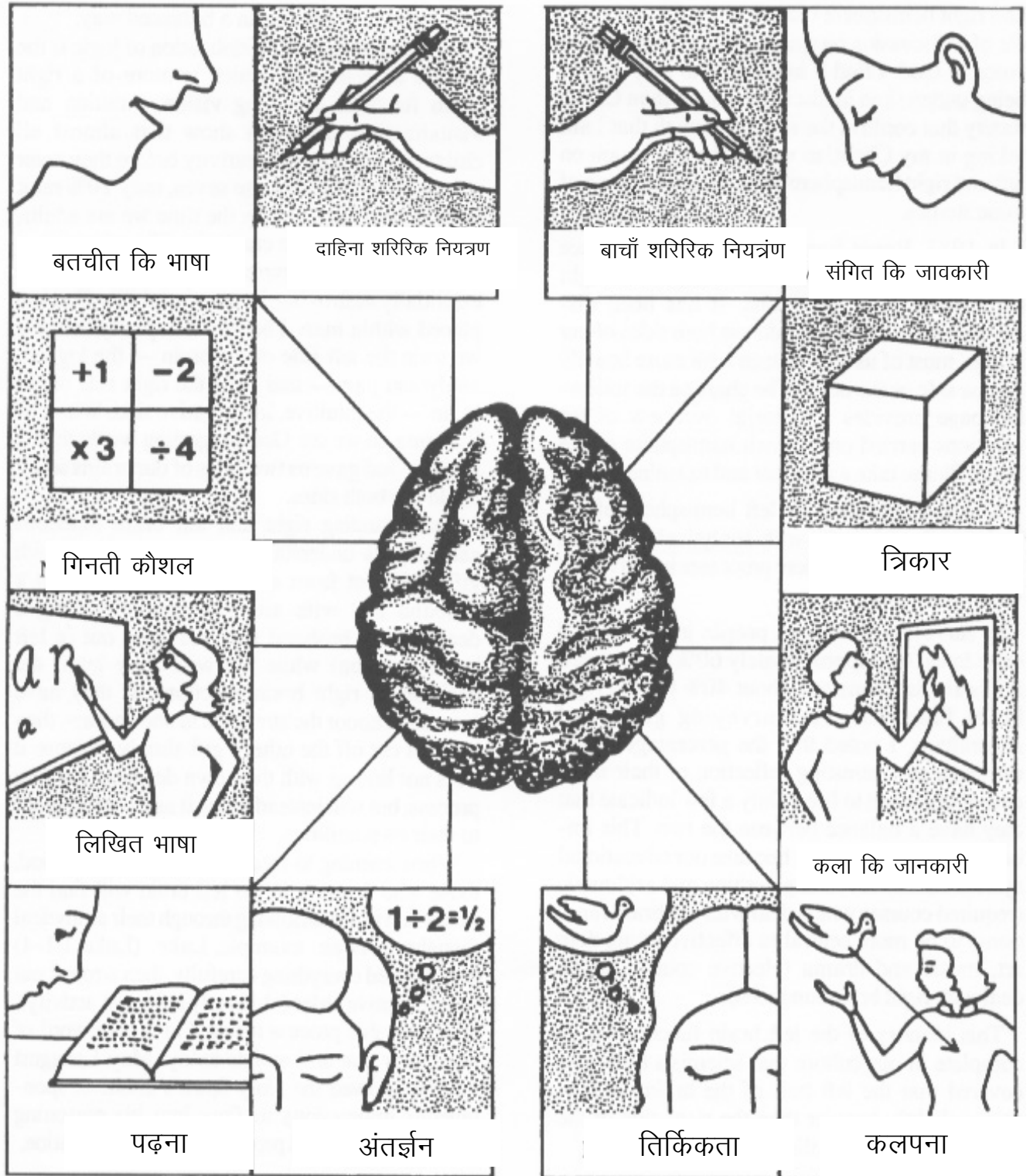
इस तरकशास्त्र को इतना ज्यादा महत्व देने के साथ ही साथ कालजिकता की मृत्यु है, जो दिमाग के दाहिने हिस्से के कार्यों से संपर्क रखती है, जैसे कि कल्पना, अन्तर्ज्ञान एवं काल्पनिक चित्र। आंकड़े यह बताते हैं कि पाँच साल से कमे उम्र के बच्चे, स्कूल जान से पहने सारे बच्चे का लजिकता कि क्षणी में उच्च होते हैं। सात साल कि उम्र के होते होते १०% कालजिक क्षणी उच्च होते हैं और जब तक वे बालिग गो जाते हैं तो केवल २०% कालपनिकता क्षणी में उच्च होते हैं। उस कारण, हम जो अपने वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में जो कर रहे हैं उस से परमेश्वर ने जो मनुष्य को कालपनिकता कि क्षमता दी है, उसे नरत कर रहे हैं।

मैं समझता हूँ, यह इस कारण है कि हम अपने बायें दिमाग के प्ररिक्षण देते हैं- तर्कसंगत, विश्लेषणात्मक भाग- और दिमाग के दाहिने भाग को दबा देते हैं - अंतर्ज्ञानात्मक, कल्पना पूर्ण भाग। हमें पवित्रशास्त्र में कहाँ परमेश्वर द्वारा यह बताया गया है कि हम ऐसा करे? मैं समझता हूँ कि परमेश्वर ने हमें दो भाग हमारे दिमाग में इस कारण दिये हैं कि हम दोनों को उपयोग में लाएं।

बायाँब दाहिना दिमाग के कार्यों को समझने से हमें यह मदद मिलती है कि हम उन को समझ सकें, जिन को हम से अलग उपहार प्राप्त हुए हैं। जैसे कि, यदि एक पति और पत्नी एक निर्णय ले रहे हों, तो पति इस पर ज्यादा ज़ोर देता है (यह बायें दिमाग का कार्य है) जब कि पत्नी अपना फैसला दे चुकी होती है (दाहिने दिमाग का कार्य)। अगर वह एक दूसरे की क्षमता का आदर करते हैं, वे दूसरे के उपहार को काट नहीं देगे केवल इस कारण नहीं कि दूसरे का फैसला उन फैसले से मेल नहीं खाता, परन्तु उसे कि प्रशंसा कर उस की क्षमता कि कदर करते हैं।

परमेश्वर से दैवी प्रेरणा प्राप्त करते समय, जो अपने बायें दिमाग के कार्यों द्वारा इसे पते है, वे उस दैवी प्रेरणा का बहाव अपने विशलेषणात्मक भावों द्वारा महसूस करते हैं। जैसे कि, (लूका १:१-४) ने सब कुछ ध्यान ये जाँचा उसके बाद उसे श्रमागत तरीके से लिखा (स्पष्ट रूप से यह बायें दिमाग की क्रिया है) फिर भी, यह क्रिया का फल एक शुद्ध एवं शब्दों कि दैवी प्रेरणा थी, जो आज भी स्थिर है। मैं यहाँ यह कहना उचित माँगा कि उन्होंने ने पवित्र आत्मा के आंतरज्ञान को, स्वैच्छिक प्रभाव को तार्किक प्रगति में बहने दिया और आखिर में जो परिणाम निकला वह यह निर्मल दैवी प्रेरणा है।

बाचाँ ँव दाहवा अर्द्धवृत दिमाग के कार्य



दूसरी तरफ जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य लिखा, उस ने कहा, "

मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना, "जो कुछ तू देखता है उसे पुस्तक में लिख..... (प्रकाशितवाक्य १:१०-११)" । इस दैवी प्रेरणा के लिए कोई बायें दिमाग के कार्य कि ज़रूरत बहीं पढ़ी (कबल जब लिखा गया तब)। अयेंझय, बै यह विश्वास करता हूँ कि वह दिल से निकल कर सीछे दाहिनी तरफ के दिमाग कि ओर बह गया। इस क्रिया का फल यह शुद्ध प्रकाशितवाक्य है, जो आज भी स्थिर है। मैं दिल का समीकरण सीधे दिमाग के दाहिने हिस्से से नहीं कर सकता। अपेक्षय। मैं यह कहना चाहूँगा कि मन की सामर्थ्यता अपनी चेतमा में दिमाग के दाहिने हिस्से कि ओर से बधती आती है।

आप देख सकते हैं कि यहाँ पर दो फर्क रास्ते हैं जो हम निर्मत दैवी प्रेरणा को पाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। लूका का तरिका और यूहन्ना का तरिका दोनों हि प्रबल हैं। दोनो कं हि फल विर्मल हैं। दोनों हि आदक्षीय हैं। यह हमारे लिए कठिन होता है कि हम उस को आढर दें जो हम से फरक है। जो मनुष्य अपने बाये दिमाग का इस्तेमाल करता है, वह हो सकता है कि दाहिने दिमाग को इस्तेमाल करने वाले को हल्का फल्का, आवेगी एंव रातों को उड़नेवाला जैसे चरित्र वाला बताएगा। (परतदार)। जो दाहिना दिमाग इस्तेमाल करता है वह मनुष्य बायें दिमाग के इस्तेमाल वाले को तार्किक एंव शैक्षणिक चरित्र वाला कहैगा जिस में विलकुल भी गुंजाईश नहीं है कि पवित्र आत्मा उस में बहेगा। हमें उस जगाहे जाना है जहाँ हम दोनों लूका एंव यूहन्ना के रास्तों का आदर कर सकते हैं। दैवी प्रेरणा पाने के लिए, हय जान कर कि पवित्र आत्मा विर्मलता से दोनों से बहती है।

अब हम आलीशा का रास्ता देखेंगे, जब वह परमेश्वर कि आवाज सुनने का प्रयत्न करने लाग। लोग अकसर पूछते हैं, कि " मैं कैसे शैक्षणिक तर्किकता को एक तरफ रख, अदरुणी आंतर्ज्ञन कं बहाव का अनभव कैसे कर सकता हूँ?"

जब एलीशा शैक्षपिक तार्किकता से निकलना चाहता था । यह दिमाग के बायें भाग कि क्रिया है) परमेश्वर का एक शब्द सूनने के लिए जो उस के अंतर्ज्ञान में बोला गया हो (दिमाग के दाहिनी ओर से बहाव), वह दिमाग कि दाहिनी भाग कि क्रिया में वचन बद्ध हो गया । (जैसे "पर अब किसी बजानेवाले को मेरे पास ले आओ, ताकि मैं, परमेश्वर का वचन सूँतूँ, " रूपांत्रित २ राजाओं 3:15) 'संगीत उसे बाचे तरफ के दिमाग से दाहिने तरफ के दिमाग कि ओर खेंच लाता था, और यहाँ पर वह परमेश्वर कि उपस्थिती को मेहसूस करता था, और उव शब्दों को जो

अंतर्ज्ञान में बोले गए थे, सून सकता था । अकसर लोग यह महसूस करते हैं कि कल्पना के इस्तेमाल या प्राकृति कि खूबसूरती का आनन्द लेते समय (दोनों दाहिने दिमाग के कार्य हैं)

भी वे अंतरज्ञान कि पवित्र आत्मा कि आवाज को सुन सकते हैं । इसलिए मैं कल्पना, संगीत एवं प्राकृति के इस्तेमाल कि सलाह दूँगा, जब आप पवित्र आत्मा कि अंतरज्ञान कि आवाज सूनना चाहें तो । इन सब की एक रुचिपूर्वक पाद टिप्पणी बनाई है कालविन जैसकी, कालगरी, कैनेड़ा से ने । विश्व विद्यालय कि शिक्षा में उन्होंने यह बताया कि जवानों में बोलने से दाहिने दिमाग के हिस्से की वैधुति क्रिया प्रेरित करती है, जिस के विपरित आप बातचीत है जो बायें तरफ के दिमाग कि वैधुति क्रिया को प्रेरित करता है ।

अंतर्ज्ञान-मनुष्य का मन या पवित्र आत्मा ?

मैं इन दोनों बातों पर विश्वास करता हूँ कि अंतर्ज्ञान कि जो आवाज है वह मनुष्य के मन कि आवाज़ हो सकती है और उस के आगे बढ़ कर यह आवाज पवित्र आत्मा कि हो सकती है जो मसीहि के मन से जुड़ी है अगर मनुष्य अपनी आँखें खुद पर टिकाए और अंतर्ज्ञान कि ओर ध्यान लगाए, तो अंतर्ज्ञान कि ओर ध्यान लगाए, अंतर्ज्ञान के बहाव कि आवाज हो सकता है उस पर टिकाए जो कि विश्वास का लेखक एवं उस परिपूर्ण बनाने वाला है और अंतर्ज्ञान कि ओर ध्यान लगाए, तो अंतर्ज्ञान का बहाव ज्यादातर हो सकते हैं यीशु हो ।

अब आते हैं यीशु नासरी के संतुलन पर, हमें अंतर्ज्ञानी और कालपनीक होना सीखना है (यूहन्ना 5:9,20,30) और शैक्षिक । (एक उदाहरण शैक्षणिक का यह है कि यीशु में यह क्षमता थी कि उन्होंने पक्की फरीसियों को धर्मशास्त्र के विवाद में हराया । हम में से ज्यादा तर लोगों को ज़रूरत है और ज्यादा फैलने और आगे बढ़ने कि, जो आरालदेह है उसे त्यागने के और एक इच्छाशक्ति कि अपने आप को उस कि सामानता में बदलें । मुझे काफी साल लग गए, अपनी शादी के जीवन से हट कर, परमेश्वर एवं रक्षक यीशु क्रीष्ट के नज़दीक जा कर एक संतुलना बनाने में ।

जो इम्तिहान आने वाला है वह वैज्ञानिक रीति से विकसित किया गया है और शोध किया गया है, इस की मदद आप यह जानने के लिए ले सकते हैं कि आप दिमाग के किस हिस्से तरफ इस वक्त आप जी रह है । आप को एक जवाब को

चुनना है, जो बिकृत सही हो। यदी आप दो जवाबों को भी चुननें है तो आप यह भी जान जाएंगे कि आप का ज्यादा झुकाव किसी एक जवाब कि ओर है/प्रश्न 8 ओर 33 का आप एक से ज्यादा जवाब दे सकते हैं ।

दिमाग पक्षपात प्रदर्शक परीक्षा

१. यदि आप को समस्या का हल देना हो तो, क्या आप:

- a) टहलते हुए समस्या का समाधान ढूढ़ते हैं, फि वाद विवाद करते है ?
- व) सोच कर सब समाधान लिख लेते हैं, उन्हें प्राथमिकता के हिसाब से क्रम में रखते है और फिर सब से सटीक जवान को चुनते है ?
- c) पुराने अनुभवों को जो सफल थे दोहरा कर और उन्हें कर्यानवित करते है ?
- d) रुक कर देखें कि क्या समस्या का अपने आप हल निकाल आएगा ?

2. दिन से सपने देखना है :

- a) समय कि बरबादी ।
- b) मन बहलाना एवं विक्षाम करना ।
- c) समस्या का समाधान ढूढ़ने एवं काल्पनामक विचार में मदद करता है ।
- d) एक जीने का यंत्र जिस से मैं अपना भविष्य कि योजना बना सकता हूँ ।

३. इस चित्र पर तुरन्त एक दृष्टि डालीए :



क्या चेहरा मुस्कुरा रहा था ?

- a) हाँ
- b) नहीं

४. अंतर्ज्ञानी विचारों के बारे में:

- a) मुझे अक्सर बहुत गहरे विचार आते हैं, और मैं उन्हें आजमाता हूँ.
- b) मुझे कभी कबार इस तरह के विचार आते हैं और मैं उन पर बहुत ज्यादा विश्वास रखता हूँ ।
- c) मुझे कभी कबार इस तरह के विचार आते हैं और मैं उन में ज्यादा विश्वास नहीं रखता.
- d) मैं इस अंतर्ज्ञानी विचारों पर, महत्वपूर्ण निरणय लेने के लिए भरोसा नहीं करता ।

५. जब आप अपनी दि चरया पर ध्यान दें तो सब से ज्यादा आप के पदवी पर कौन

सि आदर्श स्वरूपी है ?

- a) मैं उस सब चीज़ों कि सूची बनाता हूँ जो मुझे करनी है । ताकी लोग मुझे देखें
 - b) मैं उस जगहों का चित्रांकण करता हूँ मझे जाना है, जिन लोगों से मिलना है, मुझे जो करना है ।
 - c) मैं बस उन्हें होने देता हूँ ।
 - d) मैं दिन चरचा कि योजना बनाता हूँ, हर क्रिया और हर चीज़ को लिए समय नियुक्त करता हूँ ।
६. क्या अकसर आप के पास हर चीज़ के लिए समय रहता है, एक तरीका होता है चीज़ों को करने के लिए और एक काबलियत है कि आप सूचना एवं पदार्थों को संगठन कर सके ?
- a) हाँ
 - b) नहीं
7. क्या आप अपने चल सामाग्री को हटाने, अपने धट्ट या दफ्तर कि सजावट को बदलना चाहते हैं ?
- a) हाँ
 - b) नहीं

8. कृपया जाँच कि इन में से कौन सि क्रिया आप आनन्द से करते है

तैराकी	फोटोखींचना
टैनिस	कुछ न करना
गॉल्फ	यात्रा
कैम्पिंग आईकिंग	साईक्लींग
स्कीइंग	जमा करना
मच्छली पकड़ना	लिखना
गाने गाना	चैस
बागबानी करना	ब्रिज
बाजा बजाना	राऊलेट
घर कि सजावट	चराडस
सिलाई	नृत्य करना
पढ़ना	टँहलना
कला/कोशल	आलिंगन
पङ्काना	चुम्मा लेना
	स्पर्श करना
	बातें करना
	बाद विवाद

९. आप खेल कूद या नृत्य ज्यादा अच्छ सीख सकते है

- a) नकल कर, संगीत या खेल को पूरा अनुभव करते हुए ?
- b) क्रम को सीखते हुए और चालों को मस्तिष्कत दोहराना ?

१०. जब आप लोगों के सामने खेलते या प्रदर्शन करते हैं तो क्या आप प्राशिक्षण से अच्छा करते हैं और स्वभाविक योग्यता विश्वासिन्या है ?

- a) हाँ
- b) नहीं

११. क्या आप अपने विचारों को बातचीत के दौरान ठीक से समझा पाते हैं ?

- a) हाँ
- b) नहीं

१२. क्या आप लक्ष्य निर्धारित करते हैं ?

- a) हाँ
- b) नहीं

१३. जब आप को दिशा, किसी का नाम, या खबर याद रखनी होती है तो आप:

- a) सूचना कि कल्पना करते तहै ?
- b) टिप्पणीयाँ लिख लेते हैं ?
- c) दोहरा कर याद कर लेते हैं (चाहे अपने आप में या जोर से)
- d) पिछली सूचना से जोड़ लेते हैं ?

14. क्या आप चेहरों को असाानी से याद रखते हैं ?

- a) हाँ
- b) नहीं

१५. भाषा का प्रयोग करते समय, क्या आप ?

- a) शब्द बनाते हैं ?
- b) तूकबंदी ढूँड निकालते हैं और रूप अलंकार संयुक्त करते हैं ?
- c) सटीक, सही सत्र को चुनते हैं ?
- d) बातचीत के दौरान, आप सुविधाजनक मेहसूस करते हैं, जब
- a) सुनते हैं ?
- v) बात करते हैं ?

17. जब आप को किसी सभा में एक दम से कुछ कहने को कटा जाए, तो क्या आप ?

- a) तुरन्त एक रूप रेखा बनाएँगे ?
- b) बस बात करना शुरू कर देंगे ?
- c) किसी और पर ध्यान बँवा देंगे या जितना कम हो सके उतना कम बोलेंगे ?

18. बाद विवाद में क्या आप:

- a) तब तक बोलेंगे जब तक आप की बात स्पष्ट न हो जाए ?
- b) अपनी बात के समर्थन में अधिकार को ढूँढ़ेंगे ?
- c) अपने आप को हटा लेंगे ?
- d) मेज़ या कुर्सी फेंकेंगे, मेज़ पर जोर से भारेंगी, चिल्ला कर बाट करेंगे ?

१९. बिना अपनी धड़ी कि ओर देखे क्या आप सही वक्त बता सकेंगे ?

- a) हाँ
- v) नहीं

२०. क्या आप उन सामाजिक स्थितियों को पसन्द करते हैं जो:

- a) पहले ये हि योजना पूर्वक बनाई गई हों ?
- b) स्वैधिक हों ?

21. जब आप अपने आप को तैतार कर रहे हों किसी नए एवं मुश्किल काम के लिए, तो क्या आप:

- a) यह कल्पना करते हैं कि आप ने उस सफलता पूर्वक खतम किया ?
- b) एक जैसी परिस्थितियों में पुरानी सफलताओं को याद करना ?
- c) कार्य के बारे में विस्तृत आंकड़े बनाना ?

22. क्या आप अकेले काम करना पसन्द करते हैं या समूह में ?

- a) अकेले
- b) समूह में

२३. जब किसी नियम को बदलना हो या कम्पनी कि नितिको सुधारना हो, तो आप क्यों महसूस करते हैं:

- a) नियमों और नितियों को मानना है ?
- b) नितियों को बदलने ये प्रगती होती है ?
- c) नियमों को तोड़ने के लिए बनाया जाता है ?

24. स्कूल में, आप को क्या पसंद था:

- a) बीजगणित
- b) रेखगणित

२५. इन में से कौनसी लिखाई आप से मेल खाती है ?

- a) सामान्य दाहिने हाथ कि.
- b) मुड़ा हुआ दाहिने हाथ कि (अंगुलियाँ आप कि छाती कि ओर मुड़ी हुई)
- c) सामान्य बायें हाथ कि
- d) मुड़ा हुआ बाये हाथ कि (अंगुलियाँ आप कि छाती कि ओर मुड़ी हुई)

२६. टिप्पणी लिखते समय, क्या आप छापते हैं ?

- a) कभी नहीं
- b) अकसर

27. क्या आप इशारों का इस्तेमाल करते हैं ?

- a) अपनी बात पर जोर देने के लिए ?
- b) अपनी भावनाओं को स्पष्ट करने के लिए ?

28. क्या आप किसी बात को सही कहने के लिए एक दम महसूस करते हैं या

- a) महसूस
- b) निर्णय

29. मुझे खतरों से खेलना पसन्द है ?

- a) हाँ
- b) नहीं

30. किसी संगीत सभा में शामिल होने के बाद

a) मैं किसी भी धुन को गुनगुना सकता हूँ ।

३१. एक पेंसिल को जमीन ले लम्बवत् में एक हाथ कि दूरी पर पकड़ीये, उस अपनी दृष्टि के बीचों केद्रित करीए और पीछे आकार एक प्रेम का, तखते का या दरवाज़े का हो । इस तराह पकड़े हुए, अपनी बाची आँ ख बन्द करीए । क्या आप पेंसिल हिल्लती हुई नज़र आई ?

a) हाँ

अपनी दाहिनी आँख बन्द करीए । क्या अपकी पेंसिल हिलती नज़र आई?

व) हाँ

३२. एक आरामदेह अवस्था में दोनों हाथों को अपनी जाँग पर रख कर बैठिए ।

कौन सा अंगुठा ऊपर है?

a) बायाँ

b) दाहिना

c) सामानान्तर

३३. निम्न दिए गए विषयों को जाँचिए और देखिए कि इन में कौन से विषय आप के बारे में सच्चे हैं ।

- मैं सविदाओं; सूचना ग्रंथों एवं कानूनी दलीलों में से मतलब निकाल लेता हूँ ।
- मैं आकारो एवं मानचित्रों को समझ सकता हूँ ।
- मैं पढ़ने कि पुस्तकों में नाटक के पात्रों, स्थापनाओं में एवं कथावस्तु की मैं दृढ़ता से कल्पना करपता हूँ ।
- मैं चाहता हूँ कि दोस्त आने से पहने मुझे फोन द्वारा सुचित करें ।
- मुझे फोन पर गप्पें मारना नहीं पसन्द है ।
- मैं इस में संतुष्टि पाता हूँ कि अगर कहीं जाना हों तो मैं पहले से हि योजना बना कर सारी विवरणों का प्रबन्ध कर लूँ ।
- मैं फोन करना टाल देता हूँ ।
- मैं शब्द कोश में आसानी से शब्दों को ढूँढलोता हूँ एवं फोन कि पुस्तक में नाम ।
- मुझे श्लेष पसन्द है ।

- सबाहों मे एंव अपदेशों में बहुत सारी टिप्पणीयाँ लिख लेता हूँ।
- जब दबाव के अंदर मुझे बुद्धिरहित कार्य करने पड़ने हों तो मैं ठण्डा पढ़ जाता हूँ।
- अकसर विचार कहीं से भी उभर आते है।

३४. मेरे पास है:

- a) अकसर भाव बदलते रहते हैं।
- b) कभी कोई भाव नहीं बदलते।

३५. मैं:

- a) मैं शारिरिक भाषा से ज्यादा प्रभावित नहीं होता। मैं लोगों कि बाते सुनने में यकीन करता हूँ।
- b) शारिरिक भाषा को समझने में अच्छा हूँ।
- c) लोग क्या कहते हैं यह अच्छी तरह जानता हूँ और उन कि शारिरिक भाषा भी जो वे उस्तेमाल करते हैं, समझ लेता हूँ।

अंको कि गणणा

जो आप ने स्वयंकरियरि कि उन के आंको कि गणणा यहाँ दी गई हे। दाहिने हाथ पर जो खाली स्थान दिया गया है वहाँ अपनी संख्या, मही जावब कि लिखिए/ बाद में इन अंकों को जोड़िए।

१.	a.	7	b.	1	c.	3	d.	9
२.	a.	1	b.	5	c.	7	d.	9
३.	a.	3	b.	7				
४.	a.	9	b.	7	c.	3	d.	1
५.	a.	1	b.	7	c.	9	d.	3
६.	a.	1	b.	9				
७.	a.	9	b.	1				
8.	तैराकी	-	9	यात्रा	-	5	_____.	
	टैनिस	-	4	साईकलिंग	-	8	_____	
	गॉल्फ	-	4	जमा करना	-	1	_____	
	कैम्पिंग। हाईकिंग	-	7	लिखना	-	2	_____	
	स्कीइंग	-	7	चैस	-	2	_____	
	मच्छली पकड़ना	-	8	ब्रिज	-	2	_____	
	गाने गाना	-	3	राऊलेट	-	7	_____	
	बाग बानी करना	-	5	चकाडेस	-	5	_____	
	बाज बजाना	-	4	तृत्य करना	-	7	_____	

घर कि सजावट	-	3	टैहलना	-	8_____
सिलाई	-	3	दौड़ना	-	8_____
पढ़ना	-	3	आंलिंगन	-	9_____
कला/कौशल	-	5	चुम्मालेना	-	9_____
पकाना	-	5	स्पर्श करना	-	9_____
फोटो खींचना	-	3	बार्ते करना	-	4_____
कुछ न करना	-	9	वाद विवाद	-	2_____

९.	a.	9	b.	1			_____
१०.	a.	9	b.	1			_____
११.	a.	1	b.	7			_____
१२.	a.	1	b.	9			_____
१३.	a.	9	b.	1	c.	3	d.5_____
१४.	a.	7	b.	1			_____
१५.	a.	9	b.	5	c.	1	_____
१६.	a.	6	b.	3			_____
१७.	a.	1	b.	6	c.	9	d.4_____
१८.	a.	3	b.	1	c.	7	d.9_____
१९.	a.	1	b.	9			_____
२०.	a.	1	b.	9			_____
२१.	a.	9	b.	5	c.	1	_____
२२.	a.	3	b.	7			_____
२३.	a.	1	b.	5	c.	9	_____
२४.	a.	बीज गण्टि 1	b.	रेखा गण्टि 9			_____
२५.	a.	1	b.	7	c.	9	d.3_____
२६.	a.	1	b.	9			_____
२७.	a.	2	b.	8			_____
२८.	a.	9	b.	1			_____
२९.	a.	7	b.	3			_____

३०.	a.	9	b.	1		_____
३१.	a.	8	b.	2		_____
३२.	a.	1	b.	9	c.	5 _____
३३.	संविदाओं	1	टाल देना	7		_____
.	मानचित्र	7	शब्द ढूँढना	1		_____
.	कल्पना	9	श्लेष	3		_____
.	पहले से	2	टिप्पणी	1		_____
.	बात चीत	3	ठण्डा पढ़ना	3		_____
.	यात्रा योजना	1	कहीं से भी	9		_____
34.	a.	9	b.	1		_____
35.	a.	1	b.	7	c.	5 _____

अब उन अंकों को जो दाहिना ओर लिखे हुए है। जो दिए गए संपूर्ण परिणाम को जवाब कि संख्या से भाग करे। (यह बाद कि संख्या हर परिक्षा देने वाले का फर्क होगा, क्यों कि प्रश्न ८ एवं ३३ में कई भाग हैं) जैसे कि: अगर आप के अंक 40 प्रश्नों के 300 हैं। आप का दिमाग पक्षपात प्रदर्शक 7.5 होगी।

बायाँ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ दाहिना

इस स्वयं परिक्षण के प्रश्न, प्रबस दाहिने और बायें दोनों. के मुख्य फर्कों को छिपा देते हैं। के करीब अंक यह बताने हैं कि आप अपने दिमाग के दोतों भाग, अच्छी नरहा, आसानी से इस्तेमाल कर सकते हो। और 1 के बीच के आंक यह बताते हैं कि आप अपने दिमाग के उर्ध्ववृत्त को अदि पसन्द करते है; और आप को अपने दूसरे उर्ध्ववृत्त को इस्तेमाल करते कि क्षमता पर कार्य करना चाहिए। ज्यादा तर अंक 3 एवं 7 के मध्य होंगे।

वह जो अपनी सारी अंतर्वर्ती गुणों को इस्तेमाल करता है वही राजा कि सेवा में क्षमताशाली होता है, खास कर जब वह इन गुणों के पवित्र आत्मा के बहाव के लिए

इस्तेमाल करे।

किनारे कि टिप्पणी : यह परिक्षा आगर पूरे परिवार के साथ करें और हर एक के प्ररिणाम परा बहम करें, तो यह परिवार के हर व्यक्ति को समझने में मदद करेगा। यह परिवारिक रिश्तों में सुधार लणगेगा। हम यहाँ इसरो का परिवरतन करने नहीं आए हैं पर दूसरों के व्यक्तित्व को जान कर उन कि मदद करें और उन को सहारा दें। मैं व्यक्तिगत रूप से लूका हूँ। मुझे दैवी प्रेरणा, लूका के समान मिलती है, बहुत ज्यादा जाँच पढ़ताल के बाद। बाकी लोग यूहन्ना कि तरहा होते है। हमें न लूकाओं को यूहन्ना बानाहै और न यूहन्नाओं को लूका। परमेश्वर ने जो उन के

३४

अन्दर फर्क डाला है उसे आदर दीजीए। उन्हें मत बदलीए।

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

१. अपने विचारा प्रश्न और विचार विमर्श जो इस पाठ को पढ़ कर उठते हैं उन्हें लिखिए।

२. परमेश्वर से कहिए कि वह आप को कई तरहा के आंतर्ज्ञान, आत्मिक अनभवों को जो अस के साथ अप कि जिदंगी में हुए हैं, बताएँ/ आप उन्हें संक्षिप्त में

लिखि लीति।

प्रार्थना : "परमेश्वर , आप मसीही धर्म के लोगों को सही समझ दीजिए और आत्मा से
आत्मा के तकराव का पूरा अनुभव उन्हें बापस मिले।

कार्य पर्चा कक्षा समय के लिए - बन्धुत्व : परमेश्वर के मन की इच्छा

पारस्परिक स्वीकृतियों को पढ़ते समय परमेश्वर के न बदलती इच्छा की ओर ध्यान दीजिए।

१. सृष्टि निर्माण (उत्पत्ति ३:८)
२. इस्त्राएली देश (याकूब २:२३; व्यवस्थाविवरण ५:२२-३१)
३. दाऊद (प्रेरितों के काम १३:२२)
४. यीशु : परमेश्वर की इच्छा का पूरा अनुभव (यूहन्ना १७:३) (यूहन्ना १७:२२)
५. मरियम और मारथा (लूका १०:३८)
६. पौलूस (फिल्लीपियों ३:१०)

७. हम (इब्रनियों १२:१८-२६)

८. अनन्त काल (प्रकाशित वाक्य १:९७)

परमेश्वर ने हमारी रचना कि केवल इस कारण कि हम उस के साथ एक प्रेम भरा रिशाता रख सकें।

आप के प्रियजन के लिए एक पत्र।

प्रयोग: यीशु को एक प्रेम पत्र लिखीए और उन्हें जवाब देने दीजीए। जब आप अपना मन और प्यार यीशु के साथ बातेगे तो आप स्वैच्छिक विचारों के बहाव को सुनने लगोंगे और प्रभाव बापस आने लगोंगे। परमेश्वर आप को अपने प्यार के बारे में बता रहा हो। अगर ऐसा है तो, स्वैच्छिक बहाव को लिखने तमीए और उसे दो तरफा प्रेम पत्र बनाईए।

३. रेहमा - कहा गया शब्द

(आम्लिक, अत्यन्त तार्किक अनुभव)

कही तरहा से परमेश्वर बात जीत करग है।

अपना पिता अपने आप को हमारे साथ हर तरीके से बाँटना चाहग है। यीशु हमारा मार्ग, सच्चाई और जीवन बनना चाहता है। (यूहन्ना १४:६)। वह हमें लोग स वचन, क ज़टीए मार्ग दिखाना चाहता है।" तेरा वचन..... मार्ग के लिए उजियाला है" (भजन ११९:१०५)। वह हमें हमारे आम्लिक आध्यक्ष के अपदशों द्वारा भी मार्ग दर्शन करता है। (निति ११:१४)। धवनाओं द्वारा भी हमें मार्ग दिखाग है (जैसे योना) यीशु पवित्रशास्त्र को प्रजदल्लीत कर सच्चाई बन जाता है। इसी तरहा वह हमें सच्चाई कि ओर लो जाता हे और हमारा मार्ग दर्शन कर के शान्ती देता है था हमारी अत्माओं पर दबाव डालता है। हमें स्वपनों और कलपनाओं द्वारा भी मार्ग प्रदर्शन मिलता है (प्रेरित १६:९).

लोगस और रेहमा के स्पशटिकरण

जब यीशु अपने वचन सीधे हमारे मन से बात करता है, तो वह हमारा जीवन बन जाता है। बईबल हमें मन में परमेश्वर कि आवाज सुनने के बारे में बताती है। इस पाठ में हम इस अनुभव को परखोंगे। यूहन्ना ६:६३ में यीशु कहता है "जो बाते मैं ने तुम से कहीं है वे आत्मा हैं, और जीवन भी।" ह सकता हे कि हम मे से हर एक के जीवन कि साँस को अनुभव किया हे परमेश्वर के बचनो द्वारा जो सवाई से हमारे मन तक पहुँचे हे, हमें मार्ग दर्शन करते हुए, हमें प्रेरित करते हुए, यह हमें शक्ति देते हुए।

नये नियम में दो यूनानी शब्द ऐसे हैं जिन का भाषान्तर किया गय हे, लोगस एवं रेहमा/शब्द दोनों लोगज और रेहमा हों सकता है, यह इस बात पर निर्भर होता है कि आप किस पर महत्व देते हैं, संदेश के धन परिमाण पर या

किस प्रकार संदेश ग्रहण किया गया। रेहमा का तावपर्य, इस बात से है कि संदेश किस प्रकार ग्रहण किया गया (याने कि कहे गए वचन से)

बाइबल से उद्धारण

यूहन्ना के सतराह अद्धयाय, छः एंव आठ वचन में यीशु एक ही शब्द को पमाण हैं।

छटवी आयत में धन परिमाण नज़र आता है और इस कारण लोगस यूनानी में उस्वेमाल किया गया है। आठवी आयत में यह सच्चाई कि वह कहा हुआ वचन था वज़र आता है और इस कारण रेहमा शब्द यूनानी में इस्तेमाल किया गया।

दोनों लोगोस और रेहमा

पवित्रशास्त्र को अगर मैं धन परिमाण के नज़रीए से देखूँ, तो वह लोगोस हो सकता है। अगर मैं उसे परमेश्वर की दैवी प्रेरणा समझूँ तो वह रेहमा कहलाएगा। अगर परमेश्वर मुझे एक पवित्रशास्त्र बताता है, वट मेरे लिए रेहमा है। अगर परमेश्वर पवित्रशास्त्र के धन परिमाण को लिखने को कहे, तो वह लोगोस है। मौलिक रूप से पवित्रशास्त्र लेखकों को रेहमा कि तरहा मिली (२ पतरस १:२१)। क्योंकि उन के पास धन परिमाण था, वे लोगोस भी थे। आत्मा के द्वारा पवित्रशास्त्र हमें जलदी से मिलवा है और इस कारण यह रेहमा बन जाता है वैसे ही जैसे कि मौलिक लेखकों को। अगर हम रेहमा पर विचार करें ता वह लोगोस बन जाएगा, क्योंकि हमारा उच्चारण आने के ज़रीए से हब कर धन परिमाण पर हो जाता है।

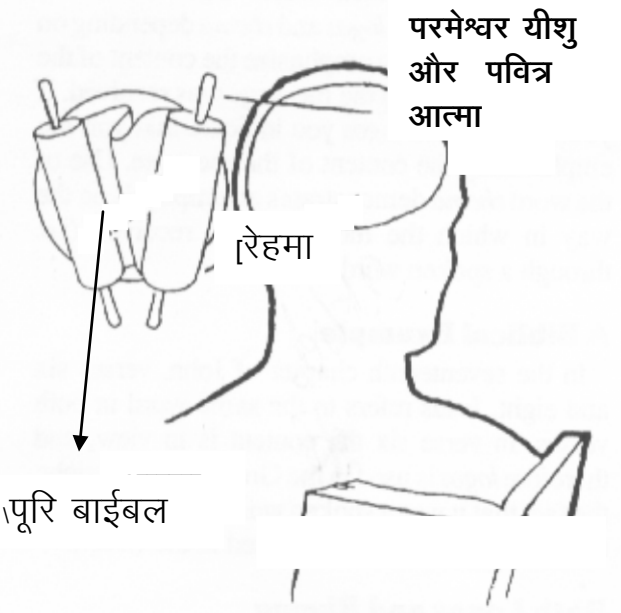
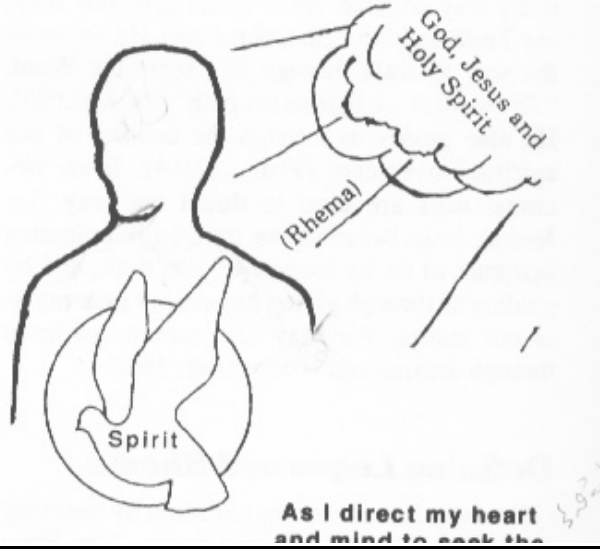
हमें दोनों लोगोस और रेहमा कि ज़रूरत है

बाइबल का धन परिमाण (लोगोस) ज़रूरी है क्योंकि यह हमें एक पूर्ण नियम देता है जिस से हम सच्चाई को माप सकते हैं। यह हमारा सुरक्षा कवच है जो हमें गलती करने से रोकता है और वह जीवन भर के लिए हमारा शिक्षा ग्रंथ है।

रेहमा भी ज़रूरी है क्योंकि यह उस बात पर ज़ोर डालता है कि बाइबल हमें अवस्था में कैसे मिली- उन व्यक्तियों के द्वारा जो परमेश्वर के साथ परस्पर संबन्ध रखते थे। यह उस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर आपने बच्चों के साथ बात करते थे और करते रहेंगे। हमें यह देखना है कि शुरु से अंत तक बाइबल के यह पुरुष व स्त्रीयाँ, परमेश्वर के साथ जिस ने उन्हें बनाया है, परस्पर संबन्ध

बनाए रखते थे। अगर बाईबल हमें उत्तमत्री से ले कर प्रकाशिवनाक्य तक कुछ बताती है तो वह यह है कि परमेश्वर चाहता है वह अपने बच्चों के साथ बात चीत करना चाहता है और यह कि हम उस कि आवाज़ सुनें और उस कि कल्पना देखे जब हम जिवन व्यतीत करते हैं। परमेश्वर मुझे मिलने से से पहले, मैं केवल अपने लिए हि जीवन व्यतीत करता था। परन्तु अब जब वह मुझे मिल चुका है, मैं उस के कहे हुए वचनों पर जीविन हूँ और देखते हैं (युहन्ना ५:१९,२०,३०)। हम यीशु को एक अखंड अद्भहारण के रूप में देखते हैं, उस जिवन को आदर्श बनाते हुए जिसे हम ने स्पर्श करना है।

इस कारण, हमें दोनों लोगोस और रेहमा कि ज़रूरत है अपने जिवन में। निम्न दिया गया चित्र मदद करा सकता है।

१.लोगोस	२.रेहमा
	
दिमाग बाईबल को पढ़ते और समाझते हुए।	जब मैं अपने मन और दिमाग को परमेश्वर को खोजने कि और मोड़ता हूँ, तब इस कि आत्मा मेर मन से सीधे बात करती है, उस के विचारों और आभिप्रयों को मुझ पर सीधा प्रभाव डालते हुए।

लोगोस और रेहमा के कुछ और भेद

	नोगोस	रेहमा	$\text{ÍÜ[g][\&q s}$ $\text{^a«sVLji,R\text{¶}VV}$ ILi[^a«sWÍÁ $\text{úxms}^{3/4}\text{»}^{1/2}[\text{ùNRP}$ $\text{»R}^{1/2}\text{íÁV}$
Used New Testament	३३१ वक्त	७० वक्त	
Directory of New Testament Theology, Volume 3 , Colin Brown	मुनार्थ परिभाषा " जमा करिए, गिनती करीए, कहीए, बुद्धि विवेकि, यर्थाथ, आत्मिक"	" वह जो जान बूज कर कहा गया हो; एक शब्द, अक उच्चारण, अक पदार्थ, बृर्तान्त, घटना" ।	लोगोस नए नियम मे मसीही धोशणा को अकसर निर्देश देता हे कि यह पूर्णना रुप से बताता है। रेहमा शब्दों को अलग रुप से बताता हे। मनुष्य को हर गलत शब्द को जो उस ने कहा हे, उस का हिसाब देना होग (मत्ती २७:१४) स्वर्ग लोक के लोग मुँह पर व लान वाही बातें कहने है। (२ कुरि १:२४)
Vine's Expository Dictionary of new testament words, Vine	मूलार्थ परिभाषा: "विचारों का भावा। किसी बस्तु का केवल नामात्र नही (a) धारना था वि विचार का समावेश करना (b) एक कहावत था एक क थन"	"जो कहा गया ता उच्चारण कि.या गया हो किसी उपदेशा में, को बतलाना।" लोगोस और रेहमा के भद	" रेहमा का अभिप्राच (जो लोगोस से फर्क है) जिसे आत्मा कि तववा को लेने में नि देश में उद्धारण दिया हे जो वचन (रेहमा) हे, परमेश्वर का (इफि ६:१७) यहाँ संदर्भ पूरी बाईबल से नहीं हे परन्तु पवित्रशास्त्र को व्यक्तिगत रुप से जो आत्मा हमारी यादाशत तक पहुँचाता है, तावि हम इसे ज़रूरत के समय इस्तेमाल कर सकें, पविप्रशास्त्र का दिमाग से संग्रह करना एक पूर्वाकाक्षित है।"

रेहमा कि शक्ति को समझना : "कहा गया वचन"

	रेहमा के प्रकार	बाइबल के उदाहरण
सब से अधिक जिवना दे:	मैं वह बोलता हूँ जो इस वक्त परमेश्वर उस के ज़रीए मुझ से बोल रहा है (मतलब मेरा रेहमा उस के रेहमा)	"...ये बातें (रेहमा) जो मैं तुम से कहता हूँ अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम से आता है) करता है।" (यूहन्ना १४:१०)
		".....जे वचन (रेहमा) तूने मुझे दिये, मैं ने उन्हें उनको पहेचा दिये" (यूहन्ना १७:८)
		(आगे देखिए लूका १:३८,५:५; यूहन्ना ५:१९,२०,३०; ८:२६, २८,३८; ३:३४;६:६३; प्रेरितो के काम १०:१३; २ कुरिंथियों १२:४; इफीसियों ६:१७; इब्रानियों ११:३ और १२:१९)।
कुछ हद तक जीवन दे:	परमेश्वर के लिखित वचन	"जाओ, मन्दिर में खड़े होकर इस को बोलना। जीवन की सब बातें हम लोगों को सुनाओ।" (प्रेरितों ५:२०)
अपक्षपाती	अपनी ओर से बोलना	"....हम एक बात रिहमा) दोया तीन गवाहों के मुँह से निश्चित की जाए। (मत्ती १८:१६)
कुछ हद तक हानिकारक	शैतान का साधारण.	"....जोजो निकम्मी बातें (रहमा) शब्द कहना जो, मैं मनुष्य कहेंगे, म्याय के दिन वे पहले सुना था। हर एक उस बात का लेखा देरे। (मत्ती १२:३६)
सब से ज्यादा हानीकारक	वह कहता जो शैतात इय	".....हम ने इसको मूसा और समाय हमारे मन में कह परमेश्वर के विरोद में निन्दा कि रहा है। बातें (रेहमा) करते सुन है" वझझझझझझझझझझ ६:११)
		"जीभ भी एक आग है..... बरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।" (याकुब ३:६)

हमारा लक्ष्य: जितना हो सके उतवा जीवन को बढ़ायों, वह कह के जो परमेश्वर इस वक्त हम से कह रहा है, उस आत्मा के द्वारा जो सर्वदा हमारे साथ रहती है (यूहन्ना १४:१०,१६)

मैं कर र साल विफलता पूर्वक कोशिश करता रहा कि मुसे लोगोस और रेहमा में कोई फर्क भल जाए। मैं ने देखा कि लोगोस का इस्तेमाल "कहे हुए शब्दों" को लिए किया जाता था, जो मुझे सिखाया गाय था कि रेहमा है। आखिर कार, एक दिन मैं ने ध्यान दिया कि इस का विपरित भी सही नहीं था कि रेहमा का कभी भी इस्तेमाल "लिखित शब्दों" के संदर्भ में किया गाय हा। मैंने सारे नए नियम मे ७० बार अप्योंग में लाए गए रेहमा शब्दों को ध्यान से आध्यन किया है और यद देखा है कि एक बार भी रेहमा को लिखित शब्द के अर्थात में नही दर्शाया गया जैसे मैंने काफी देर बाद डॉ. फौट शुल्टज़ कि स्तंत्र निब्द का आध्यय न करने पर मैंने यह सीखा कि लोगोस बतचीत के सारे रुपों का आंतर्गत है, जिन विचारों के आने से लोकर उन को व्यक्त करने तक, भाषा को व्यक्त करने कि विदी के बारे में सोचने से लेकर जब तक कि सुनाया न जाए और ग्रहण करने वाला उसे ग्रहण न करले। रेहमा, दूसरी तरफ उस का मतलब "कह देने" से या सचमुच व्यक्त करने सेहै। हो सकता है आप नए तियम में रेहमा कहाँ कहाँ पाया जाता है वह देखना चाहै और उस के महत्व के बारे में कुछ दिप्पणी लिखना चाहें। संदर्श निमत तरहा से है:

इन ५४ अंशे मे रेहमा को शब्द का रुप दिया गया है:

मत्ती ४:४	यूहन्ना १२:४८	इब्रा १:३	यूहन्ना ८:४७	रोमि
१०:१८				
मत्ती १८:१६	यूहन्ना १५:७	इब्रा ११:३	यूहन्ना १२:४७	३ कुरि
१३:१				
मत्ती २७:१४	प्ररित २:१४	१पत १:२५(२)	यूहन्ना १४:१०	इफी
६:१७				
लुका १:३८	प्ररित ६:११	यहुदा १:१७	यूहन्ना १७:८	इब्रा
६:५				
लुका ३:२	प्ररित १०:२२	मत्ती १२:३६	प्ररित ५:२०	इब्रा
१२:१९				
लुका ५:५	प्ररित ११:१६	मत्ती २६:७५	प्ररित ६:१३	२ पत ३:२
लुका २४:८	प्ररित १६:३८	मरकुस १४:७२	प्ररित १०:३७	

प्रकाशित १७:१७

यूहन्ना ३:३४ ५:४७	प्ररित २८:२५	लूका २:२९	प्ररित ११:१४	यूहन्ना
यूहन्ना ६:६३ ६:६८	रोम १०:१७	लूका ४:४	प्ररित १३:४२	यूहन्ना
यूहन्ना ८:२०	२ कुरि १२:४	लूका २०:२६	प्ररित २६:२५	
यूहन्ना १०:२१	इफी ५:२६	लूका २४:११	रोमि १०:८(२)	

निम्नि दिये गए ८ संदर्भों में रेहमा को कहना के रूप में दर्शाया गया है।

मरकुस १:३२	लूका १:६५
लूका २:१७	लूका २:५०
लूका २:५१	लूका ९:४५ (२)
लूका ७:१	लूका १८:३४

निम्न तीन संदर्भों में रेहमा को "वस्तु" के रूप में दर्शाया गया है।

लूका २:१५	लूका २:१९	प्रेरित ५:३२
-----------	-----------	--------------

आतिरिक्त पद्ध:

मत्ती ५:११ : "छझूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरेध में सब प्रकार की बुरीबाते कहें"
(यथाशब्द, हर बुराई रेहमा है)

लूका १:३७ : "जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभवरहित नहीं होता।"
(यथाशब्द, हर शब्द नहीं)

लोगोस को रेहमा मे बदलना:

मैं लोगोस के रेहमा मे नहीं बदल सकता। यह पवित्र आत्मा कि शक्ति से होता है। फिर भी, मैं वचन और आत्मा के संमुख अपने आप को संतुलित रखता हूँ। इस तरह, परमेश्वर मुझे से बात चीत करते हुए क्या कह रहा है, सुनने को मुख्य अवसर देता हूँ। इस तरह मुझे हिवय प्रेरणा मिलती है जब भी मैं वचन पर ध्यान लगाता हूँ तो।

परमेश्वर लोगोस के द्वारा हम से बात करने कि इच्छा व्यक्त करता है। हमारे मन कि आँखे खोलने के लिए वह हमें अत्मिक दैवी प्रेरणा देना चाहता है (इफि १:१७,१८), ताकी हमारे मन प्रचलित हो (लुका २४) वह चाहता है कि लोगोस साछारज शब्दों से निकल कर स्वयं मन कि दैवी प्रेरणा और दिङ्ग विश्वास में बदल जाए, जब हम वचन को प्राकर प्रार्थता करते हैं। और होने दें कि आत्म हमारे मनो में वास करे।

लोगोस विश्वास देने वाली रेहमा के से बन जाता है। मैं उस के बदलाव को कैसे महसुस करूँ।

शुरु में अपती अत्मा कि पाँचों इंद्रियों को खोल कर उन में लोगोस को भर तूँ। यह परमेश्वर को च्यादा अवकाश देगा, ताकी वह दैनी प्रेरणा मेरे मन में डाल सके। निम्न दिए गए क्रम मुझे मुख्य स्थात पर रखेंगे जहाँ से मैं परमेश्वर कि दैवी प्रेरणा दा सेकूँ।

मन के कान : जब मैं पढ़ूँ ली अपना सारा ध्यान परमेश्वर के वचन पर लगाऊँ। मुझे अपने कानों को उस कि और झुकाता है और एक ध्यान देने वाली स्थिती में अपने आप को रखना है, ताकी मैं सुन सुकूँ कि इस वचन के द्वारा वह मुझे से क्या कहना चाहता है।

मन कि आँखे: मै अपनी कतपना को शुद्ध करता हूँ, जान बूझ कर अपने मन कि आँखो को परमेश्वर के आधीन सौंप कर कि वह मेरी आँखों को हमेशगी कि सच्चाई से भर दे, जो मैं वचन में पढ़ रहा हूँ।

मन का दिमाग: मैंन जो वचन और कलपना पाई है, उसे मैं अपने मन के

बीचों बीच रखता हूँ। मैं जीवन के किसीपि कार्यों को, शक को या और किसी भी चीज़ को उस के वचन जो मेरे मन में हैं, निकालने नहीं देता।

मन कि उच्छा: मैं केवल वही बाते करना चाहूँगा, जिन्हे मैं बाईबल का अध्ययन करते समय वचन के रूप में यीशु कालप्नाऊक तौर से पाए है। इस के अलावा मैं कुछ वहीं बोलूँगा।

मन कि भावताएँ: गहराई में बसी मेरी भाँवनाएं मचलने लगती हैं जब दूसरी इंद्रियों मे आत्मा भर आती है और मैं कार्य करने लग जाता हूँ। जब आत्मा कि साक्षी प्रमाणित करती है और वचन मेरे मन कि गहराई तक पहुँचता है तब सें शक्ति को अनुभव करता हूँ।

जब मैं प्रार्थन पूर्वक अपनी पाँचों इंद्रियों को लोगोस से भरता हूँ, तो मैं परमेश्वर को ज्यादा से ज्यादा अवसर देता हूँ कि वह मेरे मन में उतरे और दैवी प्रेरणा प्रधान करे। संक्षिप्त चित्र जो आगे के पन्ने पर दिया गया है वह इस बात कि सच्चाई को दोहराता है। पवित्रवचन कि पदों से चित्र कि रिक्त लकीरों को भरीए। रोमियों १०:१७ पर ध्यान दीजिए, "विश्वास सुनने से (अकोए) और सुनना मसीह के वचन (रेहमा) ठसे होता है।

अकोए का मतलब है "कान लगा कर सुनना" (एबिंगडनस स्ट्रॉंगस ऐकहासितीव कॉनकार्डनस)

इस प्रकार, रोमियो १०:१७ को विस्तृत और स्वैच्छिक करें तो कुछ इस तरह पढ़ेंगे :

यानेकि विश्वास सुनने से होता है, याने कि जब हम परमेश्वर के साथ श्रोतागँ बनें, उस कि पवित्र आत्मा के द्वारा, और जब मेरे कानों में हर एक शब्द जो वह कह रहा है सुनाई पड़े।

गुरु स्वतंत्र निबंध रेहमा और लोगोस कि तुल्लात्मन विध्या" डां.फॉट शुलटड द्वारा लिखी हुई, को आप मंगा सकते हैं परमेश्वर से बंधुत्व मिनिस्ट्रीड से। वह इस विषय पर एक पण्डितोचित आचरण है।

रेहमा के असर

रेहमा परमेश्वर का वचन है, उस के मुख से कहा हुआ, जो उस के नतीजे देता है।

पढ़ीए यशायाह ५५:११ :

"उसी प्रकार से मेरा वचन थी होगा जो मेरे मुख से निकलता है, वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा।" (विशिष्ट इच्छा जोड़ा गया)।

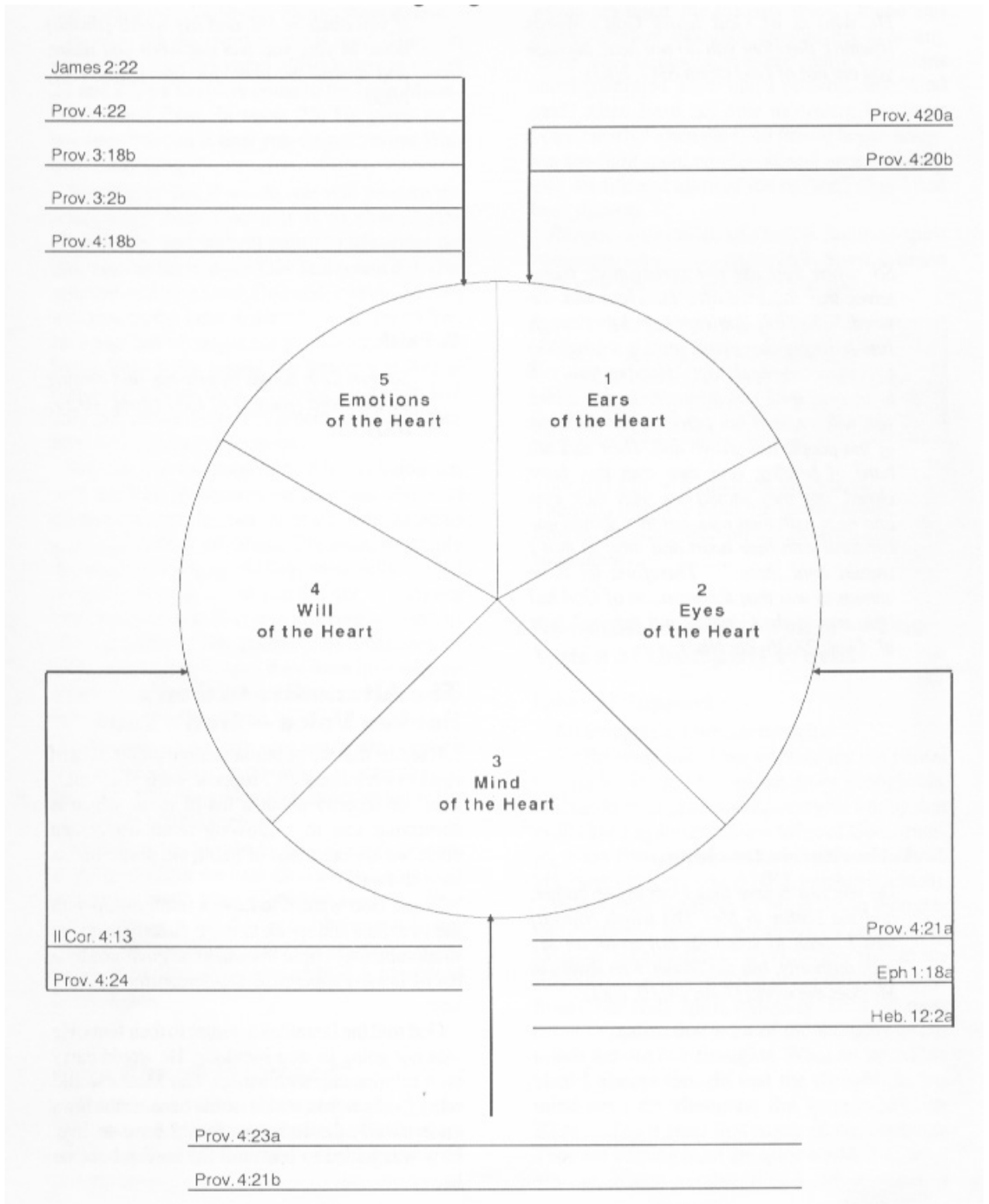
लोगोस पूरी बाईबल है। रेहमा परमेश्वर का वचन है जो उस के मुख से कहा गया है तत्काल समय एवं स्थिति के लिए। हमें रेहमा और लोगोस दोनों को समझना है और अनुभव भी करना है। रेहमा

का इस्तेमाल नए नियम में लगभग ७० बार हुआ। वह इन निम्नलिखित वचनों में मिलता है।

हर एक इन रेहमा के इस्तेमाल के वचनों को पढ़िये और जो शक्तिशाली असर होता है उस पर ध्यान दें और अपने विचारों को लिखीए।

१. पैदावार - शमौन ने उस को उत्तर दिया, "हे स्वामी, हम ने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से (रेहमा) जाल डालूँगा " (लुका ५:५)
२. असरदार मंत्रित्व - "क्यों कि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता(रेहमा) है; क्यों कि वहआत्मा नाप नाप कर नीहं देता।" (यूहन्ना ३:३४)
३. जीवन - "आत्मा तो जीवन दायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैंने तुम से कहीं है(रेहमा) वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।" (यूहन्ना ६:६३)

लोगोस को रेहमा में बदलना



४. पिशतेदारी - जो परमेश्वर से होग है, वह परमेश्वर कि बाते (रेहमा) सुनता है और तुम इस लिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो। "यूहन्ना ८:४७)

जब वे आपस में एक मन नहुए तो पौतुस की इस बात के कहने पर चले गए: पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों सेठीक ही कहा, जाकर इन लोगों से कह, कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे, परन्तु न बूझोगे, क्योंकि इन लोगों का मन मोटा और उनके कान भारी हो गआ हैं, और उन्होंने अपनी आँखें कद की हैं, ऐसा न हो कि वे क भी आँखों से देखें और कानों से सु नें और मन से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ अतः तुम जानो कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई हैं और वे सुनेंगे ।"(प्रेरितों २८:२५-२८)

याकूब २:२२

तीति ४:२२

तीति ३:१८(b)

तीति ४:२०(a)

तीति ३:२(b)

तीति ४:२०(b)

तीति ४:१८(b)

मन कि भावनाएँ

मन के कान

मन कि इच्छा

मन कि आँखें

मन का दिमाग

कुरिंथि ४:१३

तीति ४:२(a)

तीति ४:२४

इफि १:१८(a)

इब्रा १२:२(a)

तीति ४:२३(a)

तीति ४:२१ (b)

५. **अधिकार रूम्बन्धी शिक्षा** - क्या कू विश्वास नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में? ये बातें, (रेहमा) जे मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। "(यूहन्ना १४:१०)
६. **इच्छा पूर्ती** - " यदि तुम में बने रहो और मेरा वचन (रेहमा) में बबा रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। (यूहन्ना १५:७)
७. **विश्वास** - " अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन (रेहमा) से होता है।" (रोमियों १०:१७)

परमेश्वर कि बोली हुई आवाज़ का विकल्प - परमेश्वर का धर्मशास्त्र

ऐसा लगता है कि हम मनुष्यों को रिश्तेदारी में नियमों कि सूची अधिक पसन्द है। मुझे लगता है कि हमें नियमों कि सूची से एक दृढ़ता मिलती है या सुरक्षा, जो एक फलती रिश्तेदारी में निदारत है और क्यों कि हम आदतों के प्राणी हैं, हमें बदलाव से ज्यादा आदतें पसन्द हैं।

जब परमेश्वर इस्राएलियों से रिश्ता रखना चाहता था, और पहाड़ी पर से उन से सीधी बात चीत करता था, उन्होंने ने इस के बचाए नियमों को पसन्द किया। कृपया अभी पढ़ीए व्यवस्थाविवरण ५:२२-३१।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को नम्बोंमें वापस जाने को कहा। वह बोलन बन्द नहीं करना चाहता था। वह मूसा से रिश्ता कायम रखना चाहता था और मूसा परमेश्वर के वचन दौहराएगा जो धर्मशास्त्र बन गए जिन के तहत इस्राएलियों को रहना था। जब तक कि बोझ भारी न हुआ, धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र जुड़ने लगा।

इब्रानियों के लेखक ने ऐसी परस्थिती के बारे में इब्रानियों १२:१८-२९ में लिखा है। कृपया अभी उसे पढ़ीए।

आयत १९ में रेहमा शब्द अस्तेमाल हुआ है। वे उस के आवाज़ सुनना नहीं चाहते थे। आयत २२ और २३ में, हम भी पवित्र पहाड़, सिच्चोन के पहाड़ के पास आए हैं। आयत २५ में वह हमें चेतावनी देता है, "सावधान रहो, और उस कहनेवाते से मुँहन फेरो"।

क्या? क्योंकि, अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर से रिश्ता खो बैठेंगे जो मसीहत का प्रतीक है और हम ऐसे जीवन में लोट जाएंगे जो न्याय के अंतर्गत होगी, जैसे कि पुराने नियम में। हमारा मंत्री परमेश्वर से सुनेगा और जैसा कि मूसा ने किया था। हमें धर्मशास्त्र देगा जिस के तहत हमें जीना पड़ेगा। यह कितने दुःख कि बात है कि हम उस अवसर को रवो बैठते हैं कि हम उस पवित्र आत्मा कोपा सकें जो हमारे मनों में रहता है और जिस से बातचीत कर सकते हैं। बल्की हम नए वियम के धर्मशास्त्रों को चुन कर जीने हे और इस तरहा हम न्याय के पानन करने वाले या फरीसी बन जाते हैं।

जिस ने भी मेरे साथ मिलकर ऐसा करने कि कोशीश कि वह जान गए कि यह कितना भीरी है। भार भारी हो जाता है बजाए इस के कि हल्का हो, जैसा कि यीशु ने कहा था। जैसे जैसे मसीहत में बढ़ते हैं तो वह यह बात जान जाता है कि उसे कई धर्मशास्त्रों का पालन करना है, खुछ समय बाद यह सूची इतनी लम्बी हो जाती है कि उसे संभालना सुश्किल हो जाता है। पसन्द यह रह जाती है कि आगे बढ़ना छोड़ दो या मसीहत छोड़ दो यीशु के समय के फरीसीयों के पास ६१३ न्याय थो जो वे इस्राएल पर लागू करते थे। यीशु ने उन्हें डाँटा कि लोगों पर इतना भार न डालो।

मैं यह जानना हूँ कि जब परमेश्वर कि धधकती आग जल रही होती है तो हर वह चीज़ जिसे हिलना होता है, हिल जाती है, वह चीज़ जो सब से ज्यादा जीवन प्रदान करती है और शक्ति प्रदान करती है, वह उस कि अन्दरूणी आवाज है। वह मुझे वचाता है।

इसकारण, इस्राणलीयों कि तरह हमें भी एक तिर्णय लेना है, या तो हम परमेश्वर कि आवाज़ सुने और उस से रिश्ता कायम रखें, या हम उन नए नियम के धर्मशास्त्रो तले रहें जिन्हें हम ने अविशकार किय है। मैं विश्वास करता हूँ कि यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर कि आवज़ को पहचाने और उस में जीवन व्यतीत करें ताकी जो रिश्ता है वह केवल एक धर्म मात्र बन कर न रह जाए।

रेहमा को कैसे पहचाना जाए

हो सकता है कि पश्चिमी मसीहीयों को जो बात सब से ज्यादा परेशात करती है, वह यह की "मैं परमेश्वर कि आवाड़ अपने कन में कैसे पहचानूँगाँ?" अब हम इस का जवाब देने कि कोशिश करते हैं।

मैं कई साल तक बकार में परमेश्वर कि आवाच को अपने मन में सुनने के लिए तरसता रहा, पर जो चीज़ मेरे हाथ लगी वह कई तरह के विचार थे। मं कोई आवाज़ न सुन सका / यहीं पर कई मसीही निराश हो जाते हैं/ जब मैंने परमेश्वर कि अन्दरूणी आवाज़ को सफाई पहचाना ही नहीं जो मैं कैसे कह सकता हूँ कि " परमेश्वर ने कहा?" तब परमेश्वर ने मेरे जीवन में सहीलोगों को लाए जिस से मैं दैवी प्रेरणा पाने लगा और समझ ने लगा और उन्होंने मुझे वह "दीखाया" जो अब तक गायब था।

रेहमा, जो परमेश्वर कि आपाज़ है, वह आत्मा से आत्मा की बातचीत है - जहां पवित्र आत्मा, आपकी आत्मा से मिलती है और आप से सीछे बात चीत करती है।

रेहमा का आर्थ है: स्वैच्छि क रूप से विचार, आभिप्राय, वचन, महसुस करना या कलपना।

मेरे दिमाग के विचार विभाजन हैं।
मेर मन के विचार स्वैच्छिक हैं।

बाईबल पर ध्यान लगाने का मतलब है कि विभाजत एंव स्वैच्छिकता को जोड़ना।

स्वैच्छिक विचार - आत्मा कि दुनिया कि आवाज़

बाईबल का पक्ष

१. हर विचार हमारा अपना विचार नहीं है।

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शरीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है। इस लिए हम फलपनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहचान के विरुद्ध में उठती है खण्डन करते है, और हर एक भावना को कैद करके

मसीह का आज्ञाकारी बना देने है। (२कुरि १०:४,५ ज़ोर दियागाया)

हमें कुछ विचारों को क्यों कैद करता है? यह इस कारण नहीं है कि यह शैतान से या बूरी आत्मा से उत्पन्न होते है? अगर ऐसा है तो, हम क्या समझें कि हमारे बाकी के विचार कहाँ से आते हैं? यकीनन पवित्र आत्मा से। इस कारण हमें यह समझ लेना है कि हमारे कई विचार जो दिमाग में आते हैं, हमारा अपने विचार

नहीं हैं। क्या हि बढ़िया विचार है। मैं तो यह सोचता था कि जो मेरे दिमाग में विचार हैं वह मेरे विचार हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि, बाईबल यह सफाई से बताती है कि कई ऐसे नहीं हैं। वे आत्मिक दुनिया से आते हैं। अप ने देखा, मैं वह हूँ जिसे दुसरे भरने हैं। मैं एक वर्तन हूँ, एक शाखा हूँ जिसे अगूर कि लता में कलम किया गया है, मैं अकेला नहीं हूँ, परन्तु कोई मेरे आंदर बहता है। मं इस बात को भूल जाता हूँ और यह सोचता हूँ कि यह मैं जी रहा हूँ, जब कि परमेश्वर ने यह बिलकुल साफ कर दिया है कि अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है। (गलतीयों २:२०)

इस कारण मैं इस बात को मान लेता हूँ कि स्वैच्छिक विचार, पहले मैं ने कभी वहीं सोचा, मेरे दिमाग से वहीं आते हैं। वे या तो मेर मन से आते हैं, तो पवित्र आत्मा मेरे मन में हैं। था एक दृष्ट आत्मा जो अपने विचार मुझ पर थोपना चाहग है।

यह परिक्षण करने के कई रास्ते है कि जो स्वौधिक विचार आप के मन में है वह, पवित्र आत्मा के है. जो आप के मन के साथ जुड़ गई, पा या दृष्ट आत्मा के है जो आप के खिलाफ आक्रमण करना चाहती है। इस बारे में मैं आप को बाद में एक पूरा पाठ दूँगा। किन्तु इस समय मैं कुध परिक्षण दे रहा हूँ चिन का इस्तेमाल में कर रहा हूँ। एक यह कि इस स्वैच्छिक बहाव के विचार आप समझें और जान लें कि यह शैतान के तामों तेहत या पवित्र आत्मा के नामों तैहत आने हैं। बाईबल के मुताबिक, एक आदमी का नाम उस का स्वभाव बताता है।

शैतान	पवित्र आत्मा
दोष लगाने वाला	उपदेशक
विरोधी	आश्वासन देने वाला
झूठा	शिक्षक
विनाशक	उत्पादक
निन्दा करने वाला	दैवी प्रेमी

चोर

चंगा करने वाला

खूनी

जीवन देने वाला

कोई भी स्वैच्छिक विचार जो स्वभाव से बायें ओर के में आता है वह शैतान कि ओर से है। कोई स्वैच्छिक विचार जो दाहीनी ओर के पहले खण्ड से आता है वह पवित्र आत्मा कि ओर से है।

बिलकुल, आप हमेशा स्वैच्छिक बहाव को बाईबल से तुलना करें।

और यह थी कि आप अपने विचारों को लिख कर अपने आत्मिक चरवहे को दिजीए जो इस बात कि पृष्टी करेगा कि वह परमेश्वर कि ओर से है या नहीं।

और आखिर में, मैं उस नीति को ध्यान से देखता हूँ जिसे मैंने दूढ़ निकाला है कि " अन्दरुणी बहाव उस कल्पना से बहता है जिसे मैं अपनी आँखों के सामने रखता हूँ।" इस कारण मैं अपने आप से पूछता हूँ कि क्या मेरी आँखें यीशु पर केंद्रीत थीं, जब मैं इस बहाव में बह रहा था। अगर ऐसा है तो, मैं देखता हूँ कि ९५% वक्त स्वैच्छिक बहाव परमेश्वर कि ओल से है। हमें यह बात को माव लेना है कि हम हर्मशा गलती थीं के लिए भेद्य है। और यह ठीक है। हम अपनी गलतियों का जश्न मना सकते हैं; उन पर हूँस सकते हैं और उन से सीख सकते हैं।

२. नाबा - इब्रानियों में भविष्यवक्ता के लिए शब्द प्रयोग में लाते हैं।

नाबा, इब्रानियों में इस का मतलब है " भविष्यवाणी करना", असल में इस का मतलब है " बुलबुले उठाना " इस कारण जब भी भविष्यवक्ता जब भविष्यवाणी के बहाव कि ओर झुकता तो वह उस ओर झुकता जो उस के आंदर बुलबूला रह था। दूसरे शब्दों में, वह स्वैच्छिक बहाव कि ओर झुकता जो उस ने पहचाना कि परमेश्वर कि आवाज़ है जो उस के आन्दर है।

आंगे के पृष्ठ पर सच्ची भविष्यवाणी और झूठी भविष्यवाणी का जो आंतर है वह रूपांकित किया गया है। उसे ध्यान से पढ़िये।

३. पागा - भाग्य से मुठभेड़

इब्रानियों में पागा का अर्थ है मध्यास्थता, जिस काअसती मतलब है, "भाग्य से विचार आना या प्रज्वलित होना" ता "एक अचानक कटाव"। उत्पत्ति २८:११ एक उद्धाहरण है अचानक कटाव की तरह पागा को इस्तेमाल करने का। कृपया इस वक्त पढ़िये। याकूब जब यात्रा कर रहा था तो किसी स्थान में पड़चकर, रात

वहीं बिताने का "विचार किया"

अगर हम इस पागा के मूला र्थक परिभाषा को कटाव के विचार से जोड़े ते हम बाईबल के सुन्दर आत्मा से आत्मा कि बातचीत के उद्धाहचण को पाएंगे जिस से कि हर मसीह परिचित है। क्या आप उस पल को याद कर सकते हैं कि जब आप को आचानक ऐसा लगा हो कि आप को किसी के लिए प्रार्थना करनी है। आप उन के बारे में नहीं सोच रहे थे, विचार आचानक आप के मन में आया। यह पागा था। आप रेहमा अनुभव कर रहे थे, परमेश्वर कि आवाज़ को एक "अचानक विचार" जो हमारे दिमाग दिमाग में आता है, जो सामान्य तौर से, विचारात्मक तौर से नहीं बहता, परन्तु हमारे मनो में अचानक आता है, परमेश्वर कि ओर से विचार, जो आप के मन को प्रज्वलित कर दे और दिमागों में स्वैच्छिक विचार के रूप में पंजीकृत हो जाता है।

४. विश्वासी के मन में पवित्र आत्मा कि नदी।

पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन हैं, यीशु खड़ा हुआ है और पुकार कर कहा, "यदी कोई व्यासा हो तो मेरे पास आए और पाँ। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आता है, उसके हुदय में से जीवन के जल की वदीयाँ वह निकलेंगी। उस ने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे, क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महीमा को न पहुँचा था। (यूहन्ना ७:३७-३९)

अब यीशु महिमा में आम्तिक चुका है और पवित्र आत्मा उसे मिल चुकी है। यीशु ने कहा वह हमारे अन्दर एक नदी के समान होगा। इस कारण जब हम उस बुल बुले कि ओर ध्यान लगाते हैं, तो हम उस पवित्र आत्मा कि ओर ध्यान

लगाते हैं, जो हमारे अन्दर हैं। यह केवल एक धर्मशास्त्र नहीं कुछ बढ़ कर है। यह सचमुच का अनुभव है। हमारे अन्दर एक नहीं है, और हम उस पर ध्यान लगा सकते हैं। यह बुल बुता त्मक परिश्रमरहित जो बहाव है, वह पवित्र अत्मा है। यह इतना आसान है कि एक बल्या भी कर सकता है। और इस बात को सिद्ध करने से यह हमारी बदद करता है, क्यों कि यीशु ने कहा कि अगर हमें क्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना है तो हमें बच्चों के समान बनना है, अगर हम मसीहत को एक बच्चे के लिए मुश्किल कर देने हैं तो हम गलत कर रहे हैं

सच्ची और झूठी भविष्यवाणी

	सच्ची भविष्यवाणी	झूठी भविष्यवाणी
जड़ इब्रानि शब्द	नाबा	ज़ीयाद
मूलार्थक परिभाषा	"बुल बुलाना"	"उबलना"
विस्तृत अर्थ	उस कि भविष्या वाणी बुल वहअपनी भविष्यवाणी	उस कि भविष्य वाणी बुलती देता है।
अनुरूपी सहारा	अधिकता वह अपनी भविष्यवाणी से बह उठती है। को (पकाता) खुदवनाता है।	वह अपनी भविष्यवाणी वहअपनी भविष्यवाणी बुलती देता
Inner poise	उस कि भविष्या वाणी बुल उस कि भविष्य वाणी	विस्तृत अर्थ उस कि भविष्या वाणी बुल वहअपनी भविष्यवाणी को उस कि भविष्य वाणी बुलती देता है। अधिकता वह अपनी भविष्यवाणी से बह उठती है। को (पकाता) खुदवनाता है। अनुरूपी सहारा आँखें यीशु पर लगाईए और आँखें अपनी इच्छा कि ओर स्वैच्छिक बहाव कि ओर लगाना ध्यान और वचन या लगाईए। कलपना का विचार करना।

१. उत्पादक चमक का अनुभव:

उत्पादक चमक कहाँ से आती हैं? मुझे चकीन है कि हम में से हर किसी ने मुश्किल परिस्थितियों का सामना किया है और एक दम से उत्पादक चमक के साथ उस परेशानी का हम भी मिला है। यह चमक कहाँ से आई? क्या यह आपकी महान्ता थी जो अखिरकार बहार आई? या यह उत्पादक कि रचना थी जो बाहार आने के लिए रहता है? मुझे लगता है कि यह परम प्रधान परमेश्वर कि देता हूँ, जो मेरे अन्दर वास करता है।

२. विनाशकारक दमक का अनुभव:

विनाशकारक और बुरे विचार कहाँ से पैदा होते हैं, जब आप उन के बारे में सोच नहीं रहे होते हैं, वह अचानक आप के दिमाग में चमक उठते हैं अपना एक निजी जीवन लेकर ? मुझे पूरा यकीन है कि यह उस विनाशकर्ता कि ओर से आते हैं जो बुराई के निचारों से मुझे आकर्षण करता रहता है। इसकारण मैं इन बुरे विचारों के लिए जे मेरे दिमागमे आते हैं, शर्मिन्दा नहीं हूँ, ना हि मैं कीर्ति लेता हूँ उन उत्पादक विचारों कि जो मेरे अन्दर उछल उठते हैं। मैं वह हूँ, जिस में कोई और बहता है। मैं कीर्ति उसी को देता हूँ जो किर्ति के योग्य है, या तो शैतान या पवित्र आत्मा।

३. "मृत्यु के बाद जीवन" कि साक्षियों से मुकाबला

"मृत्यु के बाद जीवन" कि पुस्तकों के मुकाबलों में हम आत्मा से आत्मा कि बातचीत क्या है उस की साक्षी देखते हैं। यह हमें यीशु को बात करते हुए, या स्कर्ग दूत को बात

२२

करते हुए बताती है। जाहे उन्होंने आवाज़ न जुनीह परन्तु वे अकदम जान जाते हैं कि अन्दर क्या कहा गया है। उन्होंने अपनी आत्मा में स्वैच्छिकता, आसानी से विचारों के बहाव जो आत्मा से आत्मा कि बांतचीत है (रेहमा) उसे पाया है।

४. प्राकृति से उदाहरण:

परमेश्वर अकसर आत्मिक सच्चाई को इस शरीरिक दुनिया में प्रतिरूप देता है, इसी कारण यह सारी दुनिया उस की महिमा को बताती है। यह बडत हि दिलचस्प बात है कि यर्दन त्बदी जो इस्राएल में बहती है, पृथ्वी कि गहराईयों से बुलबुलाते हुए निकलती है और देकने हि देखत एक पूर्णता रुप से नदी मे परिवरतित हो जाती है। जैसे कि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर से बलबुलित हो कर वनिकलता है और बहता है, यर्दन नदी पृथ्वी के आंतरभाग से निकलती है और नदी बनकर सीरी ज़मीन पर बैहती है।

विशिष्टताएँ जो परमेश्वर के अंतर्वर्ती विचार आप के मन में आते है उन कि गुणदो बतलाना।

वे आप के विचारों कि तरहा हैं, कोवल इस के कि आप उन्हें मन से आते हुए महसुस करते हो, न कि दिमाग से: वे स्वैच्छिक होते हैं न कि अनुभवी या विशलेषण संम्बंधी

- * वे ऐसे आत्मिक सकते हैं जैसे कि परमेश्वर खुद बात कर रहे हों।
- * वे हल्के और सौम्य होते हैं और अगर आप खुद किसी प्रकार का ज़ोर डालें (जैसे अपने विचार, इच्छा वगैराह) चो वह आयानी से कट जाते हैं।
- * उन कि अपनी अपूर्व संतुष्टी रहेगी, जिस में वे बुद्धिमान होंगे, ज्यादा प्रीय और ज्यादा प्रेरक होंगे, आपके विचारों कि विसबत.
- * वे आप के अंदर एक रकख परिवर्तन लाएंगे, जैसे कि उत्तेजना, दोषसिद्धी, बिश्वास, जीवन, श्रद्धाथुक्त भय, शान्ति।
- * अपनाए जाने पर बे अपने सा थ कि पूर्ण शक्ति आप में भर है आप को उन्हें पूरा करे के लिए, और खुशी से उन्हें करने के लिए।

- * आपकी आत्मिक शक्तियाँ जैसे जैसे वक्त गुज़रता है, शिक्षित हो जाती हैं और आप अकसर और आसानी से परमेश्वर की बातचीत का अनुभव कर सकोगे।
- * याद रखीए: परमेश्वर आप से हर समय बात करता है, और आप उसके विचारों को पाते हैं। जबतक कि आप उन्हें अपने विचारों से अलग न पहचान पाएँ, आप केवल उन सब को जमा कर रहे हैं और उन्हें अपने विचार समाझ बैठे हैं। जब आप उस की आवाज़ को पहचाने कि कोशिश करते हैं तो आप यह सीख जाते हैं कि स्वैच्छिक विचारों को कैसे अलग किया जाए जो उस की ओर से आते हैं और विभाजनीए विचार जो आप के अपने दिमाग से आते हैं।

हम किस को प्रार्थना करें ?

मुझ से यह पूछा गया, और मैं ने परमेश्वर से पूछा कि हम किस को प्रार्थना करें क्या वह पिता है या पुत्र? परिभाषानुसार, मैं समझता हूँ कि हमें पिता से प्रार्थना करनी चाहिए, पुत्र के ज़रीए, पवित्र आत्मा की कार्यशीलता से / याने कि पूरे त्रीमूर्ती की प्रार्थना में शामिल हैं।

दूसरी तरफ, पंद्रहवें पाठ में यूहन्ना हमें मसीह में बने रहने को या उस में जीवित रहने को कहता है। अनुभव करने परमुझे यह पता चलता है। कि यीशु मे एक भाग जीने से उस से बातचीत करना ज़रूरी है और जब मैं परमेश्वर की कल्पना करना चाहता हूँ तो उसी की छवि मेरे सामने आती है (कुल १:१५)। अन्वेषण करने पर मुझे यह पता चलता है कि

जब मैं अधिकार के साथ प्रार्थना करता हूँ तो मैं पितृ को निवेदन करता हूँ, और जब नज़दीकता और दोस्ती बनानी रहती है तो मैं यीशु से बात करना हूँ। जब एक समुह प्रार्थना सभा हो रही हो, या कक्षा की शुरुआत करने जा रहा होता हूँ। तो मैं पवित्र आत्मा से बोलता हूँ, उसे अमंत्रित करते हुए कि वह हमारे बीच में उपस्थित हो।

मैंने परमेश्वर से इस बारे में पूछा और उस ने इस बात की पूर्ती की कि यह बहुत ज़रूरी है कि हम उस से प्रार्थना करें, पुत्र के द्वारा, पवित्र आत्मा की

कार्यशीलतात्रे। उस ने यह भी कहा कि क्यों कि तीनों एक है, वह मेरी प्रार्थना को उस वक्त भी आदर करेगा, जब मैं यीशु से बात कर रहा हूँ। यीशु वही बोलता है जो परमेश्वर ने कहा है (यूहन्ना ५:१९,२०)

असलमें, अगर पहला यूहन्ना १:३ या दूसरा कुरिंथियों १३:१४ को ध्यान दें, तो हमें पना चलना है कि बाईबल हमें बताती है कि हम पिता के साथ, पुत्र के साथ या पवित्र आत्मा के साथ साहचर्य रख सकते हैं।

".....हमारी यह सहभागीता पिता के साथ, और उस के पुत्र यीशु मसीह के साथ है।" (१ यूहन्ना १:३) उच्चारण जोड़ा गया)

"प्रभु यीशु मसीह का अनु ग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सह भागीता, तुम सब के साथ होती रहे।" (२ कुरि १३:१४ यूनानी से लिया गया विस्तृत व्याख्या, उच्चारण जोड़ा गया)

इस कारण मैं विश्वास करता हूँ कि हमारी साहभागीता पिता से, पुत्र से और पवित्र आत्मा से हो सकती है।

प्रार्थना करने समय, मन मे प्रतिमा बिठाना

इस भाग में जहाँ हम प्रतिमा मन में रख कर प्रार्थना करना में आप भयंकर आंतर दृष्टी पाएंगे जिस से आप अपने पत्रचार को शुद्ध कर सकेंगे। खास बात यह है कि प्रार्थना करते समय आप कि नज़र कहीं केंद्रित है, इस से सचेत रहें। निम्नलिखित को ध्यान से देखिए।

".....इस्राएल के धराने में जो कोई आपनी मुरते अपने णन में स्थापित करके, और अपने आधम की ठोकर अपने सामने रखकर भविष्यद्वक्ता के पास आए, उसको मैं यहोवा, उसकी बहुत सी मूरतों के अनुसार ही अर दूँगा। " चहेजकेल १४:४)

यह अक अच्यमबित सच्चाई को हमारे सामने लाता है जो प्रार्थना के अयोग्य विधि को दर्शाता है, जो, मुझे डर है, कि कईयों ने अपनाया है।

जब मैं परमेश्वर के संमुख प्रार्थना करने आऊँ तो एक जीविता बलिदान बन कर । मुझे अपनी इच्छा को मारना है और पूर्णता रूप से परमेश्वर कि इच्छा को समर्पित करना है यह सोच कर कि मैं किस बारे में प्रार्थना करने जा रहा हूँ। अगर यह मेरा विचार नहीं है तो, मुझे परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह उस आत्मा को मुझ में दाले, इस से पहले कि मैं उस विषय के लिए जो मेरे यामने है प्रार्थना करना शुरू करूँ। यदि मैं अपने ही प्रमुख दिशा में बह कर उस विषय के लिए प्रार्थना करूँ जिस के लिए करना चाहता हूँ चो, मेरी यह प्रमुख दिशा परमेश्वर के सिंहासन कि तरफ से आम्तिक रहें उन इशारों से टकरा जाएगी और मुझे यह धोखा हो जाएगा कि परमेश्वर मेरी दिशा से सहमत है जो सच में है या नहीं।

दूसरे शब्दों में, अगर मैं किसी चीज़ के लिए प्रार्थना करूँ और वह चीज़ मेरी कल्पना या विवेक में ज्यादा प्रधान है बजाय परमेश्वर कि कल्पना के, जो जवाब मुझे मिलेगा वह उस चीज़ से होगा बलाए परमेश्वर के। दूसरी तरफ, यदि मेरी कल्पना मेरे विवेक में, परमेश्वर कि ओर ज्यादा प्रधान है, मेरे उस चीज़ से जिस के लिए मैं प्रार्थना करने जा रहा हूँ, तो जवाब मुझे परमेश्वर से मिलेगा, एक शुद्ध दैवी प्रेरणा के रूप में बिना मेरे दूषित विचारों के।

तीति यह है कि अमरुणी बहाव, कल्पना जो मैंने अपनी आँखों के सामने बना रखी है, उस में से बाहर आता है। इस लिए मुझे यह आज्ञा दी गई है कि मैं अपनी आँखें यीशु पर रखूँ। जो मेरे विश्वास का लेखक एवं अंतकर्ता है। इस प्रकार कल्पना शुद्ध होगी।

एक उद्धारण, सिद्ध पुरुष कि कल्पना में धुंधलापन आना और विनाशक दिशा पाना, यह सब बिलाम कि कहाबी, गिनतीयों बाईसवें पाठ में मिलता है। बालाक ने बिलाम के सास अपने कर्मचारीयों भेजे कि वह आकर इस्राएलीयों को शराप दें, जब बिलाम ने परमेश्वर से इस विषय में पूछा तो परमेश्वर ने बड़ी साफ तरीके से कहा, "तू इन के संग मत जा, उन लो गों को शाप मत दे, क्यों कि वे आशीष के भागी हो चुके हैं। (गिनती २२:१२)

बालाक वे फिर से कर्मचारीयों को भेजा, पहले से ज्यादा जानकार, हय कह कर कि बालाक उसे धन से सम्मानित करेगा और वह जो भू कहेंगा वह उसे पूरा करेगा बशर्ते कि वह इस्राएलीयों को शाप दे। यह साफ है कि बिलाम के दिमाग में

सोना, चाँदी छा गया होगा क्योंकि उस ने कहा, "चाहे बालाक अपने घर को सोने चाँदी से भर कर मुझे देदे तौभी मैं कुछ नहीं कर सकता.....(गिनती २२:१८)

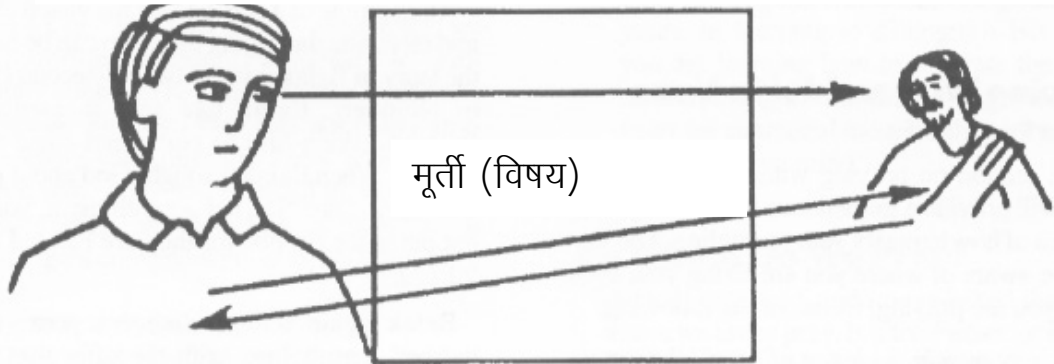
फिर भी उस ने उन से रुकने को कहा, यह कहते हुए वि" मैं जान लूँ कि यहोवा मुझ से और क्या कहता है।" म्योंकि वह उस आदर, सोना और धन पाने के लिए उत्तसुक था वह फिर से परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा, इस वक्त एक अशुद्ध मन से। जैसा कि सोचा जा सकता है, परमेश्वर ने उस के मन कि मूर्त के मुताबिक उसे जवाब दिया। उस के कहा: "ठीक है, जाओ," परन्तु, परमेश्वर बिलाम से गुस्सा था(गिनती २२:२२) और उस ने अपने दूत को तलवार देकर भेजा कि उस का रास्ता रोके।

और भी कई उद्धारण हैं जहाँ इस्राएली मन में मूर्त रख कर प्रार्थना करने थे और प्रार्थना के जवाब से उन्हें तकलीफ होती थी। इस्राएली ने परमेश्वर से एक राजा के लिए प्रार्थना की, और हालाँकि वह उन्हें नहीं देना चाहता था, उस ने उनके विलाप के अनुसार दिया। इस्राएली, साँस के लिए लालासा करने लगे, जब वे जंगली स्थान पर थे, और परमेश्वर ने उन्हें दिया, पर उस के साथ उस ने एक विवाशाकरक बिमारी भी भेजी। (भजन १०६ :१४,१५)

अंत में, जब हम प्रार्थना करें एक मूर्ती अपने मन में बिठाकर, तो हमें परमेश्वर से जवाब मिल चो जाता है, परन्तु इस से हम नाश हो जाते हैं। इसलिए, जब हम प्रार्थना करें, हमें पक्का कर लेना है कि हमारी कल्पन शुद्ध है और हम यीशु को देखें जो कि बहुत बड़ा है, उस वस्तु से जिस के लिए आप प्रार्थना करना चाहते हैं। केवल तब ही हमारा जवाब शुद्ध और जीवन प्रदान करने वाला होगा।

निम्न दिया गया चित्र, इन दो रास्तों को दर्शाता है।

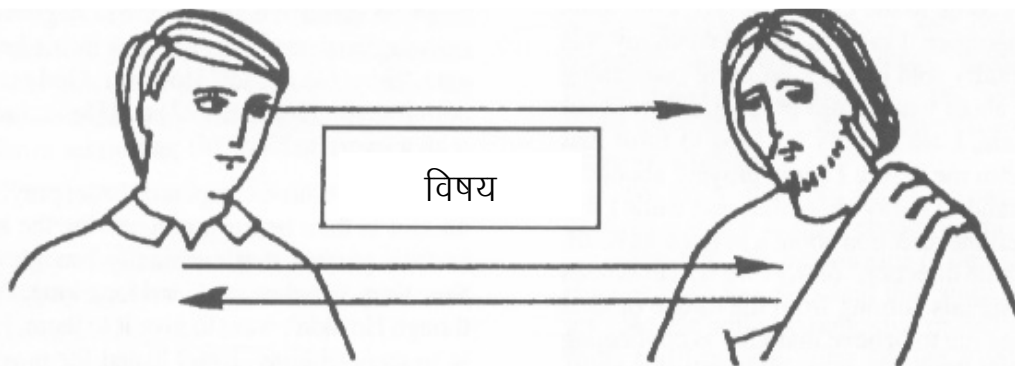
“मनमें मूर्ती रख कर प्रार्थना करना मूर्ती के साथ प्रार्थना करना
"वह वस्तु" यीशु कि कल्पना से ज्यादा मुख्य है आपकी चेतना में।



जवाब मूर्ती के ज़रिए वापस आता है। "हाँ"

बिना मूर्ती के प्रार्थना करना

यीशु ज्यादा महात्वपूर्ण है आप के दिमाग में "उस वस्तु" से ज्यादा जिस के लिए आप प्रार्थन करनी है।



जवाब यीशु से मिलता है। "ध्यान से नहीं"X

नीति: अंदरूनी बहाव उस कल्पना के द्वारा जो आप कि आँखों में है बहार निकल आता है।

एक उद्धाहरणा : बिलाम - गिनती २२:१-३५

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

निम्न दिए गए को पूर्ण रूप से लिख लें। इस पृष्ठ पर (या दूसरे पर अगर आप चाहें) एक प्रश्न लिखिए जो आप परमेश्वर से पूछना चाहेंगे। वह कोई भी प्रश्न हो सकता है जो आप ने चुना हो, जब तक कि वह आप के जीवन का सब से ज्यादा दर्दनाक प्रश्न न हो। ऐसे प्रश्न आप को बेचैन कर देंगे, वे आप को बाईबल के संतुलन से हटा देगा, जो कि परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए ज़रूरी है (भजन ४६:१०) - यह उस वक्त ज़रूरी है जब आप लिखना सीख रहे हों। आप उस से अपने प्रती उस के प्यार के विषय में पूछ सकते हैं या कोई स्थिति जो आपके सामने है या उसे इस पाठ कि सच्चाई के बारे में क्या कहना है या कुछ भी। थोड़ा सोचीए, प्रश्न चुनीए और लिखिए।

जब आप ने प्रश्न लिख लिया हो तो, यीशु से कहिए कि वह आप के मन कि आँख और कान को खोले, ताकी आप वह पा सकें जो वह आप के साथ बॉटना चाहता है। तब यीशु को एक आरामदेह स्थिति में कल्पना की जाए। वह आप के पास बैठा हो सकता है, या गतीती में झील के किनारे चल रहा हो। एक बच्चा बन जाईए। उस कि खुशी, प्राप्ती और प्रसन्नाता को देखिए, जब वह यह समय आप के साथ बौट रहा हो। वह यही चाहता है और कुछ नहीं। उस के लाम्बे चोगे देखिए। उस के पैरों में उस कि चप्पलों को देखिए। सुस्ताईए और अपने चेहरे पर मुस्कराहत लाईए। उस के साथ अकेले रहने का आनन्द बीजीए। फिर उस कि ओर ताकते हुए, उस प्रश्न को पूछीए जो आप ने लिखा है।

स्वैच्छिकता पर ध्यान दें और अपनी नज़र उस पर रखने हुए जो आप में जो बहता है उसे लिखने लंगीए। इस वक्त उस परिक्षा को न करें। केवल एक वच्चे के विश्वास के रूप में इसे लिखिए। आप इसे बाद में परीक्षण कर सकते हैं। अगर वह ज्यादा निजी न हो तो किसी आत्मीक सलाहकार से इस बाव कि पुष्टी करीए।

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

4. निर्जीव हो जाना

अगर हम अपने अन्दर परमेश्वर की आवाज को सुनना चाहते हैं, तो हमें खुद को शान्त करना होगा! परमेश्वर कहता है, चुप हो जाओ और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ! (भजन ४६:१०)! इस वचन का दूसरा अनुवाद है, कि प्रयत्न करना बन्द करो, छोड़ दो, शिथिल हो जाओ, और जानो कि मैं ही परमेश्वर हूँ!

हम अक्सर यह महत्वपूर्ण बात को भूल जाते हैं कि हमें अपने आप को शान्त रखना है, जब हम परमेश्वर के निकट जाते हैं! तब हम पाते हैं कि हमारे जीवन में बहुत हलचल है, हम परमेश्वर की ओर भागते हैं, जल्दी जल्दी बिना समझे अपनी प्रार्थना करते हैं और फिर भाग जाते हैं! मुझे पूरा यकीन है कि हम इस तरह से आत्मा के क्षेत्र में नहीं जा सकते!

अगर हमें परमेश्वर से बात करनी है तो हमें शान्त होना चाहिए! हबबूक अपने पहरे की गुम्मत पर जा कर प्रार्थना करने लगा! (हबबू २:१)! भोर को दिन निकलने से पहले, यीशु उठकर निकला और एक जंगली स्थान पर गया, और प्रार्थना करने लगा! (मरकुस १:३५)! और एक पूरे दिन के उपदेश के बाद यीशु पहाड़ी पर प्रार्थना करने गया।

यदि हमें अन्तरात्मा के माध्यम से परमेश्वर से बात करनी है, तो पहले हमें बाहरी परेशानियों को दूर करना होगा! हमें ऐसी जगह ढूँढनी होगी जहाँ हम एकांत में रह सकें और व्याकुल न हों, जिससे कि हम अपने हृदय को किसी बाहरी परेशानी के बिना केंद्रित कर सकें।

दूसरा, हमें अपनी अंतरात्मा की आवाज और विचारों को जो हमारे अन्दर है, उन्हें शान्त करना सीखना है! जब तक यह सब शांत नहीं हो जाते, हम उस की आवाज को नहीं सुन सकते!

अपने अन्दर कि आवाज को शान्त करने के कई तरीके हैं! पहले, आप उन्हें लिख सकते हैं, ताकि बाद में उन को निबटा सकें! दूसरा, आप अपने अन्दर के लोगों को यीशु पर ध्यान लगा कर, शान्त कर सकते हो! अपनी आंख खोलकर आत्मा में वह कल्पना तो परमप्रधान परमेश्वर चाहता है कि आप देखें, तो आप उसे देख सकते हैं। अपनी आंखें ऊपर उठा कर इस कल्पना को देख सकते हैं! यह आप का अन्दरूनि ध्यान पिता एवम् पुत्र पर लगाएगा!

आप हृदय की पुकार को अनुभव कर सकते हैं और बार बार दोहरा सकते हैं! हृदय की पुकार वह है जो आप का हृदय कभी भी कहना चाहता है! मैंने देखा कि अक्सर यह एक गाना होता है जो मैं स्वैच्छिक रूप से सुबह गुनगुनाने लगता हूं! जब भी हम अपने हृदय को अनुभव करना चाहते हैं, तो हम उस स्वैच्छिक गान को जो अंदर बुल बुला रहा है, सुन सकते हैं और उस के बहाव में बंध सकते हैं!

जैसे कि, एक दिन जब चारों ओर से मेरा जीवन टूटता नजर आने लगा और परमेश्वर इतनी दूर लगने लगा जहां मैं उसे देख नहीं पा रहा था, मैंने देखा कि स्वैच्छिक गीत जो मेरे मन में बुल बुलाने लगा, वह केवल दो शब्द थे: परमेश्वर, उठ! जैसे जैसे मैं इन शब्दों को दोहराने लगा, मैंने अनुभव किया कि परमेश्वर मेरे अन्दर उठ रहा था, और उसकी कल्पना और उसकी उपस्थिती मेरे जीवन में वापस लौट रही थी! इसलिए हमें अपने मन के गीत को गाना चाहिए, जब तक कि हमारा लक्ष्य पूरा न हो!

आप जब स्थिर होंगे तो, आप अपने शरीर में एक तनाव का अनुभव करेंगे! उस तनाव को भी आपको छोड़ना है, जिससे की आप उसे पाने के लिए सम्पूर्ण रूप से स्वतंत्र हों बिना किसी असुविधाजनक परिस्थिती अथवा शारीरिक परेशानी को त्याग कर प्रार्थना करने के लिए आरामदेह और शिथिल स्थान पर बैठिए! (१इति १७:१६) सावधानी पूर्वक अपने शरीर के उस भाग को जिसमें तनाव महसूस कर रहे हैं, उन्हें शिथिल करें! जब आप जागते हैं, तो क्या आपने ध्यान दिया कि आप की श्वांश कितनी शिथिल होती है? अपने सांस कि जांच करें यह देखने के लिए कि आप की सांस कितनी शिथिल है! आरंभ में जब मैंने जनसभाओं में बोलना शुरू किया, तो मैं घबरा जाता था, मेरी सांस तेज हो जाती थी, मैंने पहचाना कि सांसों को शांत करने के लिए गहरी और धीमी सांस लेने लगा! अपनी सांस को जांचिए

और अपने आप को शान्त करने के लिए, इन का इस्तेमाल करीये !

बाइबल के अनुसार भी, सांस और आत्मा में बहुत ही करीबी रिश्ता है ! दोनों सांस और आत्मा एक ही शब्द से आते हैं जो यूनानी और इब्रानी भी है ! जब हमारे शरीर से सांस चली जाती है तो आत्मा भी चली जाती है ! मुझे विश्वास है कि यह कोई संयोग नहीं है की यह शब्द बाइबल में इतने नजदीक से जुड़े हुए हैं ! मैंने यह जाना कि मैं मसीह कि शुद्ध आत्मा को सांस द्वारा अन्दर ले सकता हूँ और अपनी अशुद्ध आत्मा को सांस द्वारा बाहर कर सकता हूँ !

स्थिर हो, और जानो, स्थिरता अपने में कोई लक्ष्य नहीं है ! मैं अपने विवेक और शरीर से स्थिर होना चाहता हूँ जिससे की मेरा हृदय परमेश्वर कि उपस्थिती को समझ सके उसको स्मरण करने का तरीका सौम्य है और जब तक कि मेरे अंदर और बाहर की व्याकुलता शान्त नहीं हो जाती, मैं परमेश्वर कि उपस्थिती को अपने अन्दर महसूस नहीं कर सकूंगा !

स्थिर बनकर मैं कुछ भी करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ ! मैं केवल दिव्य प्रेमी के साथ रहना चाहता हूँ ! मैं इस क्षण मध्य में हूँ और उसका मैं अनुभव कर रहा हूँ !

स्थिरता को जल्द या जबरन नहीं पाया जा सकता ! परन्तु उसे अपने आप यह करने के लिए छोड़ देना चाहिए ! स्थिरता में एक समय ऐसा आता है, जब परमेश्वर छा जाता है ! और आप उसके बहाव को अपने भीतर महसूस करते हैं, उसकी स्वैच्छिक कल्पनाएँ अपने ही निजी रूप में बहने लगती हैं ! आप को बुद्धि और शक्ति प्रदान करते हुए, उसकी आवाज बोलना शुरू कर देती है । और आप पाएँगे की आप आत्मा में हैं !

(प्रकाश १:१०)

स्थिरता एक कला है जिसे सीखना है, विशेष करके उन पश्चिमी सभ्यता के लोगों में जिनके जीवन में हमेशा हलचल मची रहती है ! जैसा भी हो, परमेश्वर से हमें अपना बन्धुत्व यही से शुरू करना है ! जब आप प्रार्थना करें, तो पहले कुछ

पल मनन करने में बिताएं और जब आप स्थिर हो जाएं, तब आप आगे बढ़ें! आपकी अपनी स्थिरता में परमेश्वर का अनुभव करेंगे! तब आप बातचीत कर सकेंगे! आप जितना ज्यादा स्थिर होने का अभ्यास करेंगे, वह और भी आसान हो जाएगा! यह भी पाया जाता है कि जब लोग ऐसे झुण्ड में होते हैं जो स्थिरता पाना चाहते हैं, तो वे उन के साथ स्थिरता प्राप्त करते हैं! शक्ति का वातावरण, शान्ति उत्पन्न करता है!

ऐलीशा और दाऊद ने स्थिरता कैसे प्राप्त किया

मेरे लिए यह बहुत ही रूचिकर है कि मैं बाईबल के महान भविष्यवक्ताओं के बारे में पढ़ूं, कि दैवी प्रभाव को अनुभव करने के लिए वे क्या करते थे! ऐलिशा के बारे में सोचीए! दूसरा राजा ३:१५, में हम देखते हैं कि जब वह परमेश्वर से भविष्यवाणी सुनना चाहता था, तो कहता था, “किसी बजाने वाले को मेरे पास ले आओ!” जब बजानेवाले बजाने लगे तब यहोवा कि शक्ति ऐलीशा पर हुई, और उसने कहा यहोवा यूं कहता है!

इसलिए हम देखते हैं कि ऐलिशा को अपने अन्दर परमेश्वर कि आवाज और ध्यान लगाने के लिए संगीत की आवश्यकता पड़ती थी जिससे वह मानसिक तनाव से मुक्त और रहता था! यहां ध्यान देना और भी रूचिकर हो जाता है कि वैज्ञानिकों ने मष्तिष्क के बायें हिस्से को बाहरी विवेक समझा है और दाहिना मष्तिष्क अंतर्ज्ञान और संगीत दोनों को समाहित करता है।

क्या मैं यह सलाह दे सकता हूँ कि अगर कोई विवेक से हट कर, जो मष्तिष्क के बायीं तरफ रहता है, अंतर्ज्ञान जो मष्तिष्क के दाहिनी तरफ रहता है, अगर दोनों ही अपना स्थान बदलना चाहें, तो जैसे ऐलीशा ने किया वैसे वह कर सकता है और संगीत का इस्तेमाल कर सकता है! जो कि मष्तिष्क के दाहिनी ओर रहता है! यह बाये गोलार्ध से दाहिने गोलार्ध का भीतरी बदलाव है! यह आसान और सम्पूर्ण बाईबल पर आधारित है! यह सही है कि दाऊद ने भजन संहिता लिखते समय में जो प्रयोग किये वे संगीत पर आधारित थे, और वे परमेश्वर के साथ-उसके गहरे सम्बंध को दर्शाते हैं!

मैने यह पाया कि राजाओं के राजा के लिए कोई प्रेम का गीत गाना और जो मै गा रहा हूँ उन शब्दों क कल्पना करना सब से ज्यादा असरदार होता है! कल्पना मष्तिष्क के दाहिने भाग से भी निकलती है! जो मेरे मन के भीतरी बहाव को उच्छल पढता है! ये उस के सामने मुझे अचानक सहारा देता है और मै उन बहुमूल्य शब्दों को जो मेरे परमेश्वर और राजा कि ओर से बहते हैं, लिखने लगता हूँ!

उदाहरण के लिए : सिर्फ कुछ पैसे देकर, आप एक स्ट्रेस रेट कार्ड खरीद सकते हैं, जो कि रंग बदलता है अगर आप १० सेकेंड तक उसे पकड़ें रहे तो, अगर आप दबाव में हैं तो वह काला हो जाएगा परेशान हैं तो लाल, शान्त है तो हरा और शिथिल हों तो नीला, यह एक अच्छा यन्त्र जो आप को शिथिल रखने में मदद करेगा!

निम्न दिए गए नक्शे में, आपकी शान्ति में मदद करने के लिए बहुत ही प्रभावी

भीतरी तनाव से मुक्ति (आवाज, विचार और दबाव)

समस्या	समाधान
१ जो कार्यों आप को करना आपको है उन पर विचार रहे S	१. उन कार्यों को लिखें ताकि वह याद
२. चेतना युक्त पाप के विचार	२. अपने पापों को स्वीकारें और सदाचारी रूप धारण करें
३. मानसिक तनाव विश्वास के साथ ध्यान	३. आप यीशु पर लगाएं
४. अपने मन को स्पर्श करने अपने हृदय	४. अपने पसंद का गीत जो आप कि जरूरत है! मैं हमेशा गुनगुनाते रहते हैं उसे गाईए और सुनिए
५. जब आप का मन स्थिर आप ने उन कार्यों को (जैसे गाड़ी चलाना, स्नान करना, व्यायाम करना, नियमित सुनने का उपयुक्त समय है।	५. जब आप का मन स्थिर और शान्त हो तो बात चीत अपने के लिए थोड़े और समय की आवश्यकता कार्य आदि) किया था, वही परमेश्वर को

स्थिरता कि स्थिती को सिद्ध करना

पांच आवश्यक विचार जो आपकी चिन्तनशील परिस्थितियों को दर्शाती है, वे इस प्रकार है, शारीरिक शान्ति, ध्यान केंद्रित करना, अपने आप का शिथिल छोड़ना, भावना उत्पन्न करना एवम् स्वैच्छिक बहाव! इन विलक्षणों के विलोम हैं, शारीरिक तनाव, ध्यान बंट जाना, ज्यादा काबू पन, और विश्लेषण संम्बन्धी विचार! इन्हें निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है!

शारीरिक तनाव	शारीरिक शान्ति
० १ २ ३	४
ध्यान बंटना	ध्यान केंद्रित करना
० १ २ ३	४
शिथिल होना	ज्यादा काबूपन
	उत्पन्न करना
क्रिया	० १ २ ३ ४
भावना विश्लेषण सम्बंधी विचार	स्वैच्छिक विचार
० १ २ ३	४

समस्त पवित्र शास्त्र में ध्यान लगाने को कहा गया है और इसी तरह यह सारे विचार तो ध्यान लगाने में सहायक बनती हैं! निम्न दिए हुए वाक्यों को मेरे साथ ध्यान से पढ़िए!

शारीरिक शान्ति का बाईबल में उपदेश:

अतः जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है! क्योंकि जिस ने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है! अतः हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो कि कोई जन उन के समान आज्ञा न मान कर गिर पड़े!

(इब्रनियों ४:९-११)

और उस ने किन से शपथ खाई कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे? क्या केवल उनसे नहीं जिन्होंने आज्ञा न मानी? अतः हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके!

(इब्रालियों ३:१८,१९)

ध्यान केंद्रित करने का बाईबल में उपदेश:

तो आओ रोकनेवाली वस्तु पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है यीशु की ओर ताकते रहें जो कि विश्वास का कर्ता और सिद्ध करने वाला है!

(इब्रा १२:१,२)

मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप में कुछ नहीं कर सकता! केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है!

(यूहन्न ५:१९)

अपने आप को शिथिल छोड़ने संबन्धि बाईबल में उपदेश

चुप हो जाओ (किनारी संदर्भ, शिथिल हो जाओ) और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ!

(भजन ४६:१०)

किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाऐं! तब परमेश्वर कि शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी!

(फिलि ४:६,७)

चिन्ता में भावना कि उत्पत्ति का बाईबल में उपदेश

तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में! जैसे डाली यदि दारवलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, मैं दारवलता हूँ: तुम डालियां हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते!

(यूहन्ना १५:४,५)

स्वैच्छिक बहाव का बाईबल में उपदेश

जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी! उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे!

(यूहन्ना ७:३८,३९)

निम्न दी गई सूची में उन विश्लेशणों पर चिन्ह लगाएँ जो आपके ध्यान की स्थिती और जीवन की दिनचर्या को दर्शाता हो, क्योंकि ध्यान लगाना और दृढता से जीवन को जीने के ढंग बताता है! यह आप को परमप्रधान परमेश्वर के सामने स्थिरता बनाए रखने में मदद करेगा!

शारिरीक खामोशी (स्थिरता, शान्ति)

मेरा मन खामोशी और आसानी से धडकता है!
मेरी सांसे भी शांत, आसान, सामान्य और पूरी है!
मेरी मांसपेशियां, तनाव, कसाव या जकडन महसूस नहीं कर रही हैं!
मैं बेचैनी और चंचलता महसूस नहीं कर रहा हूं!
जब मैं कुछ कहूं या करूं तो, परेशान या स्वयं सचेत न महसूस करूं!
मैं परेशान, गर्म या पसीना न महसूस करूं!

जब मैं न जाना चाहूं तो, मुझे शौचालय जाने की जरूरत न महसूस हो!
मैं नियामक महसूस करता हूं!
मेरा गला सूखता नहीं है!
मैं सचेत और ताजगी महसूस करता हूं!
मुझे सिरदर्द नहीं है!
मुझे कमरदर्द नहीं है!
मैं भारीपन या सुस्त नहीं महसूस कर रहा हूं!

मेरे कंधे, गर्दन या मेरी कमर रवींचाव महसूस नहीं कर रहे हैं !
मेरा चर्म स्वस्थ है !
मेरी आंखों में न पानी है न आंसू !
मेरा पेट शान्त है !
मेरी भूख ठीक है !
ध्यान केंद्रित करना
मेरे विचार बिरबरे हुए नहीं हैं !
मैं क्या कर रहा हूं यह याद करने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगता !
मैं चीजों के प्रती बहुत सचेत रहता हूं !
जब परेशान होता हूं, तो वापस शान्त होना आसान होता है !
मेरा दिमाग साफ है !
मैं केंद्रित हूं ।
मैं अनिश्चित नहीं हूं
मेरे लक्ष्य और प्रधानताएँ साफ हैं !
मैं चीजों को आसान रखता हूं, एक काम एक वक्त में !
मेरा दिमाग दृढ़ और केंद्रित है
मैं जो कर रहा हूं उस पर ध्यान देता हूं !
मुझे लगता है मैं बहुत दक्ष हूं !
मेरे दिमाग व्याकुल नहीं हैं !
मैं अवरोधों से अपने आप को व्याकुल नहीं होने देता !
मैं क्या करना चाहता हूं, उस पर ध्यान लगाता हूं !
अगर कोई काम मुश्किल या थकावट वाला हो, तो भी मैं सोचता हूं
कि मैं शान्ति से और क्रम के अनुसार कर सकता हूं !
मैं काफी सचेत महसूस करता हूं !
मैं जो करना चाहता हूं, उस पर पूरा ध्यान केंद्रित करता हूं !
मैं पूरी तरह अपने वश में कर लेता हूं !
मेरा ध्यान भटकता नहीं !
चीजे साफ और स्वच्छ लगती हैं !
मैं अपने ध्यान को आसानी से अपने कार्य की ओर केंद्रित कर सकता
हूं !
मैं विभिन्न प्रकार के कार्यों के बीच अपने आप को बटा हुआ नहीं

महसूस करता हूं!
मैं चीजों के प्रति काफी सचेत हूं!
मैं जो करना चाहता हूं, उस से हटता नहीं!
मैं पहले एक काम पूरा करता हूं, तत्पश्चात् दूसरा शुरू करता हूं!
मैं वर्तमान में जीता हूं, हर पल का पूरा अनुभव करते हुए!
मेरा दिमाग एक आईना है, जो सफाई से बिना कुरूपता से मेरे
शारीरिक और आत्मिक दुनिया को दर्शाता है!
शिथिलता (रहने देना)
मेरी इच्छाएँ और जरूरतें मुझे परेशान नहीं करती!
चाहे मुझ में कुछ कमियाँ हैं तौ भी मुझे अपने आप पर गुस्सा नहीं
आता!
मुझे ऐसे नहीं लगता जैसे मुझे अपने आप को आवश्यकता से आगे
ढकेलता या जल्दबाजी करता हूं!
मैं उन चीजों को नहीं अपनाता जिन्हें न कर सकते हैं और न समझ
सकते हैं!
मेरी कुछ समस्याओं के बारे में यह कहना कि जीयो और जीने दो
ठीक होगा!
मैं उन चीजों को जो सच में मायने रखती हैं उन्हें अपना लेता हूं!
मैं उन चीजों के कारण जो बदली नहीं जा सकतीं परेशान नहीं होता!
मैं सोचता हूं कि मैं अपने को शिथिल बना सकता हूं!
मैं लचीलापन महसूस करता हूं!
जब मैं अपनी इच्छाओं को अपनी जरूरतों के साथ तौलता हूं तो मुझे
जरूरतें कम महत्वपूर्ण लगती हैं!
जब मैं बहुत काम कर चुका होता हूं तो मैं आसानी से शिथिल हो
जाता हूं।
मुझमें सहनशक्ति है।
मुझे यह ठीक महसूस होता है कि मैं बिना वजह बीते हुए कल या
आने वाले कल की परेशानियों को लेकर परेशान नहीं होता!
कुछ चीजों को रहने देना ठीक लगता है!
मझे ऐसे लगता है जैसे मैं अपनी समस्याओं को दार्शनिकता से
स्वीकार करता हूं!

मुझे ऐसा नहीं लगता कि सारा काम एक साथ करना चाहिए !
अगर काम मेरे मुताबिक न हो रहा हो तो भी मुझे बुरा नहीं लगता !
जो चीजे मेरे पास नहीं है मैं उन को नहीं मांगता यानि वे बिलकुल भी
मायने नहीं रखती !
मुझे कुछ विशेष ज्ञान का अनुभव नहीं होता या ऐसे जैसे मुझे कुछ
कार्यों को बहुत ही महत्व देना है सही कार्य कर के या विशेष प्रभाव
डाल कर !
मुझे ऐसा नहीं लगता कि मुझे सब की स्वकृति या अनुमोदन जरूरी
है !
मुझे ऐसे लगता है कि मैं किसी महत्वपूर्ण काम या योजना का एक
हिस्सा हूं !
मन में भाव उत्पन्न करना
मुझे यह पता है कि परमेश्वर मुझ में बह रहा है !
मैं पवित्र आत्मा पर पूरा निर्भर करता हूं !
मैं पवित्र आत्मा कि मौजूदगी को स्वीकारता हूं !
मैं किसी भी समस्या को अपनी काबिलीयत के हिसाब से नहीं
सुलझाता !
जब जरूरत हो तब एक शब्द या एक पंक्ति कि प्रार्थना करता हूं !
मुझे पता चल जाता है जब मेरे अन्दर घमण्ड या स्वयंनिर्भरता आ
जाती है !
मैं ऐसे दर्शाता हूं जैसे मेरे अन्दर कोई और है !
मैं जानता हूं कि मेरी शक्ति परमेश्वर से आती है !
मैं जानता हूं कि मुझे बुद्धि परमेश्वर से मिलती है !
मैं पहचानता हूं कि परमेश्वर मेरा जरीया है !
मैं ऐसे दर्शाता हूं जैसे मुझ में कोई और बह रहा है !
मैं जानता हूं कि मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता !
मैं जानता हूं की सदाचार मुझे मसीह द्वारा दिया गया है !
मैं अपने आप को मसीह के सदाचार के कपड़ों में लिपटा हुआ पाता
हूं !
मैं ऐसे दर्शाता हूं जैसे मैं वह कनस्तर हूं जो दूसरे से भरा हुआ है !
जब मैं सफल होता हूं तो मुझे एक दम ऐसे लगता है, जैसे यह मसीह

की जीत हो
जब मैं विफल होता हूँ तो मैं जानता हूँ मैंने उसका सहारा नहीं लिया
जो मेरे अन्दर रहता हूँ !
मैं कार्यों को बिना ज्यादा परिश्रम या कोशिश के करता हूँ !
स्वैच्छिक बहाव
मैं स्वैच्छा कर ध्यान लगाए रहता हूँ !
मैं जानता हूँ कि पवित्र आत्मा एक नदी के रूप में मेरे अन्दर बहती
है !
मैं इस बहाव में इच्छुक और आरामदेह महसूस करता हूँ, !
मुझे डिब्बे की तरह बन्द रहना आरामदेह नहीं लगता !
मुझे लगता है कि केवल विश्लेषण ही लाभदायक नहीं है बल्कि
स्वैच्छिकता को विश्लेषण के साथ बहने दिया जाए !
अन्दरूनी आवाजों को मानना आरामदेह है !
मुझे स्वैच्छिकता और आजादी महसूस होती है !
मुझे ऐसे लगता है जैसे मैं चीजों के बहाव के मुताबिक जा रहा हूँ !
मैं जान बूझकर कार्य करते में शिथिल हो जाता हूँ ताकी मैं बहाव को
अनुभव कर सकूँ !
मुझे मेरे अन्दर उत्पादक आकृति के बहाव का एहसास होता है !
मैं शान्त व शिथिल जगहें ढूँढता हूँ, ताकी मेरी उत्पादकता और बढ़े !
मैं दूसरों के साथ संतोष जनक, शिथिल व स्वैच्छिक बातचीत करना
पसन्द करता हूँ !
मैं अपने आप को शान्त करता हूँ, केन्द्रित करता हूँ और शिथिल हो
जाता हूँ, ताकि बहाव शुरू हो !
जब बहाव में रहता हूँ तो मैं जिस कार्य पर काम कर रहा हूँ उसे जारी
रखता हूँ जब तक वह पूरा न हो जाए
मैं जब तक मुझे बहाव महसूस नहीं होता, मैं काम शुरू नहीं करता !
मैं उसी वक्त योजनाओं को करना शुरू करता हूँ जब उन का बहाव
अपन अन्दर महसूस करता हूँ !
जैसे मैं इस बहाव के अनुभवों के साथ जीने का अभ्यास करता हूँ तो
मुझे महसूस होता है कि वह ज्यादा इच्छापूर्वक आसानी से कार्य करते हैं !
मैं समझता हूँ कि जो भी स्थायी है, वह बहाव के अनुभव से आता है !

दिमागी लहर की तीव्रता की समता

कुछ खोज जो निद्रा प्रयोगशालाओं में हो रही है वह बहुत ही दिलचस्प है क्योंकि वह अपने आप को खामोश करने और स्थिर करने से सम्बंधित है! यह जानकारी प्राप्त हुई है कि जब हम पूरी तरह जाग जाते हैं और सचेत हो जाते हैं तो बीटा कि समता की लहर हमारे दिमाग से होकर गुजरती है! परन्तु, जब हम शिथिल होते हैं या निद्रा में जाने लगते हैं, तो यह लहर धीमी हो जाती है और अल्फा समता कि लहरें बन जाती हैं! यह परमेश्वर के आदेशानुसार, अपने आपको, नापने योग्य मानसशास्त्र करे असर कि स्थिरता है!

मैं यह इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि यह मेरी मदद करता है, एक बायां दिमाग, तार्किक पश्चिमी को, कि वह यह जान ले कि परमेश्वर के आगे अपने आप को शान्त करना केवल एक बिना आकार का अनुभव नहीं। मैं वास्तव में एक अलग ही स्थिति में प्रवेश करता हूं (यानि मन की चेतना), और इस स्थिति की शारीरिक स्पष्टता को यंत्रों के जरीए नापा जा सकता है, जैसे की वापसी जवाब। ऐसे यन्त्र इस बात कि मदद करें कि इस शान्ति की अवस्था में जल्दी से कैसे जाएं, जिसे बाईबल स्थिरता कहती है! इन्होंने ऐसी अवस्था मेरी की!

जिस गिरजाघर में मैं काम करता था, वहां के एक पादरी और मैंने इस वापसी क्रम की पुस्तक को ४९ डालर में खरीदा! जब मैं परमेश्वर के सामने अपने आप को स्थिर करना सीख रहा था, तब मैं ने इस पुस्तक को एक या दो हफ्तों के लिए इस्तेमाल किया! मुझे यह बहुत उपयोगी लगी, क्योंकि यह मेरे शिथिलता की अवस्था को नापती थी! मुझे यह जल्दी पता लग जाता था कि किन चीजों से मैं शिथिल होता हूं और किन से नहीं! जैसे कि मैंने जाना की चिल्लाकर (उपद्रव तरीके से) प्रशंसा के गीत गाने से मैं शिथिल नहीं हो पाता था! और न ही शान्ति के प्रशंसा गीतों से, अगर मैं भावों से परमेश्वर के निकट नहीं हूं, और कह रहा हूं कि मैं उनसे कितना प्यार करता हूं! परन्तु यदि मैं "तुम से प्यार करता हूं" शब्दों को खामोशी से आराधना गीत गाते में बुद बुदाऊं, तो मैंने महसूस किया की मैं शिथिल

अवस्था की स्थिती में प्रवेश कर चुका हूं, जैसे कि परमेश्वर ने आदेश दिया है!

आगे के पृष्ठ पर जो चित्र है, वह एक पूरा द्रिश्य बताता है दिमागी लहर की तीव्रता कि समता का!

पूर्वी धर्मों से समैनता

कुछ ने इन विचारों को जो मैंने उपर बताएँ हैं, पूर्वी धर्मों से तुलना की है! अच्छा, शुरूआत में, मैं शैतान के नकली रूप को, असली के समान समझता हूं! शैतान उत्पादक नहीं है! वह केवल एक नकली है! इस कारण वह कभी भी कुछ भी प्रथम रूप से नहीं कर सकता! तदानुसार, अगर मैं नकली को कुछ करते देखता हूं, तो मैं अपने आप से यह प्रश्न पुछता हूं, “वह कौन सी असली चीज है, जो मुझे करनी है?” परन्तु यह वह प्रश्न नहीं है जो कुछ लोग पूछते हैं! कुछ लोग कहते हैं, “हम इस चीज से दूर रहें ताकी शैतान इस का इस्तेमाल कर सके,” और इस का नतीजा यह होता है कि वे सब कुछ शैतान को दे बैठते हैं! अगर शैतान मसीहत से कुछ लेना चाहता है तो वह उसे नकली बना देता है! इस से मसीहत में रहनेवाले इतना डर जाते हैं कि वे असली चीज के नजदीक भी नहीं जाते और पीछे हट जाते हैं! इस तरह शैतान सब कुछ पा लेता है और मसीहत के पास कुछ नहीं रहता अपने चारों ओर देखिए क्या यह सच नहीं! हम मसीही होते हुए भी पीछे हट गए हैं और शैतान के हाथ इन सब चीजों को पूरी तरह से सौंप दिया है: सरकार, राजनीति, दूरदर्शन, सिनेमाघर, नृत्य, जुलूस, रेडियो, शिक्षा, पैसा एवं कम्प्यूटर!

पुट चित्र है

बाईबल कहती है कि हमें सिर बनना है, पूंछ नहीं, हमें हमेशा ऊपर रहना है नीचे नहीं, हमें देना है लेना नहीं! (व्यवस्था; २८:१२,१३)! फिर भी आप देखेंगे कि हमारी राजनीतिक नेताओं कि कुर्सीयां गैर मसीहीयों से भरी हुई हैं बजाय मसीहों के! क्यों? दुनिया कि ज्यादातर दौलत गैर मसीहों के पास है, बजाय मसीहों के। क्यों? क्या बाईबल गलत है? मैं नहीं समझता!

हम गलत है क्योंकि हम उस आत्मा में जीते हैं जो डर है, बजाय विश्वास की आत्मा के !

हमें शैतान से इतना डरने के लिए सिखाया गया है और उसकी कपटता से भी कि हम डर से सिकुड़ जाते हैं और उसे करने से पीछे हट जाते हैं जो कठिन समझा जाता है ! हमें तो पूरे विश्वास में अधिक जीवन जीना है ! परन्तु हम नाडी सम्बन्धी बुखार से भरे हुए हैं और गरीबी में और गैर मसीहों के राज्य के तहत जी रहे हैं !

परमेश्वर हमें क्षमा करे कि हम डर से भरी आत्मा में जी रहे हैं (यानि शैतान के कार्यों पर विश्वास) बजाए इस के परमेश्वर के काम करें यानि विश्वास.

इसका मतलब, मैं समझता हूँ कि केवल इस कारण पीछे हट जाना, क्योंकि शैतान उस चीज की ओर हाथ बढ़ा रहा है और उसे नकली कर देना एक बहुत कि भयंकर पाप है ! जिससे हम अन्धेरे के राज्य में अपने आप को सौंप रहे हैं ! मैं वह एक हूँ, जो चाहता है कि जो कुछ भी शैतान ने चुराया है उसे वापस ले लूँ ! मैं विश्वास करता हूँ कि जो पिछले ४० सालों में शैतान को मसीहत ने दे दिया है, वह अगले १० सालों में उस में से बहुत हद तक वापस ले लूँगा ! नब्बे वां दशक वो दशक होगा जब भूमि ले ली जायगी ! और यह वह क्षेत्र है जिसे हम छुड़ा लेंगे ! मैं आप को निमंत्रण देता हूँ कि आप एक विजेता बनें और इस भूमि को मेरे साथ मिलकर वापस लें !

नकलीपन में दो चीजें मुख्य हैं।

वे केवल उसे नकली बनाते हैं जो असली हो !

वे केवल उसे नकली बनाते हैं जिस की कीमत हो (जो बहुमूल्य है)

इस कारण, क्योंकि पूर्वी धर्म आत्मा कि दुनिया में पहुंचने के लिए स्थिरता को अपनाते हैं, तो मैं इस बारे में दो चीजें जानता हूँ:

हमें, भी, स्थिरता को अपनाना चाहिए

(इस की पूर्ति भजन ४६:१० से होती है)

स्थिर बनकर पवित्र आत्मा को स्पर्श करना बहुत कि बहुमूल्य चीज है!

मेरे ख्याल से, क्योंकि पूर्वी रहस्यवादी यीशु मसीह के द्वारा नहीं जाते तो वे आत्मा कि दुनिया में दारिद्र्य होते कि बुराई में फंस जाते हैं! फिर भी, चारों दिशाओं के कई मार्ग अपक्षपाती हैं! इन का इस्तेमाल चाहे धार्मिक विश्वासी या मसीही कर सकते हैं! विपरीत रूप से, कुछ मार्ग अपक्षपाती नहीं हैं! एक गैर मसीही, आत्मा कि दुनिया में प्रवेश करने के लिए नशीले पदार्थ ले सकता है! यह मसीहों के लिए गैर कानूनी प्रवेश है और बाइबल में इस कि मनाही है! बाइबल में जादू टोना शब्द को “फारमेसिया” कहा गया है जो कि बिल्कुल ही, नशीली दवाईयों से जुड़ा हुआ है!

क्योंकि मसीही, यीशु मसीह के द्वारा प्रवेश होते हैं यीशु उसे जकड़ने वाले कि जाल से बचाता हुआ परमेश्वर के सिंहासन के कमरे में ले जाता है जैसे कि उन्होंने यूहन्ना के साथ प्रकाशितवाक्य में किया था!

किसी भी प्रकार की प्रार्थना क्या है ?

मैं ने तय किया है कि प्रार्थना दो प्रेमियों के बीच आपस में प्रेम बांटना है! अगर आप पीछे अदन के बागीचे में जायें, तो आप देखेंगे कि ईश्वर कैसे दिन के ठण्डक में आदम और हव्वा के साथ चलता और बातचीत करता था और जानिए कि परमेश्वर को अचिन्त्य प्रेम का प्रत्यक्ष बताया गया है, तो आप जान जायेंगे कि उस के साथ जो हम बांट रहे हैं वह दो प्रेमियों के बीच का बन्धुत्व है! आप को भजन संहिता में इस पर कई उदाहरण मिलते हैं!

इस कारण जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम यीशु के पास आ रहे हैं, हमारा दोस्त, यीशु ने कहा “अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा..... परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है!” (यहन्ना १५:१५) हम एक साथ मिलकर दोस्ती के रिश्ते को बना रहे हैं! मैं ने जाना है कि दोस्ती की उन्नती निम्न दिए गए क्रम से गुजरती है!

प्रार्थना का मतलब दोस्त बनना है

(कुछ करना नहीं, परन्तु किसी के साथ रहना)

१.क्रम

२. सामयिक

मैं बाहरी दुनिया के बारे में बताता हूँ! (खेल कूद, मौसम)

मैं उस बारे में बोलता हूँ जिसको मैं सोचता और अनुभव करता हूँ

३. क्रम ३ गहरा विश्वास

मैं अपने सपने, गलतियाँ और निराशाओं को बांटता हूँ!

मैं अपने दोस्त के साथ शान्ति से बैठता हूँ, उसकी उपस्थिति का अनुभव करते हुए जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता! मैं उस मनुष्य से एक हो जाता हूँ, उसकी प्रतिक्रियाओं से बातचीत करते, महसूस करते और अभिनय करते हुए!

प्रार्थना कुछ करना नहीं, परन्तु किसी के साथ रहना, जब तक मैं उस के साथ एक नहीं हो जाता तब तक मैं यीशु की आकृति नहीं बन जाता! हम वास्तव में यीशु नहीं बन जाते! परन्तु यदि हम उसकी ओर ताकते रहें (इब्रा १२:२) उस प्रेम अनुराग के साथ, इतनी देर तक, जब तक हम उसी तेजस्वी रूप में बदलते जाते हैं (२ कुरि ३:१८), उस के स्वभावों (गल ५:२२ २३) को और उसकी शक्ति (१ कुरि १२:७,११) को लेते हुए हमारी आत्माओं में एक मेल हो जाता है (१ कुरि ६:१७)

और “मै मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है (गल २:२०)!” रोमियों का छटवां अध्याय भी देखिये!

वर्तमान काल के परमेश्वर के बारे में एक कविता

एक बात यह भी है कि, परमेश्वर के साथ जीने का मतलब वर्तमान काल में जीना! मैं जब यह कला सीख रहा था, तो मैं ने इस सुन्दर कविता का अविष्कार किया, जो आप के लिए भी आशीश का कारण बन सकती है!

मैं अपने अतीत पर पछता रहा था!

और भविष्य से डर रहा था!

अनानक मेरा परमेश्वर बात करने लगा;

“मेरा नाम मैं हूं!” वह रूका मैं ठहरा रहा! उसने बोलना शुरू किया, जब तुम अतीत में जीते हो, उस की गलतियों और पश्चाताप के साथ, यह कठिन है! मैं वहां नहीं हूं! मेरा नाम मैं था नहीं है!

“जब तुम भविष्य में जीते हो,
उसकी परेशानीयां और डर के साथ,
यह कठिन है! मैं वहां नहीं हूं!”
मेरा नाम मैं रहूंगा नहीं है!

“जब तुम इस पल में जीते हो,
यह कठिन नहीं है! मैं वहां हूं!
मेरा नाम “मैं हूँ” है!

हैलन माल्लीकोट

प्रार्थना : परमेश्वर, काश हम स्थिर हो जाएँ, ताकी हम अपनी आत्मा को पहचाने !

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

आप परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आप को वह जरीया दिखाए जिससे आपको स्थिरता मिले ! उस से पूछिए कि कौन सा तरीका वह चाहता है जो की आप अपनाएँ !

उपर्युक्त प्रश्नों पर निम्न दिए गए खाली स्थान अपना व्यक्तिगत रूप लिखिए ! फिर शिथिल हो जाएँ ! अपने आप को यीशु के साथ, बाईबल के किसी स्थान पर कल्पना किजीए हो सकता है गलील नदी के किनारे टहलते हुए, या यहूदा के, खेतों में टहलते हुए ! उसकी तरफ मुड़िए ! उसका प्यार, दया, खुशी और उत्तेजना देखिए कि आप उस के साथ यह समय बिता रहे हैं ! मुस्कराईए ! एक बच्चा बन जाईए और उस का हाथ पकड़िए ! इस दृष्य को होने दीजिए, जैसा वह चाहता है ! अपने मन का प्रश्न उस से पूछिए ! स्वैच्छिकता की ओर ध्यान लगाएँ और जो वह आप को बताता है उस जवाब को लिख लीजिए ! जब आप जवाब पा रहे हों तो उस का परीक्षण मत करीए ! बच्चे कि तरह के विश्वास में बने रहिए ! उसे परीक्षण करने का आप को भरपूर समय मिलेगा जब बहाव खत्म हो जाएगा !

5. स्वप्न और दर्शन अनदरूनी मनुष्य का परमेश्वर पर ध्यान लगाना

स्वप्न और दर्शन का स्थान क महात्व

स्वप्न और दर्शन- अनदरूनी मनुष्य का परमेश्वर पर ध्यान लगाना स्वप्न और दर्शन का स्थान व महात्व मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे जवाब दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे (प्रेरितो २:१७ उच्चारण जोडा गया).

दानिय्येल यरूशलेम कि ओर देखते हुए प्रार्थना करता था (दानिय्येल ६:१०)

हबक्कूक पहरा देता था यह देखने के लिए कि परमेश्वर क्या कहना चाहता था (हब २:१,३)

यूहन्ना अन्दर झांकने लगा, एक दर्शन के लिए और उस ने एक आवाज सुनी, यहां ऊपर आजा, और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है! और तुरन्त उसने एक दर्शन देखा! (प्रकाश ४:१,२)

यीशु वही कहता था जो उसने अपने पिता के यहां देखा था (यूहन्ना ८:३८)

परमेश्वर अपने आप को मनुष्य को उसकी मन की आंखों द्वारा बतलाता है, उसे स्वप्न और दर्शन देकर! आगे और देखे तो, हमारी अन्दरूनी आंखों का इस्तेमाल हमारे मन कि स्थिती से बातचीत के दौरान इस्तेमाल होती है, हर रात स्वप्नों व दर्शनों द्वारा! इस कारण हम देखते हैं कि अन्दरूनी देखना मनकी आन्तरिक शक्ती है और उस का इस्तेमाल मन की चीजों का व्यक्त करने के लिए करते हैं!

क्योंकि मसीहत मन से मन, या आत्मा से आत्मा का रिश्ता है, हम ये आशा करते हैं कि यह आन्तरिक शक्ती का ज्यादा इस्तेमाल हम अपने परमेश्वर से रिश्ता रखने में इस्तेमाल करें! दुर्भाग्य से पश्चिमी मसीहीयों इस का इस्तेमाल उतना नहीं होता जितना होना चाहिए! क्योंकि हमें यह सिखाया गया है कि हम अपने दिमाग (सिर) का इस्तेमाल करके

जिए! बजाए मन के इस्तेमाल के, हम अपना ज्यादातर जीवन, तर्कशास्त्र धारण या विवेकी विचारों में बिताते हैं! बजाय इस के कि हम मन की छापीं, स्वपनों या दर्शनों कि दुनिया में गुजरें! अगर हम अपने मनो को आजाद छोड़ते हैं, तो हमें स्वप्नों व दर्शनों कि दुनिया में जी लेना सीखना चाहिए (यूहन्ना ५:१९, २०; ८:३८).

परमेश्वर मन की आंखों द्वारा बातचीत करना चाहता है, हमें स्वपन, दर्शन व अंदरूनी प्रतिभाओं का बहाव देते हुए, परन्तु, पहले हमें अपने अन्दर इस आन्तरिक शक्ति को पहचानना है और जब हम इसे उसे सौंपे कि वह इस का इस्तेमाल करे तो इस का क्या महत्त्व होगा! मसीह होने के दस साल तक, मुझे यह अहसास नहीं हुआ कि मैं अपनी मन की आंखों का इस्तेमाल कर, दर्शन को देखूँ! इसकारण, मुझे कोई दर्शन नहीं मिला! अब जब मैंने देखना सीख लिया है, तो मुझे दर्शन तुरन्त मिला है!

स्पष्ट रूप से, “मन कि आंखें” (इफि १:१७,१८) एक इंद्रिय ज्ञान है जो हमारे मन में उपस्थित है! यह एक रास्ता है जिससे मनुष्य का मन बातचीत करता है! हो सकता है यह एक प्रथम रास्ता हो! मैंने यह पाया है वह चाबी जिससे अन्दरूनी दुनिया का दरवाजा खुलता है, वह दर्शन का इस्तेमाल है! कई आत्मिक अंगुओं इस बात से सहमत हैं! डॉ पाल योगी चो, जो कि दुनिया कि सबसे बड़े गिरजाघर, जिसके ६,००,००० सदस्य हैं; के पादरी हैं वे कहते हैं, ‘पवित्र आत्मा कि भाषा स्वप्न व दर्शन है (चैथी दिशा: १)’ वाचमैन नी, पादरी एवं लेखक, कहते हैं कि ‘तस्वीर पवित्र आत्मा कि याददाश्त है (अभिषिक्त प्रचार)’।

यह सारे कथन चकित कर देनेवाले हैं, इस बात से कि, आत्मा में होकर देखना कितना महत्वपूर्ण है!

मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि प्रतिभा के रूप में सोचने कि योग्यता, बहुत ही महत्वपूर्ण है, एक मसीही जीवन में मैं विश्वास करता हूँ कि सिद्धी, दोनों, तर्कशास्त्र धारणा, विवेकी और अंतर्ज्ञान एवं दर्शन की योग्यताओं को मिलकर बनती है! या, दूसरी तरह से कहा जाए तो: सिद्धी का मिलकर बनती है! या दूसरी तरह से कहा तो: सिद्धी का मतलब दोनों अपने सिर और मन को मिलाकर इस्तेमाल करने कि योग्यता है! हमारे पश्चिमी सभ्यता में, हम ने तर्कशास्त्र को एक खम्बे पर चढ़ा दिया है और दर्शन के महत्व को भुला दिया है! यह हमेशा ऐसे नहीं होता था! अगर हम धर्मशास्त्र में देखें या मसीही इतिहास को देखें, तो हम देखते हैं कि स्वप्न और दर्शन हमेशा से ही प्रबल रहे हैं!

बाईबल में स्वप्न, दर्शन और भविष्यदर्शी के बारे में संदर्भ

निम्नलिखित एक **कमप्यू बाईबल** का छपा हुआ, कम्प्यूटर कार्यक्रम है, जो कि बाईबल विध्यार्थियों के लिये आविष्कार किया गया है, ताकी वे जो भी विषय चुने उस पर वे पूरा सादृश्य पढाई कर सके! मै ने इस कार्यक्रम को निर्देश दिया कि वह सारे बाईबल के संदर्भों को ढूँढें जिनमें स्वप्न, दर्शन, सिद्धी, देखना और आँखों जैसे शब्द पाये जाते हैं। यकीनन, कुछ संदर्भ ऐसे मिले जो की स्वभाविक दृष्टि से संबंध रखते हैं बजाए आत्मिक दृष्टि के! इन सब को ध्यानपूर्वक निकाल दिया गया है, ताकि जो निम्न संदर्भ दिये गये है वे केवल आत्मिक दर्शन के है!

मै आप को प्रोत्साहित करता हूँ कि आप अपने धार्मिक भक्ति के समय मे एक या दो हफ्तों मे इन वचनों को पढिये, उन पर प्रार्थना करीए, और परमेश्वर से कहिए कि वह आप को अन्दरूनी दृष्टि और दैवि प्रकाशन दें उनसे जिन्हे आप ने पहले नही देखा। एक कागज़ और कलम अपने पास रखिए और जो आपने ढूँढा है, उसे लिखिए! आप के जीवन मे यह एक बाईबल की बुनियाद बन जाएगी, जिस पर आप ईश्वर ज्ञान कि इमारत खडी कर सकते हैं कि परमेश्वर स्वप्न और दर्शन का कैसे इस्तेमाल करता है!

शीर्षक: किसी के आत्मिक जीवन मे स्वप्न एवम् दर्शनों कि जगह!

विस्तार: उत्पत्ती १:१ से प्रकाशितवाक्य २२:२१ तक

विषय: १. स्वप्न; २. दर्शन; ३. भविष्यदर्शी;
४. देखना ५. आँखे.

इतिहास :

नाहि यह स्वप्न और दर्शन बाईबल के हर विभागों मे प्रबल है, यह मसीही इतिहास में भी एक दृढ भाग रहे है! आप को मसीहत के अनुभवों के बारे मे एक साफ चित्र देने के लिए, जो इन पूरे २००० वर्षों मे स्वप्नों और दर्शनों का अनुभव जो इन्होने किया है बताने के लिए, मै आपको निम्न उदाहरण दे रहा हूँ! (यह भाग उन लोगों के लिए है जो इतिहास के बारे में पढने मे रूचि रखते हैं! अगर आप इस से संतुष्ट नही है या आपकी मदद नहीं हुई तो अगले भाग मे बिना झिझक चले जाईए)!

. आगस्टीन-- बजाय इसके कि स्वप्नों को प्रत्याख्यान करो, जैसे कि समकालिक गिरजाघरों ने किया था, आगस्टीन ने अपनी पुस्तक डे जेनेसी एन्ड लिट्टरम की बारहवें भाग में स्वप्नों व दर्शनों के बारे मे अपनी ओर से विस्तृत जानकारी दी है।

टेरटूलियन - टेरटूलियन ने अपनी पुस्तक “ए ट्रीटीज़ आन द सोल,” या “ डी अनिमा के” ८ पाठ, निद्रा और स्वप्न कि अपनी पढाई पर लिखे है! उनका विश्वास था कि हर कोई स्वप्न देखता है, और इस का सबूत वे बच्चों की सोते, मे हरकतों को बताते है, वे मानते है कि स्वप्न चार स्रोत से आते है, दानव परमेश्वर, सामान्य स्वप्न जो शरीर आत्मा बनाता है, और आखिर मे “मोहक स्थिती और उसकी विशिष्ट अवस्था,” था दूसरे शब्दों मे असचेतता! आगे और वे कहते है, “और इस तरह हम - जो दोनों मानते और आदर करते है! उस वक्त भी जब हम भविष्यवाणी करते है, आधुनिक दर्शनो जिन्हे हमे समान रूप मे वचन दिया गया, और पवित्र आत्मा कि दूसरी शक्तियों को यह मानलें कि वह मसीहत के लिए एक कारण है जिसके लिए उसे भी भेजा था! सारे इनामों को बाँटते हुए जैसे कि परमेश्वर ने सब मे बाँटा था!”

थैशियस साईपरिएन - कारथेज के बिशप २५० ए.डी मे फ़ौरेन्थस प्यूपिअनस को एक पत्र मे उन्होंने लिखा, “चाहे मुझे यह पता है कि कुछ लोगों के लिए स्वप्न हास्यकर है, और दर्शन मूर्खता, फिर भी दृढ निश्चयपूर्ण यह ऐसा है, जैसे किसी पादरी के प्रतिकूलता पर विश्वास करना, बजाय पादरी पर विश्वास करने के! दूसरे पत्र मे उन्होंने लिखा कि परमेश्वर गिरजाघर कि सभा को मार्ग दर्शन करता है” कई और स्पष्ट दर्शनो द्वारा! वे पढने वाले की, सैलेरिनस की प्रशंसा करते है, क्योंकि उसका धर्म परिवर्तन, रात मे एक दर्शन से हुआ था!

उन्होंने कहा, और तो और, वे खुद अपने अन्दर इस दृष्ट के अर्थ कि शंका मे थे! और जब वे इस विचार पर सोच रहे थे कि इस का अर्थ क्या हो सकता है, तो रात अचानक हो गई; और तब निद्रा मे मसीह परमेश्वर नजर आए, उसी चिन्ह के साथ जो आसमान मे देखा था और उन्हे आदेश दिया कि उसी प्रकार का चिन्ह जैसे आसमान मे देखा था, बनाए और उसका इस्तेमाल, अपने आप को दुश्मन से बचाने के लिए करे! वे सुबह उठे और अपने दोस्तों को इस अचम्भे के बारे मे बताया! और फिर, सोने और बहुमूल्य जवाहारतों के कारिगरो को बुलाया और उन के बीच बैठ कर, उन्हे उस चिन्ह का वर्णन किया जो उन्होंने देखा था, और उन्हे आदेश दिया कि वे उसी प्रतिरूप को सोने और बहुमूल्य जवाहारतों से बनाए! और इस प्रतिरूप को देखने का मुझे स्वयं अवसर मिला (कानस्टेटाईन का जीवन १, २८-३०).

११, **सौकरेटस** - एक स्वप्न जो सौकरेटस ने बताया था वह ईगनैशियस का था! इगनैशियस ने दूतों का दर्शन देखा, जो मसीह भजन बारी-बारी से गा रहे थे! और इस तरह

बारी-बारी से गाने वाले गीतों कि विधि का प्रारम्भ किया (एक्लेसिएस्टिकट हिस्टरी वा ३५ और ३६, थीओडोरेट द्वारा लिखी हुई)।

१२. अथैनसिउस

अलैक्डेडिआ ३२८ से ३७३ तक अपने महान काव्य में मसीह से क्षमा प्रार्थना है, अगेस्टद हीथन, उन्होंने लिखा, अकसर जब शरीर शान्त होता है, और आराम करता है और निद्रा में रहता है, मनुष्य अनदरूणी तौर से हिलता रहता है, और उसे निहारता है जो उस के अलावा है, दूसरी देशों कि यात्रा करना, टहलना, परिचीत जनो से मुलाकात, और अकसर इन के द्वारा दिन भर के कार्यक्रमों का अनुसार लगाते हैं और पूर्व विचार करते हैं! परन्तु यह किस कारण हो सकता है, सिवाय विवेकी आत्मा के, जिस में वह सँचता है और वह देखता है जो उस के आपे से बाहर है?

क्योंकि अगर जब मिले हुए जो या जुड़े हुए हो शरीर से, वह बन्द नहीं होता या शरीर के छोटी किशाओं के तुल्य हो, पर अकसर, जब शरीर बिस्तर पर लेटा है, हिल नहीं रहा है, परन्तु मृत्यु समान निद्रा में है, आत्मा जागृत रहता है उसके स्वयं ताकत से और शरीर के सामान्य ताकत को बढ़ाता है और ऐसे कि जैसे शरीर में रहते हुए भी उस से दूर जा रहा हो, विचार करता और देखता है उन चीजों को जो पृथ्वी के बहार हैं और अकसर रुक कर बातचीत करता है, संतों और दुतों के साथ जो कि शारिरीक एवं संसारिक दुनिया से कई ऊँच हैं और उन का सामना करता है, और पूरा शब्दता के विश्वास में उस कि बुद्धिमानि में, क्या यह और भी ज्यादा अमरत्व कि शिक्षा ज्यादा सफाई से नहीं मिलेगी, जब शरीर से अलग, किया जा ऐ, परमेश्वर के निश्चित समय पर? (१ ३१.५ और ३३.३)

१३. ग्रैगरी नयस्सा का

अपने बड़े विध्या के ग्रंथ औन द मेकिंग आफ मैन, ग्रैगरी ने इस में सीधे मानव जीवन के सोने कि जगाह ऐसे अर्थ आवर स्वपनों के बारे में बताते हैं! उन्हें यह विश्वास था कि जब मनुष्य सोता है, इंद्रिया और विवेक आराम करते हैं और जीव आत्मा कम तार्किक भाग उनके ऊपर प्रभावी हो जाते हैं! विचार शक्ति रवत्म नहीं हो जाती, परन्तु ऐसे आग कि तरह धधकती रहती है, जैसे भूसी का ढेर हो, और फिर वह अनदरूणी दृष्टी में फूट पड़ती है उस में जिसे आधुनिक स्वपनों कि खोज करने वाले दूसरी मानसिक अवस्था कहते हय! वे आगे कहते हैं कि जब सारे मनुष्य अपने दिमाग से मार्ग दर्शन पाते हैं, कुछ उन में से थोड़े हैं जो देवी बातचीत के काबिल पा ऐ जाते हैं, इस कारण है कि निद्रा का विचार सब में एक जैसे और सामान्य रूप से आता है, कुछ को, सब को नहीं, इसे अपने सपनों के माध्यम से कुछ अधिक दैवी स्पष्टता से ... उनका कहना था कि एक

सामान्य पहले कि जानकारी होती है जो कि एक गुप्त रास्ते से जीव आत्मा के अतार्किक भागों के जरीए आती है! जिसे असचेत अवस्था कहते हैं, आधुनिक गम्भीरत आत्मा विध्या के मताविक और जीव आत्मा के इस भाग के माध्यम से परमेश्वर खुद सीधे बातचीत करता है!

ग्रेगोरी ने फिर स्वपनों के दूसरे अर्थों के बारे में बताया, इस विषय पर पूरी जानकारी देते हुए! उन्होंने सलाह दी कि स्वपन हमें अपने पूरे दिन की व्यवस्था और वृत्तांतों का स्मरण दिलाते हैं! या वे शरीर की अवस्था को बतलाते हय, उस की भूख या प्यास, या व्यक्तित्व की भावमय स्थिति को! चिकित्सा अभ्यास में स्वपनों को यह दर्शाया जाता है कि कहीं शरीर बिमार तो नहीं! सचमुच, बजाय इस के कि यह एक मिथ्या विश्वास है ग्रेगोरी ने वह सिद्धान्त जिस पर आज कि स्वपनों की विश्लेषण सम्बन्धी विव्या निर्धारित है, उसे बडत आच्छी तरह समझाया!

ग्रेगोरी ने अपने एक उपदेश, जिस का नाम है इन प्रेड साप द फाँटी मरटाचरड में बतलाया एक स्वपन के बारे में जो उन पर जाहिर हुआ उस वक्त जब ने एक समेलन में अपस्थित थे जो उन सिपाहीयों की याद में रखा गया था जो शहीद हो चुके थे! उस स्वपन में, उन शहीदों ने ग्रेगोरी को उस की मसीहत में आलस्य के बारे में ललकारा, और इस का उन के जीवन पर बहुत गंभीर असर हुआ!

यह बात तो साफ है कि दर्शन के अनुसार, कार्यक्षमता और व्यक्तिगत रूप से, नयसा के ग्रेगोरी ने यह मावा कि हो सकता है कि वह स्वपन हो सकता एक दैवी दर्शन हो जो उस के मनुष्य स्वार्थ की गहराईयों से आगे हो!

१४. महान बेसिल

यशयाह पर अपने उपदेश में, बेसिल ने कहा, स्वपनों की पहेलियों में एक नडदीकी सम्बन्ध है उन चीडों से जीव अर्थ लाक्षणिक है या धर्मशास्त्र में, धिमे रूप में है! इस तरह दोनों यूसुफ व दानियल, भविष्यवाणी के द्वारा, स्वपनों का अर्थ बतालाते थे! क्यों कि विचार शक्ति में अपने आपमें इतनी ताकत नहीं है कि वह सच्चाई गह यई तक जा ऐ (एस बसीली मगनी, कामेनवेरियम इन इसायम प्रोफेटम, प्रोऐमियम ६ एक, जो पी मिगने, पैवरैलोजीए ट्रैकाई, पैरिस, १८८०, भाग ३०, स्तंभ २७ ३०)!

यह कि बेसिल ने यह विश्वास किया कि वे स्वपनों को समझने लगे, इस बात का पता हमें एक पत्र से चलत है जो उन्होंने एक स्त्री को लिखा, जिस में उन्होंने उस स्त्री के सपने का अर्थ जो उस ने उन्हें भेजा था, बतलाया! उन्होंने उसे सलाह दी कि उस के

सपने का अर्थ था कि वह ज्यादा समय आत्मिक ध्यान में लगा ऐं और विविकी दर्शन क उक्षपादन करे. जिस के द्वारा परमेश्वर देखा जा सकता है!

१५. नाजीआंजेन के ग्रेगोरी

अपनी कविताओं कि दूसरी पुस्तक में ग्रेगोरी लिखते हैं, और परमेश्वर ने मुझे लडकपन से ही बुलाया मेरे रात्री के स्वपनों में, और मैं बुद्धि के लक्ष्य तक पहुँचा (एस ग्रेगोरी थि आलोजी, कैरमिनम, लिबर २, ९९४-९५०)! दूसरी जगह पर उन्होंने बताया कि यह रात्री के दर्शन एक छपि हुई चिगारी कि तरह थे जिस ने उन के पूरी जीवन को परमेश्वर के लिए आग लगा दी! अपनी एक कविता में उन्होंने स्वपनों के माध्यम से, दानवों के बात करने कि योडयता के बारे में भी बताया है! अपन पूरा विश्वास स्वपनों कि विडम्बना पर मत डालें नही अपने आप को सारी चीडो से धवरा ऐं, संतो षजनक दर्शन देख कर फूले न समाते क्यों कि अकसर , ये जाल एक दानव आप के लिए बिछ्ता है! (कारमिनम, लिबर१, ६०८-९, पंक्तियाँ २०९-१२)!

१६. सेटजॉन क्रिसोस्तोम

प्रेरितोम के काम, भाग एक, पर अपने उपदेश में ने कहने हैं कुछ को महिमा स्वपनों द्वारा दी गई थी, कुछ को खुल्ले आम उनडेलदी गई थी! यकिनन स्वपनों द्वारा, भविष्यवक्ताओं ने देवी दर्शनों को देखा व पाया! क्रिसोस्टिम ने अनुसार स्वपनोम को उन्हे भेजा जाता है जिन कि इच्छा ऐं परमेश्वर के लिए फरियाद है, क्योंकि उन को दर्शन कि आवरयक्ता नही, ना हि ज्यादा चौकाने वाले दैवी स्पष्टताओं से, और उन्होंने यूसूफ का वर्णन किया, यीशु के पिता, और पतरस और पौलुस का उधाहरण दिया, इसकिसच्चाई पर (होमिलिज औन मैयपू ४, १० एफ, १८:५)!

१७. सिरीम के सिनेऐ

सिएस सिनेऐ सिएस ने स्वपनों पर एक पूरी पुस्तक लिखी है! वे कहते हैं, एक मनुष्य सीखता है .. जागते हुए, दूसरा सैंते हुए! परन्तु जागने कि अवस्था में मनुष्य हि अध्यापक है, परन्तु वह परमेश्वर है जो स्वपन देखने वाले को सफल बनाता है अपनी खुद कि पराक्रम से, ताकी सीखना और पाना दोनों एक बन जाते हैं! अब सफल होना पढाने से ज्यादा हाय! (आगस्तीन फिटजजेरालड, द ऐसेज ओण्ड हिमज ऑफ सिनिऐसिएस ऑफ सिरीन, लण्डन, औक्सफोर्ड यूनिवरसिटी प्रेस, १९३० पृ ३३२ (फ्रौम कनसरनींग ड्रीमज)

स्वपनों के बारे में वाद विवाद करने के लिए सिनऐसिएस, ने बहुत बड़ीया विचार रखा है, और फिर उन को पढ़ने से जो आशीश मिलेगी, उस का भी विस्तृत वर्णन किया है! उसे जीव आत्मा के लिए जो सफाई से प्रभाव प्राप्त करता है, स्वपनों कि सही पढ़ाई से, भविष्य के संदेश मिलते हैं उन सब के साथ जो ये संकेत करते हैं! महत्वपूर्ण सूचना भी मिलती है, शरीर के भ्रष्ट, कार्यों पर और उन्हें ठीक किया जा ए! सब से ज्यादा जरूरी, यह समझ जीव आत्मा को अनावरण चीड़ों पर विचार करने को कहती है और इसलिए, चाहे उसने केवल भविष्य कि जानकारी देना शुरू किया हो, वह जीव आत्मा को परमेश्वर कि ओर ले जाता है और उस के प्रति प्रेम उद्घोष करता है! सिनऐसिएस ने यह भी बताया कि स्वपनों ने उन कि मदद लिखते में कैसे की और दूसरे कार्यों में भी, और किस तरह वे मनुष्य को अकसर एक आशा दिलाते हैं जो जीवन कि मुशिलों से परेशान दो गए थे!

वे उन लोगो का मजाक बनाते थे जो प्रचलित स्वपन किताबों पर भरोसा करते थे, इस बात पर जोर दे कर कि केवल स्वपनो को लगातार कोहराकर संशोधन करके अनुभव करना है तब ही वे उसे समझ पाएँगे! उन का प्रधान स्वभाव स्वैच्छिक है, और उन को स्वपन देखने वाले को अपने जीवन से तौल कर समझना चाहिए! उन में से कुछ तो परमेश्वर कि तरफ से सीधे दैवी दर्शन होते हैं, पर कई स्वपन ऐसे होते हैं! जो असपष्ट होते हैं और उनका अर्थ बताना मुश्किल होते हैं! उन्होंने यह सलाह दी कि यदि कोई उन का अध्ययन गंभीर रूप से करना चाहता हो तो उसे एद हिसाब रखना चाहिए ताकी वह अपनी निद्रा का जीवन और जगृत जीवन को समझ सके! उन्होंने स्वपनों और पौराणिक कथाओं में मेल देखा और अपने विश्वास को व्यक्त किया कि पुराण कथा, स्वपन पर आधारित है! पौराणिक कथाओं से सच्चा लगाव मनुष्य कि मदद करता है उस के खुद के स्वपनों का ज्यादा आवश्यक अर्थ लिखने में आरिबर में सिनऐसिएस ने बताया कि उस केविश्वास का तर्क यह है कि स्वपन हमेशा कि जिन्दगी के बारे में संकेत करते हैं! जैसे सोने कि स्थिति जागने कि स्थिति के लिए है, वैसेही जीव आत्मा का मृत्यु के बाद स्वपनों के जीवन से है और इस तरह यह स्थिति हमें कुछ अभिप्राय देती है उस जीवन के बारे में जो मृत्यु उपरान्त हमारी जीव आत्मा का होगा!

१८. ऐम्ब्रोज

ऐम्ब्रोज ने अपने मशहूर पत्र जो उन्होंने थियोडोसि एस को लिखा था कि वह पश्चाताप करे, उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने एक स्वपन में उन्हें चेता वनी दी है कि जब तक वह पश्चाताप नहीं करता, वह सम्राट के साथ हाथों से लिख रहा हूँ, ताकी केवल तुम इसे पढ़ सको ... मुझे चेतावनी दी गई है, मनुष्य से नहीं, न मनुष्य के डरिए, परन्तु सीधे

उससे कि यह मेरे लिए मना है! क्यों कि जब मैं व्याकुल था, उसी रात जब मैं निकलने कि तैयारी में था, मैं ने स्वपन में देखा कि तुम जिरजाघर आ ए हो, और मुझे बली चदाने नहीं दिया गया, अपना परमेश्वर कई तरह से चेतावनी देता है, स्वर्गीय चिन्हों के जरीए, भविष्यवक्ता कि मानसिक क्रिया के डरीए, पापीयों का दर्शन दिखा कर वह चाहता है कि हम समझे, यह कि हम उस से प्रार्थना करे कि वह हमारी सारी तकलीफें दूर करे ... यह कि मसीहत का विश्वास एवं शांती ... हमेशा रहे (सेंट ऐम्ब्रोज, पत्र एल आई १४) आगस्तीन बनाते है कि परमेश्वर ने सेंट ऐम्ब्रोज को स्वपन में दैवी शक्ति द्वारा दो शहीद संतों कि जगाह कैसे बताई! जिन्हे बाद में निकाला गया और सही पवित्रीकरण संस्कार किया गया (सेंट एम्बोज, पत्र २२, सेंट आगस्तीन, द कनफेशनस, ९(७०१६, द सिटी आफ गौड, १२ ८)

संत ऐम्ब्रोज ने अपनी अध्यत्मविध्या संम्बन्धी लेखों में ऐम्ब्रोज ने बताया कि एक स्वर्गदूत जो स्वपनों के माध्यम से बात करता है, वह पवित्र आत्मा के आदेश पर कार्य कर रहा है क्यों कि देवदूत शक्तियाँ, आत्मा के आधीन रहती चलती है!

१९. आगस्तीन

जैसे कि इस क्रम के पहली संख्य में बताया गया, आगस्तीन ज्यादातर मसीही जीवन में स्वपनों कि स्थिती ती और समझ के बारे में लिखते है! उन की अनुभवों का ज्ञान कि विध्या इतनी मिथ्यावादी थी, जैसे ड्रिप्स कि भी हो सकती थी प्राचीन दुनिया में! उन्होंने सच्चाई को कुछ ऐसी वस्तुओं के साथ देखा जिन का हमारे शरीर से प्रतिकार है और इस इंद्रिय अनुभव कि छाप है, वह छाप जो स्वभाव से मानसिक हो! हमारे पास फिर वह अन्दरूणी उपलब्धी है इस इंद्रिय अनुभव कि और आश्विर में मानसिक जाती अपने याद रखने लायक आकार में! यह आत्मा का कार्य है जो इन अन्दरूणी उपलब्धीयों को वस्तु से जोड़ता है! एक जगाह पर, वे विचारों के प्रभाव को, वह पुल जो वस्तु को चेतना से जोड़ता है, कहते है! इस तरह वे वही विचार है जो साईरीन के सिनिसिएस ने कहे थे! आगस्तीन के मुवाबिक मनुष्य कि एक बाहारी आँख है जो प्राप्त करती और ध्यान लगती है, इंद्रिय छापों पर, और एक अंदरूणी आँख है जो इन जमा और संग्रह की गई मानसिक सच्चाईयों जिन्हें हम स्मरण शक्ति भी कहते है, जाँचती और परखती है! उन सच्चाईयों के अलावा जो बाहारी अनुभव और अन्दरूणी अनुभव याने स्मरण शक्ति स्वराज्य के आधीन आत्मिक सच्चाईयाँ (स्वर्गदूत और दानव) स्वयं अपने आप को अंदरूणी आँख को दिखा सकते है! यह उसी स्वभाव के जैसे संग्रह किये हुए मानसिक या संम्बन्धी सच्चाईयाँ जो ज्यादा अंदर होता है! आगस्तीन लिखने है कि मनुष्य निद्रा या अचेत अवस्था में उन विषयों का अनुभव कर सकते है जो स्मरण शक्ति से आते है

या कुछ और छिपी हुई शक्ति से, कुछ आत्मिकता से मिली हुई एक जैसी आत्मिक वस्तु के द्वारा (संत आगस्तीन, ऑन द ट्रिनिटी १० ४,४,७)! यह स्वराज्य के आधीन सच्चाईयाँ शारीरिक नहीं, होती, परन्तु फिर भी वे या तो एक शारीरिक रूप ले सकती हैं और बाह्यरी आँख से देखी जा सकती हैं या उन्हें सीधे सचेतना में पेश किया जा सकता है उन्दरूणि आँख के जरीए, स्वपनों, दर्शनों और अचैत अवस्थामे! इस तरह स्वपनों के द्वारा, मनुष्य को पूरे भण्डारग्रह कि अचैत समरण शक्तियाँ मिल जाती हैं और स्वेच्छानुरूप क्षुप्ती भी! उसे उस लिक में प्रवेश मिल जाता है जिसे हमारे पिता आत्मा का प्रदेश कहते थे!

जैसे कि स्वर्गदूत मनुष्य कि आत्मा से सिधे संस्पर्क करते हैं और अपने संदेश अन्दरूणी आँख को भेजते हैं, वैसे हि दानव भी करते हैं! वे उपकाते हैं (मनुष्य को) किसी भी प्रकार अद्भुत और अन्देखे तरीकों से वे तिव्रता से अपने शरीर से उन मनुष्यों के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं जो असावधान हो, और कुछ काल्पनीक दर्शनो द्वारा, अपने आप को मनुष्यों के विचारों से मिलाते हुए, चाहे वे जाग रहे हो या सो रहे हो (द डिवाइनेशन आफ दीमनस, ९, फादरस ऑफ द चर्च इक १९५५, भाग २७, पृ ४३०)!

स्वपनों और दर्शनों पर सिद्धांत लिखने के अलावा, अगस्तीन ने दैवी स्वपनों के कई अनुभवों पर भी वाद विवाद किया है, अपने लेखकों में! उन में से एक बहुत हि महत्वपूर्ण या उन कि माँ मौनिका का स्वपना, जिस में उन्होंने अपने आप को एक तौलने वाले यंत्र पर खड़े हुए देखा और एक यूवा पुरुष जिस का चेहता मुशुराहट से दमक रहा था उन के पास आया! वह थे नहीं थी और जब उस ने पूछा क्यों, उस ने उसे अपना दुःख सुनाया कि उस का बेटा मसीह से दूर चला गया है! उस ने उस से कहा देख: और अचानक उस ने देखा कि अगस्तीन भी उसी के साथ उसी माप पर खड़ा था और उसे तसल्ली हो गई! उस चिन्ह का महत्व समझ कर वह सहवशीलता और आशा से उस के लिए प्रार्थना करने लगी! क कनफैशन नामक पुस्तक में उस के स्वपनों और दर्शनों को भी कई जगह पर बताया गया है! (कनफैशवस ३.५.१७, ६.२३;७.३०)

२०. जेरोमी

अपने शुरूआती दिनों में; जेरोमी दो भागों में बंट चुका था, उच्च कोकि के ग्रंथों का अध्ययन या बाईबल, तब उस ने एक स्वपना देखा! अचानक मुझे आत्मा ने पकड़ लिया और घसीटता हुआ मुझे न्यायादीक्ष कि न्याय कि कुर्सी के पास ले गया और यहाँ बती कि शैरानी बहुत तेज थी, और वे जो चारों ओर खड़े थे वे भी चमक रहे थे, कि मैं जमीन पर गिर पड़ा और ऊपर मुँह उठाने कि हिम्मत न हुई! पूछने पर कि कौन और क्या हूँ मैंने जवाब दिया, मैं एक मसीही हूँ! पर वह जो अध्याय था कहने लगा; तुम

झूठ बोलते हो, तुम सिसेरो के मानवे वाले हो, मसीह के नहीं? क्यों कि जहाँ तुम्हारा धन है, वही तुम्हारा मत भी होगा! एक दम से मैं मूक हो गया और इन चाबुक कि मारों के बीच उस ने आदेश दिया था कि मुझे कोड़े भारे जाएं इन यातनाओं से ज्यादा मुझे मेरी बुद्धि कि आग से ज्यादा यातना हो रही थी, अपने आप में वह वचन सोचते हुए कब्र में तुझे कौन धन्यवाद देगा? इन सब के कारण मैं रोने लगा और अपने पर विलाप करने लगा, यह कहते हुए, मुझ पर दया कर, है परमेश्वर मुझ पर दया कर! कोड़ों कि मारों के बीच यह रोना फिर भी सुनाई पड़ा! आस्विकार, वे जो साथ में खड़े थे, अद्यक्ष के सामने घुटनों के बल पर गिर पड़े और उस से प्रार्थना करने लगे कि वे उस कि जवानी पर तरस खाएँ, और मुझे समय दें कि मैं अपनी गलतीयों का पश्चाताप कैसे परन्तु यदि, फिर भी, उन्होंने कहा, यदी मैं फिर भी नासैतक व्यक्ति के काव्य पढ़ूँ तो तो मुझ पर अक्षयाचार करें...!

क्षद अनुसार मैंने एक शपथ खाई और उसे के नाम को पुकार कर कहा, परमेश्वर, यदि मैं फिर कभी कोई दुनियावी पुस्तक प्राप्त करूँ, या फिर से कभी भी इस तरह कि पुस्तक को पढ़ूँ, तो मैंने तुझे अस्वीकार किया है! तब विदा हुआ, इस शपथ को लेने के बाद, मैं ऊपर कि दुनिया में आगया, और सब कि हैरानगी में, मैंने अपनी आँसूओं से भरी हुई आँखों खोली, मेरी परेशानी इतनी साव जाहिर हो रही थी कि अविश्वासी भी विश्वास कर लेता! और यह कोई निद्रा नहीं ना हि कोई व्यर्थ स्वपन था! ऐसा जिस पर कि हम लोग अकसर तिरसकार करते हैं, मैं उस धर्मसभा को साक्षी के लिए बुलाता हूँ जहाँ मैं था, और वह भयंकर न्याय जिस से मैं डरता हूँ...! मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे कंछे काले और नीले पड़ गए थे, और नींद से जागने के काफी देर तक भी मुझे जोंगों का अहसास होता रहा, और उस के पश्चात मैंने परमेश्वर कि पुस्तकों को एक ऐसे उक्ष्साह के साथ पढ़ा जो कि उन मनुष्यों कि लिखि हुई पुस्तकों से कई ज्यादा था, जिन्हें मैं पढ़ा करता था! (सेंट जेरोम, पत्र १२, एकुतोशियम के लिए ३०)!

जेरोम कि पढ़ाई ने उसे अच्छा विचार दिया, स्वनों और दर्शनों का महत्व जानवे के लिए! यिर्मयाह २३:२५ पर बताते हुए, उन्होंने कि यिर्मयाह के इस विषय से सहमत थिकि स्वपना देखना एक तरह कि भविष्यवाणी है जिसे परमेश्वर एक दैवी प्रेरणा कि गाडी के रूप में इस्तेमाल करता है किसी जीव प्रणी पर यदि किसी व्यक्ति का जीवन उस कि और लगा हुआ हो, तो यह एक परमेश्वर कि और से एक बहुमूल्य दैवी प्रकाशण हो सकता है! परन्तु यदि स्वपनों को खोज कर उन का जवाब दूँ जा ए अपने फायदे के लिए, उस के द्वारा जो केवल अपना स्वार्थ देखता है, परमेश्वर का नहीं, तो स्वपने मतीपूजन के समान हो जाते हैं! स्वपन कि अहमीयत खोज ने वाले पर और अर्थ समझाने वाले पर निर्भर होती है! कई बार परमेश्वर अधर्मी को स्वपने देता है, जैसे कि नबुकदवजर और फैरो को, ताकी परमेश्वर के सेवक अपनी बुद्धि प्रकट कर सके! यह

उन का कार्य है जिन के पास स्वपनों का अर्थ समझाने के लिए परमेश्वर कि आज्ञा है! (एस युसेबी हईरोमिनी, कमनहेरीओरम इन जेरमियम प्रोफेटम ४.२३) यह वचन मूर्ती पूजकों को नहीं, मिला चाहे उन्होंने डिटनी भी कोशि की यशायाह ६५:४ पर व्याख्या करते हुए, जेरोम विव्यवक्ता के आधार जाते हैं और उन लोगों की निन्दा करते हैं जो कब्रों में बैठते और मतीयो के मंदिरों में जहाँ उन कि आदत हो गई है किवे बली दिये हुए जानवरों कि खाल पर बैठ कर, स्वप्नों में भविष्य खोजते हैं, अति घृणा योग्य जो आज भी ऐसिलेपि अस के मंदिरों में अश्यास किया जा रहा है (कोम्मनटेहिओरम इन इसाईयम प्रोफेटम)! बाद में किन्तु, गलतीयो के बारे में विवाद करते हुए उन्होंने खास तौर पर उस स्वपने को लाया जो प्रेरीतों के काम सोलवाँ अध्याय में पाया जाता है, जिस में पौलुस को सहि रोशनी मिली थी (लूकम वेरो) (कमनेटेशिओरियम इन एपिस्टोलम एंड गलेटोस,) जेरोम स्वपन और देवी दर्शन के बीच कोई फर्क नहीं बताया! उन्होंने दोनों को सफाई से महत्व दिया! फिर भी आरिवर में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वे इन अनुभवों के बदते डर का समर्थन करता हूँ! लव्यव्यवस्था १९:२६ और व्यवस्थाविवरण १८:१० का अनुवाद करते हुए, पुस्तक अंश में एक शब्द के बदलाव में, जो सीधे ग़ैर अनुवाद था, जेरोम ने न्याय को बदला तुम दुना टोटका या शकुन ज्ञान नहि करोगे (याने भविष्य बतलाना) उन्होंने निषेधात्मक यह किया तुम शुन ज्ञान का अभ्यास नहीं करोगे ना हि भाषान्तर के अधिकार से, स्वपनों को भविष्य बतलाने वाला के बराबर श्रेणी में रखा और उन को सुनने का अभ्यास दुसरे मूदविश्वास के अभिप्राय के साथ!

पुराने नियम में एनन शब्द दस बारा आता है! ज्यादातर विष्यों में अभी प्रस्तुत अनुवादों में, उस का सीधा अनुवाद भविष्य नतलानेवाला या भविष्यबतलाना है! यहाँ से हम उन १००० वर्षों में प्रवेश करते हैं जिन्हें अन्धकार युग कहा जाता है और टॉमस ऐक्वीनाँस के लेखों से पहले कुछ ज्यादा हि कहा गया था!

२१. टॉमस एक्वीनाँस

एक्वीनाँस पर ज्यादा असर ऐरिस्तोटल का हुआ था और वे मसीहत को ऐरिस्ताँटल कि संसारिक दृष्टि पर नीचे ले आना चाहते थे! इस संसारिक दृष्टि ने आत्मिक अनुभवों के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी! इस कारण स्वपनों एवं दर्शनो को महत्व नहीं दिया गया, साथ में स्वर्ग दूतो और दानवों के अनुभवों को, चंगाई को, आत्मा में बोलना और चमथार को अन्त में, ऐक्वीना अ के जीवन में, जो उस ने निखा था, उस को विरोध किया! वह परमेश्वर से सीधा रिश्ता रखने आया, तीन स्वपनों के अनुभवों के कारण और लिखना व लिखाना रोक दिया! जब उन्हें लिखते रहने के लिए उत्तेजित किया गया तो वे बोले, मैं और ज्यादा नहीं कर सकता; मुझे ऐसी चीजों के बारे में दैवी प्रकाश

मिला है कि जो भी मैंने अब तक लिखा वह एक तिनके के बराबर है, और अब मैं अपने जीवन का अंत के इंतजार में हूँ! (पश्चिमी दुनिया कि महान पुस्तकें, गत १९ (थामस ऐक्वीनाँस), चिकागो, एंक्सायकलोपीडिया ब्रिटैनिका, इंडु . १९५२, पु ६)!

यह मसीहत का स्वपनों के विचारों के बारे में एक मोड़ था और परप्रधान परमेश्वर कि दैवी प्रेरणा को विश्वासी के जीवन में ले जाने कि योग्यता! चाहे मसीहत ने आगे पीछे बार बार फटफटाने हुए अपने स्वपनों के महत्वों के अभिप्रायों को स्वपनों के महत्व के अभिप्रायों पर, चाहे मसीहत ने आगे पीछे होकर फट फटाया हो, जो आज का व्याप्त अभिप्राय आज कि तार्की ता के समानय है और धर्मशास्त्र के उपदेशों से अलग है और शुरुआत के गिरजाघर के पादरीयोम से थी! यदि कोई यह विश्वास करता है कि परमेश्वर सच में अपने बच्चों के साथ, स्वपनों व दर्शनों के माध्यम से बात चीत करता है तो वह विचित्र लगेगा!

२२. अब्रहम लिंडन

अब्रहम लिंडन ने अपनी धोखे से की गई हय्या होने के कुछ दिनों पहले हि, स्वपनों में होने वाली मृत्युके बारे में पता चल गया था!

कई और आधुनिक उदाहरण हैं जिन्हें यहाँ बता सकते हैं! परन्तु हमारा उद्देश्य यह नहीं है! आज बाजार में पूरी पुस्तकें हैं जो स्वपनों का समझने का मसीही इश्वरज्ञान और अध्यात्मविधा सम्बंधी अर्थ समझाती है! प्रमाण सम्बंधी पुस्तकें भी हैं जो स्वपनों और दर्शनों के प्रकारों के बारे में जो आज मसीही समाज अनुभव कर रहा है! जैसे हम ने बार बार देखा है, स्वपने और दर्शनों को परस्पर बदलने योग्य समझा गया है और चाहे यह अनुसंदान आदीरूप से स्वपनों के बारे में है, चौड़े अभिप्राय में इसे देखा जाना चाहिए और दर्शनों को भी मिला लेना चाहिए!

अभी समय है कि मसीहत बाईबल सम्बंधी समझ में नींद और स्वपनों और दर्शनों और दैवी प्रेरणा को उसी से समझे! नये नियम में स्वपन और दर्शन का वर्णन करने पुरानी शब्द!

यूनान कि नए नियम मे, कई यूनानी शब्द व वाक्यखण्ड

यूनान कि नए नियम मे, कई यूनानी शब्द व वाक्यखण्ड पा ऐ जाते है जो स्वपनों और दर्शनों और दैवी प्रेरणा के अनुभवों के माध्यम से परमेश्वर से मुलाकाट क बारे मे दर्शाने है! वेये है!

ओनर स्वपन के लिए एक सामान्य शब्द! उच्चित रीति से यह एक दर्शन है जो हम सोते हुए देखते है, जागते हुए देखने के विरुद्धमे इस का इस्तेमाल मन्त्री १:२०, २:१२, १३,१९,२२ और २७:१९ मे किया गया है!

ऐनुपनिओम दर्शन जो सोते हुए देखा जा सकता है! यह देदने पर जोर देग है, एड्डम चकित करन वाली गुण, उस के विपरित कि नीद मे लिया गया! इस का प्रयोग प्रेरित २:१७ और यहदा ८ मे किया गया है!

होरामा अनुवाद दर्शन इस का मतलब रात मे देखे गए दर्शन हो सकता है या सोते हुए अनुभव , और जागते हुए दर्शन भी! इन्हे मन्त्री १७:९, प्रेरित ७:३१, ९:१०, १२, १०:३,१७,१९,११:५; १२:९;१६:९,१० और १८:९ मे इस्तेमाल किया गया है!

ओपासिस आँखे को दृष्टि कि इंद्री बताया गया है, किसी भी प्रकार का रूप, एक चरमा भी; परन्तु दो जगहें है जहाँ इस का मतलब अलोकिक दर्शन बताया गया हाय: प्रेरित २:१७ और प्रकाशिता वाक्य ९:१७ शारिरीक अपलब्धी एंव ग्रैर शारिरीक उपलब्धी मे फर्क यूनानी मे नहीं बताया गया! दोनों देखना यर्थथ उपलब्धी है!

ओपटेसिया अनुवाद दर्शन इस मे स्वयं भेद प्रकाशन कि इंद्रिय जान है, कि वह स्वयं को देखवाये! इन चार उपदेशों मे इन का इस्तेमाल हुआ है: लूका १:२२; २४:२३ और २ कशिधि १२:१)

एक्स्तेसिस वह शब्द जिस मे से अंग्रेजि शब्द ऐक्स्तेसी (अती आनन्द) निकाला गया है! उस का यथाशब्द मतलब है स्वयं से हट कर खडे होना, बदलाव लाया जाना, स्वयं के विरुद्ध और सामान्य तौर पे यहाँ प्र एक आश्चर्य कि चैतना है, व्याकुलता और अती डर भी है! इन का ताप्रर्य सोते या जागते अनुभवों से हो सकता है! मानसिकता पूर्वक, दोनों सोते मे स्वपने और जो आकृति जागने कि सीमा पर मिलती है, चाहे हायपनोगोगिक या हायनोपोम्पईड आकृति हो, उस स्थिति मे ठीक बैठते है जो ऐक्सटेसिस बतलाती है! चाहे इस का अनुवाद अचैत अवस्था हो, परन्तु इस शब्द अचेत अवस्था का

इस्तेमाल बहका देगा यदि इस का सीधे अनुवाद कर के इस्तेमाल किया जा ऐ! इसे मशकुस ५:४२, १६:८; लूका ५:२६; प्रेरित ३:१०, १०:१०; ११:५ और २२:१७ में किया है!

गिनोमाई एव न्यूमाती अनुवाद आत्मा में होना (प्रकाशित १:१०)! यह उस स्थिति को दर्शाती है जिस में हम दर्शव देख सकते हैं और सूचित किया जा सकता है या आत्मा से सीधे बात हो सकती है! वेंणत वाक्यों के अंश मत्ती ४:१, मरकुस १:१२, लूका १:४१ और ४:१ में पें जाते हैं!

प्रेफिस्टमी, पैरिस्टैमी सामान्य तौर पर उस यथार्थता पर संदर्भ करता है कि कुछ सच्चाई रात में या दिन में रहती है! लूका १:१, प्रेरित १०:३०; १६:९; २३:११ और २७:२३!

ऐजिलोस या स्वर्गदूत यथाशब्द मतलब है, असली में शारिरिक इन्त, संदेश लाने वाला, या दैवी शक्ति जिसे परमेश्वर ने भेजा हो, या दानव, भूत या शैतान की शक्ति यों! दोनों स्वर्गदूत व शैतान स्वपनों में मिल सकते हैं और दार्शनिक अनुभवों में भी जैसे कि इन वचनों में बतलाया गया है: प्रेरित १०:३, और प्रकाशित वाक्य में कई जगहों पर! बलेपो और ईडो मतलब देखो इंद्रियों से देखना! इन शब्दों का इस्तेमाल देखने से किया गया है, सामान्य बाहरी बुद्धि से, परन्तु फिर भी इन का संदर्भ आत्मिक दृष्टि से देखने के लिए भी किया गया है, जैसे कि इन वचनों में बतलाया है: प्रकाशित १:२, मरकुस ९:९ और लूका ९:३६! स्पष्ट रूप से, क्योंकि इस शब्द का अर्थ दोनों अन्दरूणी व बाहरी दृष्टि को दर्शाया गया है, शुरूआत के मसीहो ने दार्शनिक अनुभवों को आसानी से इंद्रियों द्वारा देखे जाने वाला समझ लिया और जितना बाहरी शरीरिक दुनिया का इंद्रियों से देखना होता है उतना ही आसान और जल्द अन्दरूणी का भी!

अपैकालउपसिस अनुवाद दैवी प्रेरणा यथाशब्द इस का अर्थ का मतलब है भेद प्रकाशन, दैवी खुलासा या आकाशवाणी! इस का इस्तेमाल रोमियों १६:२५, १ कुरिथि १४:६, २६, २ कुरिथि १२:१,७ और गलतीयों २:२!

जब हम इस महान प्रकार के शब्दों के इस्तेमाल को नए नियम के मसीहों को करते हुए देखते हैं जो कि इन के दार्शनिक अनुभवों को बतालाते हैं, तो उनकी बहुत ज्यादा संख्या है जिन में से वे चुन सकते हैं, इस तरह वे सही तरह के दर्शन जो वो पा रहे हैं उस को सही तरीके से वर्णन कर सकते हैं! हमारे शब्द कोश में शब्दों की कभी के कारण हम केवल एक या दो शब्द ऐसे होते हैं जो हमारे अंदरूणी अनुभव को स्पष्ट कर

सकते हैं, दार्शनिक अनुभव हमें आत्मिक मुकाबलों कि कभी दर्शाते हैं जो इस पश्चिमी समयता में अनुभव करते हैं! कारा हम अपने शब्दकोष में कई ऐसे शब्द डाल सड़ें जो हमारे विभिन्न प्रकार के अंदरूनी आत्मिक अनुभवों को महसूस कर रहे हैं!

दर्शन के स्तर को स्पष्ट करना

१.स्वेच्छा नुरूपी दर्शन

हम स्वेच्छानुरूपी अंदरूनी चित्र हि प्राप्त होते हैं जैसे कि स्वेच्छानुरूपी रेहमा परमेश्वर किसी दोस्त या रिश्तेदार का चेहरा दर्शन में देगा, और हमें पता चल जाता है कि हमें उन के लिए प्रार्थना करनी है! चित्र हलका और सौम्य होता है, और हमारे अंदर दिखाई देता है वह तेज या छुंदला, निश्चीत या धुंदला, हो सकता है! जब मैं मसीही झुण्डों में मत संख्या करता हूँ, तो मुझे पता चलता है कि एक ने इस तरह के दर्शन पाए हैं!

२.प्रार्थना में स्वेच्छानुरूपी दर्शन

यह पहले वाले स्तर से मिलते जुलते हैं, फर्क बस यही है कि हम उन्हें प्रार्थना में परमेश्वर को ढूँढते हुए पाते हैं! उन को देखने में हमारा कुछ भाग नहीं है! वे यँहो आ जाते हैं या दिमाग में उठ खड़े होते हैं! हमें यह भी पता चलता है कि हम उन्हें दूर करना चाहते हैं या उन को किसी और रीती से बदलना चाहते हैं (वैसे सच में हम नहीं बदलना चाहते, परन्तु हमें उस के दर्शन चाहिए अपने नहीं)! परन्तु, यह हमें इस बात को बताना में मदद करती है कि यह उस के दर्शन थे जो कि हमारे दिमाग पर प्रभाव कर गए (ढभ ७:१, १३, १४)! जिन का मत मैंने लिए उन में से ७० मसीहो ने इस तरह के दर्शन का अनुभव किया है!

३.अपने आप से हटकर दर्शन

देखना इस स्तर में, मनुष्य अपने से हटकर दर्शन देखता है, अपनी आत्मिक आँखों से जैसे कि उदाहरण के लिए ऐलिशा ने दुआ की और कहा, हे परमेश्वर, मैं प्रार्थना करता हूँ, उस कि आँखें खोल कि वह देखे सके तब यहाक ने सेवक कि आँखें खोल दी, और जब वह देख सका, तब क्या देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय छोड़ों और रथों से भरा हुआ है! (१२ राजाओं ६:१७) जिन मसीहों का मैंने मत लिया, उन में से केवल १५% ने इस प्रकार के दर्शन का अनुभव किया था!

४. अचेत अवस्था में दर्शन

दर्शन अचेत अवस्था में भी पाए जाते हैं! पतरस ने अचेत अवस्था में दर्शन पाया (प्रेरित १०:१० २३ में अचेत अवस्था के दर्शन के बारे में धर्मशास्त्र में ज्यादा नहीं बताया गया न ही २० वीं सदी में जिन मसीही झुण्डों का मत मैंने लिया उन में से केवल ५ ने अचेत अवस्था में दर्शन पाए हैं!

५. दर्शनों का मुकाबला स्वपनों से

पौलुस ने रात में दर्शन पाया जब वह जो रहा था (प्रेरित १६:९,१०)! धर्म शास्त्र में स्वपने सामान्य हैं (५० के लगभग) और वे शबी सदी में भी सामान्य हैं! जिन मसीहों का कन मैंने लिया उन में से ८५ ने स्वपन देखा जो परमेश्वर कि और से था! ये पाँचों स्तर के दर्शन समान रूप में प्रवल और आत्मिक हैं, और इन सब को पूर्ण रूप से परखा, तौला एवं समझा जाए!

पूरी रंगीन या काली व सफेद चित्र?

जिन लोगों का मत मैंने लिया उन में बराबरी भागों में वे हैं जो पूरा रंगीन दर्शन देखते हैं और वे जो काला सफेद देखते हैं! कुछ लोगों के अंदर बहुत अच्छे अंदरूनी स्पर्श जान कराने वाला यंत्र (ऐटिना) है जिस कारण उन को सफाई से दिखाता है! मेरे दर्शन घुंघले हैं और काले सफेद! कुछ लोगों के तेज, साफ और पूरे रंगीले होते हैं, वे ऐसे दिखते हैं जैसे कोई टेप चल रहा हो! मैं ज्यादा बाँया दिमाग हूँ! मुझे लगता है कि बाँये दिमाग के लोग (विश्लेषण सम्बंधी, तर्क शास्त्र सम्बंधी) हो सकता है कि उतना साफ न देखते हो जितना कि वे जिन्हें परमेश्वर ने दाहिने दिमाग कि सीख दी है (स्वभाविक और दार्शनिक)! यह ठीक है! जब मुझे ज्यादा देखने कि जरूरत पड़ती है तो मैं उस के साथ मिल जाता हूँ जो भविष्य दर्शी है, वह जो मुझे से ज्यादा सफाई से देख सकता है! यीशु ने दल बना कर काम करना सिरवाया है; अन्होंने चेलों को दो दो कर के भेजा था!

हम एक दूसरे से मुकाबले के लिए नहीं हैं! हम अपनी गुण दूसरों को बाँटते हैं ताकि उस की सेवा कर सकें!

आत्मा को देखने के लिए अपनी योग्यता को बढ़ाना:

पहले, हमें स्वपनों और दर्शनों कि दुनिया में जीने का महत्व जानना चाहिए! उस मन कि भाषा के रूप में देखना चाहिए, एक प्रथम जरीया जो परमेश्वर हम से बात चीत करने के लिए इस्तेमाल करना चाहता है! दूसरा, परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए हमें तैयार रहना है, शांत समयों में, अपनी मन कि आँखों उस को अर्पित कर के ताकि वह उन में अपना स्वपने दर्शन भर दे! हम चाहते हैं कि अंदरूणी दर्शन का बहाव सीधे पवित्र आत्मा के द्वारा हो! हम उस के दर्शन कि खोज में हैं, अपने खुद के नहीं!

आप देखेंगे कि जितना ज्यादा यह जरीया आप परमेश्वर को सौंपेंगे, उतना ही ज्यादा उस का इस्तेमाल होगा! वह बढ़ेगा और तब तक बढ़ेगा, जब तक आप उस जगाह नहीं पहुँच जाते जो परमेश्वर ने डाँचों को बताई थी, वह यह कि वह हमेशा स्वपनों और दर्शनों से गर्भवति रहे! हमारे प्रभु यीशु ने उदाहरण रखा, क्यों कि उन्होंने खुद कुछ नहीं किया, जब तक कि उस चीज को करते हुए उन्होंने पिता को न देखा हो! (यूहन्ना ५:१२,२०)

बाइबल बताती है कि जब हम परमेश्वर के पास आये तो विश्वास के साथ आएँ! हमें स्वपनों व दर्शनों कि दुनिया में भी विश्वास के साथ आना है! और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है! (इब्र ११:६) यदि हम शक के साथ स्वपनों व दर्शनों कि दुनिया में प्रवेश करेंगे, तो हम पाएँगे कि हम कहीं नहीं पा रहे हैं!

जब हम बदते हैं, नज़ा ए इस के कि हम अंदरूणी दुनिया को क्षयाग हैं, जैसा कि हम में से कईयों को करने के लिए सिखाया जाता है, हमें चाहिए कि हम बाहारी दुनिया से उस का फर्क सिखें, परन्तु उस में आराम से सुविधाजक जीना सिखें!

जब हम जीवन कि और देखते हैं, तो हम देखते हैं कि हम सामान्य अनुभवी बातचीत से ज्यादा प्रतिबिम्ब से प्रभावित होते हैं! उदाहरण के लिए, हम रेडियो से ज्यादा दूरदर्शन पसन्द करते हैं, एक उपदेशक जो उपदेशक कि रीति से पढ़ता है में ज्यादा उस उपदेशक को जो भडकीली कहानियाँ सुनाता है, ईश्वर ज्ञान कि पुस्तक के बजें प्रमाण संबंधी पुस्तकें! विश्लेषण संबंधी विचारों का उतना प्रभाव नहीं होता जितना कि प्रतिबिम्ब से देखना! प्रतिबिम्ब हमें सोचने का रास्ता बताती है जो हमें आत्मिक दुनिया के अनुभवों के इतना नजदीक लाता है, जितना कि और कोई विचार या केवल मौनिक विचार नहीं ला सकते! डाँचों ने पाया कि उन कि उद्देश्य बनने कि योग्यता उन कि जिदगी में उस वक्त आयी जब उन्होंने, जो दर्शन और स्वपनों परमेश्वर उन्हें देते थे, उन्हें सेन करना सिखा!

जब हम बाईबल में देखते हैं, तो पाते हैं कि परमेश्वर ने यथाक्रम ईश्वर ज्ञान का इस्तेमाल हमसे बातचीत करने का अपना प्रथम मार्ग नहीं!

यदि हम बाईबल में देखें तो पाते हैं, कि अपने आप को हमें दर्शाने के लिए परमेश्वर ने यथाक्रम ईश्वर ज्ञान का इस्तेमाल नहीं किया! बल्कि, उन्होंने हमें एक क्षणभंगुरता में, उद्घोषणा से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, प्रबल कहानीयाँ दी, जिन में, निसंदेह, प्रतिबिम्ब, तस्वीरें और दृष्टान्त संयुक्त हैं! यह कोई संयोग नहीं है कि परमेश्वर ने अपने आप को हम पर इस तरह जाहिर किया! बल्कि, मुझे पूरा यकीन है यह इस लिए क्यों कि उन्होंने पहचाना कि आत्मिक सच्चाई दर्शाने का यह तरीका बहुत कामयाब है!

पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने आप को जाहिर करने के लिए भविष्यवक्ताओं का सहाय लिया (यथाशब्द सिद्ध पुरुष और तंबू कि सुन्दर तस्वीर के जरीए (जो कई बार आज भी जब हम उस का अर्थ समझ गए हैं तो, रास्ता दिखलाता है! और तो और तो नए नियम में थी, केवल यह बताने के बजाए कि वह इतिहास तेजस्वी, प्रतापान और प्यार से भरा हुआ है! परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा ताकि वह उस कि महिमा का प्रकाश और उसके तत्त्व कि छाप (इब्रा १:३ उच्चारण जोड़ा गया) बने कुलसियों १:१५ हमें बतलाता है कि यीशु अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है! सो हम देखते हैं कि जब परमेश्वर ने बहुत सफाई और सामर्थ्य से अपने आप को हम पर जाहिर किया है, उन्होंने ऐसा शब्दों या विचारयुक्तता से नहीं किया, परन्तु एक पुरुष के जीवन से, अपने पुत्र यीशु मसीह से, जो कि एक प्रतिरूप थे परमेश्वर का! जब यह धार्मिक ज्ञान हमारी समझ से बाहर हो जाता है, तो हम यीशु के जीवन पर ध्यान दे सकते हैं, और यदि हम उस में चले, तो हम परमेश्वर में चल रहे हैं!

परमेश्वर अपने आप को हम पर जाहिर करने के लिए प्रतिमाओं का इस्तेमाल करता है यह नहीं कि हम उन प्रतिमाओं पर विश्वास करेंगे और झुक कर आराधना करेंगे, परन्तु इसलिए कि वह पूर्णता से हमें परमेश्वर कि ओर ले जा ऐंगी! यीशु ने खुल पढ़ाते वक्त कहानियों और दृष्टान्तों का बहुत इस्तेमाल किया बजा ए केवल विवेकी विचारों के, क्यों कि उन्होंने भी आत्मिक सच्चाई प्रतिमाओं कि शक्ति और बहुमूल्यता को पहचाना!

मती १३:३४ कहना है, ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं (जैसे हम कुछ हि पल में देखेंगे) और बिना दृष्टान्त वह उन से कुछ न कहता था (उच्चारण जोड़ा गया)! यीशु ने जीवन कि हर चीज को दृष्टान्त में बदल दिया! उन्होंने विषयों को चिन्हों में स्वर्गीय बहुमूल्यता और सच्चाईयों में बदल दिया था! पूरा जीवन उन के लिए एक चित्र के सदृश कहानी थी! यीशु दार्शनिक दूनिया में जी रहे थे उन के विचार और बात भी वैसी ही थी (दृष्टान्त) और यह एक महत्वपूर्ण चीज है, उन के द्वारा परमेश्वर कि शक्ति

पाने का यीशु ने पानी के पीने के विषय को एक जीवित पानी के विवाद में बदल दिया (यूहन्ना ४)! उन्होंने उस सफेद खेत को जो कटने के लिये तैयार था, उसे आत्मिक सच्चाई में बदल दिया कि पृथ्वी के लोगों को आत्मिक कटाई कि जरूरत है ताकि वे स्वर्ग के गोदाम में पहुँचे! जो आमाम्य तौर पर (याने मेरी दार्शनिक क्षमता) और फिर उसे भरने के लिए परमेश्वर को सौंपें!

एक बार मेरी दार्शनिक इंद्रि फिर से जीवित हो जा ए और परमप्रधान परमेश्वर को सौंप दिया जाए, मुझे यीशु नासदि कि तरह जीने का अवसर मिलिगा, दैवी दर्शन के लगातार बहाव के कारण!

इस्राएल के भविष्यवाक्ता केवल कह सकते हैं कि मैंने देखा और जब वे परमेश्वर के समक्ष में शान्त हुए तो उन्होंने देखा (दान ७:२,९,१३)! मैंने यह पाया है कि क्यों कि मैं अपनी दार्शनिक योग्यता का दुबारा इस्तेमाल करना पा चुका हूँ, मैं भी अपने आप को परमेश्वर के समझ शान्त करना चाहता हूँ, ढूँढना चाहता हूँ और फिर परप्रधान परमेश्वर का दर्शन पाना चाहता हूँ! मैं एक सिद्ध पुरुष हूँ केवल इसलिए कि मैं देखनेवाला बन गया हूँ!

बाइबल कहती है कि हमारे पास नहीं हय क्यों कि हम माँगते नहीं हैं! सालों तक मैंने नहीं देखा, क्यों कि मैंने कभी नहीं ढूँढा, न ही दिखाने के लिए कहा! जब मैं लोगों को ढूँढना सिखाता हूँ, मैं उन के सिद्ध पुरुष बने के अनुभव का साक्षी बन जाता हूँ!

यह बहुत आसान लगता है और कईयों के लिए है भी, खास तौर पर उन के लिए जो स्वभाव से अंतज्ञानी, स्वैच्छिक और दार्शनिक हों, जिन्होंने अपनी स्वभावी स्वैच्छा के खुल्लेपन को दर्शन से काट ना दिया हो, क्यों कि किसी समाज का प्रभाव था जो तक्शास्त्र, विभाजन और ज्ञान की पूजा करते हैं! चित्र और प्रतिमा यीशु के सामने थी उन्हें आत्मिक सच्चाई के चित्रों कि सीडी समझ जा सकता है!

चाहे परमेश्वर ने दर्शन पर ज्यादा भरोसा किया हो, आत्मिक सच्चाई बताने कि लिए या आत्मिक शक्ति देने लिए, पिछले ३०० वर्षों में तार्किकता को धीरे धीरे अपना लिया गया है और यह मसीहत पर राज्य करती है! इस का वतीजा यह है कि, परमेश्वर के लोमों ने परमेश्वर से शुद्ध प्रतिमा एँ पाना बन्द कर दिया है! उन्होंने अपने प्रापती के सैंधत बन्द कर दिये हैं! उन्हें अपनी हैसियत पर इतना भरोसा है कि वे उन को, जो सच में इस आत्मिक अनुभवों पर विश्वास करते हैं, जो पवित्र आत्मा से वे पाते हैं (स्वपन, दर्शन और प्रतिमाये) उन्हें वे विचित्र लगते हैं!

यीशु कि तरहा बनना

मै यत्नपूर्वक यह चाहत हूँ कि मै यीशु कि तरहा जीयूँ, पिता के अंतर्ज्ञान से, वही करते हुए जो मै पिता को करते देखता हूँ (यूहन्ना ५:१९, २०; ८:३८)! परन्तु उस तरहा जीने से पहले, मुझे यह सीखना है कि मै सिद्ध पुरुष कैसे बनूँ! हेतुवादी समाज में, जहाँ देखना को सामान्य रूप से तिरस्कार कि नजरों से देखा जाता है, वहाँ यीशु कि तरहा दर्शन देखना स्मरणार्थ प्रयत्न बन जाता है!

ढूँढना और देखना

मेरा अनुभव और कई औरों का अनुभव ने भी मुझे विश्वास दिलाया है कि यदि एक बार हमें आदत हो गई आत्मिक दुनिया में उन्मील से देखने, कि ताकि एक दर्शन परमेश्वर से पा सकें, और वह तुरन्त मिल जा! विश्वास से ढूँढने का एक आसान काम, हमें उक्साता है यह देखने के लिए कि वहाँ क्या है!

मुझे यकीन है कि आत्मिक दुनिया है, चाहे मै उसे देखूँ या नहीं! सिद्ध पुरुष बनने से, मै केवल वह देखना सीख रहा हूँ जो है! जब देखना सीख रहा हूँ, मै यह भी सीख रहा हूँ कि एक क्षय प्राप्त इंद्रि को कैसे जीवित किया जाए कमजोर दार्शनिक क्षमता कि चंगाई!

किन्तु, जो मेरी तरहा है, जो विभाजन और जान कि तरफ सामान्य झुकाव के साथ पैदा हुए थे, और जिन्हें यह शिक्षा उन के समाज कि तार्किकता के कारण की गई है, सिद्ध पुरुष बनना उनके लिए आसान न होगी! अक्सर अंतर्ज्ञान और दार्शनिक कार्य कमजोर हो कर मर गए हैं, क्योंकि उन का इस्तेमाल नहीं हुआ! इसकारण, यह इतना आसान नहीं है कि ढूँढो और देखो!

जब एक माँस पेशी कमजोर हो जाती है, उसे पहले व्यायाम किया जाता है और ताकतवर बनाया जाता है, इस से पहले कि शारीर उस का दुबाय इस्तेमाल करे! ऐसे ही, हमारी कमजोर, शिथिल दार्शनिक क्षमता को भी व्यायाम करवाना चाहिए और ताकतवर बना चाहिए, इससे पहले कि उसे पवित्र आत्मा भरे और फिर से इस्तेमाल करें!

पहले, हमें तिरस्कारित पाप से पश्चाताप करना है जिसे परमेश्वर ने रचा है, और दूसरा हमें परमेश्वर से कहना है कि वह उस में नया जीवन फूँके! फिर हमें खड़े हो कर देखना है कि क्या हम चल सकते हैं! जैसे हम अपना पहला कदम लड़खलाते हुए लेते हैं, हमें शक्ति मिलती जाती है, जब तक हम आसानी से नहीं चलते! बलकुल ऐसे ही मेरे जीवन में मेरे दर्शन के साथ हुआ और कई औरों के भी!

क्यों कि वह तिरस्कार के डेर से ढका हुआ था और उस का लगातार न इस्तेमाल होना, मेरी दार्शनिक क्षमता को कमजोर और बेकार बना दिया था! इसकारण जब मैं ने ढूँढ़ कर देखता शुरू किया, जो दर्शन परमेश्वर मुझे देना चाहता था, मैं ने नहीं देखा! मैंने अपनी दार्शनिक क्षमता को इतना तिरस्कार बना रखा था, कि वह जब काम करने को कहा गया तो नहीं कर पा रही थी!

जैसे कि पाठरीयों ने अकसर अपदेश दिया है कि, हमारे मन रेडियों कि तरह है! हमें उन्हें राग में गाना होगा यदि हम परमेश्वर कि आवाज सुनना चाहते हैं तो हमें उन्हें परमेश्वर के दर्शन देखने के लिए भी राग में लाना होगा! परन्तु मेरे इस विषय में, मेरे मन का रेडियों न सिर्फ राग में नहीं था, परन्तु वह ढूँढ़ चुका था और उसे मालीक से पूरे मर्मित कि जरूरत थी! इस कारण, मैंने पूर्वावस्था कि स्थिती को पाने का कार्यक्रम शुरू किया, अपनी दार्शनिक क्षमता को तिरस्कारने का पश्चताप कर के मैंने परमेश्वर से माफी माँगी कि मैंने उस चीज को जिस का रच कर उस ने तौफे के रूप में मुझे दिया था, मैं उस को मान न देसखा और इस्तेमाल न कर सका! मैंने यह भी पश्चताप किया मैंने तर्कशास्त्र, और विश्लेषण सम्बन्धी विचारों कि मूर्ती बनाने में भाग लिया, यह ऐसे विचार थे जो मेरे ऊपर और मेरे समाज पर होती हो गये थे, मैंने वाचा बाँधी कि मैं उस कि दर्शन में बहाव कि योग्यता को ढूँढ़गा और सम्मान ढूँगा उतनी हो तिब्रता से जितना मैं ढूँढ़ता और सम्मान देता था उस के विश्लेषण सम्बन्धी विचारों के बहाव कि योग्यता को!

तब मैंने परमेश्वर से मेरे दार्शनिक क्षमता पर फूँकने को कहा ताकि वह पूर्वावस्था कि स्थिती में लौटे और मुझे सिखाये कि मैं उसे अपने अंदर कैसे बहने दूँ!

तब मैं तैयार था अपने पहले कुछ लडखडाते कदम लेने के लिए! जब मैं अपने पुशकालय में बैठा परमेश्वर के चेहरे को खोज रहा था, मेरा ध्यान उस वार्दात पर गया जो यूहन्ना के चौथे अध्याय में है, जिस में यीशु कुँए के पास बैठे हैं और एक सामरी स्त्री से बातें कर रहे हैं! यह चैतना पा कर कि परमेश्वर मुझ से बैठ क बात करना चाहते हैं, मैं ने उस दृष्य को थोड़ा सा बदला! बजाए इस के कि वह स्त्री उन से बात करे मैं यीशु से बात कर रहा था! जब और ध्यान देकर उस दृष्य में देखा, देखते के लिए कि क्या हो सकता है, वह दृष्य, पवित्र आत्मा से जीवित हो गया! यीशु हिलने और इशारा किया, उस तरह जैसे जब कोई बात करता है तो! उन के हिलने से, मेरे मन में उस के शब्द आ ऐ और मेरे जीवन के लिए नियम!

यह पेहली बार था कि मैंने दर्शन को इस प्रकार पाया और मैं पुलकित हा गया यह देख कर कि धर्म शात्र इतनी आसानी से जीवित हो गया और पवित्र आत्मा कि शक्ति में इब गया! मैंने अपने आप को तैयार किया उस दैवी बहाव के लिए एक नये नियम कि कहानी को लेकर, उस पर ध्यान लगा कर और परमेश्वर से उसे भरने को कह कर!

जब मैंने इस अनुभव को बाद में दोहराया कुछ दिनों बाद तो मैं ने पाया कि परमेश्वर इन नए नियम कि कहानीयों के माध्यम से हिलते हैं और उन्हें जीवित बना देते हैं अपने स्वयं जीवन से और यह आलौकिक दर्शन बन जाता है जो सीधे महिमा के राज सिंहासन से आता है!

प्रबल प्रश्न

अब हमें कुछ प्रचलित प्रश्नों को देखले हैं! पहला, क्या मैं परमेश्वर को सीमित नहीं कर दे रहा जब मैं उन्हें हिलने को कहूँ किसी नए नियम कि कहानी में जो मैं उस के सामने रखत हूँ कि वह भरे? जवाब बिल्कुल हाँ! परमेश्वर के कुछ मत भेद हैं जब वे इंजील कि कहानी में जीवित होते हैं तो! वे उसे अपने हिसाब से किसी भी तरफ में ड सकते हैं! परन्तु, यदि इंजील कि कहानी को पूरी तरह हटा दिया जा ऐ इस के विमरित कि परमेश्वर क्या बताना चाहता है, तो मैं देखता हूँ कि कुछ नहीं होता है! दर्शन जीवित नहीं होता है! वह मृत रहता है! परमेश्वर उस, में हिल नहीं पाते! यह मेरे साथ हुआ है और बदले में मैं शिथिल हो कर कहने लगा, परमेश्वर आप इस स्थिती में अपने आप को कैसे व्यक्त करेंगे? इस के साथ, परमेश्वर वह दर्शन बताते हैं जिस से वे हिल सकते हैं और हिलते हैं!

दूसरा प्रश्न अच्छा फिर, मैं उस के दर्शन को शुरू में क्यों नहीं ढूँढत बजा ऐ इस के कि इंजील कि कहानी से शुरू कऊँ? जैसे मैंने पहले भी कहा, यह उन के लिए ठीक कार्य करेगा जो स्वभाविक रूप से अंतर्ज्ञानी हो और दार्शनिक क्षमता कमजोर है उसे हमेशा एक सीखने वाले यंत्र कि जरूरत पड़ेगी ताकि वह शुरूआत कर सके! एक बार यदि वह दर्शन का आदि हो गया, वह इस सीखने वाले यंत्र को निकाल भेंक सकता है और केवल ढूँढो, और देखो रहेगा!

तीसरा प्रश्न क्या मैं यह कह रहा हूँ कि मेरी उद्घपन की गई प्रतिमा एक दैवी दर्शन है? बिल्कुल नहीं! मेरी प्रतिमा मेरी प्रतिमा है! परमेश्वर का अदभुत दर्शन दि उसका दर्शन है! हम कभी इन दोनों को नहीं मिलाते! मैं यह नहीं कहता कि परमेश्वर का दर्शन पम्प को चलाने जैसे है! यह केवल मेरे पम्प को चलाने जैसा है! परन्तु जब अन्दरूणी बहाव का अनुभव होता है और दर्शन अपनी एक जिदगी लेकर हिलता है, महिमा के सिंहासन से बेहता हुआ, यह अब मेरा अपना नहीं है! इस समय वह परमेश्वर का बन गया है! मेरा मेरा है, और परमेश्वर का!

चौथा प्रश्न है, बाईबल में यह कहाँ बताया गया है कि हमने दृष्ट्य अपने आप चुनना है, ताकि परमेश्वर अपना दर्शन का बहाव शुरू करे? मेरा भाग का जवाब यह है, बाईबल में कहाँ लिखा है कि हमें दृष्ट्य नहीं बनाना है और परमेश्वर उसे भरे? क्योंकि

कोई साफ आयत नहीं है इन दोनों प्रश्नों के लिए, तो हम कई वचनों को मिला कर इन प्रश्नों पर शैरानी डालेंगे! एक दूसरा रास्ता यह है कि अपने मसीही भाईयों और वहनों को छट ठेठें कि ने इस क्षेत्र में अपनी मुक्ति के लिए वे खुद कार्य करें, क्योंकि इस विषय पर कोई साफ बाईबल कि शिक्षा नहीं है! वह वचन जो इस बात को कुछ नजदीकी से बताता है कि हमें दृष्य नहीं बनाना चाहिए, वह यह है कि बेकार कि प्रतिमाओं को छोड़ दो और अपने लिए कोई गदी मूर्ती ने बनाना! गढ़ी हुई मूर्ती का मतलब है एक चीज जिस कि पूजा की जाती है, अकसर लकड़ी या पथर पर गाढ़ी जाती है! (वेबस्टर कि नौनी नयी कौले जि एंट शब्दकोश) परन्तु जो दृष्य आपके दिमाग में बिठाया गया है वह गढ़ा हुआ या पता किया हुआ नहीं है! वह केवल इस बार की पूर्ती करता है कि एक सीढ़ी बन कर वह हमें दैवी प्रतिमा के बहाव तक ले जाता है! वेबस्टर व्यर्थ को जिस कि कोई कीमत नहीं; व्यर्थ, बेकार कहत है! मैं एक सिखाने वाले यंत्र को ऐसा नहीं समझ सकता के जिस की कोई कीमत न हो, जैसे कि बेकार कि मूर्ती के लिए यह सच है! सीखने वाले औजार बहुमूल्य हय और उन कि एक जगाह है! और यह हकिकत जो बाईबल हमें बताती है कि व्यर्थ प्रतिमाओं के बारे में यह बतानी है कि ऐसी भी प्रतिमा हैं जो ग्रैरव्यर्थ है! मैं समझना हूँ कि एक दृष्य को बैठाना कि परमेश्वर उस में भर दे एक ग्रैरव्यर्थ प्रतिमा है!

निसंदेह कि तरफ

यह प्रश्न कि मनुष्य कि क्षमता दार्शनिकता पर सोचने कि का दूसरा तरफ मैं दो बातें बताना चाहूँगा सारे बच्चे और दो तिहाई बड़ों ने जिन का मत मैंने लिया सामान्य रूप से बाईबल को पढ़ते समय उसके दृष्यों का चित्र अपने दिमाग में बनाते हैं! जब हम दैवी प्रेरणा कि आत्मा के लिए दुआ करे (इर्फ १:१७) परमेश्वर कहानी को जीवित करता है और उस के माध्यम से हम से बात करता है! यह वही तरीका है जो हमें बतला रहे हैं! एक चौथाई बड़ों को जिन का मत मैंने लिया, सामान्य तौर से जो गीत वे गा रहे हैं उस का भी दृष्य वे गाते में बनाते हैं! क्योंकि परमेश्वर तारीफों में रहता है, दर्शन जीवित हो जाते हैं और दिलने है उस जीवन में जो उन्हें परमेश्वर के सिंहासन से मिला है! यह दोनों वही तरीके बताते हैं जो मैं बतला रहा हूँ!

मनुष्य कि दार्शनिक तरीके से सोचने कि योग्यता, आज कल बिना जाने हि मसीहि इस्तेमाल कर रहे हैं, स्वास कर के वे जो अंतर्ज्ञानी और स्वभाव से दार्शनिक हैं! दार्शनिक सोच कोई नयी चीज नहीं है! हम केवल उसे जो सामान्य रूप से हमारे साथ होता रहा है उसे समझाने कि शुरूआत कर रहे हैं और उसे सफाई से बता रहे हैं! इस साफ अर्थ का परिणाम यह है कि, सब मनुष्यों को अब उह सिखाया जा सकता है कि वे, दैवी बहाव जो हमारे अन्दर है उस के प्रति एक बड़े पैमाने पर सचेत हो जाँ!

एक अस्थायी सिखने का औजार

यह उआद रखा जाना चाहिए कि दृष्य बैठता एक अस्थायी सीखने का औजार है जिस कि जरूरत कुछ लोगों को होती है! जो सामान्य रूप से अंतर्ज्ञानी है उसे इस सीखने के औजार कि जरूरत नहीं पड़ेगी! वह केवल ढूँढते हुए देखेगा और उसे दर्शन मिल जायेगा! मिशले करन व्यक्ति वह इस सीखने वाले औजार को जल्द ही अलग रख देगा, क्योंकि वह भी सामान्य रूप से दर्शन पाना सीख लेगा!

अगर हम बाइबली समाज में रहे होते हो सकता है! हमारे सामने इतनी रुकावटें न आती नाकि हम सामान्य और उनके आधिक अर्थ एक सामान्य हिस्सा होते हमारी बात चीत के जो हम वाशता करते हुए अपने परिवार के साथ करते, जैसे कि यूसुफ़ और दूसरे इब्रनियों के लिए था, हम अपने उनदर एक स्वभाविक कौशल बना हुआ पाते इन दार्शनिक चीडों के बारे में परन्तु, अमेरिका में कौन है जो अपने स्वपत्तो को गम्भीरता से लेता है! उन के बारे में अपने परिवार से विवाद करते हुए? व्यवहारिकता से कोई नहीं! यदि हम करें, ना हम पागल कहलाएंगे, क्या यह ताजुब कि बात नहीं! कि कौशल और खुल्लापन दर्शन के प्रति, पूरी तरह से नदायत है हमारे समाज में?

मसीही होने गए, हमें पश्चताप करना है कि हमें ने अपने समय के हेतुवाद को जगह दी कि वह हमारे संतुलित जीवन चर्या के स्वरूप को बिगड़ दिया! कुछ डर यह भी है कि होसकता है कि आच के गिर्जाधरो के सिक्षण में पूर्वी विचारों के बीज नजर आते हैं! क्या धर्म ने कभी रुक कर यह सोचा है कि यीशु पाश्चिमी नहीं थे? परमेश्वर ने हमें नर्कशास्त्र इसलिए नहीं दिया कि हम अपना मूर्ती पूजन करें और उसे एक स्तंभ पर रखें! उस ने हमें दर्शन इसलिए नहीं दिया कि हम हमें उसे अपने तिरसकार से छुपा दें! नहीं थे कई और थे जिन्होंने इन अवस्थाओं को प्रोक्ष्साहन दिया!

मसीही, अब हमें, नजरत के यीशु के संतुलत में वेंस लोट्ना है! जिन्होंने ने अपने आप कुछ नहीं किया परन्तु सिर्फ़ तो उन्होंने अपने पिता को करते हुए देखा और सुना (यूहन्ना ५:१९, २०, ३०; ८:२६, २८, ३८)! मैंने अपने कठिनाईयों और अनुभवों को बाँटा है जो मुझे इस तरह जीने कि योग्यता के करीब ले आए! मैं आप को आप भी वह रस्ता खोजिए जो आप के लिए कार्य करेगा!

पर्दा फ़ट चुका है, पवित्र आत्मा से सहचर्य सुमकिन है! क्या आप अन्दर आएंगे? क्या आप रास्ता ढूँढेंगे? क्या आप उस परदे के अन्दर आ कर परमेश्वर के सीधे मुकाबले को अनुभव करें हे, या आप इस से संतुलत हो गए जो पुस्तक उसके लिखी है उस के द्वारा दूसरों से भोग्य हुआ अनुभव कर के?

यीशु को अपना पूर्ण उदाहरण बनाना:

परमेश्वर उन्हें बुला रहा है जो यीशु को अपना पूर्ण उदाहरण बनाना चाहते हैं, जो उसीकी तरह जीने के इच्छुक हैं! और उस कि रतहा चलने के जो अपने आप कुछ नहीं करना चाहते, परन्तु यीशु कि तरह जीना नहने है! आप अन्दरके लगाकार रहमा और दर्शन के बहाव में!

क्या आप ढूँढेंगे जब तक आप उसे नहीं खोज़ लेंगे?

क्या आप उसे खोडेंगे?

तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढते हो क्यो कि आमझते हो कि उसके अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है; फिर भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आन नहीं चाहते! (यूहन्ना ५:३९,४०)

प्रार्थना परमेश्वर हम तेरे पास आते हैं पच्छतावे के साथ अपनी सभयता को हम पर आज्ञा चलाने देते के लिए, अपने आप को यह बतने हुए कि हमें अपने अन्दर कि क्षमता के कच भाग को तिसकार करना है, जिसे आप ने रचा और हमारे अन्दर रखा है! हम आप से माँफी चाहते हैं और हम चाहते हैं कि आप हमारे मनो को दुबारा, सही तरीके से स्वपनो को और दर्शन को देखना सिखाईए! हमारी सुनने और देखने कि योग्यता का दुबारा लौरई हमसे मे हर एक को उस में खेंच ला जो हमारे लिए आप के पास है!

स्वपन और दर्शन पर संक्षेप प्रतिबिम्ब

१. परमेश्वर हम से यडूनी, स्वपनों और दर्शनों के माध्यम से बात करता है, जैसे कि कई सैकडों वचनो में बताय गया है!
२. हम अनुमान नहीं लगाते कि हम ने उस के पिता के आत के क्यो को जिन का खुलासा किया गया है, उन में से कुछ को भी समझ है, जो कि परमेश्वर ने हमें धर्मोपदेश करने वाले के द्वारा दिया है परन्तु फिर भी ऐसे लगता है जैसे यीशु लगातार दैवी प्रतिमाओ हाव में जीते थे, क्योंकि वे वही करते थे, जो अपने पिता को करते देखते थे (यूहन्ना ५:१९,२० उच्चारण जोड गया)
३. क्यो कि यीशु हमारे सही उदाहरण है, हगे उसीकि तरह जीना सिखना है जैसा वे जीते थे, याने कि लगातार दैवी दर्शन के बाहव कि और खोलते हुए!

४. बाईबल बताती है कि परमेश्वर एक तैयार और मुफ्त बहाव स्वपनो और दर्शनो का देता है; जब हम पवित्र आत्मा के बहाव का अनुभव करते हैं! दूसकारण, सामान्य मसीही जीवन का मतलब है कि दर्शन के अनुभव करना शुरू कर दे! (प्रेरित २:१७)
५. शमुएल ने भविष्यवक्ताओं के स्कल स्थापित किया ताकि मनुष्य सिद्ध पुरुष बनें कि विध्या सीख सकें (भविष्य वक्ता का पुराना नाम)! ऐसा कोई लक्षण नहीं कि यह तरकीब जारी न रखी जा ए! आज कई स्कल हैं भविष्यवक्ताओं के, फिर से स्त्री पुरुष को सिद्ध पुरुष बनाने कि विध्या के लिए!
६. अगर किसी पुरुष को सिद्ध पुरुष बनाना है तो सब से अच्छा तरीका यही है कि उसे ढूँढना सिखाया जा ए! आप सैकता ऐसे वचन है, दोनो नए नियम व पुराने नियम में, जहाँ भविष्यवक्ता कहते हैं कि मैंने देखा हो सकता है कि सब से बड़ा कारण मनुष्य के सिद्ध पुरुष न बनने का यह है कि कोई अन्होने खोजी बनने कि सलाह नहीं देता! हमें एक बार फिर ढूँढना सीखना है!
७. हमें यह आज्ञा दी गई कि हम अपनी आँखों को यीशु पर केंद्रित रखें (इब्रा १२:१,२) ! यूनानी में आँखों को केंद्रित करने का शब्द हय ऐफोराओं जिस का अर्थ है बिना ध्यान को भटकें, सारि दूसरो चीजों से नजर को हटाकर देखना; नजरे जमा कर और ध्यान पूर्वक देखना, सफाई से देखना (विश्लेषण यूनानी लेक्सिकॉन, जोडरवेन) उपर्युक्त परिभाषा के मताबिक, यीशु पर अपनी आँखों लगाने का मतलब उसे सफाई से देखना यही वह बात है जो मैं मसीहो को करने के लिए कहता हूँ जब वे प्रार्थना करते हैं, आरधना करते और जीवन में चलते हैं तो!
८. क्या मैं यहाँ पर सलाह दे सकता हूँ अपने निजी अनुवाद के साथ, प्रकाशित ४:१,२ पर कि हम यूहन्ना को तैयारी करते देखें उस पवित्र आत्मा के बुल बुलाने बहाव का अनुभव करते के लिए दर्शन द्वारा! चौथे, अध्याम, पहली आचत, यूहन्ना ने कहा मैंने देखा, और हम उसे स्वर्ग में उस खुले हुए द्वार में प्रवेश करते देखते हैं! तुरन्त उसक फैसले को मानते हुए जो आवाज देकर बुला रहा था, उस दरवाजे में प्रवेश करने को, आचत दो कहती है परन्तु मैं आत्मा (पवित्र) में आ गया, और क्या यह दिलचस्प बात है कि यूनानी इरा के पीछे खास तौर पर करते हैं आयत दो के शुरूआत में बजा ऐ आयत एक के, कि यूहन्ना पवित्र आत्मा कि शक्ति में आ गया! क्या मैं यहाँ यह सलाह दूँ कि जब यूहन्ना को परमेश्वर से मिलने कि इच्छा हुई, आत्मा के क्षेत्र में तो, वह स्वर्ग में एक खुले दरवाजे कि कल्पना करता था, और उस में प्रवेश करने के बाद वह (पवित्र) आत्मा कि शक्ति में आता था, दैवी दर्शन का बहाव मेहसूस करते हुए! मैंनता हूँ यह निती अर्थ है और अगर आप इसे आलग करना चाहें तो कर सकते हैं!

इच्छुक विध्यार्थी पवित्र शास्त्र में और कई जगाड़े खोजेगा जहाँ ऐसा तरीका बताया गया था सिखाया गया हो! कृपया ऐसी कोई खोज को मुझे भेज ताकी मैं भविष्य के संपादन में उन्हें जाल सकूँ!

यह भी सेचक है कि एक बफ़िष्यवकटा का लगातार वाक्य था **मैंने देखा** बाईबल हमें बताती है! कि हमारे पास है वही क्यों कि हम भागते नहीं! इस कारण यति हमें दर्शन चाहिए तो हमें उन्हें खोजता और पूछना शुरू कर देना है, यह बात हम में से ज्यादातर लोगोंको नहीं बतायी गयी!

९. परमेश्वर हमारे साथ बंधुत्व के लिए प्रतिमाओं का इस्तेमाल करता है, जैसा कि निम्न से पता चलता है!

परमेश्वर हमारी जरूरतों को जानता है! वह जनता है कि हम अपनी कहानी से काफ़ी सचेत हैं और अपनी लगातार नाकामियों से भी! उस ने बाईबल में एक कहानी बताई है जो मनुष्य के व्यवहार को दर्शाती है! जब हम प्रार्थना पूर्वक इन कहानीयों पर मनन करेंगे तो है! हम उन्हें अपनी कहानी के साथ मिलते हुए पाएँगे है! जैसे कि परमेश्वर उन के माध्यम से बात कर रहा हो! चाहे बाईबल के कुछ भागों में यथक्रम ईश्वरज्ञान है! परमेश्वर ने बाईबल की एक बड़े स्तर पर कथा के रूप में रखा है!

यीशु खुद अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है! (मुत्त १:१५) हम देखते हैं कि जब परमेश्वर ने हमसे सफ़ाई से बातचीत की, तो वह एक मनुष्य के जीवन के कार्य से और कहानी (याने यीशु) के माध्यम से था! बजाए विरलेशन, ज्ञान सम्बन्धी विचारों के! यीशु ने रिलुप्स से कहा, जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देखा है! तू क्या कहता है कि पिता को हमें दिखाया (यूहन्ना १४:१९)! आदृश्य परमेश्वर कि सच्चाई हम पर यीशु के माध्यम से जाहिर हुई है! उसके पुत्र कि जीवन कहानी चित्र है (रंडील से जो परमेश्वर कि गती को दर्शाते हैं)!

जब परमेश्वर ने पवित्र में पवित्र को दाँचा डाला, तो वह जगह जहाँ मनुष्य सीधे परमेश्वर सामने खड़ा होगा, परमेश्वर ने अपने आप को एक प्रतिमा के रूप में मूसा के और अन्य पादरीयों के समक्ष रखा! यदि परमेश्वर प्रतिमाओं के विवादास्पद होते तो वे उनका इस्तेमाल स्वयं को मनुष्य के सामने उस रूप में न रखते, वे मूसा को एक अकले कमरे में खड़ा कर उस से मोह कर मूसे बातें करते, विता प्रतिरूप का इस्तेमाल करें! परन्तु परमेश्वर ने एक चिह्न को ढूँढा शामा का सड़क और महिमा का सिंहासन जिन ऊपर करुबों को बनवाया!

पूरे पुराने नियम में परमेश्वर के तरीकों का इस्तेमाल ?

यीशु का लगाकार दृष्टान्त के तरीकों का इस्तेमाल (चित्र कथाएँ) सिखाते में (मुत्त १३:३४).

१०. मैं समझता हूँ कि एक प्रतिरूप में या चित्र के माध्यम से परमेश्वर को मिलना ठीक है! एक सीधे आत्मिक मुकाबले के लिए क्यों कि बाईबल का समस्त ढाँचा ऐसा है कि वह किसी को भी इस अनुभव में ले जाएगा! जैसा कि हमने पहले देखा! बाईबल एक किताब है, शक्तिशाली, जीवन बदलने वाली कहानियों कि बजाए एक विश्लेषण सम्बंधी धर्मशास्त्र कि पर्वक के! हमें आज्ञा है कि हम परमेश्वर के पास छोड़े बच्चों के समान बन कर आएँ! जब कोई बच्चा कहानी पढ़ता है तो वह दृष्ट्य क चित्र बनाता है जो पढ़ते या सनते में कार्य करता है! कई बड़ भी ऐसा ही करते हैं!

इफ़िसियों १:१८, १९ के प्रकार, परमेश्वर चाहता है कि वह हमारे मन कि आँखें खोले और तब हम पदार्त हैं तो हमें आत्मिकता बुद्धि और दैकी प्रेरणा प्रधान करें! तब हम उसका वचन पढ़ते हैं तो परमेश्वर हमारे भवों से बात करना चाहता है!

इस कारण मैं बाईबल विध्या का पूरा कार्य ऐसे देखता हूँ जैसे परमेश्वर ने तैयार किया है, ताकि एक बाईबल कहानी में प्रवेश कर सकें; परमेश्वर को अनुमति दें कि वह वह दर्शन के बीच से हम से बात करें (वचन द्वारा बनाया गया), जो हमारी आँखों के सामने हैं और उस अनुभव को जीवित करना!

११. जैसे वह दर्शन हमारे मनों में जीवित हो उठता है, परमेश्वर को उस के दैवी बहात में मिलते हैं! ढानियल ४:१३-१४ राजा नेबुकेदनेजर ने एक स्वर्गदूत को अपने दिमाग दर्शन में पाया! मैंने पलेग पर दर्शन पाते समय क्या देखा कि एक पवित्र पर्यरूआ स्वर्ग से उतर आया! उस ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा..ढानियल ने जो उसे दिमाग में दर्शन मिला था उस में उस ने अति प्राचीन दिनों और मनुष्य कि सन्तान सा से स्वपन में मिला! बैबिलान के राजा बैलशस्सर के पहले वर्ण में, ढानियल ने पलंग पर स्वप्न और दर्शन देखे! क्षब उस ने वह स्वप्न लिखा, और बैतों का सारांश भी वर्णन किया! .. मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य कि सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस, अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप ला ऐं! ... मुझ ढानियल का मन विकल हो गया, और जो कुछ मैंने देखा था उसके कारण मैं घबरा गया! (ढानियल ७:१,१३,१५)

इसलिए हम देखते हैं कि हमें परमेश्वर, यीशु या स्वर्गदूतों का, हमारे दिमाग के दर्शनों में मिलना काफी बाईबल कि तरह है, जैसे दर्शन तिथित हो जाते हैं अन्दरूणी पवित्र आत्मा के तहाव से!

१२. आत्मा में देखने कि हमारी योग्यता का ढाँचा बनाय गया ताकि परमेश्वर को सौंप दिया जाए और परमेश्वर द्वारा भर दिया जाए!

हम जानते हैं कि सब कुछ जो परमेश्वर ने बनाया अच्छा था और सबकुछ में हमारी दार्शनिक क्षमता भी मिल है! क्योंकि वह सब जो परमेश्वर में सिरता है उस के सामने रख दिया गया है ताकि वह भरे, परमेश्वर का राज प्रत्यक्ष हुआ है और उस का उद्देश्य पूरा हुआ! जब हम मन कि आँखें उस को सौंपते भरने के लिए, तो उस के दर्शन हमारे मनों को भरते हैं! हमारी जिम्मेदारी यह बनती है कि हम अपनी क्षमतों को खामोशी से उस के सामने रखदे, ताकि वह उन पर चले और उन्हें कैक है! इस में शामिल है हमारे दिमाग, मन, हाथ, मुँह और हमारी दार्शनिक क्षमता, के साथ साथ वह सब जो हम ने है!

परमेश्वर सामान्य रूप से अपने आप को उस पर जबरदस्ती नहीं जाहिर करता जो अपने को उस के सामने नहीं खोलता है! हम सामान्य रूप से आत्मिक भाषा ऐ नहीं बोल पाएँगे जब तक हम अपने मुँह उसे न सौंप दे! हमें सामान्य रूप से बुद्धि के शब्द या समझदारी तब तक नहीं मिलेगी जब तक हम अपने दिमागों को उस को नहीं सौंपते! हमें सामान्य रूप से दर्शन नहीं मिलेंगे जब तक हम उसे अपने मन कि आँखें नहीं देंगे!

इसलिए, अपनी दार्शनिक क्षमता को उक्षय करने से, हम अपने मन कि आँखों को परमेश्वर को सौंप देते हैं, उसे उन्हे भरने के लिए कहते हुए!

परमेश्वर को आप कि दार्शनिक क्षमता को पणतीवित करना

कुछ लोगों के लिए पूर्ण रूप से या सपूर्ण रूप से, दर्शन पाना असंभव है! अगर ऐसा है तो इस के कई कारण हैं! सब से अच्छा यही होगा कि हम परमेश्वर से दैवी प्रकाशण के माध्यम से पूछें कि इस रूकावट का क्या कारण है और फिर उस कि दैवी प्रकाशण के जरीए से ये पता लगा ऐ कि वह समस्या को हन्त करने के लिए क्या कदम उठा ऐ! निम्न दिये गए कुछ समस्या हैं जो मेरे सामने आई थी, साथ में उन के हन भी हैं जो सहायक बन सकते हैं!

समस्या १ : दृष्टीगत को तुछ समझना और विचार युक्त की पूजा करना

लोग बिना साचे समझे पश्चिमि तर्कशास्त्र मूत्री के पूजन में और दार्शनिकता जो तुछ मानने वाले कि और बह कर आ गए हैं! पश्चिमी लोग अपनी दार्शनिक क्षमता कि मूल्यता और शक्ति पर विस्वास नहीं करते! वे उसे न मानते हैं और न आदर करते हैं कि वह एक इनाम है जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है

१. इस समस्या को सुलझाने के लिए, हमें पश्चात्ताप करना है कि हम ने उस इनाम और योग्यता को जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है, उस का न तो आदर किया और न उस को इस योग्य समझा!
२. पश्चात्ताप करें कि हम ने तर्कशास्त्र और अनुभव को मूर्ती पूजन किया!
३. यह बात को मानिये कि आप उस कि दृष्टिगत क्षमता का उतनी ही तीव्रता से आदर करेंगे, जितना कि विश्लेषण सम्बन्धी क्षमता को आदर दिया था!
४. परमेश्वर से कहिए कि वह अपनी साँस को फूँक कर दार्शनिक क्षमता को पुणर्जीवित करें!
५. अभ्यास कराइए व प्रथम करइए चित्तों में जी कर उतनी ही तीव्रता से जितनी कि विचारों में जीने हो! अब वह अपने मन कि आखों को परमेश्वर को भरने के लिए साँपने को तैयार है, उसके दर्शन को ढूँढते हुए जब वह अपना जीवन बिता रहा हो!

समस्या २ : धार्मिक अपासना में प्रवेश होने का डर

कुछ लोग अपनी दैवी क्षमता को पूर्ण रूप से इस्तेमाल नहीं कर पाते क्योंकि उन्हें यह सिरकया गया है कि ऐसा करना धार्मिक उपासना है!

इस समस्या को हल करने के लिए, हमें

१. यह समझ जाईए कि आप को चित्रों के द्वारा सोचने और देखने कि योग्यता परमेश्वर ने दी है शैतान ने नहीं!
२. यह भी जान लीजिए कि शैतान मनुष्य कि दृष्टीगती कि योग्यता को भरना चाहता है, सो परमेश्वर भी!

३. इस बान को भावीए कि परमेश्वर यह नहीं चाहता कि हम दार्शनिक क्षमता को इस्तेमाल करने से हट जाएँ, बलकी वह यह चाहता है कि हम निरन्तर उसे सौपे ताकि वह भर सके !
४. यह डर को क्ष्याग दीजीए कि आप शैतान के तकळि रूप मे फंसेगे, परमेश्वर कि दार्शनिक क्षमाता का भरने योग्यता पर विश्वास रखे !
५. डर को पाप मानीए क्ष्यागी से, और परमेश्वर के इनाम विश्वास को अपनाईए !
६. यह ज्ञान लीजिए कि शैतान आप के दार्शनिका क्रिया को उतनी हो तीव्रता से आक्रमण करेगा जितनी कि विचार क्रिया को, इसलीए दोनो को लगातार परमेश्वर को, बहाव को भरने के लिए सौपते रहना चाहिए !

**समस्या ३ : तीव्र लालसा के पाप को हटाने के लिए दृष्टी गती कि क्षमता को
त्यागना !**

कुछ लोगों ने तीव्र लालसा कि समस्या को हल करने के लिए यह निर्णय लिया है कि उन्होंने दार्शनिक क्षमता एक इस्तेमाल को क्ष्याग किया है ! ये लिंग किसी भी चीड को दार्शनिक नहीं कर सकते, अपने बैठक के सोफे को भी !

इस समस्या का हल करने के लिए हमे

१. यह जान लेना चाहिए कि तीव्र लालसा से नितटने के कई और तरिके है; ब निस्वत इस के कि उस क्षमता को जो परमेश्वर ने तुम्हे दी है क्ष्याग को !
२. इन दूसरे तरीको को सीखीए पा ऐ !
३. पश्चाताप करीए कि आप ने इस दैवी क्षमता को क्ष्याग दिया !
४. परमेश्वर से कहिए कि वह फिर से उसे पुनर्जीवित करे और तपा करे !
५. उस का फिर से इस्तेमाल करना शुरू करे और
६. परमेश्वर को उसे अपने दैवी दर्शन से भरने को कहिए !

समस्या ४ : कुछ अग्रीम दृष्टी चित्रों को हटाने के लिए दार्शनिक क्षमता को

क्षयागना !

कुछ लोगों ने अपनी सूक्ष्म ग्रहिता को दार्शनिक क्षमता क्षयाग दिया है, क्यों कि वे इस कोशिश में थे कि वह उन दुःख भरे दृष्टियों को न देख पाएँ जिन से उन्हें तकलीफ़ होती है ! यह दृष्ट्य पीड़ा का हो सकता है था कोई बार बार आते बाले साँपों के स्वपने या कुछ और दुसरे वाले दृष्ट्य ! उन्होंने सँछा कि इन सब डरवरी चीज़ों को झेलने का एक ही तरीका है कि अपने दार्शनिक क्षमता को .त्याग दे !

इस समस्या का हल यह है कि हमें (१) पहचानना है और खोजना है वजह को जिस के कारण उस ने अपनी दार्शनिकता को .त्याग दिया था ! (२) उस दृष्ट्य को परमेश्वर के सामने रखिए और उसे चंगा करे अपने प्यार भरी, पूरी शक्ति से !

३. परमेश्वर से कहि कि उस कि दार्शनिक क्षमता को पूर्वावस्था में पहुँचा ऐ !
४. किर से चित्रों व दर्शनो का उपयोग करे जैसे जैसे वह जीवन में चलता है और
५. उस के मन कि आँखों को परमेश्वर को सौप दो, ताकि वह उसको बहाव से भर दे !

संक्षिप्त में, कुछ थोड़े सामान्य रूकावटें हैं जो मनुष्यों को परमेश्वर के इनाम में दिए गए, स्वपनों दर्शन और भावना को, पूरी तरह जीने से रोकते हैं ! काश हर कोई पूरी तरह से उन योग्यताओं को जो परमेश्वर ने मनुष्य में दी हैं इस्तेमाल करना सिखें !

कुछ स्यझाव ताकि आत्मा को देखने के योग्य के बनें !

निम्न सुझाव आप को परमेश्वर कि और खुलने में मदद करेंगे, ताकि वह आप के मन कि आँखों को उस के स्वपन और दर्शन से भर दे !

१. हमें स्थिर रहना है, बाहर से व अंदर से, ताकि पवित्र आत्मा, अपने बाहाव से जीवित प्रतिबिम्ब दे ! स्थिरता पर जो पाठ था उसे दुबारा पढ़ीये ! आप एक बुलबुलित बहाव महसूस करेंगे, अपने अंदर और फिर वह दृष्ट्य जीवित हो उठता है अपनी एक निजी जीवन के साथ (याने पवित्र आत्मा का जीवन) !

२. किसी बाईबल कि कहानी को दार्शनिक रूप देकर उस में प्रवेश करें! यह सब से साधारण रास्ता है! आप जो पढ़ रहे हैं केवल उसे देखें और सिर्फ दृष्टियों को देखने के अलावा आप कुछ और भी कर सकते हैं! दृष्टियों को देखने के बाद, परमेश्वर से कहिए कि वह आप को वो दिखाए जो वह दिखाना चाहता है और फिर अंदरूनी प्रतिबिम्ब का बहाव आप में समायेगा, जैसा परमेश्वर ने निदेश दिया था!
३. अपने शान्त समय में अपने मन कि आँखें खोलिए परमेश्वर को, आप को चीजों को बताने दीजिए! मैंने यह पाया है कि अपना ध्यान निष्ठापूर्वक यीशु पर लगाएँ जब तक वह हिलने या बात करने लगे, यह आत्मा के प्रतिबिम्ब के बहाव को दर्शाता है!
४. जब दूसरों के लिए मध्यस्त करें, तो उस मनुष्य को देखें जिस के लिए आप प्रार्थना करने जा रहे हैं और फिर देखें कि यीशु उस मनुष्य से मिल रहे हैं! शिथिल हो जाईए, और उस दृष्टि को पवित्र आत्मा के जरीए चलने दीजिए! ध्यान दीजिए वह क्या करता है, फिर प्रार्थना करीए कि वह पूरा हो!
५. अपने स्वपनों को सुनिए, जो कि अंदरूनी दुनिया के स्वभाविक अनुभव हैं! परमेश्वर से कहें कि वह आप से रात में बात करें (भजन १२७:२)! जब आप जागे तुरन्त, अपने स्वपनों को लिख लीजिए और फिर परमेश्वर से उन का अर्थ जानिए! वह आप को बताएगा! मसीही स्वपनों के अर्थ पर कोई अच्छी पुस्तक पढ़ीए! मैं समझता हूँ कि ड्रीम्ज विजडम निथर्न हरमैन रिफैल द्वारा लिखित एक अच्छी पुस्तक है! परमेश्वर से बन्धुत्व संस्था कुछ रेडियो टेप विडीयो टेप और सूचना दर्शक पुस्तक हरमैन रिफैल द्वारा लिखित भी बेचती है! बिना किसी सही निदेशों के और सलाहकार के, स्वपनों के गलत अर्थ से कई गलतियाँ हो जाती हैं!
६. आत्मा में प्रार्थना करने से पवित्र आत्मा से बात चीत खुल जाती है और यह उसे उठाता है, खास कर के तब जब आप ने मन कि आँखों को भरने के लिए परमेश्वर को दे दिया हो!
७. शान्त प्रार्थना, केवल यीशु के प्रति आप का प्यार दर्शाते हुए और उस का आप के लिए, आप को प्रतिबिम्ब और अंदरूनी दृष्टि का खुलासा करता है जो कि एक रूप है दृष्टि के कार्यों कि!

८. जब आप परमेश्वर के समक्ष स्तूती और आराधना करते हुए, अपने मन कि आँखों को खोलिए और देखिए कि आप क्या जाना चाहता है! जाने दीजिए!

आत्मा मे देखवा, प्रतिमा को पूजना नही

परमेश्वर ने इसा ऐलियों को आज्ञा दी कि वे अपने लिए किसी भी मूर्ती को खोद कर न बना ऐ न किसी कि प्रतीमा बनाना, जो आकाश मे, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल मे है! तू उन को दण्डवद न करना, और न उनकी उपासन करना, क्यों कि मै तेरा परमेश्वर यहोना हूँ जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ (निर्गमन २०:४,५) इसकारण हमे ध्यान पूर्वक दोनों मे अंतर देखना है, आत्मा मे देखना और मूर्ती पूजन!

जब हम प्रार्थन मे परमेश्वर के सामने खडे हो और उस कि और से दर्शन पा ऐ तो इस मे कोई समस्या नही है! यह समस्त बाईबल मे हुआ है, जिस न एक उदहारं प्रकाशितवाक्य ४:२ मे मिलता है! यहाँ यूहन्ना को मसीह का स्वर्गीय दृष्य प्राप्त होता है, जो परमेश्वर से मिलता है और जैसे जैसे से खुलता है, हम देखने है कि यूहन्न इस मे तीव्रता से ग्रस्त हो जाते है, स्वर्गीय और स्वर्ग दूवो जैसे लोगों से बात करने हुए और स्वपन मे भाग लेकर (प्रकाश १०:८ ११)

परन्तु जब मै पहला दृष्य रखता हूँ और मसीह के दर्शन के लिए देखता हूँ, तो क्या मै अपने आप को व्यवस्था विवरण २०:४ का खण्डन करने पाता हूँ, क्यों कि मै परमेश्वर के समान बना रहा हूँ और फिर उसे झुक कर सजदा कर रहा हूँ और आराधना कर रहा हूँ? नहीं, बिलकुल नहीं!

परमेश्वर ने अपने आप को यीशु नासरी के रूप मे बदला अदृष्य परमेश्वर का प्रतिरूप (कुल १:१५) यह ईश्वर! मनुष्य ने फिर एक पूरा जीवन हमारे बीन मे जीया, हमे चित्रों के द्वारा बार बार बताते हुए, उस कि महीमा का प्रकाश (इब्रा १:३) हमे दैवी प्रदर्शन देते हुए, प्रतिबिम्ब पर प्रतिबिम्ब, सहानुभूति, कोमलता, दया और परमेश्वर कि शक्ति! परमेश्वर न सिर्फ अदृष्य है, परन्तु वह यीशु नासरी मे नजर आता है मनुष्य को दी गयी सारी प्रतिमाओं मे सब से महान इंजील के माध्यम से कथों कि ने उस कि शक्ति से भरपूर जीवन बदलने वानी कहानियों का लेखा है!

अब हमारे पास एक प्रतिमा है जो कि मनुष्य कि बनाइ हुई नही है, परमेश्वर का प्रतिरूप मे, परन्तु परमेश्वर द्वारा दि गई प्रतिमा, स्वपूर्ण रूप से उसे दर्शाते हुए, हमारे लिए उन कहानियो को गुणा करते हुए हमारे लिए लिखा है! अब, हम इंजील कि ओर जा सकते

है, उस कि पसन्दिदा कहानी को खोलीए, पढीए और देखिए अदृष्य परमेश्वर का दृष्य भरा कार्य! अकसर, वह कहानी हि हमे सहि जवाब देगी हमारी जरूरत का!

उदाहरण के लिए, जब मैने परमेश्वर से पूछा कि मै क्या सलाह दूँ किसी अवैध गर्भवस्था कि स्थिती मे तो परमेश्वर ने मुझे एक दम वह कहानी याद दिलाई जहाँ यीशु उस औरत से जो व्यभीचारिण थी कहा जा और फिर कभी पाप मत करना! उन्होंने उसे कि निन्दा की, न अस्वीकार किया न हि उस से घृणा की! उस ने उसे अपनाया, सहारा दिया और प्यार किया, और अपने उपदेश देकर भेज दिया! इस तरहा यह कहानी मेरे दिल तक पहुँची, पूर्ण रूप से आवाज और दृष्य के साथ वह कहानी जिस मे मै प्रवेश कर के उसे मेहसूस कर सकता था परमेश्वर के पसन्द कि कहानी और प्रतिमा!

मैने उस प्रतिमा को, जहाँ यीशु उस व्यभीचारिण औरत को माफी दे रहे थे, झुक कर सिजदा नहीं किया! बलकी उस दृष्य ने मुझे मदद दी कि मै अपना ध्यान, अनन्त, अदृष्य परमेश्वर जिस ने अपना प्रेम और दया दिखलाई, पर केन्द्रित करूँ!

इस एक आखरी पद को बढाते हुए, मै ने पाया कि जब मै सामान्य रूप मे परमेश्वर से बात करना चाहता हूँ! प्यार बाँटना चाहता हूँ! या अपना जीवन बाँटना चाहता हूँ, मै अपने अंदरूणी मनुष्य का ध्यान, यीशु मसीह पर ध्यान केन्द्रित कर उस कि ओर ताल लगाता हूँ, किसी सामान्य, शिथिल दृष्य से जो इंजील से लिय गया हो! जब उस कि अन्दर बास करने वाली पवित्र आत्मा उसे मेरे अंदर जागृत करती है, तो वह जीवित हो उठता है, और हम आपस मे बात करते है और कोई थी दृष्य जो वह पसन्द करता है, उस का अनुभव करते है! हम गलील समद्रके लिनारे चलते है, पहाडी पर बैठते है! या और कोई भी दृष्य का अनुभव करते है जो वह चुनता है और मेरे मन मे लाता है! यह धर्मशात्र मे सफाई से कहा गया है कि मै अपनी आँखे विश्वास के करता और सिद्ध करनेवाले यीशु कि ओर ताकते रहें (इब्रा १२:२)

यूहन्ना देखने के लिए दृष्टि की (प्रकाश ४:१) कि परमेश्वर क्या बनाना चाह रहा है! आयत दो मे, पवित्र आत्मा आ गया और एक स्वर्गीय दृष्य उसके सामने आया! मैने यीशु को कुँ ऐ के किनारे बैठे हुऐ देखा है! (यूहन्ना ४) और उस से कहा कि वह मुझ से बात चीत करे उन चीडों के बारे मे जो वह चाहता है! और उस ने ऐसा हि किया, एक सौम्य स्वैच्छिक विचारों के माध्यम से! मै ने यह ध्यान दिया है कि, जब मै ने उस पुरुष कि ओर देखा जो कुँ ऐ के किनारे मेरे साथ बैठा हुआ था, दृष्टिमोचर चेहरा नहीं था, परन्तु केवल एक मनुष्य का आकार था! सफाई से दिखने वाले रूप जरूरी नहीं है और महत्व पूर्ण भी नहीं है! कुछ वजाह से, परमेश्वर नहीं चाहता कि चेहरा सफाई से दिखे, और मैने कभी इस बात पर जोर नहीं दिया, क्यों कि वैसे भी, हम उस का दर्शन खोज रहे है, अपना नहीं! जो साफ है वह उसकि दया, कोमलता, शक्ति, धैर्य का आकार है! (दर्शन को मेरे

जीवन में इस्तेमाल करने के बाद, यीशु का चेहरा कभी कुछ साफ हुआ! जो पहली चीड़ पर भेरा ध्यान गया वह थी उसकी आँखों, जिस में प्यार और दया भरी हुई थी)!

इस तरह किसी भी प्रकार से, मुझे लगता है कि कोई खोदी गई मूर्ती बना रहा है या एक उस कि तरह कि! बल्कि परमेश्वर के प्रतिरूप कि और मुज रहा है, जो यीशु मसीह है! ना हि कोई मूर्ती पूजन कर रहा है, क्योंकि यह प्रतिमा जीवित है पवित्र आत्मा कि हल चल से जो हमें उस मुकाबले कि ओर ले जाता है जहाँ हमेशा की खुदा, अद्भुत अर्वाशक्तिमान परमेश्वर कि अराधना होती है!

हमारा अनंदरूणी पर्दा तीन उपाय सोचने वाले

आगे के पृष्ठ पर जो रेखा चित्र और कोष्ठक है, वह आप कि मदद यह देखने और समझने में करेगा कि आप कि मन कि आँखें या तो शैतान से या परमेश्वर से भर सकती हैं! परमेश्वर आप का मार्गदर्शन करे जब आप उस के स्वपन में खुलते हैं, उस के दर्शन में और उस के अनंदरूणी देवी बहाव कि प्रतिमाओं में!

कुछ किताबें जिन का इस्तेमाल आप उस वक्त कर सकते हैं जब आप दर्शन से परमेश्वर से मुलाकात करें!

अभ्यासिक तौर पर इस वर्णन के लिए कि डॉ चो कैसे जीते हैं, स्वपन और दर्शन के गर्भावस्था में, तो उन कि किताब द फोर्ट डाईमैनशन पढ़िये!

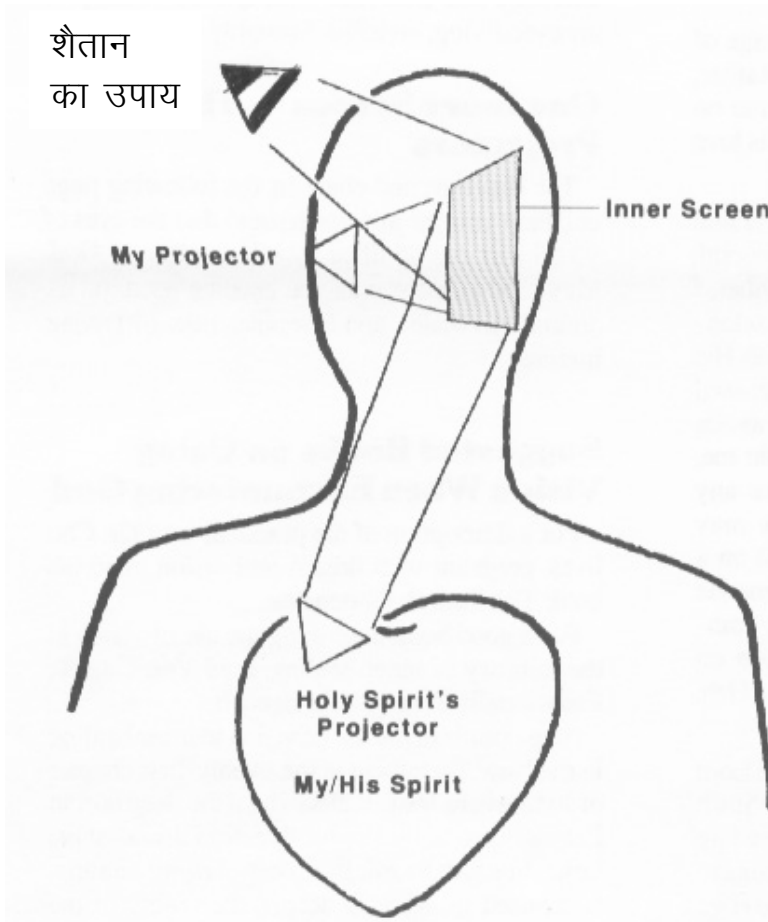
एक अच्छी पुस्तक के लिए जिस में अनंदरूणी चंगाई दर्शन के इस्तेमाल संस्था के लिए, पढ़िये! यूकेन भी इमोशनली फ्री रीटा बैनट द्वारा!

नए नियम में एक उदाहरण, दर्शन द्वारा अनंदरूणी चंगाई का, पाया जाता है यूहन्ना इक्की सवे अध्याय में जहाँ यीशु पतरस के मन के गहरे घावों को चंगा करना चाहते हैं, जो कि तीन बार अपने परमेश्वर से मुँह भोड़ने के कारण था! यीशु ने प्रतिमा का सहाय लिया ताकि वे गैहराई से और हमेशा कि चंगाई दें और पतरस पर इस का असर हो कि वह उस को माफी और प्यार जो दे रहे हैं वह उस कि गहरी सच्चाई को दर्शाया!

दोनो चोट और चंगाई मिलती है!

१. गोधूलि के समय
२. कोयले कि आग के चारों ओर
३. तिगुना अंगीकार का मिलना! परमेश्वर एक मुकबला लाता हूँ जो पतरस को उस का अस्वीकार करना, याद दिलाता है! यहाँ पर परमेश्वर बताता है कि उन के हाथ मे नाटक यादों को चंगा करने के लिए क्या नहीं कर सकता और उसे काम के लिए तैयार कर देता है! साथ हि साथ, जो था और और जो होने वाला था पतरस के दिल और दिमाग मे हाजिर थे एक पल जो उक्षुक्, गहरी चित्रता और सफाई करता है! इसे परमेश्वर के नाटक दृष्टाता मे इस्तेमाल से तुलना की जा सकती है; उन सब के लिए जो उन्नरदायी है, मेरी कहानी वहाँ बताई जा रही है! इस तीव्रता मे परमेश्वर कार्य कर रहा है! यह उस कि संस्था का केन्द्र है!

एक अन्दरूणी पर्दा - तीन उपाय सोचने वाले



१. मुझे एक दम से वह चित्रों को क्षयाग देना है जो शैतान मेरे दिमाग कि आँखों के सामने लाता है! (मन्त्री ५:२८, २ कुरि १०:५)
२. मुझे मेरे मन कि आँखे को भरने के लिए परमेश्वर को सौंपना है! (प्रकाशित ४:१)
आत्मा मे मेरे अन्दरूणी पढे पर उस दर्शन के बहाव को दर्शाना है जो वह चाहता है! (प्रकाशित ४:२)
३. आत्मा मे मेरे अन्दरूणी पढे पर उस दर्शन के बहाव को दर्शाना है जो वह चाहता है! (प्रकाशित ४:२)

परिक्षण कि प्रतिमा स्वयं कि है, शैतान कि या परमेश्वर कि

दिमाग मे पैदा हुआ एक चित्र कि रंग साजी	उस का मूल देखो (यूहन्ना ४:१) एक भडकी ली प्रतिमा क्या दिमाग खाली और बेकार था? क्या प्रतीमा प्रतिबन्धक थी?	आत्मा कि परिक्षा करें अन्दरूणी जीव से एक जीवते चित्रों का बहाव! क्या आप का अन्दरूणी जीव खामोशी से यीशु पर केन्द्रीत था!
उस के विषय को परखें (विनारों को परखे यूहन्ना ४:५) ऐक रंगचित्र उन चीजों का जो मेने सीखी है! निषेदात्मक, विनाशकारी धक्केदार, डरावना, दोष लगने वाला, परमेश्वर के स्वभाव को नहीं मैंनता, परमेश्वर के वचन को नहीं मैंनता, प्रतिमा को परिक्षा से डर लगता है! स्वार्थी प्रार्थना शिक्षाप्रद ऊपर बढना, तसल्लीदायक, दर्शन परीक्षा के लिए तैयार है! उस के फलैको देखना (फलों को परखो (मत्ती ७:१५) अस्थिर ! डर, जबरदस्ती, दास्तव, उक्षुक्ता, व्याकुलता, स्वार्थ से फूला हुआ! जल्द विश्वास शक्ति शक्ति अच्छा फल प्रबोधन, विध्या नम्रता		

निजी प्रमण पत्र लिखने का व्ययाम

परमेश्वर से निम्न प्रश्न पूछीए! परमेश्वर यह ठिठाना जरूरी है कि मै अपने मन कि आँखो का इस्तेमाल करूँ? मै उन का इस्तेमाल कैसे कर रहा हूँ? आप कैसे चाहते है कि मै उन का इस्तेमाल करूँ

अपने आप को यीशु के साथ इंजील कि किसी कहानी मे चित्रकण कि जीए! दृष्य को अपने चारों देखिए! फिर अपनी आँखे यीशु पर ठीकाईये! मुस्कुराईए! उस कि संगती का आनद लीजीए! उन से ऊपर लिखित प्रश्न पूछिए! स्वैच्छिकता पर ध्यान दीजीए और जो विचार और चित्र वह कर आते है, उन को नीचे किये गए स्थान मे लिखिए! जब उन को पा रहे हो तो उन का परीक्षा न करे! विश्वास मे रहिए! यह जानिए कि आप को बाद मे परिक्षण कर सकते है! धन्यवाद परमेश्वर, उस के लिए जो आप हम से कैहते है!

Developing Dream and vision – class worksheet

A. हम आत्मा में देखने की अपनी क्षमता को क्यों उन्नत करें?

1. a)
b)
2. a)
b)
c)
d)
- 3.
- 4.
- 5.
- 6.

B. आत्मा में देखना कैसे उन्नत करें?

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

C. गलत इस्तेमाल का निचम

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

इस का इस्तेमाल अध्यापक के मार्गदर्शन में बताया गया है

6. नए नियम कि मसीहत और नए युग का चलन

कई लोगो ने यह देखा है कि जो मैं यहां इस 'परमेश्वर से बंधुत्व' में सिखाता हूँ, उस कि प्रतिरूप, कई धर्म को मानने वाल झुण्डों में और इस युग चलन में पाए जाने हैं. । यह कई लोगों को मायने रखता है, इस लिए मैंने एक पूरा पाठ, नए युग चलन और नए नियम कि मसीहत पर अपने विचार डाले हैं ।

नया युग

"नए युग चलक" एक झुण्ड है कई लोगों को जो यह मालते हैं कि उन्होंने एक नए युग में कदम रखा है जिसे "कुम्य राशि" कहतै है । इस युग ने मीन राशी के युग को हटा किया है जो कि मसीही युग कहलाता था (मीन मछली-मुसीही चिन्ह)' कुम्य राशि का युग (पानी दोने वाता) को मनुष्य जाती कि सेवा के गूणों वाला बतलाया जाता है (अच्छे अर्थमों), भाईचारा और प्यार । यह एक सुवेहरा युग है । इस कि शुरुआत हूई, यह उस पर विरभर करता है कि आप न किस से पूछा, १९०४, १९३६, १९६२ यह बाद में । मैं व्याक्तिगत तौर पर ऐसी अनर्थक बात को अस्वीकार करात हैं और यह मानता हूँ कि हम मसीहत युग में हैं जिस में हमें हमारे परमेश्वर और रश्रक यीशु मसीह के राज्य के बारें में जो इंजील बताती है उपदेश देन है ।

नए युग चलक, मसीहों में दुविदा उत्पन्न कर रही है क्योंकि वे इस बात कि खोज में हैं कि 'नया युग' क्या है और नए नियम कि मसिहत से से कैसे अलग है।

नए युग के चलन का सही परिभाषा और समझ न होने के कारण, मसीहो ने कुछ और मसीहो को उस का सहभागी होने का दोष लगाया । यह उस से प्रभावित होने का इसकरण इस पर एक पाठ लिखने का समय आत्मिक गया है, कि नया जन और नया थुम कि कुछ भेद महत्व बताएँ ।

लिखवा शुरू करने से पहपे, मैं एक स्थानिक किताब कि दुकान पर गया एक २४४ पृष्ठों वाली किताब जिस का सीर्शक 'वए युग का सूची पत्र' था, खरीदा/आठ भागों में बंटा इस कि सूची में कई सेकड़ो किताने, लेखक, परिभाषा ओर नावा विषय कि पुस्तक और वीडियो सामग्री, जो नए युग कि सिदी। को बरे में मिल सकता था। मैं ने एक विश्वास योग्या सह पाठी को रवे दिया, क्योंकि जब वह मेरे दफतर आई और उस ने यह पुस्तक "नए चुग का सुचीपत्र" देखा जो मेरी मेज़ पर पड़ा था। उस ने सोचा मैं वह दुँ जो उस में हे यह समय था कि वह निकल जाती। जब उस को पता चला कि मैंने उसे केवल अपने उस पाठ को लिखने के लिए मुझे ठोस सबुत मिले, इस कारण मैंने उसे खरिदा है चो वह शान्त दुई।

जो तक्शप मैंने आगे के पृष्ठ पर दिया है वह नए युग और नाए नियम के मसीहत में कुछ फर्क बतलाता है।

अपने आप को या दूसरो को परिक्षण किडी इन तौ फर्कों कि सुचीसे, यह आसान होना चाहिए कि मनुष्य ने चुग का है या नए नियम के मसीहत का। जैसा कि आप देखवे हैं कि वए युग में और नए नियम के सीह में जमीन आसमान का फर्क है। यहाँ दुविदा कि कोई ज़रुरत नहीं कि कौन क्या है। यह सब को साफ करलेता चाहिए कि सिर्फ इस लिए के एक नए नियम का मसीह वो कर रहा है जो नए युग के कार्यों से मेल खाता है, चो वो कार्य इस बात का सब्त नहीं है वि वह नए युग कि रिही या शिक्षा से धाखा का गाया है। यह साफ है कि शैतान बकली है। इस कारण नए युग कि चीज़े थी बकली हैं मसीही सच्चाई की। इस का नतीजा यह है कि यहाँ

कई समान्ताएँ है परन्तु यहाँ कई फर्क भी होंगे। निम्त दी गई सुची में वुवियादी फर्क हैं। बाद में मैं आप को कुछ और खास फर्क बतताऊँग।

नए नियम मसीहत	नया युग
परमेश्वर कौन है?	
यहोन निजी सिरजनहार	पुकारने वाला दूसरा
सच्चाई का आधार	
बाईबल	प्रकट करना, चुननेग
यीशु मसीह कौन है	
परमेश्वर का पुत्र	एक ज्ञान प्राप्त अध्यापक
मुक्ति का क्या?	
यीशु के खून से खरीदा गया	ऐसा कुछ नहीं है या अंशोको जड़ि ने का कार्य
ध्यान	
मसीह पर केद्रित	मनुष्य पर के द्रित
शक्ति	
मसीह के ज़रिए	मनुष्य के ज़रिए
बुद्धि	
परमेश्वर के बुद्धि	मनुष्य कि बुद्धि
अगला युग	
परमेश्वर के द्वार लाया गया	मनुष्य के द्वारा लाया
गया	
मनुष्य परमेश्वर से प्राप्त करता है	मनुष्य, परमेश्वर बनने कि कोशि में

नया युग इतना अकर्षण क्ये रखग है इतने बढ़ते दुए लोगों में?

नया युग अपने शिष्यों को उप्यादत्ता और जीवन देता है। उद्धारण के लिए डेविड स्पैंगलर, जो २५ सालों अ नये युग पर पढ़ारहे हैं और लिख रहे हैं, वे नये युग की इस तरह परिभाषा बताते हैं " वह स्त्री जो उभरती है जब मैं अपना जीवन जीता हूँ एक उप्यादकग नियुक्तीकरण, दयालु रूप से।"

१. यह एक अच्छे ददेभी आकर्षण है और लक्ष्य है दोतो मसीह। और गैर मसीहो के लिए। वह अगे कहते हैं "मैं नए युग को समझग हूँ कि एक लक्षण हे इस दुनिया में रहने के लिए एक तरीक जो हमें परमेश्वर के सम्मुख हमें खोलता है प्रेम और संरभावना के सामने- हमरी साधारणता के बीचमे।"
२. नये युग के आदर्श ऊँचे और उन्नत हैं और उन्हें मनुष्य कि ताकत से धोचे मायनों में पा ले संकते हैं बे बहुत लोगो के लिए अत्याधिक लुभावे वाला है लोगों कि बढ़ती संरव्य। को इस कारण नोग पढ़ने के लिए उभड़ पढ़ते हैं और जो सारित्य नये युग वाले निकालते हैं उस को पढ़ते हैं।

नया युग इतना धोकेबज क्यों है?

एक कारण नए युग को धोके बाड़ होने का यह है कि वह उन विचार्यै और महत्वों को अपपनाता है जो मसीहत के समान हैं। यह, यकिनन, होना चाहिए, क्यों कि हकिकत यह है कि शैतान एक बहत बडा नकलची है। जैसे कि, फिर से दाऊद सेगतर का सुनिये" अंदर से नया चुग, उस इतिहास को ज़ारी रखता है, जो मनुष्यत्व का प्रयास है कि वह परमेश्वर के स्वभाव को रहस्यों को ज्यादा धहराई से दूढ़ना, स्वयं के, और सच्चाई के भी। अवात्मवाद के बीच यह दमरी पवित्र इदी का पुनर जन्म है.....। नया युग एक चिन्ह है, जो मनुष्य के मन और बुद्धि को प्रतिनिधि है जो परमेश्वर के साथ मिल कर एक अच्छी दुविया बताना जाहता है जो कि समाज कि, पूर्णता कि और पवित्रता के महत्वो को उत्सव मना सकता है। यह चिन्ह है सामाजिक व्यवहार के निकास का जो कि टिका है दुनियाबी दृष्टि पर जो उत्पादन, अनुशासन, प्रचुरता और पूर्णता को उत्ते जित करती है यह एक किह है, ज्यादा सरपन्नता और बिवा रुकावट अनुभवों का जो पवित्रता और प्रेम जो जीवन के मन से है।

उपर्युक्त परिभाषाओं को पढ़ने के बाद कई मसीही इस भावना को व्यतीत करेंगे कि, इन में ये कई आदर्श, मसीहत के हैं। परन्तु नया युग यह मानता है कि मनुष्य इन लक्ष्यों को स्वयं अपनी मेहनत से पा सकते हैं। या यदी वह किसी आत्मा कि मदद लेता चाहता है तो वह केवल यीशु मसीह या परमेश्वर तक ही सीमित नहीं रहन है, रपन्तु वह कई भी अच्छी आत्मा कि शक्तियाँ हो सकती हैं तो आस पास तैर रही हैं। याद रखिये कि नाया युना का चलन चुनने गला है, और इस कारण, हय किसी के भी अनुभव या अन्दरुणी दृष्टि से तेने को तैयार है। उनके पास कोई लिखित स्तर नही है जिस से कि वे अपने अनुभगे या शिक्षा। का परिक्षण कर सके जैसे कि मसीही करते है। उद्वहारेण के लिए, ये थोडी पुस्तके और लेखक है जिन को पढ़ने कि सिफारिश की गई है नए चुत्र के सुचना पत्र मे चैतल्लींग-इंवस्तिगेशनस आंन रिसीविंग इवफॉर्मिशन प्रोम पैरा नौरमल सोरसेंज़ ढ स्लीपिंग प्रोफेट, डेनेतोप योर सयकिक स्किल अण्ड क्रिस्टल दीलिंग, ऐडमर कायसी द्वारा लिखित

१. नए युग का सुची पत्र, शरिर दिमाग अत्मा पुस्तक के सपाढकों द्वारा और डब्लडे द्वारा १९८८ में प्रकाशित किया गया।
- २, ईविड परिचय
१ ईविड परिचय

मसीहत कि क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए नए युग पर?

यकिनन, हम ईदन के बाठा में शुरू हुई धोकाधड़ी का विज्जार समझते है: "मनुष्य परमेश्वर कि तरहा बन सकता है।" यह सालो साल का झूठ है कि हम दै वित्ता को अपने आप पा सकते हैं। परन्तु, समीहो ने केवल अंगूर वि लता के निचे आराम करने कि स्वतंत्रता को खोज निकाला है, ताकि वे बहती हुई जीवन कि नदी का उदी का उफाँन अपने अन्दार, पवित्र आत्मा कि मदद से मह सूस करें जैसे वे अपने कार्यों को त्याग कर और केवल परमेश्वर कि ओर ध्यान लगयें।

हम नये युग के लोगों की प्रेम, उत्पहता और पूर्णता बनने कि इच्छाका आदर करते हैं, और हम इन का एक मात्र सोत्र यीशु को मावते है। नया जन्म ाज्ञापत्र है जबवे यीशु मसीह को परमेश्वर का पूत्र उनक परमेश्वर और रक्षक मान लें और विश्वास के साथ उस के कलवरी के अभिशिक्त कार्य को पाएँ।

हम भानते हैं कि क्यों कि ये नए युग वाले वकनची हैं इस कारण वे शब्दों, वाग्यखण्डों और यंत्र कला को मसीहत से माँग लीया है या मसीही परमेश्वर से। परन्तु, हम व ही इन शब्दों को और नहि न अनुभवों को, इन शैतानी वकलचीयों को नहीं लेने देंगे, क्योंकि यह हमेशा से परमेश्वर के है। उद्धारण के लिए, नय यूग वालों ने। इन्द्रधनुष" पर लिखा है, जो कि असल में नूह के आथ परमेश्वर कि वाचा थी, और केद्रित जो शब्द दशको से शक्ति प्रचारक मण्डली इस्तेमाल करने आत्मिक रही है। नए यूग कि सूचन पत्र में एक मसीही पुस्तक हिन्डज़ फीट ऑन हाई प्लेसेड हैं हखाई द्वारा लिखित (अईबिड पृ ८९) टिनडेल हाऊज़, अंईएन सी द्वारा प्रकाशित पठने कि सलाह दी गई है।

चुनने वाले होने के बाते हम यह मान सकते हैं कि वे मसीहत में से और साथ-हिसाथ कहीं और से भी चुन सकते हैं। यह हम से भतलब बही रखता। हमारा एक स्तर है, परमेश्वर का वचन, और हमारा सच्चाई को मानना इस बात के मायने नहीं रखता कि किसी वकलचि ने इस को चुना या नहीं। हम यह देखते हैं कि वह पवित्रशास्त्र में दिखाया गया है कि नहीं और यह अच है कि ऐसी चीज़े जैसे क्रेद्रित करना या शान्त करना अपने जीव आत्मा को परमेश्वर के सामरे, जैसा कि शान्ति प्रचारक मण्डली इस का अथायास करती है, इस बात कि सफाई, राजा दाऊद ने भजव संहिता में सिखया और बताया है, जैसा वे कहते हैं सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ (भजन ६२:१,५)

इसलिए, हम यह मान ले कि क्या युग रूच्चाई और गलती के मध्य कि लकी को हलका कर देगी उनके चुनने के स्वभाव के अनुसार, परन्तु हम शान्ती से चलते रहेंगे, परमेश्वर के वचन में बताए गए सदा के सच और सिखाए गए अनुभवों के साथ। हम अपने आप को इस बात पर ध्यान नहीं लगाने देंगे कि और कितनी धार्मिक संस्थाएँ हे जो ब से अपना विचार निकाल रही हैं। हम अपना ध्यान केवल धर्मशास्त्र के परमेश्वर सांसारिक स्वयं कि मुलाकात पर लगाएँगे।

एक जीड़ जो मसीहों को करने को कहती है वह यह कि पूर्ण रूप से, मसीह के रिश्तों के हमारे सारे अंशो प्रवेश करें। नए युग ने उस राज्य पर कब्जा कर लिया है जो कि मुख्यदर के मसीहों ने छोड़ दी थे क्योंकि मसीहत/ सब से ज्यादा असर करनेवाला थी) ने और रिस्त रखवाल को को नज़र अंदाज कर दिया है और ज्यादा ध्यान कतेव्य पर और नार्किक्ता पर होगया है, एक शूव्य रह गय है उन के मने में जो आत्मिक मुलाकातों को दूँ रहे थ

गिरचाधरों भे उन्हें कवल मत सम्बन्धी शिहा मिल जाती, इस कारण उन्होंने ने आत्मिक रिश्तों को खोजा अपने हि में और नए युग कि शिक्षा में। नए युग कि शिक्षा का समसे अच्छा विपहव यह है कि मसीही प्रवेश करे और पूर्ण रूप से आलोकिक जीवन बिताएँ।

यह समय नहीं है कि हम आलोकिक जीवत्र से बाहार निकल जाएँ और केवल शास्त्रानुसार के बचाव में चेल जाएँ। क्यों कि हम न पिछले आधेशतक से यही वाक्या बता रखा है, हम ने नए युग के लिए दर्गज शोले ताकी वो आकर खाली स्थान को भरे। मन में एक लागाव बना रहता हैं कि हम दैवी से बातचीत करें और रिश्ता बनाएँ। इतिहास के उदय होते से लेकर, जब परमेश्वर के लोग प्रचार नहीं करते थे, नहि उपदेश देते थे न हि किसी प्रकार कि बस्तु बनाते थे, स्त्री और पुरुष फटकेंगे उस में जोउन को लगोगा कि उन वि आत्मा कि प्यास को भुजाएगा। हमें अपनी झिझक को परे हटा कर टूड़ता से आगे बढ़ता है, वचन और अत्मा को हमारी कभी न गलत होंन बाला मार्ग दर्शत बन करा।

पूरानी मसीहत ने एक दुःखद गलती की थी (१५० ऐ डीके लग थग) धर्मपरायणता को मड़शती देकर, पारखण्डी धर्म जो ब्रझज्ञान के सिद्धान्तों को मानते थे के खिलाफ, (जो आप फिर से उठ खडा हुआ है नए युग कि सिदा का भाग बाके) रहस्यमय धर्म, और राज्य मुर्तीपूजा। जब मसीहत का उत्साहपूर्वक बचाव कर रहे थे, धर्म का व्यवस्थापन कर रहे थे(सिद्धान्त के कर्तव्यनिर्देश कथन) और परावण्ड धर्म को खत्म करना, पारखण्डीयों का बहिश्कार कर के, कहीं किसी जगाह वे भूल गए थे कि मसीहत एक रिश्ता है जीवित रहने का, केवल एक सिद्धान्त नहीं कि साबित किया जाए। बहैस काहेतुवादी तरीका जो युनानी दार्शनिकों ने अपनाया था, ने ज्यादा प्रबल बहस जो बदले हुए जीवन पर थी को हता दिया और परम प्रधान परमेश्वर के चमत्कारी बिचवाई मनुष्य के कामों मे। मसीहत ने ज्यादातर विचारों कि लड़ाई को इस मारे खो

दिया केवल इसलिए कि उन्होंने स्वीकार किया कि लड़ाई सिर्फ विचारों कि बहस पर सीमित थी १० कि बाईबल जीवने में परमेश्वर के काम पर वृत्तान्त है। सिद्ध करना कि परमेश्वर हमारी ज़िदगीयों मे उसके सारे परिमाणों को भरे हुए है, एक बहुत हिबडिया। बचाव है। एक अच्छ बचाव फिर भी एक अच्छा अपराध है।"

मसीहत और नए युग में कुछ और भेद

क्योंकि नए युग के लोग ढूँढ़ रहे हैं एक पूर्णता को जीवन, प्रेम और उत्पादकात् को, तो यकिनन वे कुछ ऐसे लक्ष्य कि ओर भी जे। पहुँचेंगे जीव कि और मसीहत पहुँचती है। क्योंकि नया युग चुनने वाला है, वह रास्ते अपनाएंगी जो मसीहत अपनाती है, कुछ चतुरत के साथ। आगे के पृष्ठ पर जो कोष्ठक है, उस कि सुची में कुछ यही समान्तायें और कुछ असमान्ताएँ बताई गयी हैं।

मैं अमझता हूँ कि नए युग का चलन इस बात कि हे कि परमेश्वर, यीशु मसीह के गिरजाधर में क्या कर रहा है। १९९० में, पवित्र आत्मा नए और शक्तिशाली रूप में मसीहत पर प्रगट होन लगी। मवेल ९० वर्षों से उस दिन से, हम ने ४० करोड़ चीरसमैटिक, और 'पेंटिकोस्टल' मसीहों को सारी दुनिया के, इस नए (या पूर्णअवस्था) पवित्र आत्मा के बहाव में आते देखा है। सी.पीटर वैगनर का अन्दाज़ा है कि २००० ऐ.डी. तक १.१ अरब मसीही इस पवित्र आत्मा से के बहाव से में आएँगे (गरगैट अरत पृ १६६) मत सर्वेक्षण यह बताना है कि इस समुदाय के तोम, जो अपने आप को क रीस्मैटिक कहते हैं; हर मफ्ते औसत पर ज्यादा समय बाईबल शिक्षा, प्रार्थवा और गिरजा जाने में गुज़ारने है, दूसरे मसीहों कि निसबता यह बहुत दीलचस्प बात है। अपने अध्यात्मविद्या के प्रोत्याहन के बजाए, बाईबल हमें बताती है कि हम जीजों को उनके फल से परीक्षण करते हैं। यह सचमे आच्छा फल है। पादरी मौरिस फल्लर के लिखे हुए एक पत्र से। इस कारण, मैं समझता हूँ, नया युग शैताव कि प्रतिक्रिया है इस विशाल पवित्र आत्मा के बहाव कि जो हम इस शातक में देख रहे हैं। मैं इसे कोई डरने वाती या उस से भागने वागी चीज नहीं समझता। कब से रौशवी अंधकार से डरने लगी? नहीं, मैं पवित्र आत्मा कि शक्ति में और परमप्रधान परमेश्वर कि शक्ति में उस के खिलाफ खड़ा हुआ हूँ। अकसर परमेश्वर ने समाज में परिक्षण रखा ता कि वह अपनी महान्ता सब पर जाहीर कर सके, इताईजा और बाल एक प्रथमा श्रणीका उद्धहारण हैं जैसे इलाईजा ने एक परिझा रखने कि सोची कि कौन आग को स्वर्ग से उतार सकता हैष जो भी जीतेगा वह सच्चे परमेश्वर का सेवक है।

आपने देखा, यह फरीसी या झुठे भविष्यवक्ता नहीं थे, जो ऐसी परीक्षा का प्रस्ताव रखते या इतनी साहस और हिम्मत से कार्य करते। भवीष्यवक्ता हि हैं जों हमेश अपनी परमेश्वर को सावित करने के लिए आगे रहने है। मैं मुझे शक हैकि आज जो नए युग क चला कि किताबे लिखि जारही हैं मसीहत द्वारा, वह भविष्यवक्ताओं द्वारा नही लिखी डाच्ची है जो मैंने पढ़ी उस में डर कि आत्मा को

बढ़ावा दिया जा रहा है कि हम नष्ट हो जाएंगे, बजाए विश्वास कि आत्मा के जो इस परिक्षा को जीत लेगी। मैं समझता हूँ कि डप कि आत्मा, शैतान से उत्पन्न हुई है, और विश्वास कि आत्मा परमेश्वर से। इसलिए, मैं बहुत सतर हूँ कि जो भी डर कि आत्मा से उत्पन्न होता है उसे न बताऊँ।

मैं एक भविष्यनाणी का वाक्या आप को बताग हूँ इस दुविदा में जो आज हम अपने आप कोपान हैं। क्योंकि शैतान बेशक परमेश्वर कि सच्चाई कि नकल कर रहा है, क्या हमें यह नहीं पूछना कि परमेश्वर क्या कर रहा है, दर्शन और दार्शविक श्रेत्र में? मैं लिम्ब पाँच नियम उन लोगों के लिए मस्ताव करता हूँ जो दार्शविकता कि उन्नती करने हैं। इन में से हर नियम को पवित्र शास्त्र से खोजा गया है और इन कि जड़ और भूमी पवित्रशास्त्र है।

Table

नये नियम कि मसीहत
चलन

नए यूग का

अंतर्ज्ञन का विकास

परमेश्वर कि आवाज़ मनुष्य के मन से बहती
वाले उसे

अंतर्ज्ञन का बुलावा, नए यूग

है या आत्मा अंतर्ज्ञन विचारी, दर्शनों, बोझ,
कहते है, और प्रभाव बन कर। मसीही परमेश्वर कि
उत्पादकता को मुक्त

मनुष्य के मन कि आवाज़
वह मनुष्य कि

आवाज़को पहचान ने कि कोशिश करते हैं,
उस को

करती है और इस तरहा

ताकि वे सुव कर आज्ञापालन करे, इस
तरहा उस

मुक्त करती है और इस

तरहा अधिक जीवन का अनुभव प्राप्त

को वे सशय बनाते है।

होता है।

आत्मा से मेल

मसीही पवित्र आत्मा कि अंगती चाहते
दुनिया के
हैं। उन को परमेश्वर कि ओर से भेडे
चाहते हैं।
गए स्वर्ग दूत भी मिल अकते हैं।

नए यूग वाले कि आत्मिक
किसी भी जीव कि संग ती

अपने आप को शान्त करने का तरीका

मसीही अकसर प्रार्थना यीशु पर आँखें लागा
इस्ते माल करत करते हैं, जो लेखक और उनके विश्वास
को विपुण बनाता है।

नए युग के लोग मंत्र का
करते हैं।

स्वयं वि दार्शनिक योग्यता का उपयोग

दार्शनिक योग्यताएँ परमेश्वर के सामने
इस्तेमाल स्वयं
रखीजाती हैं ताकि वह दैवी दर्शु दे। उन्हें
देख सके।
मनुष्य के आंदर कि उत्पादक योग्यता के
उत्पादक
रूप में माना जाता है।
जाता है।

दार्शनिक योग्यता का
करते हैं ताकि अपना लय
इन्हें मनुष्य के अंदर कि
योग्यता के रूप में माना

आत्मिक अनुभवों के लिए लिखाई का उपयोग

लिखवा याने वह सब का लेखा रखना जो
कि दुनिया
परमेश्वर उस के अदर बोल रहा है उस को
अपना हाथ
मेह सूस कर लिखना। प्रतिम जो मन महसूस
और एक
करता है वह दिमाग में छपजाती है। और हाथ

लोखना याने जो भी आत्मा
से बह रहा है उसे लिखना,
बेजान लातका रहवा है।
ताकत उस को काइ में

कर उस का द्वारा लिखली जीती है। यह भजन सेहीता	मार्गदर्शन
करती है। मनुष्य क मन या के समान है फर्क बस इतना है कि अपना लिखा	
दिमाग का इस्तेमाल नहीं है न ही या	
लीखा हुआ धर्मशास्त्र नहीं बनता। बलकि	दिमाग का इस्तेमाल नहीं न
ही या	
धर्मशास्त्र से परखा जाता हैं।	धर्मशास्त्र को सौंपा गया है।
इसे "आप	
	सेआप लिखना" कहते हैं।

	<u>आज का ग्रह</u>	
हमारी दुनिया मुक्त हो रही है परमेश्वर के कार्य से		हमारी दुनिया मनुष्य कि
महनत से		
जोवो अपनी आत्मा द्वारा कखाता है, अपने		अच्छी होती जा रही है।
स्वर्ग दूतों से और मसीहत के द्वारा उस का		
कार्य।		

ग्रह अन्त में

नए स्वर्ग और नयी दूनिया बनेगी परमेश्वर	एक नया यूग आयोगा
मनुष्य के पूरा	
के सीछे मध्यस्थता से।	करने से।

वार्षनित्ता के नियम

१. हमारा लक्ष्य यीशु कि तरहा बनना है जो कि लगातार दार्शनिक था.
"पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देकता है
(यूहन्ना ५:१९ उच्चारण जोड़ा गया यूहन्ना ५:२०, ८:३८ भी)

२. हमें दर्शन को दूँना है जागते रहो और प्रार्थना करते रहो.....(मत्ती २६:४१, यीशु करि ओर ताकते रहे.....(इब्रा १२:२)
३. हमें दर्शन के अंदर देखना है जब तक कि दर्शन का बहाव बन्द नहीं हो जाता

दानियल ने कहा मैंने रात को यह स्वप्न हेरवा..... मैंने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्रचिन विराजमान हुआ.... मैं ने रात में स्वप्न में हेखा....। (दानियल ७:२,९,१३)

"मैंने हेखा.....मैंने पलग पर दर्शन पाते समय क्या देखा....."।
(दानि यल ४:१०,१३)

४. हमें यह जान लोना चाहिए कि हमें मुलाकाते होगी, यीशु से, परमेश्वर से और स्वर्ग दूतो से अपने दिमाग दर्शन में और यही अस्ती आत्मिक मुता काते है।
(दान ४:४-५, १०,१३,१४; ७:१, १३-१५; मत्ती १:२० २:१२,१३,१९,२२।
५. हमारे मन कि आँखों को परमेश्वर के आगे रखने का स्वभाविक रास्ता यह है कि हम दार्शविकता से बाईबल कि सिसी कहाती में प्रार्थना पूर्वक प्रवेश करें और परमेश्वर को उस कि इच्छा के मुताबिक हिलने है था अपवी आँखे यीशु पर रखें। जो हमारे विश्वास का लेखक और अुधार कर्ता है। (इब्रा १२:१-२, प्रकाशित वाक्य ४:१-२)

बुव्य कि दार्शविक क्षमता का प्रबल व दूबल अपयोग।

इस दुनीया में जहाँ यह काफी नहीं है वि अच्छाई पहचानता किमनुव्य दार्शविक तौर पर ओय.ता है और तर्क कें अवुसार भी, यहाँ यह कि होगा कि हम कुछ प्रबल बाईबल दूबल अपयोग, मनुष्य के दार्शविक क्षमता के बारे में समझे। निम्न आप के समझने के लिए हिए गए है

प्रबल अपयोग

१. हम अकसर जो कह रह है उस का चित्र बनाते है। (याने जब 'कुत्त') शब्द बोलते हैं तो, हर कोई अपने आप और एक दम से कुत्ते कि तस्वीर बना लोते हैं।

२. एक शक्तिशाली अपदेशक चित्रीत शब्द का प्रयोग करेगा जब जोन थन

३. ऐडबर्डने अपना महान अपदैश दिया,

पापी परमेश्वर के क्राधित हाथों में" उन्होंने ने नरक की तस्वी इतनी स्पष्टता से बताई, अपने सुनने वालो को कि वे अपनी सीटों को पकड़ कर बैठ गए कि कहीं सांसारिक बडे पाताल में न गिर जाएं। आज, शाक्तिशाली अपदेशक ऐसा हि करते है जब अपदेश सुनाते है।

४. गीत कार गानों में स्थिती को चिबीत करने है. ताकी जब हम गए तो परमेश्वर से मुलाकता में वह हमारी मदद करे।
यीशु मेरा परमेश्वर एक आदथुत उद्धारकर्ता है एक उदथुत उद्धारकर्ता मेरे लिए, वह मेरे प्राणको चहुवा कि दरार में रखता है जहा से मुझे सेतोफ कि नदी बहती हुई दिखती है।

वह मेरे प्राण को चहुतान कि दरार में रखता है जिस कि धाया एक सूखे और व्यासी जमीन पर पड़ती है

वह मेरे जीवन को अपने प्यार कि महयईयों में धुपाता है, और वहाँ अपने हा थों से मुझे ढाँक लोता है। और वहाँ अपने हाथों से मुझे दाँक लोता है।

५. चित्रता का इस्तेमाल कुछ सुचना याद करने के लिए करते हैं.
हो सकता है कि हर किसी ने चित्र का उपयोग कभी कबार चीज़ो कि सूची को याद करने के लिए किया होगा। जैरी लुकस ने इस रास्ते का उपचोग बहुत किया जब वे लोगों को सिखाते है बाईबल कि सारी किताबों को याद करने के लिए।

६. लोग जब कुछ नया उत्पादन करते हैं तो दर्शन का इस्तेमाल करते हैं। चाहे वह ग्रहणी हो जो घर कि चीड़े बदल रही हो या शिल्पकार हो जो नयी उमारत का दाँचा बन रहा हो या कोई चित्रकार चित्र बना रहा हो या गोई बच्चा जो अपना गोई नया अविशकार बना रहा हो, दार्शवित्ता स्पष्ट रूप से उत्पादक कार्यों का भाग है।
७. जब कोई प्रार्थना लिखें तो हम चित्रों का इस्तेमाल परमेश्वर को अनुभव करने में उपयोग कर सकते हैं। आप की प्यार भरी दया, हे परमेश्वर, स्वर्ग को छूती है, आप कि विश्वस्तता (सत्यता), आकाश को छूती है, आप कि साछूबृती, एक प्रभावशाही पहाडी कि तरहा है, आप के निर्णय बही महराई कि तरहा है, आप के निर्णय बडी महराई कि तरहा है (भजन ३६:५-६)

यहा, जैसे कई और जगाहों पर, दाऊद सृष्टि कि ओर देख कर परमेश्वर कि महानग का चित्र बना रहा है (जैसे वही प्रार्थना कर रहा है) यह आफ है कि दाऊद ने दार्शनित्ता का उपयोग किया, जब प्रार्थना में परमेश्वर से मुलगाकात की।

८. धर्मशास्त्र पढ़ते सकय, हम उन दृष्यों को जिन्हे बाईबल इतनी चित्रंकित तौर पर स्थित है, उनहे देखन है परमेश्वर ने अपने लिखने का तरीका कहानीयों का मध्यम चुना ताकी उन के द्वारा हो हम से बातचीत कर सके। बाईबल
९. प्रतिशत कहानी है और १० प्रतिशत उपहेशाक। जब उसे ऐसे पढ़ें जैसे कोई बच्चा पढ़ रहा है, तो वह कहानी हमें उस दृष्य का जिस कावर्णन ही रहा था, दर्शन दिखाती है। क्योंकि परमेश्वर का लक्ष्य यह है कि जब हम पवित्रशास्त्र पढ़ें तो वह जिवित हो उठें और हम उस दर्शन को हिलते देखते हेखते हैं अपने निजी जीवन के आथ, परम प्रधान परमेश्वर कि तीकत से।
१०. हमारी प्रतिमाओं में हमें हमेशा पहने कि योजनाएं और मकसहों को रखना है। हे हमारे पुरखों अब्रहम, इसहाक और इस्त्राएँल को परमेश्वर। अपनी प्रजा के मन के निचारों में यह बात बनाए रख और उन के के मन अपनी ओर लगाएरख। (१ द्वती २९:१८)

यहाँ दाउद प्रार्थना कर रहा है कि परमेश्वर अपने मकसदों का साफ चित्र इस्राएलीयों के विचारों में रखेगा।

११. परमेश्वर स्वपन और दर्शन देता है।
मेरी बातें सुनो: यदी तु म में से कोई नबी है। को उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आप को प्रगट करूँगा, या स्वप्न में उस से बानें करूँगा? (गिनती १२:६)
- "परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होग कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा.. और तुम्हारे जवान दर्शन हेखोंगे, और तुम्हारे पुरतिए स्वपन हेखेंमें। (प्ररित २:१७)
१२. दैविकता से मिले दर्शन विश्वास को और भीगहरा बनाते है परमेश्वर के चमत्कारी उत्पादकता के निकास में मदद करने हैं।
और उसने (परमेश्वर) उसको (अब्रम) बाहर ले जा को कहा, "आकाश कि ओर दृष्टि कर के तारागण को गिन, क्या दू उनका गिव सकता है?" फिर उस ते उस से कहा "तेरा वंश ऐसा हि होंगा" उसने यहोवा पर विश्वास किया और यहोवा ने उस बात को उसके लोखे में धर्म गिना। (उत्पति १५:५,६)
१३. हमें अपने जीवत में चलते हुए यीशु पर नडर रखनी है। विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु(इब्रा १२:२)
यह उचित है कि हम यीशु को देखें(इसानुएल परमेश्वर हमारे हाथ) हमारे साथ उपस्थित जब हम जीवन में चल रहे हैं।
१४. हमें सिद्ध पूरुष बनना है, लगातार दैबीआरम्भ को दैबी आरम्भ को देखते हुए। " पूर्वकाल भे में तो इस्राएल में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता तब ऐसा कहता था, " चलो, हम दर्शी के पास चले, क्यों कि जो आज कल नबी कहलाता है वह पूर्व काल में दर्शी कहलाता थो। (१ शमुएल ९:९)"
इस पर यीशु ने उस से कहा "मं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्यों कि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।" (यूहन्ना ५:१९)

दैवी बहाव को उत्साह (स्वाभाविक और अदभुत का मेल)

परमेश्वर कि शक्ति का चमत्कारी प्रमाण तब जाहिर होता है जब मनुष्य परमेश्वर के साथ मिलकर काम करता है।

शारिरिक स्तर पर प्रमाण	तार्किक स्तर पर प्रमाण	दार्शनिक स्तर प्रमाण
१. स्थिती परतरस पानी हबा कक पर चलते हुए। (पढिए पाते हुए मत्ती १४:२२-२३) २. मनुष्य का भाग पतरस भाग उठ कर चलने लगा, एक बहुत परमेश्वर के सामान्य, शारिरिक कार्य- बिना आप को किसी चमलारी प्रमाण के कछ ताकि वह ऐस जो वो स्कंय कर सङ्क ता और लिख था। सके वह सब जो उसने मनुष्य मन कि आँखों से देख सकता है और सीछे आत्मिक प्रवेश करता ३. परमेश्वर का भाग परमेश्वर का भगा परमेश्वर वे अदभुत तत्व डाला अदयत जब जब पतरस ने अपना पैर को जोड़ा, पानी पर रखा, परमेश्वर ने क्षमता के उसे हुबने से रोका। उसे हुबने से रोका। उसे हुबने से रोका। डरीए, मनुष्य आत्मिक सच्चाई के दर्शन बताने हुए। ४. चमत्कार, शारिखि स्तर पर को कैसे मुक्त करे?	१. लूका अपनी इंजील लिखते हुए (पढिए लूका १:१-४) २. मनुष्य का भाग लूका ने सब चीझो कि ध्यान से तैहकीकात की, उन्हें एङ्क लगातार क्रम में लिखते हुए एक स्वभाविक, विद्योपाजन प्रमाण कि जरूरत नहीं। ३. परमेश्वर का भगा परमेश्वर वे अदभुत प्रेरणा के जोड़ा, लूका के विचार कार्यो कामार्ग दर्शन कर के वाकि वह लेख दैवी प्रेरणा में बहत गया और धन परिमाण निपुण। ४. चमत्कार को तार्किक कैसे मुक्त करे?	१. स्थिती दैवी दर्शन पाते हुए (हबकूक २:१,२) २. मनुष्य का भाग हबकूक ने आगे अपने शाक्त किया, देख, सुन और लिख कार्य, जिस में चमत्कारी देखा है। मुलाकात में है। ३. परमेश्वर परमेश्वर ने दाकाशाणी दार्शनिक बहाव के को दर्शन बताने हुए। ४. चमत्कार को दार्शविक कैसे मुक्त करे?

मन कि आँखों को के केंद्रित कर स्वैच्छिक बहाव को शुद्ध करना।

नियम अतर्जन बहाव उस दृष्टि से आता है जो आप कि आँखें देखती है

शैतान	स्वयं	पवित्र आत्मा →
अंदरूणी आँख केंद्रित आँख यीशु पर है बुरे विचारों और स्थितियों पर।	अंदरूणी आँख केंद्रित नहीं है ताही किसी घटना या स्थिती पर जो आप के सामने है	अंदरूणी केंद्रित
सालापन	मध्यम रैशनी	शुद्ध रौशनी

मनुष्य कि दृष्टि कि योग्यता का गलत इस्तेमाल

१. स्वयं अपने मन कि भाववा की आज्ञा मानना। वरन वे अपने हठ पर बाल नाम देवताओं के पिछे चले, जैसा उनके पुरखाओं ने उनको सिखलाया। (थिर्मयाह ९:१४)

इस स्थिती में, मनुष्य अपनी क्षमता और परमेश्वर से मिली इनामों को स्वयं इस्तेमाल करने और भरने के लिए दें।

२. बुरे लोग अपनी भाववाओं को उसी प्रकार इस्तेमाल करते हैं जैसे कि हर उस योग्यता को जोउन के पास है - बुराई के लिए।

पर उन्होंने मेरी न सुनी और न मेरी बातों पर कान लागचा, वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और पीछे हट गए पर आगे न बढ़े। (थिर्मयाह ७:२४)

३. मनुष्य एक दूसरे के प्रती बुरा सोच सकता है तुम कब तक पुरुष पर धाव करते रहोगे, कि सब मिलकर उसका धात करो?..... (भचन ६२:३)

हर कोई अपनी भावन को बुरा सोचने के लिए उपयोग कर सकता है, शैतानी चीजे और बेकार चीड़े।

४. मूर्ती खोदकर बनाना और प्रतिमा बनना और न अनकी उपासना करना। मूरत। कारीगार दालता है, सोनार उस को सोने से मढ़ता और उसके लिए चान्दी कि संकलें ढालकर बनाता है। (यशायाह ४०:१९)

तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। (निर्गमन २०:४)

और उसके बचे हु भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात एक मूरत खोदकर बनात है; तब वह उसके साम्हने प्रणाम और दण्डवत करता और प्रार्थता करके कहता है, मुझे वचा ते, क्योंकि तू मेरा देवता है"। (यशायाह ४४:१७)

"खुदी हुई मूर्ती" उब्रानियों में इस का मतलब है " नकाशी, चाहे लकड़ी पर या पत्थर पर"।

अपने हियाब से किसी प्रतिमा कि नकाशी करना और उस के आगे झुकना पूर्णरूप से मन है।

५. हमारी दार्शनिक क्षमता को लालासा के लिए इस्तेमाल करना पूर्णरूप से मना है।

परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई फिसी स्त्री पर कु दृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। (मत्ती ५:२८)

वह जगह जो आप अपने दिमाग में दर्शन पाते में ढूँढने ओर परमेश्वर को पसे है।

पूर्व पक्ष: जब हम "दर्शनों को" ढूँढते हैं और दर्शन में जो हमारे मनो में नज़र आता है, हम परमेश्वर से मुलाकात करते हैं।

"मैं ने देखा" बार केवत दानियल कि पुस्तक में मिलता है (एन ए एसबी)

जब तू देख रहा था (स्वप्न में) तब.....(दानियल २: ३१ दानियल ने बुकदनज़र से)

मैंने ऐसा स्वप्न देखा.....जो विचार मेरे मन में आए.....। (दावि १:५)

मैंने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा, कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्गी से उतर आया। (ढाति ४:१३)

दानिचल ने पलंग पर स्वप्न देखा। तब अस ने वह स्वरन लिखा, और बातों का साराश भी वर्णन किया। दानियाल ने यह कहा, मैं ने रात को यह स्वप्न देखा कि.....(दानि ७:१,२)

इसके बाद मैंने दृष्टि को ओर देखा.....(दानि ७:६)

मैंने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विरानमान हुआ....।(दानि ७:९)
अस समाय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते देखा....।(दानि ७:११)

मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य कि सन्तान सा कोऊ आकाश के बादलों समेत आम्तिक रहा था। (दानि ७:१३,१५,१६,२८)
दर्शन के द्वारा दिखाई गई....मैं ने दर्शन में देखा...फिर मैंने आँख उठा कर देखा.....मैं सोच ही रहा था, तो फिर क्या देखा....तब मैंने एक पवित्र जन

को बोलते सुना...यह बात दर्शन में देखकर, मैं दानिरयेला...(दानि ८:१-५,१३,१५)

तब मुझे ऊने नदी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा जो पुकारकर कहता था, हे जिब्राएल, उस जन को उस की देखी हुई बातें समझा दे। तब जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ वह मेरे निकट आया और उसके आते ही मैं घबरा गया, और मुहँ के बल गिर पड़ा.....(दानि ८१:६-१७)

शमूएल ने नबीयों के स्कूनों कि स्थापना की जहाँ मनुष्य को भविष्य बणि के दर्शत उत्पन करने कि सिक्ष। दी जाती है, परमेश्वर को आपके दार्शनिक क्षमता को भरने है उन को उस तरह पाना जिस तरह वह चाहता है, और उन दो वह दर्शन देते हुए वह चाहता है।

मैं यह सलाह देता हूँ कि जो कोई दर्शन के उपयोगता को ज्यादा समक्षना चाहता है ताकि परमेश्वर कि आत्मा से मुलाकात कर सके तो उन्हे नबीयों कि और प्रकशितबाक्य पढ़ाई कह के इस विचार का परीक्षण करें। जो परमेश्वर आप को खा रहे हैं उन को लिखीए।

जब अन्दरूणी आँख बरा विचार सोचती है और उस का ध्यान केन्द्रित होता है बुराई विनाशकारी, डरावना, बोध लगाने वाला और नकारात्मक ध्यान पर तोजो स्वैच्छिक बहाव है वह पैशचिक हो जाता है।

पवित्र आत्मा का हमारी आत्मा से मिलन के कारण, हमारी आत्मा का बहाव में अब अंतरीय पिचकारी के द्वारा पवित्र आत्मा के विचार आते हैं। यह भी, कि जब मैं लोगस पढ़ता हूँ, तो लोगस का बहाव शुरू हो जाता है मेरी है, अपने स्वैच्छिक विचारों के साथ।

जब मन कि आँखें यीशु पर केन्द्रित होती हैं, तो बहाव दार्शविक है। स्वयं कि प्रविक्रया और विचार यीशु के स्वच्छ बहाव से बदल दीए जात हैं।

पवित्र आत्मा का हमारी आत्मा से मिलन के कारण, हमारी आत्मा का बहाव में अब अंतरीय पिचकारी के द्वारा पवित्र आत्मा के विचार आते हैं। यह भी कि जब मैं लोगस पढ़ता हूँ, तो लोगस का बहाव शुरू हो जाता है मेरी आत्मा में। परन्तु, मेरी आत्मा फिर भी अपने आप बहती है, अपने स्वैच्छिक विचारों के साथ।

जब मन कि आँखों यीशु पर केंद्रित होती हैं, तो बहाव दार्शविक है। स्वयं कि प्रविक्रया और विचार यीशु के स्वच्छ बहाव से बदल दीए जाते हैं।

अपने विचारों के ऊपर आदेश का राज्य

सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहीचान के विरोध में उठती है, खण्डना करते हैं, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञकारी बना देते हैं। (२ कुरि१०:५)

मेरे लेखों से

आप कि आत्मा कि बात चीत, मेरी आत्मा कि बात चीत है, और यह रहेगा, यदी तुम अपना ध्यान मुझ पर केन्द्रित रखो। जैसे तुम मेरी ओर सफाई से....मरी और देखो, जो जो अंदरूणी प्रतिमाओं अप प्राप्त करने है वो मेरी ओर से हैं।

"परमेश्वर, जब अप कहते हैं" मेरी ओर देको, ने बाय अप का मतलब अन्दरूणी दर्शन से है"।

"अंदरूनी दर्शन से देखना, एक स्वच्छ और असान बहाव को सहायता देता है। परन्तु, बहाव अंदरूनी अधीनव। के डरीए आता है- केवल उस पर भरोसा करें। जब मेरी ओर देखो, तो तुम था ओगे कि अंतर्ज्ञान बढ़कर तुम्हारे अचेत ज्ञान के आगे उन चचीड़े तक जाएगा जो मैं दिखाए जाहता हूँ"।

कुछ प्रबल विश्यों कि विचरात्मन जवाब।

प्र. कुछ लोग बूछते है, कि दर्शन और दार्शवित्ता मे क्या फरख है।?

दार्शीविकता वह है जो स्वयं दृष्य को बनाता है। दर्शन वह है जो स्वैच्छिकता से स्वच कि ज़िदगी में बहता है।

प्र. क्या हमें दार्शविकता को खोजना है या दर्शनों को? दर्शन जो महीमा के सिंहासन से आता है।

प्र. क्या दार्शनिकता कभी सही है?

हाँ, दार्शनिकता स्वभाविक है। हर वच्चा यह करता है और तकरीबन हर बड़ा भी इसे करना है। माँ, बाप जो अपने बच्चों कि कबी महसुस कर रहै हैं वे उन के चेहयें को चित्रित करने हैं। कलपबना करने वाले उन इयारतों का चित्र बनाते है. जो वे बनाने कि योजना मे है। घर बनने चित्र बनाते हैं वे अपने घरों में चल सामग्री को किस तरह दुबारा सजायों। फिर वे आकसर वही करते है जिस का चित्र उन्हीं बनाया है।

प्र. दार्शविकता कब गलतर है?

जब में उस का उस्तेमाल स्वयं करूँ। दर्शन कि क्षमता के हिसाव से करना चाहिए जैसे कि मेरे जिस्म के दूसरे भाग- उन्हे. परमेश्वर को सौपें कि वह उसे भरे और बहाव को स्वभावित्ता से बहने दें।

प्र. जब आप परमेश्वर के पास पहुँचे तो आप मन कि आँखों का उपयोग कैसे किया जाऐ?

सामरूपता, मैं इन में से कई चीड़े करना हूँ पहीली, मैं यह देखता हूँ कि परमेश्वर मुझे क्या दर्शन देने जा रहा है। या मैं परमेश्वर के लिए एक प्रेम का गीत गाऊँ, शब्द जो दृष्य दिखा रहे हैं: उन का चित्र बना कर और

परमेश्वर को उस चित्र में हिलने के लिए कह कर कि वह जो भी करना चाहता करे। वह करता है। एक तीसरा रास्ता जो मैं इस्तेमाल कहता हूँ कि मन कि आँकों द्वारा व कि कहानी में भक्तिपूर्ण प्रवेश। जै, मैं उस पर ध्यान लगाता हूँ, मैं यह जान लोता हूँ कि बाईबल के माध्यम से बात करूँ तो, ध्यान लगाने के लिए दार्शनिकता को संयुक्त करना है। इसकारण मैं उस दृष्टि का चित्र बनाना हुआ जो मैं पढ़ रहा हूँ, और मैं परमेश्वर से कहता हूँ कि वे उस में जीवित हो जाएँ और जिस प्रकार भी वे चाहे, उस में चलीए। वे करते हैं। मैं ने अपने लोख में लिखा जो भी हुआ।

- प्र. मैं क्यों उद्धारण देता हूँ, मसी के कई खिंचावों पर और मसीहत के कई लोगो पर बिना किसी चेतावनी के पढ़ने वानों के लिए कि ज्ञान सोबों और शिक्षकों में गलतीयाँ हो सकती हैं?
- पहने, यह कोई आम मान्यना नहीं कि किसी व्यक्ति का उद्धारण देने का यह मतलब नहीं कि आप वो पुरा कहें जो उस मनुष्य ने कहा यीशु किया। यह कभी भी मत सोचीए कि यदि मैं कि मनुष्य या समूह के बारे में कह रहा हूँ तो मैं वह सब बता रहा हूँ जो उस मनुष्य या समूह ने कहा। असल में, सीमित अभीप्राय होने के कारण, यह यकिनन है कि हम किसी और से या किसी जिड़ से पूरी

तरहा सहमत नहीं होते क्षिवाय पवित्रहशस्त्र के वचन के। मैं स्वयं अपने लखों से कुछ सालों बाद सहमत नहीं होता, और अकसर कपस जा कर इन लोखो को संपदन करना हूँ। मैं समझता हूँ कियह जीवन भर का कार्य है।

दूसरा, मैं यह बात का बढ़ाव दूँगा कि हर कोई जो" परमेश्वर से बंधित्व कि पढ़ाऊ कर रहे हैं वे किसी स्थाविक पादरी के आम्तिकता के तैहत रहें। उन के पादरी अपने गिरजवासियों को शिक्षकों या विचारो के सोत्रों के बारे में जो मसीहत में पाए जाते हैष उसे मुझ से ज्यादा सही दंग से बता सकते हैं। मैं यह विश्वास करता हूँ कि हर पादरी ऐसा करेगा।

तीसरा, मैं यीशु कि इच्छा को पूरी शक्ति से जान लोता हूँ कि हम सब एक हो जाएँगे, ताकि संसार जान ले.....(यूहन्ना १७)। यीशु के मन कि इच्छा पर जो मेरा थोड़ा प्रभाव है वह यह कि मैं अपने भाई पर इब्ाम न लगाऊँ, परउन जीज़ो को उँचा दिखाऊँ जो मैं देखता हूँ कि अच्छी है। यह जान कर

कि हमेशा अंधकार को रौशनी छुपाती है। हमें यह आदेश है कि हम सब चीज़ों को परखें और "उन चीज़ों को अपनाए जो अच्छी हैं" (यह जरूरी नहीं कि बुराई को भगा दें। रौशनी को ऊँचा उगओ तो वह अंधकार को बढ़ाते हैं।

यह भी कि यीशु ने कहा कि परमेश्वर दोनों पर बरसाता है, धार्मिक व नास्तिक, और यह कि इस दुनिया के बच्चे, रौशनी के बच्चों से ज्यादा बुद्धिमान हैं। मुझे यह आयत नहीं पसंद है परन्तु फिर भी मैं इस से सहमत हूँ। मैं अपने आप से, पूछता हूँ कि यह के से सच हे सकता है कि अंधकार के बच्चे, रौशनी के बच्चों से ज्यादा बुद्धिमान हों, और एक जवाब जो मुझे मिलता है, वह यह कि: अपनी सशयता का मसीही, धर्मज्ञान के डिब्बे बना कर अपने आप को उन में भर लेता है। ज्यादा नदीयों का बहा नहीं है (यूहन्ना ७:३७-३९)। मूर्ती पूजक ज्यादातर एक आनन्द जीवी है, जो उस के बहाव में आएगा जो अच्छा मैहसूस होता है। हो सकता है कि वह परमेश्वर के बहती

नदी को सोजा निकाले बजाए उस के जो जिब्बे में बन्द पडा हुआ है।

- प्र. आप के कुछ विचार तार्किक हैं और होसकता है कि गलत हों? यह हो सकता है। यह एक कारण है कि मैं क्यों इतने खुले रूप से बदलाव और तरक्की के लिए खुलाहूँ। मेरे दफतर में एक चिन्ह है जो कहग है, मुझ से सहमत होने कि तकलीफ मत करो, मैंने अपने दिमाग को बदल डाला है।"

मैं अपने विचारों को जबरदस्ती किसी पर वही थोपूँगा। मैं केवल उन्हें जाहिर करता हूँ। यह पवित्र आत्मा का काम है कि वह विश्वास दिलाए।

जब मैं ज्ञान लेता हूँ कि मेरा कोई विचार तार्किक है, तो मैं उसे जिनना हो सके उतन गैर तार्किक तरीके से समझाऊँग। मैं यह भी कहूँगा कि यह विचार तार्किक है और इस से सहमत होते कि जरूरत नहीं।

यदि अप कुछ सुझाव देना चाहते हैं, ते कुपया यह ज्ञान लीजीए कि मैं उन्हें वडें, आनन्द के साथ स्वागत करता हूँ और आप से यह कहता हूँ कि मेरे साथ आईए (जैसे कि पवित्र आत्मा आता है) ताकि मैं और ज्यादा सफाई से देखू और समझूँ, बजाय इस के कि मेरे खिलाफ आएँ (जैसे कि दोष लमाने वाला करता है) और मुझे नाष करने कि कोशि करे।

- प्र. क्या दार्शवित्ता को पवित्रशास्त्र मं स्पष्ट रूप से नहीं सिकाना चाहिए इस से पहले कि उस को अनुभव करे?

ज़रूरी नहीं मुझे ऐसे लगता है कि यदि धर्मशास्त्रों में अनुभव कि अनुमति है या नियम कि और निचले नियमों पर जिन पर वह बना हुआ है, तब मसीहत परमेश्वर वि महीमा को बना सकता है। यदि हम यह स्थिती नहीं चुनते हैं और चाहते हे कि धर्मशास्त्र को वह सिक्ष देनी चाहिए जो मसीहों ने अपवानी है, तो कई ऐसी चीड़े होंगी जो मसीहों को छोड़ देनी पड़ेगी, जीन मे रविवार का स्कूल बच्चों का गिरजाघर, जवानों कि संस्थाएँ स्वास्थ शिक्षा ऐसे क्षेत्र मे जैसे दन कार्य और सही दृष्टि, मसीही रेडियों कार्यक्रम, मसीरी दूरदर्शन कार्यक्रम, और कई और शामिल हैं।

सौन तैयार है मसीहो को यह सब चीज़ो को छोड़ देने के लिए कहने को?

ना हि मैं यह कहूँगा कि बाईबल को वह शब्द स्पष्ट करता पड़ेगा, इस से पहले कि मसहीहे उन को अपनाए। जैसे कि हम ऐसे शब्दो का इस्तेमाल करते है जैसे कि "आनन्द" और "त्रीपूर्ती" जो पवित्र वचन मे नहीं मिलती।

- प्र. आप का निजी स्थान क्या है, विश्वास के महान कार्यों पर?

मैं विश्वास के उस वाक्य से सेहमत हूँ जौ नैशनल एसोक्षिआएशान ऑफ़ इवैजलिकलज और ऐपौ सलज़ क्रीड़ कहने हैं। मैं "ऐसैस्बली ऑफ़ गॉड" का बहुत पुरान सदस्य हूँ जो बफै को, न्यू र्याक में स्थित है। मैं ने पादरी कि है सियत से सनातनी मसीही गिरजाघरों में १८ वर्षो तक कार्य किया है। मैं ने रौबर्टस बैस्लियन कॉलेज जो मुफ्त मेथोडिस्ट सस्था से विश्वविध्यालय कि उपादी । मैं और चार सनातनी मसीही गिरजाघरों के पाजदरी जिनको ८० सालों का अनुभव है, उन के आधिन हूँ।

- प्र. "मसीही गुप्त विद्या" क्या है?

मसीही गुप्त विद्या को पूरे मसीहे इतिहाम में पाया जा सकता है। गुप्त विद्या "यह विश्वास कि तुरन्त नीजी सचेतता अपने परमेश्वर के साथ मेलकी" मसीहों में दो सामान्य गुप्त के तनाब हैं। एक है उतार फेंकने कि गुप्तन

या खामोशी कि"। वे दैवी दुविया कि सच्चाई को अंधकार बताते हैं, एक रेगिस्तान, एक अन जाना - मनुष्य के लिए रिक्त, परन्तु दैवी उपस्थिती और प्रेम से थरा हुआ दैवी सच्चाई का रास्ता है कि वस्तुओं और विचारों कि सचेतात को उतार भेकना (याने एक्कारट, सतीब के यूहन्ना, न जानकारी के बादल)। दूसरी तरहा की गुप्तता है 'सफाई और आत्मिक दर्शन कि गुप्तता'। वे आत्मिक सच्चाई कि दुविया जो रौशनी से संभवधित है, के बारे में बताती है - एक रोशनी उतना हि अवरणीय है और दुर्बोध्यय जिबना कि अन्धेरा, परन्तु पूरी जीव दैरयी सूर्य कि रोशनी कि तरहा, जीस के सुकावल इस दुनिया कि भौतिक और अस्थायी रौशनी के जो हलकी और अधंकारमयी है। इस का रास्ता अन्दरुणी विचारों और

केंद्रियों को बदाना । (जैसे आगस्तिन, दृष्टि विक्टो यईन्स, ग्रीक आर्थोडाक्स मिस्तिकस, बोनावैनचर)। मुझे ऐसे लगवा है कि यीशु जो रौशनी है उन कि तरफ आना और उसे चगाई देने देवा और किसी को बदलना, ज्यादा आसरदार है बताए इस कें कि अपने आप में से सब निकाल फेंकें। क्या सच में स्वयं को काब कर सकता है? या क्या वह मसीह है, जगत कि रौशनी, क्या यह मरा हुआ कार्य नहीं और केवल फरी सीही?

गुप्तता (आत्मिकता) परमेश्वर के मुलाकात का इच्छीत नतीजा हय है कि स्वयं का जिवन और मनुष्य को नमर्ता और यीशु जैबा सवक में बदल दे। कई गुप्ती समालोचक है और मसीहों को सुधारने वाले। इस कार्य के लिए अपने अन्दर के जीवन से शक्ति लेना (देसिए ऐबिगंडन शब्दकोश ऑप लिविंग रेलिजवस, कीत क्रिम उद्धारा लिखित पीपी ५११-५१४).

प्र. क्यों कि यो ऐसा लगता है कि जैसे ज्यादातर दोंगी परमेश्वर कि आवाज़ सुनने का दावा करते हैं तो क्या यह ठीक नहीं कि हम इस झेत्र से दूर रहें?

समस्या अस्ल में परमेश्वर कि आवड़ सुनना नहीं यह र कि आवाज सुनने का दावा करनाजब अच में आप नहीं सुनते। सब से सुरक्षीत कवच उन लोगों से जो परमेश्वर कि आवाज़ सुनने का दावा करते है, वह यह है कि आप स्वयं परमेश्वर से सुनें। धोकेबाजों से बचने का सही तरीक हे कि आसती जीज को पालोना। यह दोंमी दोंगी हि है क्यों कि हम ते उन्हें सही शिक्षा नहीं दी, प्रोदता और कौशल के उन क्षेत्रो में जहाँ परमेश्वर कि आवज़ सुनना और उस

के दर्शन पाग। होसकात है कि उब की उपस्थिती और दावे, हमारी गलती है क्योंकि हम ही न उन्हें उँचाई पर पहुँचाया और सूखा और बिन चखाह के रखा है, जिस कारण उन्हें खुद आगे बढ़ना पड़ता है बिना किसी पादरी कि निगरानी के।

यदि हम इस कारण परमेश्वर कि आवज़ सुनना छोड़दे कि वहाँ दांगी है, जो यह भी सही है कि हमें पवित्र शास्त्र से सीखना छोड़ देता चाहिए क्योंकि कुछ ने इसे का झूग उर्थ लगाया है। क्या बेक्कुफी।

प्र. दुव हंट कि पुस्तक "द सिडकशन आफक्रिस्हैनिही" (मसीहत क प्रलोभन) पर आपका क्या समानोचन है?

मेरा मन बहुत दुःखित हुआ जब मैंने डेविड हुंव कि पुस्तक मसीहत का प्रलोभन में दोष बहते देखा। यह किताब, हारवेस्ट हाऊज़ द्वारा प्राशित की गई थी, इस में कई आज के गिरजोधर के महत्वपूर्ण आत्मिक नेताओं पर आक्रमण किया: डा.पॉल पौलक, खे. रॉबर्व टिलटन, चार्लस केप्पस, फ्रेडरिक प्रईस, केन्नत कोपलेण्ड, नॉनमैन ग्रब, बिल वॉलमैक ओगवस सैनफोर्ड, फौस्टर, मौर्टन किलसे, सी.एस. लौवेट, रीटा बैबट, डैनिस और मत्त लियन्न, रूत कार्टर स्तेपलटन, जॉन विम्बर, प्रान्सिस मैक नठ, जेम्स डोबसन और दूसरे।

किस आदमी मे इतनी साहस होगी कि इतने बड़े क्रम में परमेश्वर के अभीशित लोगों को एक के बाद एक को नीचे गिराया। यह बता कर कि उन में से हर एक कैसे प्रलोभ हुए, अपने समय के तर्कशास्त्र से? इन सब पुरुषयो और स्त्रीयों में क्या समानता है कि उन्हे एक समुह में डाल कर गुणदोष विवेचन और निन्दा करे?

एक चीज़ जो इन स्त्री पूरुषं मे सामान्य है वह यह है कि इन्हों ने विश्वास किया एक निश्चित मानसिक स्थिती। उन्होंने यह भी विश्वास किया कि वे आत्मा में परमप्रधान परमेश्वर के दर्शन हेख सकने है और उन्हे बता सकतने है एक उत्पादक रुप में। तीसरी, वे विश्वास करते हैं कि मसीही परमेश्वर के क थान बन जाते इस दूनिया के लिए जिस में वे जीने है।

आरिंकर में, यह लोग , एक सांसारिक दृष्टी रखते है कि रौशनी बढ़ रही है, आंधकार के बजाए। यह विश्वास मुझ पर असर नहीं करते एक धार्मीक

विश्वास रखने वाला। बलकी, मैंने हज़ारों पवित्र शास्त्र कि आयतों में यह विश्वास दूढ़ निकाला है, जो मैं ने एक पुस्तक "प्रलोभन बाईबल का अत्तर" में प्रस्तुत किया है।

डेल हंट का कहना है कि क्योंकि कुछ धर्म उपर्युक्त विश्वासों पर यकीन करते हैं। इस कारण कोई भी मसीही

जो इन पर विश्वास करता है वह इस शिक्ष से प्रलोभित हुआ है। मुझे यह बिल्कुल पिछड़ा हुआ लगता है कि पहले जो यह धर्म कि उपासना का विश्वास है उसे विचार करूँ और फि गिरजाघर के नेताओं के विश्वास को इन विश्वाओं से तौलूँ। एक ज्यादा स्वस्थ अग्रदाय यह है कि बाईबल कि स्पष्ट शिक्षा का परिक्षण करीए इन विषयों पर और फिर ज्ञान मनुष्यों के विश्वासों को पवित्र शास्त्र कि शिक्षा से तौलिये - ये डेव हुट कभी लही कर पाते।

क्यों कि इस किताब में इतनी शक्ति है कि वह व्याकुल और विश्वास दिला सकता है। मुझे उस किताब के कुध तात्तें (फायदे) और कमज़ोरिया बताता हूँ।

बात्तें (फायदे)

१. डेव हंटयकीनन एक बिद्यार्थी है जो आछुनिक दिन के धार्मीक विश्वास के विषय मे। उन्होंने बहत खोज की और उन कि खोज कि योग्यता मानने नायक है।
२. यह किताब मसीहों को धोखा खाने कि स्थिती से सतर्क करेगी, इस युग में जिस में हम जी रहे हैं। यह सारे मसीहों का उस जीत करेगी कि वे अपनी बाईबल कि बुनियाद पर एक गहरी नज़र डालें अपने विश्वासो के लिए।
३. यह किताब मदद करेगा मसीहों को वे संदशों को ज्यादा सफाई और गहराई दें उन क्षेत्रो में जहां वे आक्रमण करते हैं। इसकारण, जो नतीजा विकलेगा वह बहुमूल्य होगा।

कमजोरियाँ :

१. क्यों कि डेव हंट ने हुत समय धार्मिक विश्वास कि विधियों को पटने में गुज़ारा, वे अपना ध्यान धार्मिक विश्वासों पर के द्रित करते हैं बजाए पवित्र शास्त्रके। वे जाने माने मसीही ही नेताओं कि शिक्षा कि तुलना करते हैं, जैसे पॉल योंगी चो, रॉबर्ट स्कल्लर, केनेथ है गिन और अर्ल पाऊंलक, उसके खिलाफ जो धार्मिक विश्वास कि विधियों का जोविश्वास है, बजाए इस के कि बाईबल क्या पढ़ाती है। यह एक पिछड़ा हुआ रास्ता है जब गलती का परीक्षित कर हों और प्रथान गलती इस किताब कि।
२. श्री.हंट 'बेरियन' नहीं है, क्यों कि बेरियन "हर रोज़ पवित्रशास्त्र को जाँ चेगा, यह देखने को कि के क्या यह चीज़े ऐसी ही हैं"। डेव हंट जब भी पवित्रशास्त्र में जाते हैं वह इस बात को साबित करते है कि यह चीज़े ऐसी वहीं हैं। बजाए इसके कि वेइस सच को परिक्षण करे। उद्धारण के लिए जब, विश्वास के खिलाफ स्पष्ट मानसिक स्थिती में आने हैं तो जेविड हंट एक बार भी फिल्लीपियों ४:८ या सैकड़ों में से एक भी आपत नहीं जाँचने है जो पवित्र शास्त्र कि आज्ञा के बारे में बताती हैं कि हमें स्पष्ट मानसिक स्थिती रखनी है। यह फिर एरॉक ओर मधान मलती बन जाती है इस किताब कि, वह मलती को सावित करने कि कोशिश में हैं बजाये सच्चाई को साबित करने के जैसे कि बेरियनों ने किया।
३. डोविड़ हुट ने मसीहता के आज के एक के बाद एक नेताओं को दोफी ठहराया और ऐस लगते हैं जैसे वे भाईयों के दाष ठहराने वाले है बजायो तसल्ली हेने वाले के। शैतान का कार्य है दोफी ठहराना (प्रकाशित १०:१०-१२) और मसीहत को सम्भलना है विवे उवके मुख नबन जाएं। दोषी ठहराना उस किताब में प्रवेश करता है। हमें फिर से मेल करने कि संस्था सौंपी गई है ना कि विनाश करने कि संस्था और मैं अमझता हूँ कि यह किताब मसीह के शरीर को बहुत चुक...न पढ़ुँचा योगी।
४. यदी किसी ने उन जेखकों को पदा है जीव के बारे मे डेव हट ने लिखा है, वह जान जायों कि बार बार श्री हंट ने जो लेखक कहना चाहता थ उस तोड़ मरोड़ के पेश किया गया है।

कुछ लेख तो सीछे दूसरे लेखको से लिए गए हैं, परन्तु, जब तक आप ने इन के लेख विस्त में नहीं पड़े, तब तक आप इन तोड़ मोड़ो को नहीं पहचान पाएंगे जो उन के उपदेशो को बुरा साबित करना चाहते हैं, जब कि वे ऐसे है नहीं। इसकारण, मैं हय सलाह देना चाहता हूँ कि कोई भी उन वाग्यों का सीधा मतलब न लें, परन्तु बहुत ध्यान बुर्वक काफी अपदेशों को जो उस मसीही नता बे लिखीं है पढ़ीये, ऐसा करने से पढ़ने गला खुद अपनी निष्पक्षपाती विचार बना सकते हैं।

५. डेबहेट यह नही देख पाते कि एक नकली केह होने का मतलब एक आसली भी है, और यह असली चीड़ बहुमूलय है। किताब को एक प्रबल प्रहार कि ज़रूरत है जो, इस बात को बताए कि असली चीड़े प्रथम हैं जि से नकली आती है। हमें इस बात पर ध्यान नहीं देना हे जिस के हम खिलाफ हैं। हमें उस बात पर ज़ोर देना है कि हम काय के लिए हैं।

एक आखरी टिप्पणी

मैंने पढ़ने के लिए एक लेख लिखा है जिस का शीरशक है प्रलोभन ?? एक बाईबल का जवाब" जो कि चार सहदृश्य लेखकों में बनाया गया है, जिस में १००-आयतें पवित्रशास्त्र कि थी डली हुई है। उस में मैं डेब हेठ के चार मूल प्रलोभन के उचित परिमाणो पर मैं उत्तर देता हूँ मैं पढ़ते वालों को यह कहता हूँ कि वह इन कि परिक्षा के लिए सैकड़ो आयतों को पढ़ कर अपनी नीजी समझदारी से उस बात को स्थापित करीए कि बाईबल उन चार क्षेत्रों में क्या सिखाती है। वे हैं:

१. परमेश्वर दृष्य सोच को कैसे उस्तोमाल करता है।
२. परमेश्वर कि आकृति बन कर
३. एक निश्चित मानसिक अवस्था और परमेश्वर का वचन और
४. सासरीक दृष्य दती रौशनी यीशु बढ़ता आधकार ? यह पढ़ने की छाटी पुस्तक को मगंवाने के लिए आप लिख

सकते हैं, परमेश्वर से बन्धुत्व संसथा, १४३१ बुलिस रोड़, एलमा, न्यू यार्क १४०५९ (\$ ७.९५)

मैं ने डेविड हंट को लिखा जब उन कि पुस्तक पहती बार निकती और उन से कहा कि मैं के साथ एक रिश्ता करना चाहता हूँ और उन से उन के विचारों को लिखने से पहले वाद विवाद करना चाहता हूँ। दो खाल के बाद उन्होंने मुझ को वपस लिखा और कहा कि उन्होंने मेरे साथ रिश्ता बनाए रखने में ज्यादा कुछ नहीं देखा क्योंकि जो हम में फर्क है वह बहुत ज्यादा है। ओ, हाँ! आप उन सब को नहीं जीत सकते। परन्तु, एक थाल बाद वह मेरे साथ, जॉ, मुझे विवाद करने के लिए तुलाया। मैंने मग कर दिया यह कहते हुए कि मुझे बाईबल कि आज्ञा पर विश्वास था। यदि फिर भी आपकी परमेश्वर दूर नहीं होती, तो दो या तीन और लोगों को कहीए कि वह आप कि मदद करें। यदी फिर भी, आप कि समस्या का समा धान नहीं मिला तो, तब इस समया को गिरजाधर के सामने रखीए। मैंने कहा कि जब वक डेव हंट और मैं पहल दो कदम आगे नहीं लेलेते, मैं तीसरा कदम उठा कर राषट्रीय दूरदर्शत पर उस के साथ विवाद करना नहीं चाहता था। मैंन इस बात पर बी ज़ोर दिया कि हमें समय निकाल कर यह बाना ह कि एक विश्चित ईश्वरज्ञान जो परमेश्वर कैसे चाहता है कि दाश्रनिकता का अपयोग करें, बाना है, बजाए दूसरों को नीचा दिखाने के। इस कारण बिबाद कभी हुआ हिनहीं। मैं समझना हूँ कि जो हुआ अच्छे के लिए हुआ।

छहराई को परखना

निम्न दिएगए दो लोख मेरे दोस्त परमेश्वर ईश्वरज्ञानी खे.मौरिस फुल्लर ने लिखे हैं। मौरिस फुल्लर पाढरी है, क्कूइंस पार्क फुल गौस्पल चर्च जो कालगरी, अलबेरावा,

कैनेडा में है। वे विथोपाजन आधपक्ष भी हैं, कालगरी स्कूल ऑफ बाईबल के और ए सदस्य हैं बोर्ड ऑफ रीजेंटस ऑफ दा एसोसिएशन ऑफ चर्च-स्टैंड बाईबल स्कूल।

कई लोग हैं जिन्हों ने परमेश्वर से बन्धुत्व को अपनाया और आशिषित भी हुए, परमेश्वर जिन होंने परेशानी उठाई (या उनसे बात जीतकी जिन्हों ने परेशानीयाँ उठाई। दार्शनिकाता या " आत्मा से देखाना" विषय पर। परेशानी कि ववजाह यह

नहीं थी कि स्वपना देख सकते थे (सोते में) था दर्शन (जागते में) ता किसी भी प्राकर का दृष्य आत्मा में अनभवा करना जब वह विशिष्ट रूप से परमेश्वर कि ओर से हे। पर दर्शन को खंय उत्पन करने का विचार, "दर्शन के उपयोग" से (जैसा कि हमें बताया गया है परमेश्वर के साथ बन्धुत्व में) था" पम्प चालू करना (जैसा कि मार्क विकलर बताने है) दोनों हि विपरित है उस के जो हम में से कईयों को सिरक्याया गया था। न हि हम को कुछ मदद मिली जब डेव हंट ने कहा " प्रतोभन मसीहत की" में कि जो विचार है(दार्शनिकता का) उस का ज़िकर (बाईबल मे) नहीं है नहीं उस को स्पष्ट किया गया थ सिखाया गया १ और यह" सब मूर्तीयाँ दानव के आकार है। यही बात चीशु या परमेश्वर कि दार्श विकाग को छोटी गलती नहीं परन्तु बहुत खतरनाक बनाती है।

बिन प्रश्न के, एक तरहा का दर्शत है जो रहस्यमय और विशाचग्रस्त है, और यह भी कि यह सब बकास है। परन्तु क्यो आत्मा में एक शुछता भी है? 'देखने' और देढने मे यकीनन दार्शविक और शास्त्र संम्बन्धी फरक होता है। पहला बिलकुल अन ऐच्छिक देग है, जब कि इसरा चकीनत स्कंय इच्छा का कार्य है।

पहले, तो यह हकीकत है कि ऐसा होता है। हम में से कईयों ने यीशु को अपने दिमगों में चित्रांकण किय है और जब वह चित्र जीवित हो उठा तो यीशु को कई चीज़े करते देखा है। यह अनुभव हमारे लिए अनगिनत आशीश का कारण बने। यीशु हमारे

१. हेठ, डेविड। मसीहत का प्रलोभन, हारवेस्ट हाऊज़ १९८५ पी ११४
२. हंट पी.१६७

लिए आयादा सचो हो गय और हम ने उन के साथ ज्यादा तड़दीकी और मित्रता का अनुभव किया। कई नार तो दूसरो को संगठित होते देखा, जब आत्मा में, यीशु को उनके पास जाते देखा, उसका हाथ उन पर रखते देखा बर्गेराह (हाला कि इन में से किसी भी जन को यह ज्ञान नहीं था कि हम आत्मा में क्या देख रहे हैं)। यीशु को ढूँढने का असर और उस को चलते देखन और कई तरहा के कार्य करते दखता, परमेश्वर के आगे खामोशी और शिथिलता बनाने संम्बध, सच में विश्वासी का परमेश्वर को समर्पीत करना और स्थानीय गिरजाघर के अगुओ को भी निशचित व्या कुलता और लाभजनक भी है।

दूसरा, प्रश्न का जवाब देने के लिए क्या हय 'सही' है कि हम यीशु को दर्शन में ढूँढ तो उन से दूसरा प्रश्न करे। क्या यह सही है कि हम परमेश्वर को सुनें? क्या यह सही है कि हम बुद्धि के लिए प्रार्थना करें और फिर हमारी इच्छा के कार्य के अनुसार, उस कि आवाज को सुने अपनी प्रार्थना के जवाब में? थोड़ा मसीहों को इस से समस्या होगी। यही अब कुछ है जो प्रार्थना को दर्शाता है। यही परमेश्वर के साथ बधुत्व है केंद्रित करते हुए, एक निश्चित कार्य के समान, उस कि आवाज़ को सुनना, या उसक द्वारा अपनी आत्मा में जो आता है उस को लिखाना। जो बात अकसर समझी नहीं जाती वह सुनने और देखने का कार्य दोनों अस्त में नज़दीक से सम्बंधित हैं। पूर्णता से समझना दोनों देखने और सुनने पर निर्भर होता है। हम इस परशक नहीं करवे कि यह सही है कि हम कार्य को खोजे या परमेश्वर से रेहमा को। हम उस रेहमा को नहीं मानते जो स्वैच्छिकात से या विशिष्ट रूप से परमेश्वर ने किया हो, पर यह भी कि रेहमा, जिस को हम ने माँगा, इंतज़ार किया और व्यवहारिकता से सुना है अपने आत्मा के कानों के द्वारा।

"सुनने और देखने, शब्द और दर्शन में क्या मेल है। रोमियो १०:१७ के मुताबिक विश्वास, परमेश्वर से रेहमा के द्वारा आता है। हमने शाचद रेहमा को केवल शब्द जिसे हमारे मन के कान सुनते हैं के रूप में सोचा है। परन्तु, एक रेहमा को हम देख भी सकते हैं। गीनती १४:११ पूछता है" वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? यहाँ विश्वास करना (अपने विश्वास पर कार्य करना) केवल परमेश्वर के शब्द पर निर्धारित नहीं है कि उन्होंने सुना, परन्तु परमेश्वर के आश्चर्यकर्म पर भी जो उन्होंने देखे हैं। दोनों रेहमा हैं। व्यवस्थाविवरण २९:२-४ भी दोनों को मिलावा है, "यहोग ने..... तुम्हारे देखते....किया नह तुम ने देखा है। वे बड़े बड़े परीक्षा के काम और चिन्ह, और बड़े चमत्कार तेरी आंखों के साम्हने हुए। परन्तु यहोना ने आज तक तुम को न तो समझने कि बुद्धि, और न देखने कि आँख और न सुनने के कान दिए हैं। " जो उन कि आंखों ने देखा और उन के कानों ने सुना, वह ज्ञा को या समझ को उत्पन्न करना चाहिए था - यही तो विश्वास है। यह सच कि उन के चरित्र में कुछ कमी बहीं दिखी। भजन ७४:९ आगे जोड़ता है शबाद को दृष्टि से, सुतने को देखने से: "हम को हमोर विशान नहीं देख पड़ते: अब कोई तीवी वहीं रहा, त हमारे बीच कोई जानता है कि कब तक यह दशा रहेगी"।

देशने और सुनने के विचार यूहन्ना ६:४५,४६ में भी अपृथक रूप से जोड़न गए हैं: भविष्यवक्ताओं के लेखों में यह लिखा है कि " वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे ।" जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है। यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। " उच्चारण जोड़ा गया)। यीशु ने यूहन्ना १४:९ में आगे कहा '.....जिस ने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है.....।"

परमेश्वर को देखना केवल इस कारण नहीं है कि हम दार्शनिक अनुभव करें। वह अकसर उस के

कहे हुए एक शब्द के साथ आता है। जो देखा गया वह भी एक दृश्य शब्द है, एक चित्रांकित किया हुआ शब्द; एक मौखिक चित्र। विलहेम मिकायलिस कहते हैं, अकसर देखना और सुनना मिलकर एक इन्द्रियवश पूर्णता बनती है (इन्द्रियों कि) और आत्मिक उपलब्धी।"

"हम जब परमेश्वर से खोजने हैं एक शब्द या रेहमा को, तो जो हम पाते हैं वो अकब है कि वह ओ दृश्य के रूर में हों हमारी आत्मा में ओ शब्द, लेख के द्वारा ओ शब्द या किसी और तरीके की बातचीत। हम केवल अपनी आत्मा के वही खुले रखते परन्तु आत्मा कि आँखें भी। उसी तरह जैसे हम शब्द को सुनते हैं, उसी तरह हम दर्शन को देखते भी हैं। दोनों दार्शनिक बात चीत बन जाते हैं (रेहमा) दोनों पवित्र शास्त्र के हैं और दोनों हिप्रबल हैं। परमेश्वर ने हमें आत्मिक क्षमता ही है दोनों के लिए, और हमें जबाब मिलेगा, यदि हम कर्तारि अर्थमें उसे दूढ़े इन दोतो लरीकों से।

दर्शन पाना

इस लेख कि पहली श्रृंखला में हम ने बात की दार्शनिक उपपत्ति कि दर्शन ढूँढने के लिए। दर्शन ढूँढने का मतलब समझा गया कि दर्शन पाने से फर्क है जो कि विरिष्ट रूप से परमेश्वर कि ओर से प्रारम्भ किया गया है। हम ने सलाह गी कि रेहमा को सुनने का मतलब, कई विश्वा सीयों को, उतना हि स्वीकार योग्य है जितना रेहमा को सुनन जो परमेश्वर कि ओर से विरिष्ट रूप से प्रारम्भ किया गया हो। हम में से ज्यादातर लोग यह सोचने हैं कि परमेश्वर से तुरन्त जवाब पाना कुछ सनालो के जो हमारे पास हैं, काफी उचित है। हम यह भी मानते हैं कि इस कार्य

का प्रारम्भ लिखने के माध्यम से शुरू किया जा सकता है।

१. अध्यात्मविदा शब्द कोश, नए नियम का.ग्र.व.पृ.३४९.

"क्या यह उचित है कि हम कर्तारि अर्थ में दर्शन दूँ उस का प्रारम्भ भी स्वयं करें?"

किस पूर्वपक्ष पर यह उचित है कि हम कर्तारि अर्थ में दर्शन दूँ और प्रारम्भ भी करें? शारिरिक क्षेत्र में, हमारे पास वही योग्यता है जो दूँ तो देखो और ध्यान दो तो सुनो। हमारी स्मरण शक्ति थप वापस बुलाने कि ताकत (मानव आत्मा का कार्य) से हम दोनों शब्दों और चित्रों को स्मरण कर सकते हैं। यकिनन, यह बहुत कि कठिन है कि चित्रों को छोड़ हम कुछ और याद रख सकें। हम इस सार्य को प्रारम्भ करते हैं और जैसे कि दर्शन को प्रारम्भ करते हैं. नतीजे कई बार हमें हैराण कर देते हैं। हम कई बार चकित हो जाते हैं कि हमारी स्वयं प्रारम्भ स्मरण करने के कार्य ने हमारी स्मरण में क्या ला दिया। इन परमेश्वर से दी गई योग्यताओं को पाकर, तो क्या, हम इन को सासमनता से इस्तेमाल कर परमेश्वर को स्पर्श कर सकें जो हमारे अन्दर रहता है और हमारे साथ एक आत्मा बन चुका है?

"तर्क के अनुसार, यह यकीनन लगोगा कि हाँ कर सकते हैं। कुछ को, वैसे भी, यह, कार्य बहुत खतकार है। परन्तु यही खतरे, उस रास्ते में पाथे जाते हैं जहाँ हम परमेश्वर कि को बोलते हुए सुनना चाहते हैं जैसे कि वह कार्य जहाँ हम उसे दूँते हैं कि वह हमें अपने आप को दर्शन के माध्यम से बता सके। दोनों ही में यह संस्थावना है कि हम विभिन्न बाकतों को जो उपस्थित हैं, मिल सकते हैं। यकिनन यहोवा साक्षी संस्था, इस बात का सबूत है कि केवल उन का धर्मशास्त्र पढ़ने से हि लोग गलती में पड़ सकते हैं। परन्तु यही सुरक्षा (एक समर्पित जीवन और पवित्र आत्मा) भी त्रस्तुत हैं इन सब कार्यों में।

"परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है? क्या बाईबल में ऐसे उद्धारण हैं जहाँ लोग दर्शन को दूँते हैं? मैं मानता हूँ कि हैं। भजन संहिता २७:४ पा ध्यान देते हैं। एक वर मैंन यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न मेंलगा रहूँगा ;कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिस से यहोवा कि मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ।

"तीन चीड़े जो दोऊद इच्छा करता है और दूँता है रहने पाऊँ, दृष्टि लगाऊँ और ध्यान किया करूँ। क्योंकि पहले और आखरी इच्छों में कम मुशकीलें हैं हम उन को पहले देखते हैं। " रहना" इबानि में इसे "यशव" कहते हैं, जिस का मतलब है ठहरना निवास करना, रहना। कभी इस का मतलब होना है 'बैठना'। विचार यह है कि बिना जल्दबाजी के रहना या परमेश्वर के भवन में रहना, वह जागाह जहाँ परमेश्वर अनोखेपन से उसस्थित हैं। यकीनन, दाऊद कि इच्छा थी कि उन का सारा जीवन इस सुपरिचित आत्मिक मेलजोल में बीते। "ध्यात" इब्रानी में 'बकर' जिस का मतलब है 'विचार' करना यीशु चिन्तन करना, खोजना। केइल और जेलिटज़ इस शब्द को इस वचन में इस तरह स्पष्ट करने हैं ' ध्यान में लीन हो सोचना जो अपने आप को परमेश्वर में खो देता है जो उन का प्रत्यक्ष है"।

परन्तु इस का क्या मतलब है कि यहोवा कि मनोहरता पर दृष्टि लगाए रखूँ। पहले हम देखते हैं कि अयत के परहते भाग में 'यत्न' 'बक्श' का मतलब है कि दूँना इस मकसद से कि जो चीड़े हम दूँ रहे हैं वह मिल जाए। जब उस का उपयोग परमेश्वर को दूँने में लागया जाए (जैसे कि यहाँ), तो उस का अर्थ हो सकंता है, " किसी शब्दों कि खोज यीशु परमेश्वर कि ओर से दैवी "प्रकाश" इस पर भी ध्यान देना सही है कि यह दूँना नहीं। शब्द यीशु दैवी प्रकाश में आजाएँ और निर्देश होते हैं जिन्हे मानना है।

"दृष्टि , इब्रानि से चज़ाह' कहते हैं, जिसे दोनों स्वभाविक दर्शन जो आँखों से देखते हैं वो आलौकिक दर्शन। यहाँ यह कहना सुरक्षित होगा कि यहाँ इस का अर्थ स्वभाविक दर्शन नहीं है, परन्तु परमेश्वर का आलौकिक दर्शन। स्वभाविक दर्शन के लिए इस का उपयोग बहुत कम होगा है, पर ऐसा लगवा है कि पराने नियम में प्रधान मतलब है 'एक आत्मिक दृष्टि, परमेश्वर से एक दर्शन।' यो यहाँ, दाऊद आलौकिक दर्शन खोज रहा है, परमेश्वर कि मनोहरता और सुन्दखाके। केहल और जेलिटज़ इस अनुभव को ऐसे द्वाख्या करने है "उस का हैवी प्रकाश, महीमा से भरा हुआ, जो वहाँ है आत्मा कि आँको को नज़र आते हुए"। दर्शन को हूँने का मकसद है कि पूर्णरूपसे उस कि इच्छा को ज़ाहिर करें।

फिर से, जो दर्शन हम देखने है वह केवल इस कारण नहीं कि वह अनोखा है और मनोरंजक या अति प्रसन्न अनुभव है। जो दर्शन हम आत्मा कि आँख से देखते हैं उस का एक दम वही कार्य होस है जो एक शब्द का जो आत्मा के

कानों से सुना गया हो। यह परमेश्वर कि और से रेहमा है, रोमियों १०:१७ के मुताबिक मन में विश्वास जगाता है। यह हमेंश सूचक थ उत्साह दिलानेवाला होता है। दर्शन को खोजना एक अविनीत तरीके से का मतलब है कि धोखे को बुलावा देना। अपनी आत्मा कि सारी इंद्रियों को खोल कर, श्रवण या रेहमा के दर्शन को दूँना उस के अधिकार तले विनीतता से आज्ञा तूकूलबापूर्वक और उस के मानने कि मनसा से आना, परमेश्वर के लिए एक न्योता है कि वह अपने आप को हमपर प्रगट करे कई अनन्त प्रकारों में। इस का उद्देश्य उस कि इच्छा हम पर पूर्णरूप से ज़ारीर करना।"

थिअलो जिकल वर्ई बुक आफ धर्मशास्त्र ओल्ड टेस्वामेंट (शिकागो: मूडी प्रेस, १९८०) ग्र. घ, पृ १०५।

केहल और डेलिटज़ (ग्रैण्ड रैपिडज़: अड मैनस, १९८५), ग्र.V.पृ ३५७)

केहल और डेलिटज़ पृ ३५७

थिओलौजिकल डिक्शनरी ओफ ह ओल्ड टेस्वामेंट, ग्रैण्ड रैपिडज़: अईमैनस, १९७४),
ग्र. II पृ २३८

केहल और डेलिटज़ पृ ३५७

स्वयं प्रार्थना पत्र

इस पृष्ठ को लिखने के लिए इस्तेमाल किजीए। यीशु को अपने साथ किसी आराणदेह स्थान पर चित्रित की जीए। कदाचित उसके साथ गलील नदी के किनारे जाईए था उसके साथ पहाड़ी पर बैठीये, जब वह लोगों को उपदेश दे रहा हो। जब आप उस के साथ रहते में आनन्द में आनन्द मै ह सूस करे, तो शिथिल हो जाए, अपने आप को स्थिर करले और अपनी आँखें उस रप टिका यों। आप उसे लम्बे लहराते जोगे में देखोगे और एक प्यार भरा नम्र मुख। आप उस कि आँखों में एक चमक देखोगे और उस के लबों पर हँस्सी क्यों कि वह आप के साथ इस समय को बिताते हुए प्रसन्न है। उसके साथ रहने पर आप भी प्रसन्न हुईए। उस से

पूछिए कि वह आप को क्या कहना चाहता है। अगर आप के पास और कोई विशेष प्रश्न है इस से ज्यादा तो उससे इस समय, वह प्रश्न पूछिए।

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

A. हम आत्मा मे देखने कि अपनी क्षमता को क्यों उन्नत करें?

1. a)
- b)
2. a)
- b)
- c)
- d)

3.

4.

5.

6.

B. आत्मा में देखना कैसे उन्नत करें?

1.

2.

3.

4.

C. गलत इस्ते माल का निचम

1.

2.

3.

4.

इस का इस्तेमाल अध्यापक के मार्गदर्शन में बताया गयहै

7. फरसई लीग परिशदाभा से चुद्ध

इन प्रवक्ताओं वह लोग टिकने नहीं दिया। और पेन्ताकोस्त घरों को देवालय को दूसरे वर्ग के ईसाई लोग ने इनके घरों को जलाये है। वे समझे थे कि पेन्ताकोस्त लोग इन स्थान पर आकर आक्रमण कर रहे है।

साल 1982 में " द वर्ल्ड क्रिस्चियन एनसैक्लोपीडिया" ने यह प्रचुरन किया कि करी 100 मिलियन (करोड) पेन्ताकोस्त और यरिसमटिक संसार में विस्तीर्ण है। सि.पि. वागलर भुतानिक करीब 1.1 बिलियन पेन्ताकोस्त और दूसरे वर्ग के लोग है। साल २००० तक इनकी संख्या है। जो (चुनिवरसिटि के राज्य और ग्लोबल मापिंग अंतरराष्ट्रीय.1989 में किया है।)लोग अधिक संख्या में देवालय का प्रामुख्य और उनको आदर करने लगा। क्या सभी इसका आदर करते यह कहना बहुत मुश्किल है।

सन 1940 दशक में प्रभु का वाक्य और उनका प्रसंग सुनने लगे। रोगों से विमुक्त भी होने लगे।

इसका प्रचार किया है देवालय मे वो है वोटल राबर्ट ने और दूसरो ने। और लोग विश्वास करने लगे कि परिशुद्धात्मा से रोग पीडितों को मुक्ती मिलती है।

सन् 1950 में केन्नत हागिन ने लोगो के सामने आये और प्रभु के वचनो को प्रचार करने लगा; और भगवान की शक्ति के बारे में सुनाया है।

सन् 1960 में डेरिक प्रिन्स ने देवालय में प्रभु का वाक्य का प्रचार करने लगे और रोगो को मुक्ति का स्तान बनाया।

सन् 1970 में, डेरिक प्रिन्स ने लोगों को संबोधित किया कि प्रभु अपना रक्षक है। और लोगो को ईसाई लोगो का महत्व के बारे में समझाया यह उनका जीवन में एक मुख्य विषय था। बिल गोवार्ड ने कहा और लोगो को समझाया कि ईसाई लोग का मुख्य लक्ष्य क्या है। और लोगों को प्रोत्साहन दिया कि ईसाई लोगों का समझदार और अच्छा संबंध से मिलजुलकर रहे।

डॉ. पाल योमीयों देवालय का मुख्य उद्देश के बारे में विश्व व्याप्ति(संसार में) प्रचार किया। उन में छोटा-छोटा हिस्सा करके, अलग जगों पर प्रभु का वाक्य प्रचार करा। उन्होंने करीब आधा करोड़ लोगों तक ईसाई धर्म का वाक्य प्रचार लोगों तक ले गया। ये एक

इतिहास में बहोत ही प्रसिद्ध हो गया है। :

सन् 1980 दशक में धर्म का प्रचार थोड़ा कम होता नजर आया था। प्रभु सत्य का प्रचार, मुक्ति का और उनके जानकारी करना; जो प्रभु का प्रार्थना करते हैं उनका आदर करते हैं। आश्चर्यकार्य का महत्व मिलना। राबर्ट शूलर लेखक उनका पुस्तक में कहता है कि हम बहोत प्रसिद्ध वाक्य और महत्वपूर्ण वाक्य को १५०० में खो गये।(१ कोर,६:१७)। हम जानते हैं कि मानव जन्म से ही भगवान से रिश्ता होता है। और उनका महत्व चारों दिशा में फैल गया है। नोरमन क्लब ने इस महत्वपूर्ण कार्य में जुटे थे। प्रभु ने सत्य का वाक्य को लोगों को समझा था और इस धर्म को पालन करने का अंश भी लोगों को समझाया था। इस तरह से वाक्य को एक शताब्दि तक प्रचार करते गये। यह एक साक्ष्य है कि प्रभु का वाक्य लोगो को प्रभावित किया है। और महत्व कार्य को पहचाने है।

भगवान के सन्निधान में नृत्य करना और गाना का भी महत्व दिया गया। इस तरह से भी भगवान को अपनार्ये इस के लिए कोई नृत्य के बारे में मालुम रहने का जरूरी है। पर उन एक अच्छा कला का प्रदर्शन करने लगे नृत्य और गाना में परिवर्तन किये और प्रभु का कार्य सफलता से अपनाये है। नये तरीके से बेनर पर प्रचार करना और संगीत नृत्य और गाना का आदार किये।

एक सिद्धांत और उसका परिणाम मौत और जीवित आदाम को साक्ष बनाया ये देवालय के लोगो ने इनमे से अरल पालक और डेविड चिलटन और अन्य लोगो ने।

ऊपर बताये गये सं...प बस नहीं होता है। यह तो सिर्फ एक नमूना है प्रवक्ताओं के बारे में सच्चाई भगवान ने भक्तों को परिचय करवाया आपका दिल यह सच कहता कुछ संदेश पर और कु नहीं। आपने समझा होगा मैने कुछ अच्छा पत्थरो को चुना: जो मैने बताया। मै यह भी बताना चाहता हूँ। जो मैं प्रवक्ता को चुना वो हो स्तेफन, जों इज्राएल इतिहास को बताया है। उनका पूर्वजो ने प्रवक्ताओ

को किस तरह से पत्थरो से हमला किया और मार डाला जो प्रभु का वचन प्रकट कर रहे थे। जो अपराधी और मुजरिम बने(१ अपो -७:५२) हम समझ सकते हैं कि वो लोग वाक्य सुनने से इनकार कर दिये और कान को बंद रखे ताकि वो नहीं सुन सके और पत्थरो से हमला करना शुरू कर दे। हम समझ सकते हैं लोग किस तरह व्यवहार करते हैं।

लोग इस तरह से क्यों करते हैं। अगर इसका मूल कारण को समझे यह समस्या सुलजाना बहोत आसान है। इस तरह होने से बचा सकते हैं।

कारन # 1

प्रवक्ता के वचन को सुनाये जो समझ सकते हैं। परिशुद्धात्मा वचन को समझ सकते हैं।

उदाहरण- मलाकि प्रवक्ता ने कहा मैं एक ऐसा प्रवक्ता को लोगो के सामने बिजाया उनका नाम

एलिजा था जो भविष्य में होने वाला ब्रभु का भयंकर परिनाम को समझाने लगे प्रभु उन परिनामो से मुक्ति दिलाता है।

लूका प्रवक्ता ने जान के बारे में बताया और भविष्य परिनाम में प्रवक्ता पूरा करता है। क्यों यह प्रवक्ता परिशुद्धात्मा से है। जो आत्म और शक्ति एलिजा से है।(लूका १:१७) प्रभु ईसा ने कहाँ सब प्रवक्ता प्रभु का वाक्य और परिशुद्धात्म से है। और धर्मशास्त्र के पालक वो प्रवक्ता जान, हम मानना है यह एलिजा प्रवक्ता से चुने गये हैं।(मत्त ११:१३-१५)

दूसरा ये है हम एक अच्छा उपाय को सोंचते हैं जो पहली बार इस काम को करना चाहते हैं। अच्छा दिमाक और स्पष्टता से काम करना सोंचते हैं। उसका परिनाम अच्छा हों प्रभु का नाम प्रसिद्ध हो। जब आप नया वचन को सुनते हैं। उसे ध्यान से सुने कभी मन में आशंका पैदा होता है जो सुनने मजबूर करता समझना की यह सब शैतान का काम है। आपका विचार दूर करने के लिए बाइबल का सहारा लेना चाहिए।

कारन# 2

नया अविष्कार के खोज में हम कभी कभी गलतियां कर सकते हैं। जो प्रवक्ता सही वचन है।

ऐसा कोई व्यक्ति जो पहली बार प्रभु को अपना रक्षक स्वीकार करे। और आपके अच्छा दोस्त को प्रभु के बारे में समझाये उन्हें प्रभु को अपना रक्षक स्वीकार करने के लिए कहा जो उसे इनकार कर दिया। आप उन्हें कहने पर समझाया की प्रभु ही अपना रक्षक है।

इसमें कितने लोग अपने बीच में है। जो प्रभु को अपना रक्षक स्वीकार किया और दूसरो को समझाया की प्रभु को अपना रक्षक मानो। अपना प्रभु के लिए इंतजार कर रहे हैं। पर दूसरा लोग उतना तैयार नहीं है जो प्रभु के लिए इंतजार करने को इसके हम प्रभु को स्मरण करना चाहिये। सब लोग प्रभु के पास आये। बाईबल का वाक्य को समझाना चाहिये।

कारन # 3

जो लोग प्रवक्ता का वाक्य सुनते हैं पर दूसरों प्रभु को वाक्य प्रकट नहीं करते पर उसमे दोष या गलत वाक्य का प्रचार करते हैं।

एक प्रवक्ता केन्नत हागिन ने करीब ५० साल इसमें अध्ययन किया, और परिशुद्धात्मा के बारे में विस्तार से प्रकट किया और बहोत ही प्रभु का प्रार्थना में लीन हो गया है। उनमें परिशुद्धात्मा का शक्ति पाया गया। आश्चर्यकार्य करने लगा एक बार उन्होंने दूसरो के साथ अपना कार्य के बारे में बालों एक बार वह बेटी को स्वस्थ किये जो बचना बहोत ही मुश्किल था के डाक्टर ही इसका अत्यवसर सूचना पर कार्य कर सकते जो केन्नत हागिन के बारे में नहीं सुने ऐसे महान शक्ति कभी किसी के पास नहीं देखे ना सुने थे। पर उनके बारे उतना प्रसिद्ध नहीं हुये। और कोई भी उनका कार्य को गलत साबित नहि किये।

कारन # 4

जो लोग ऐसा होते हैं प्रवक्ता का सूचना मानते, और प्रवक्ता भी भविष्य का नया सूचना लोगों तक पहुंचाता है। कुछ लोग ऐसे भी होते जो भगवान के नाम शैतान को दूर भगाते हैं। और लोगों को शैतान पीड़ित से मुक्ति करते हैं और चेलो जाये जो लोगो को विश्वास नहीं होता है कि वह प्रवक्ता आश्चर्य कार्य करा है। जो ८० से २५ लोग हैं जो उसे नहीं मानते और बहुत लोग ऐसे हैं जो प्रभु का शक्ति को जानते हैं।

कुछ प्रभु का भक्त लोगो से कहते हैं कि आप अगर प्रभु का शक्ति को मानते या विश्वास करते हैं तो डाक्टर के पास जाना छोड़ दो या डाक्टर के पास नहीं जाना। क्या यह सही है। मैं प्रार्थना को ठुकराऊँ और डाक्टर के पास जाना छोड़ूँ जब मैं बहुत रोग पीड़ित और कमजोर हूँ।

नहीं, ऊपर दिये गये सपना को जानो और प्रभु का शक्ति को पहचानो, जब खुशी आपके पास सदा होता है।

कारन # 5

कभी कुछ प्रवक्ता के बारे में गुस्सा भी हो सकता है। जब लोगों को भगवान वाक्य का प्रचार करता है। या कुछ आश्चर्यकार्य दिखाता है। वे लोगों से कहने लगता है। मैं जो कार्य करता हूँ ऐसा कोई भी नहीं कर सकते, या देख नहीं सकते। मैं आप लोगों से बहतर हूँ। या अच्छा हूँ। मैं आप से कहता हूँ ऐसा कहना लोगों को गुस्सा होता है। इसे भुल जाना बहुत मुश्किल है। अगर आप लोगो से आपके भावना को समझाना चाहते हैं। आप बहुत सावधान से रहना चाहिये। आप प्रवक्ता के बारे में सुनते हैं। उसमें गलत को पहचानो। और भगवान से प्रार्थना करना ऐसा भावना मन में न आये। और लोगों अच्छा वाक्य सुनाऊँ और लोगों को भगवान के पास लाऊँ यही भावना से रहना चाहिये।

कारन # 6

कभी कुछ लोगों को गुस्सा जब दूसरो का बात सुनते हैं। वो ये है कि जब दूसरों का बात पर विश्वास नहीं होता जब प्रभु दूसरो के जीवन आश्चर्यकार्य किया या रोगों से मुक्ति पाये। वे कहते हैं कि यह कैसे संभव है। मुझे कुछ नहीं पता। या

मै बहोतसालों से उन से पहला मैं ईसाई हूँ। क्या ऐसा कुछ अच्छाई नजरेत से बाहर आ सकता है। यह बिलकुल गलत है। ऐसा से सावधान रहना चाहिये और प्रभु के पास क्षमा माँगना चाहिये। ऐसा विचार को दूर करे।

कारन # 7

कभी कभी ऐसा भी होता है कि जब दूसरों का प्रसंग सुनकर यह कहता है कि बाईबल में इस वाक्य प्रस्ताव कहा है। उसे समझाये।

पर बाईबल बहोत वाक्य है। जो हम पहचाना मुश्किल है। उदाहरन-तुम विश्वास करते हो कि तुम तुम्हारा भाई को प्या करो जो स्वर्ग में पहुँचे। मुझे याद है कि प्रभु यह वाक्य को प्रस्ताव करा है। जब कोई भी मेरा पास आता है। जब कोई उनका माता, पिता को भाई बहन को और उनका जीवन को द्वेष नहीं करता है। या इनकार नहीं करता वह मेरा शिष्य नहीं होता है। (लूक-१४:२६) और दूसरा तरफ से, तुम समझते है कि आपना भाई को इनकार करता है जो स्वर्ग जाना चाहता है इस वाक्य से (जान) से जान सकते है। जो उनका भाई को रोशनी और अंधकार में भी उसे इनकार कर सकता है।

१. सार्शश

२. फारसई लीग के सार्शश के अनुसार

प्रमुख या प्रसिद्ध ईसाई धर्म गुरु लोगो से मिल जुल कर वहे

- a) उस प्यार करे और उनके काम को प्रे करे
- b) ईसाई धर्म कायम करने या धमे कों निबाने क लिये प्राशदेना करे
- c) उनसे मिले और प्रत्येक रुप से येतना दे
- d) खुल कर उसें समझाये

एक आध्यापक उनेक अनुयरन करने वालो सें यह विन्नाति करे कि सबी से कुलकर धर्मिक या परिशुद्धात्मा के बारे में न बतायें जों लोग नहीं समझते।

- a) परिशुद्धात्मा का वियार
- b) धार्मिकता
- c) विज्ञान

एक योवन अध्यापक शित्यों से यह कहता है कि मोरो धमशारतो को विरुद्ध प्रयार करो या निबध कोमलत बताये जों सइकडो सालो से अनुसार करते है। प्रार्दन मदिर या देवालय में गलत प्रयार तरते है।

- a) चरित्रा बारे मे बताना अच्छा है।
- b) उसे यह वताना आच्छा है कि क्यो करना है उसे बताये। और उनस पूये उनका इसके क्या कयाल है।
- c) और उनके शित्यो कों दुर शहने के लिये कहे।

एक नया प्रवक्ता या मत प्रयारक आपके शहर में आये और प्रार्थना मदिरा और को बनाने सेरोके और उनके भाषन सें लोगो कों प्रभावित करते है। और अपने पास आकर्शित करता है। ज्यें सइकडों सालो सें धर्म का प्रयार हैं। उसे अलाग ढंग सें प्रयार करत है।

* लोगो को आशसर्य दिखाता है। रोगो से पीडित लोगों को इसाज करता है। वह अच्छा हैं कि।

- a) अच्छा है कि वैसे लोगो दूर रहान अच्छा है।
- b) लोगो कों विन्नति करे कि उन्हे दूर रहे।
- c) लोगो से कहें वैसे लोगो सें दूर रह है। जो धर्म के नाम पर गलत काम करते है। और भावना को बग करते है। जों सइकडो सालो सें चल आपहे है।
- d) आप उनके पास जायें उनका प्रयार सुनकर उनका नयें वियार, और हम अपना बाईबल सें लोखन चुनकर उसे तरीके सें समझये था कि वो समझ सके।

- e) उसे यह बताये कि उनका विचार गलत है। और उनका विचार विरुद्ध है।
- f) उसे प्रत्येक रूप से समझाये। बाईबल से लेकर चुनकर उसे अच्छा समझाये जो सड़कडों सालो से बाईबल का वचन सच है।

इसका सही उत्तर है (A) इसका तुलना में बाईबल से मत्तय ९:९,१७; समाज के रकम व्यापारी से परिचय ता। हम दूसरो को अरछा और बुरा का फैसला नही करते। उनका मन का भावना की भी नही समजते। (मत्तय ७:१,९:१७; रोम :

संख्या # 2

इसका सही जवाब है "C" उसका तुलना ७:६ - सूवर के सामने सुगछ डाल तो महसुस नही करते (इसका खुशबु नही करते)

आदार : सभी लोग एक तरीके से नही रहत और उन लोगो का भावना को समझना भी बहत मुश्किल है। इसक लिये ज्ञान का जरूरी है।

संख्या # 3

इसका सही अर्थ "B" तुलना (मत्तय १:२१-८) प्रभु ने धर्मशास्त्र के सख्य - ४ को तोडा है। यह है कि निबन्द सातवा दिन "7" वा दिन काम नही करना है। दाना चुनना और खाना उनक कहना है कि सब्बात का दिन पुरुष के लिए बनाये। पुरुष सब्बात के लिए नही। (मार्क - २:२७) मनुष्य को निबंदन का आदार करना। नही निबंदन का आदार करना मनुष्य का करतव्य है।

संख्या # 4

सही अर्थ है। "D" तुलना (मत्तय ४:२१-४८) प्रभु उसा ने धार्मिक सुत्रो को आसान तरीके से समझाया मै आप सबसे कहता हु कि - सत्य का आदार पर चले इस वारय को (आपोस्तल १७:११) दख। प्रभु को सुली पर मैने चेडाया या तुने चडाया यह कहना बहोत मुश्किल है। अगर आप (४ चार) अध्यायन कों देखे तो डर लगता है। उसलिए ज्ञान से और समज से कारसीत्व को आदार करे। और

फारसीतत्वकों हृदय में आपनाये।

करसाई लोग धार्मिक वचन से युद्ध (लडे) मै समझता है। को इसे कानुन का लागु किय जाथे। जो कारसितत्व को समझे और धार्मिकता हम सनी मे रहे।

मै यकीन करता हूँ कि प्रभु ने देवालय में सबिकार्य कर रहा है। और मै यकीन करता हूँ कि इसाई धर्म को सही है। जों साइकडां को सालो से इसाई को मान रहे है आज के दुनिया में कई ऐसा किताब आया हैं जो फारसी तत्व से संबंध है।

धार्मिकलोग धर्म को मानते है वे कभी नही बदले है। जो बदला है।

वे ऐसे लोगो पत्तर से मारकर मौतका सजा देते है। जो प्रभु ने प्रवक्ता को निर्मित करता है। प्रवक्ता स्तेकन इस अ.....य में कहता है कि (अपोस्तल ७: ५, ५२) जो पुरुष जों सुन्नत नही करते और कटोर दोते है। वैसे लौग भगवान का वाक्य सुनने से रोकते जो सालो से उनके पिता करते आम्तिक रहे है। और जो प्रभु का वचन प्रकट करते है। उसे मार डालते है। अगर प्रवक्ता स्तेफेन के बारे देखे जो प्रवयन को समझाया है। बाद में उसे मार डाला है। उससे यह नही कह सकते करसऊ लोग अच्छा काम किया है। एक अच्छा व्यक्ति को मार एले है। जो प्रभु का वचन लोगो को समझा रहा है। अगर लोगो को पसंद आया नहीं उसे मार डालते है। आजकल कठिनाईथे का सामना आसान नही है। धर्मिकता कों बचाय रकन और उसका आदार करना देवालय को अनुयित रूप से उसे बयाना हमारा धर्म है। अब इस तरह से अगर सोंछे कानुन का लागु और फारसी तत्व प्ररिशुद्धत्मा का भाक्ति को बचाये रके और प्रवक्ताएँ को मारने से गेके।

फारसीतत्व के लोग था उस पीडी धार्मिक वचन को समझना भुश्किल समझते है। और उसे लोगो के माप डालते जो धार्मिक वचन कों प्रचार करते है।

प्रभु इस को भी फारसीतत्व लोगों से बहोत कठिनाईयो का सामना करना पडा उसे किठिना को हम समझने के लियें अपने पास कुचभी किताब नही है।

यह किताब "दि फारिसस गैड ह टोटल होलिनेस" से लिया गया है। लेखक है "विलियम" कोलमेन है।

फारसीतत्व को सबी पार कर के जाना वह सबी से रहना

मुझे यह कैसे मालूम है इन प्रवृत्ति और फारसितत्व मुझमे है। यह कहना कठिन है। मैं कभी पारसीतत्व के बारे कुछ पुरत्तक नहीं पडा। या इसके बारे चर्चा सुना। कुछ लोग बहोत कठिन से इसके बारे मे चालिस ४० साराँश को निकल सकते है। इसें कहना और भी कठिन होता है। कि हमने इसे किस तरहा से इसे इस्तेमाल कर रहे है। इसमें से कुछ साराश फारसितत्व है। जों नया ग्रंथ मे न्यु टेसटमेंट में हों सकता है। नीचे दिये गये प्रश्न को ध्यान सें पडे हेतुदाद सेनही।

अगर जवाब सही है तो उसें हाँ लिखे अमर गलत है तो उसे नहीं लिखे.

१. मैं सबी वर्गोंके लोगो से मिल चुका जों धनी है। और स्तान है। मुझसे ज्यादा (हाँ, नहीं)
२. मैं लोगो से मिल चुका हूँ जों मुझसे शामिल नहीं होते। (रेवा १२:१०)
(हाँ, नहीं)
३. जो लोग मेरे विचार कों डकराते है। मै समझता हूँ कि वो सही कहते है।(अपे १७:११) (हाँ, नहीं)
४. जो लोग मेरे विचार को सिकार नहीं करते तों समझता हूँ कि मेरा विचार सही है।
(अपे १७:११) (हाँ, नहीं)
५. मुझे यह आसान होता है उन लोगो का दोष है। और आसान सें जीत सकता हूँ। (हाँ, नहीं)
६. मैं कई रारत्तें का कोज करता हूँ ता कि उनको ऊपर पहुँचा सकु और प्रेन्साहन करु।(हाँ, नहीं)
७. मै कभी बाईबल का वाक्य पडता हुं। जों वाक्य सच होता है।
(आअपो १७:११) उसे व्याक्त का सही मानते हूँ।
(हाँ, नहीं)
८. मै बाईबल क वाक्य पडता हूँ। जब समझता हूँ। वह व्यक्ति का गलत है।
(हाँ, नहीं)
९. मैं बाईबल वाक्यों का प्रयोग करता हूँ। था कि मैं लोगो को प्रोत्साहन दे और उने प्रभु के पास आम्तिक सकते है। (रोम १:५४)(हाँ, नहीं)

१०. मुझे कुरी मिलता जब चर्चा में शामिल (मत्त २२:१५,४०) होता हूँ। और सामने व्यक्ति का विचार संकटा में डालता है। (हाँ, नहीं)
११. मैं सामने व्यक्ति को ऐसा प्रश्न डोलता हूँ। था कि मुझे अच्छा मजबु मिलता है। जो व्यक्ति का प्रश्न का अर्ध सही है। और गलत दोष कों निकलता है। (मत्त २२:१५,४०) (हाँ, नहीं)
१२. मैं लोगों को यह बताना याहता हूँ जों सत्य का मार्ग बताऊ। और प्रभु का कृपा को पहया ने (मत्त २३:४) (हाँ, नहीं)
१३. मैं लोगो का मदत करता हूँ जों उनका हृदय विचार से है है दुःख सेहै (मत्त २३:४) (हाँ, नहीं)
१४. मुझे कुशी होता जब लोग धर्म विचार कों पहचान (मत्त २३:५) (हाँ, नहीं)
१५. मुझे कुशी होता है जब लोग मुझे प्रशेसा करते है। (मत्त २३:६) (हाँ, नहीं)
१६. मुझे अच्छ लमता है जब मुझे. लोग सपूर्ण गौरव सम्मान बुलाते (मत्त २३:७) (हाँ, नहीं)
१७. मैं लोगो यह सुचना हूँ कि प्रभु का महत्व कों पहचाने और आदार करे (मत्त २३:१३, गलती ४:३) (हाँ, नहीं)
१८. मैं जों निबंदन रका है। उसके बारे में कठिन और सुरल रूप से अमल करना चाहता हूँ। (मत्त २३:२३)
१९. मैं लोगो कों प्रेम और दया दिकाना चाहता हूँ। उसें ज्यादा न्याय और अच्छाई को पालन करता हूँ (मिका ६:८)(हाँ, नहीं)
२०. मैं छोटा विषयों पर ध्यान देता हूँ। जितन कि मेरे आंखे जरुरी विषय पर ध्यान देता हूँ। (मत्त २३:२४) (हाँ, नहीं)
२१. मैं छोट विषये पर बहोत ध्यान देता हूँ। उसमे लीन हो जाता। और बडा निष्पो पर उससे ज्यादा ध्यान देता हूँ (मत्त २३:२४) (हाँ, नहीं)
२२. मैं ज्यादा वक्त बाहर सौदर्य को बोहत से ज्यादा अंदर का स्वभाव कों बहोत महत्व देता हूँ। (मत्त २३:२५) (हाँ, नहीं)
२३. कभी बाहर बाहव्य सौदर्य को बहोत ध्यान देता हूँ हृदय, को भी उत्तन ध्यान बाहर सौदर्य हूँ। से ज्यादा दता हूँ। सें ज्यादा देता हूँ। (मत्त २३:२५)
२४. मैं सव्य और सच्छाई उनसाफ से रहने के लिए बहोत कष्ट करता हूँ। इसरस मैं आच्छा रहता हूँ। (रोम ७) (हाँ, नहीं)
२५. मैं यह खोज किया मेरा प्रयत्न को रोक दिया भगवान का शक्ति मैं पहचाना वह मझ मे अंदर शक्ति है (रोम ८)(हाँ, नहीं)
२६. मैं बाहर दुनिया का ध्यान दे रहा हूँ। फिर भी मेरे मन मे शैतान का श्वभाव होता है। (मत्त २३: २९-३१) (हाँ, नहीं)

२७. मेरा मन मे स्वार्त और व्देष है। (मत्त २३:२९-३०) (हाँ, नहीं)
३८. मैने समझलिया की जीवन का अर्थ प्रभु के वाक्यों में है। जों मैन पडा है।
(जान ५:३९-४०) (हाँ, नहीं)
२९. मै समता हूँ कि जीवन प्रभु स्मरण से हों अनुभव होत है। (जान ५:३९,४०)
(हाँ, नहीं)
३०. मै प्रवक्ताओ को मेर समाज में देख हूँ (जान ६:४२) (हाँ, नहीं)
३१. मैं कम रूप सें इनसाफ करने का कोशिश करता हूँ। जों बाहरीतत्व है। और
उन मन को समझ कर गतिविदियो को जानकर काम करता हूँ।
(जान ७:२४) (हाँ, नहीं)
३२. मै बाहरीतत्व को उनका कार्य क्रिया कों और रूप रेका सें उनसाफ करता
है।
(जान ८:२७,४०,४४) (हाँ, नहीं)
३३. मैं व्यक्ति रूप लोगो को नष्ट करता हूँ। लोगो को प्यार करने के बदले मे
नष्ट करता हूँ। (जान ८:३७,४०,४४) (हाँ, नहीं)
३४. मै प्रभु के शब्द पर भविव्य में प्रभु का सेवा करता हूँ (जान ५:१९,२०,३०)(हाँ,
नहीं)
३५. मेरे दृष्टि प्रभु का वाक्य और उनका वचन पर केन्दीत करता हूँ।
(जान ५:३९,४०, हैब्री १२:२)(हाँ, नहीं)
३६. मैं प्रभु के धर्मिक सिद्धांत को मानता हूँ। (अदि २:१६) (हाँ, नहीं)
३७. प्रभु का अशिश्वाद मेरा ऊपर है (जान ७:३७, ३९) (हाँ, नहीं)
३८. मै प्जिन लोगो मे अभित्राय को नहीं मानता हूँ। इस लोगों का प्रभाव अलग
रघ्वा है
(जान ८:४८) (हाँ, नहीं)
३९. मैं यह मुशकिल समझता है। जब कोई मुझे वाक्य के बारे में समझा रहे है।
जों मैं दूसरे की कमजोर समझता है। (जान ९:३४)(हाँ, नहीं)
४०. मै समझता हूँ कि जों देनालय यां प्रभु का मदिर बहोत सरल और अच्छो
रहा है।
इसकै अलाव और कोई नहीं। इससे लोग स्वर्ग प्राप्त हों सकता है। (जान
१०:१६)(हाँ, नहीं)

नीचे दिये गये वाक्य ऊँपर सराँश का सही अर्थ है।

१. हाँ नहीं	९. हाँ	१७. नहीं	२५. हाँ ३३.
२. नहीं हाँ	१०. नहीं	१८. नहीं	२६. नहीं ३४.
३. हाँ नहीं	११. नहीं	१९. हाँ	२७. हाँ ३५.
४. नहीं नहीं	१२. हाँ	२०. हाँ	२८. नहीं ३६.
५. नहीं हाँ	१३. हाँ	२१. नहीं	२९. हाँ ३७.
६. हाँ नहीं	१४. नहीं	२२. हाँ	३०. हाँ ३८.
७. हाँ नहीं	१५. नहीं	२३. नहीं	३१. हाँ ३९.
८. नहीं नहीं	१६. नहीं	२४. नहीं	३२. नहीं ४०.

फरसई लोग दया का मुशिकल का सामना

एक प्रसिद्ध आंग्रेज अध्यापक जों इस शताब्दी का प्रासद्ध अध्यापक है। वह कहते हो। अमर आप दया और करुण क बारे बाले और दानया का बारे में और ईसका बारे जल्सा का जिन्द की का बारे नहीं बाले वह चर्चा अदूजे है। लौकिक दूनिया कें बारे बोलना अवथ्य है। इसका परिनाम एक सिक्के के दो पहेल है। कहे कित ने ही कानुन के जानकारी यह कहता है प्रभु का कार्य को पहेतचानो।

जो आध्यापक प्रभु का सेबोदित करता है। पहलो १. प्रभु ईसा के बारे में और २. प्रभु आपके दिल में जों काम कर रहा है। प्रभु का आत्मा आपमे काम करना है पर्वत सिनाइ के बारे में लोगो को आपमे दो। पर्वत कलवरी के बारे में लोगो को उपदेश दो उन गलतियो का कंडन करे।

प्रवक्ताओ लोगो कों आजादी, शाँती और समादान मिले प्रवक्ता के प्रयार के ऊपर निरबर रहता है। अगर सुनने वाले अच्छा प्रसंग सुने उनका मन का भावना अच्छा रहता है। अगर बुरा हो सुनने बालो पर बुरा असर पडता है। शाँन्ती प्रवक्ताओ को बंग करने के लिए बुर प्रवक्ता। अते है। प्रवक्ता पाल यह कहता है। प्रभु के परिशुद्ध आत्मा कों स्वीकार करो और व्यक्ति शरीर पर आत्मा का प्रभाव होता है।

मैं प्रभु का वाक्या दस साल सें समझा रहा हूँ मै शाँन्ती के बारे में सीका है। मैं शाँन्ती का खोज कीया और प्रभु का श्वर का कोज किया। मैं जब अध्यायन किया मै समाझा की प्रभु ने मुझे दंड तो नही देश। मुझे प्रभु प्रेम कर रहा है। मै प्रभु से कितना दूर रहे प्रभु अपने पास बुला रहा हैष एकक साल के बाद मै प्रभु का प्रसंग करना चोडा क्यों कि प्रभु मुझ मारा नही। मैं प्रसग करने का निशचार कर लिया। कभी, कभी इनसान उनमाद और कमजोर होता है। और दूसरो को भी कमजोर बनाता है।

चाहे र दुनिया मुझपे हेस प्रभु मंदिर में सेवा करता हूँ ।

आदिक जानकारी के लिए दो प्रसिध्द पुस्तक है । को है, जो, प्रभु का मंदिर के बारे में दर्शन देता है । वो है कानू और शांती के बीच में अंतर होता है ।

"अबैडिंग, इन क्रैस्ट" इसका लेखक है । आन्ड मुरे और "अबैड इन क्रैस्ट" लेखक है मार्क और पाटि विरक्लार ".

मेरा साक्ष्य कैसे प्रभु ने मुझे डिब्बे से नदियो तक चलाया.

मैं दिब्बो को बहोत प्यार करता हूँ । मेरा कहने का मवलब यह है कि मै प्रचिन विचार निबंधन को एक अच्छा निर्मित रूप से सजाना । मेर जीवन इसके लिय केदित किया । यह तोडा अलग दिकता है ।

उदाहरण को मेरा विचार है कि साक्ष्य को बचाया रकना । कैसा प्रार्थना करना, कैसा बडो का आदार करना और कैसे डर को दूर करना, और गूस्सा भी । निरुत्साह को और गतलियों को दूर करना प्रभु सन्नदि में कैसे रहना कुशी से रहना यह निबंधन निबाकर कैसे जीना सीका । मै यह भी खोज निकाता कि निबंधन को

प्रभावित करना मैं खुशी होता है । कभी गलती का अहसास होता है । मैं उतना नहीं सीका की मेरा आँखे उस लेखक पर केंद्रित करा । इसके आलावा मेरा आँखे धार्मिक निबंदनो पर केंद्रित किया । मैं समझता है कि कानून का अंत मौत होता है । अगर निबंदनो को उलंगन कर के मैं मौत का निशान बन सकता हूँ । यह तो मुझे मौत गलति के सूप में साबित हुआ, इसका कडन और उदास । यकीन के सात नहीं कह सकते की जीवन के बारे प्रभु ज्यान्दा प्रस्ताव नहीं किया ।

ऐसा बहोत कारण है कि मेरा विचार ज्यादा काम नहीं किया । पहते मैं उतना सोंचा था कानून के बारे में जो मैंने खोज किया बाइबिल से, इस वजे से मुझे गलती, सोचता हूँ । दूसरा मेरा विचार कभी भी सम्मान रूप से सम्मतिल है । वो मुझे कभी बड़ा नहीं सोंया जो मैं हूँ । (यह एक छोटा सा आदार है वों मैं हूँ भगवान नहीं).

मैं जब पहला बार इसाई बना, मेरा विचार था कौन इसाई है । उसका सही वर्णन क्या है । इसमे शामिल है । प्रभु का मंदिर और मैं । इसी उद्देश पर इस विचार, बहोत गंभीर से सोंया जो इसमे, मेटडिस्ट है, बापटिस्ट है पेन्टाकोस्ट चारिमाटिकस । मेने खोज किय कि इसमे कातालिक्स है । जों सुरक्षित है ।

मैं कई मेरे विचार साविदार रूप से सोंच कि मेरे विचार धीरे धीरे कम होते गये । वहोत छोटा दिखा जों एक दम सही है । वैसे नहीं लगा कि सही जीवन विदार है । और उसमी अलग नजर आया इसके अलवा एकता है प्रभु के सन्निदी में, मैं र्सपूर्ण रूप से कहता हूँ मेरा विचार इसके काबिल नहीं । मे बहोत हैरान होता हूँ कि यही सत्य जो हम है, जो प्रभु का अच्छा विचार है । यही प्रभु का संकल्प है ।

प्रभु का परिशुद्धात्मा को खोजना.

मेरा मन में एक नया सा अनुभव महसूस हो रहा है । कई तरीके से प्रभु का शाक्ति का पहचाना हूँ । मैं प्रभु का आवाज और उनका दृष्टि को पहचाना । मैं प्रभु को दिल आर्पित करें मेरा दिल में मे प्रवेश करने का सीका हूँ । और परिशुद्धात्मा में ऊपर आन का प्रार्थना कर रहा हूँ । प्रभु यह सब वाक्य समझाया था कि मैं प्रभु को समझ सकें । पर मैं कभी इस साराँश को नहीं समझा है । प्रभु का शरण में उनाक अंदर से जीवन को जल द्वारा है । ये प्रभु के परिशुद्धात्मा का वर्णन होता है । जब

कोई प्रभु का शरण करता वा इसका अनुभव होता है । (जान 7:38, 39).

मै जब प्रभु का आवाज को पहचाना मै मन मे कई तरह का विचार उबर आया मेरे आंखे प्रभु के तरफ देखा और समझा, मैं एक नाय जिंदगो गुरु करू, वह है प्रभु का आत्मा और निबंधन का पालन करना ।.

मै जब काटिनाईयों का सामना करता हूँ । मे मेरा विचार से उसका परिष्कार करता हूँ। कभी बहोत कटिनाईओं गुजना पडता है । मै प्रभु के पास जाकर प्रार्थना करता हूँ तो मेरा मनु का भोज हलका होतो हैं । और प्रउगाँव रहता है । और दुसरा कार्य पर दुष्टि रकता है । प्रभु का कृपा से मैं निबंध को लागु करता हूँ जो मै पहले करना था ? इसमें कुछ अच्छा हो सकता कुछ बुरा । कुछ कष्ट का सामना करनात पडा, कुछ वजन का महसूस होता है । उस दिनो में इसा ने फरसइयों से कहा एक उँट के बारे में कहानी सुनाया था । हय सब कार्य आप मालुम करना जारी है । (मस्त 23:23).

मै दूसरो निबंदनो के बारे मे समझाता हूँ तो मुझे दया और करुण के बारे में बताता हूँ । जब व कानुन का फैसला सुनाता मै बहोत कटिन रूप से पिरष्कार करता हूँ । जिता की मै उन से सलत और वफादार से रहता हूँ ।

अपरादी या निरवारादी का स्टान सुरक्षा का स्टान

मुझे तो सालो लगा, ओर बीत युका सच्छाई को जानने के लिए वो पुँातान है जो सब कार्य बुरा करता है । (प्रक 12:10) और परिझुद्धात्मा वो है लोगो को मदत करता है । हम कितना भी गलती करो या बुरा काम करो भगवान अपने बारे में अलगा तरीके से नही देखता है उदाहरण - जब सारा संसार + गतलीया कर बेढता है । जब ईसा को बल यदाया था । इसा को बचाया नही उनके साल अच्छाई के बदले में बुराई किया लोग उसे बुराई का कंढन नही किये । उसके बदले उलने सात बुरा सुलुग किया फिर भी प्रभु उल लोगो को क्षमा किया । पिता यह लोग क्या कर रहे है उल लोगो कों नही मालुम उल लोगो को क्षमा करो ।

मै मेस जीवन के बारे में सोचने लगा, मै निश्यय करलिया लोगो की अपरादी, निराअपरादी के बारे में सोचने लगा और कानून का फैसला करने लगा । जो व्यक्ति अपरादी है । वह शैतान का स्वान है । जो व्यक्ति निरदोष है । वह प्रभु का स्टान है

। जो लोग कष्ट में हैं । और बहुत दुःख में हैं वे लोगों को मैं सहारा देता हूँ । प्रभु के पास लाने को कोशिश करता हूँ । यही मेरा करतव्य है ।

मैं निश्चय कर लिया कि बहुत समझदार से काम करना है । और अपने बारे में सोचने लगा बहुत कम कामों पर केन्द्रित किया और कानून का फैसला भी बहुत कम देना का फैसला किया । दिल से बड़ा रहने का जैसे राजा सालमोन किया (१ कि - ४.२९) मैं दूसरों पर प्रेम, और दया दिखाने का निराचय किया, मेरा विचार फारसितत्व से झोड़ा है । मैं समय के अनुसार बदलने का सोंचा है । (मैं कभी फारसितत्व का बारे में नहीं पड़ा उसके आदार पर मेरा जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ा ।

परिशुद्धात्मा पार आदारित

मैं दैनिक जीवन में विचार को एक अच्छा रूप से प्रभु का सेवा पर अर्पित करने को सीखा । मैं भगवान को कई प्रकार का प्रश्न पया था पहला प्रश्न यह है कि मैं धार्मिक रूप से इस सब कठिनाई का सामना कर सकता हूँ । मुझे डर लगता है कि प्रभु का विरुद्ध बन सकता हूँ । प्रभु ने मुझे यह उत्तर दिया कि तेरा सब चिंता मेरा ऊपर चोड़ों । सभी कार्य पूरा होंगा । मुझे आश्चर्य हुआ कि यह सब वाक्य बाइबल में सय को आदार है । प्रभु कहता है । जब तुम कठिनाइयों से गुजरते हो तो मेरा वाक्य का आदार करो तुमको उस प्रश्न का जवान मिल सकता है । यह सब परिशुद्धात्मा का कार्य है ।

मैं सबको प्रभु का प्यार दिखाना चाहता है । चाहे कुछ भी हो उनके जीवन में खुशियां देखना चाहता हूँ । मानसिक चिकित्सा करके उनका आदार करना चाहता हूँ । जो तुम्हें एक अच्छा सिंहासन बिटाना जों प्रभु तुम्हें हृदय में बसना चाहता है ।

मेरा दूसरा सवात यह है कि प्रभु इन निबंदन कानून के बारे में क्या है । जिसका कोई मूल्य नहीं है । कानून के बारे में आपका क्या सही फैसला है । प्रभु ने मुझे इसका सही अर्थ समझाया कि पहला यह है । कानून इनसाल को सही रास्ते पर चलाता है । अपने बीच में हत्या करने से रोकता है । प्रभु का अनुसार चलने से पहले (गल-३:२४) दूसरा हय है कि एक गुरु है जो दूसरों को पडाता है । कानून कभी दूसरों को सही तरीके से संबालना बहुत मुशिकल है ।

तीसरा: हम कई तरह से प्रभु का आज्ञा का पालन, निबंधनों को पड़ें । हम कभी उसके ऊपर उतना ध्यान नहीं देते । हम अपना आँखें प्रभु के तरफ देखते हैं (हेब

12:2) मैं कबी परिमान के बारे में नहीं सोचता, क्यों कि मैं प्रभु को प्रेम करता हूँ ।

प्रेम करुण से पर कानून से नहीं

मुझे प्रभु ने बताया कि मैं कानून का प्रेम करता हूँ । कानून और निबंदन से रहता हूँ । जितना मैं प्रेम और करुण से रहता हूँ । मैं लोगो से कानून के बारे में लोगो के सामन जाता हूँ । दुसरा है कि दया ओर प्रेम से रहता हूँ । मुझे प्रभु बताया कि यह सब कार्य से वे अतीत है । अगर (मिकि - ६:८) देखे ये बताया कि मानव, ये जानों क्या अच्छाई क्यूँ बुराई, जो प्रभु तुम्हें चाहते है । आज्ञा का पालन करो और प्रेम करो, और प्रभु के अनुसार चलो ।

अंत में प्रभु ने मुझे दिखाया कि कौन सा स्तान अच्छा है । कौनसा निबंधन को अचार करना है । प्रभु ने लोगो को सब्बात के बारे में समझाया प्रभु का आज्ञा का पालन करना । प्रभु ने लोगो के लिये बलि यदा । और प्रेम शांती को समझाया, मनुष्य इस धरती वे निबंधन को नहीं बनाया । उन्होंने आज्ञा का पालन करना उनका करतव्य था । और जीवन को अच्छा बनाने के लिए बनाया ।

प्रवक्ता को मार डालने कैसे रोके

कभी आप प्रवक्ता के ऊपर पत्थर पेके आपको यह मालुम है कि प्रवक्ता कौन हो इस शताब्दी में । आपको यह मालुम की प्रवक्ता का वचन क्या है ।

आप कहते हैं कि मुझे प्रवक्ता के बारे में नहीं मालुम उनाक क्या संदेश है । मुझे नहीं पता । प्रभु ने जब धरती में थे । लोगो को प्रवक्ता के बारे में कुछ भी नहीं मालुम ।

मंदिर जो एक इतिहास है । लोगो को मालुम नहीं वे संब अंदे थे । इसके बारे में नहीं मालुम लोगो ने मार डाले थे ।

प्रभु ईसा ने कहा । ऐलिजा प्रवक्ता ने पहले आये । पर लोगो ने उसे नहीं समझे, जैसे लोगो के अनुसार उने कष्ट पहुँचाया था (मत्त १७:१२) ईसा के बाइयों ने उसे नहीं पहचाने वो एक प्रवक्ता है । उन्हें नहीं समझे ।

ये एक भयंकर परिणाम था क्यो कि ये सब मंदिर का अंज़ा है । लोगो ने प्रवक्ता को पत्थर से मारकार उने मार डाला था । प्रभु ने प्रवक्ता की बिजाया मगर लोगो ने प्रवक्ताओं को मार डालें ककी लोग कून बहाये । और मारे गये ।

हम चारित्र में ऐसा कई लोंग को देख सकेत है । यह आसान है कि प्रवक्ता को पहचाना । मगर लोग इस प्रवक्तों को नही मानते ।

हम सब मानते है कि । मारटिन लूदर, जान कालविन चार्लस वेस्ली, और चार्लस फेन्नी सब प्रवक्ता है । इस शताब्दी के महान प्रवक्ता है । जो पिरशुद्धात्मा भाषा को जानते है ।

8.जानकारी-प्रभु वाक्य पर - सही तरह से फैसला करना

जरनलिंग एक ऐसा पटन है। तरीका है। जो शब्द का प्रयोग सही तरह से होता है। जो प्रभु वाक्य में अच्छाई या बुराई का फैसला करने में होता है। जो प्रभु वाक्य दिल में रहता है। यह एक वस्तु है। जो सही प्रकार से इस्तेमाल करते हैं। इसे जरनलिंग कहते हैं। जब किसी प्रकार का पुस्तक को, नोटबुक लिखने का पुस्तक को इस्तेमाल करते हैं। जब प्रभु का वाक्य को प्रसंग होता है। या प्रसंग के बारे में उसे लिखते हैं। अपने पास १५० कीर्तन अध्याय है। इसमें कई प्रवक्ता और प्रकटन के लिये हैं। यह बहोत ही बाईबल का अनुभव है। इसके बारे में लोग पूछते हैं कि जो बाईबल में लिखा क्या वो सब सच है या नहीं उसमें आप उदाहरण और प्रभु का आज्ञा का पालन इस बाईबल लिखा है। यह फैसला करना बहोत ही मुश्किल है।(१ क्रानिकल-२८:१२-१९) में एक उदाहरण इस वाक्य में कहा गया फैसला करने का वाक्य वह अच्छा, बाईबल का मुख्य वाक्य हो नहीं पाया था। राजा डेविड ने कहा है कि:"प्रभु ने मुझे वाक्य को समझने के लिए प्रभु ने मेरा ऊपर हातों से वाक्य लिखा था। जो मुख्य वाक्य है और मुख्य अंश समझा जाता है। जो देवालय के बारे में समझा जाता है। जो लेखन में इसका प्रस्ताव नहीं है।

प्रभु ने छोटे बच्चों के साथ बहोत वक्त बातचीत से हिताता है। डम उनका स्वर को पहचाने के लिए मुश्किल है। हम प्रभु से विश्वास रहने के लिए बहोत गर्व दिखाते अगर हम स्वर को पहचाने और बात को पहचाने प्रभु के रास्ते में चलना बहोत ही आसान हो जाता है।

प्रभु के स्मरण या उनका आचरण से बहोत से फायदे है वो प्रभु से संबंध रहता है। और परिशुद्धात्म का अनुभव होता है। और कई तरह के उपाय अपने मन में आता है। जो मुफ्त में मिलता है। आप यह लिख सकते हैं तुम वफादार हैं।

मैंने जान लिया कि वाक्यों का आचरण से भगवान से प्रश्न पूछता हूँ जो मुझे जवाब मिल सकता है। साथ में दूसरा प्रश्न भी पूछूंगा यह भगवान से मिले सूचना है या मुझे में अंतर है। भगवान जो भी व्यक्ति जाता है। वह प्रभु में भरोसा रखना जरूरी है।(हिब ११:१६). मैं प्रभु से विनती करता हूँ मुझे प्रेरना मिली, जो प्रश्न के ऊपर आधारित है। उसके बाद प्रभु को पाना बहोत मुश्किल होगा।

प्रभु का वाक्य लिखित रूप से आपके पास रखते हैं। तो आपके मन में संतोष मिलता है। दुसरा फाईदा यह है कि (हबाकुक २:२,३) में कहा गया कि प्रभु से उन्होंने क्या पाया यह लिखितपूर्व से रखना जरूरी है। क्योंकि इसका सही वक्त पर प्रभु को पा सकते हैं।

आप लिखितपूर्व से वाक्य को(दस १०) साल से अधिक पास रखते हैं। मैं संपूर्ण कहना मुश्किल है। मैं प्रभु को कितना पाया और प्रभु से कितना प्रेम है।

लिखितपूर्व वाक्य से और अचानक में लिखे वाक्य में अंतर क्या है। अचानक में लिखे वाक्य शैतान से जोड़े जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अचानक लिखे गये वाक्य जो ईसाई बनने से पहले अनुभव किया था। कहता है कि अचानक लिखे गये वचन परिशुद्धात्मा व्यक्ति का हाथ काबू में करता है। जो लिखित पूर्व का वाक्य उनका हृदय में होता है। और उनके दिमाक में उसे स्मरण करता है। और बाद अपने ही हाथों से लिखता है। इसमें उस दोनों का अंतर बताया गया है।

लिखित पूर्व जरनलिंग में और जुड़े हुए वाक्य में क्या अंतर है :

लिखित पूर्व वाक्य जो उसे जरनल कहते हैं। उसे अश्रयंत्र माना जाता है। जो लिखित वाक्यों से जुड़े हैं। नया वाक्य से संबंध है। इस वाक्य संबंध में इस कारण से कुछ लोग प्रभु का वाक्य सुनने से अभ्यंत्र करते हैं। वाक्य को पढ़ना पसंद नहीं करते यह एक अच्छा दिल से अभ्यंत्र करते हैं। इसे आप ज्यादा ध्यान नहीं देते।

हम बाईबल वाक्य और प्रभु अपने से बात करने के बारे में समझाने के लिए इसके बारे में देखते हैं। प्रभु किस तरह से लोगों से प्रत्येक रूप से बात करते हैं। लेखन में है और वाक्य में अंतर क्या है।

इसका उदाहरण(सम१२:१-१५) नतन ने डेविड के बारे में कहा जो विग्रह आराधना पाप के बारे बताये गये। यह एक प्रभु से संदेश है। पर ये तो प्रत्येक संदर्भ में ही इसका प्रयोग है।

कई उदाहरण के लिए और प्रवक्ता का वचन के लिए हम कई किताबें से लिये जाते हैं। जैसे एशिया, जरमया जिसमें प्रवक्ताओं के बारे में ही नहीं पर आने

वाले भविष्य के बारे में भी लिखा है। इसे हम उन वचन को वरदान समझना चाहिए। तो हम प्रवचना के अंतर से और जरनल को अंतर देख सकते हैं। और लिखा हुआ प्रवचन को समझ सकते हैं। लिखितपूर्व वाक्य हमें अवसर है। हर एक उपयोग होता है। जरनल व्यक्तिगत रूप से एक बड़ा महत्वपूर्ण काम है। इस वजे से हम प्रभु का आत्मा को पा सकते हैं।

आचरन के रूप में कार्य रूप में आदेश देना लिखित वाक्यों को

- १) आप सृष्टिकर्ता से मिलने जा रहे हैं। जो आपको सृष्टिकर्ता है और कष्ट समय में आपको सहारा देने वाला है। लिखित संदेश में भी आपका सहारा देनेवाला चाहे कुछ भी आपत्ती इस संसार में हो। कुछ लोगों को सुबह में दर्शन, कुछ लोगों को शाम में आप भगवान से अच्छा समय बिताए।
- २) एक छोटा सा पुस्तक बस है आपको लिखने के लिए जानकारी के लिए। अगर टाइपिंग करना जानते हैं तो लिखने से भी बहोत आसान है। और दुसरा माध्यम है। टेपरिकार्डर का भी आप रिकार्ड करके आप कार में बैठकर आराम से प्रभु का संदेश सुन सकते हैं।
- ३) अगर आप लिखने का नोटबुक का इस्तेमाल करते नही भूलना कि जो संख्य होता उसे जिसे कोड कहते हैं। उन पुस्तक को अच्छा श्रद्धा से उसे सम्भालना है। लिखते वक्त यह नहीं सोचना, शब्द का गलत है।
- ४) इसमें तारीक का लिखना नही भूलना।
- ५) उसमें ऐसा भी लिखना जरूरी है कि आप प्रभु से संबंध कैसा है। आपके सपनों को भगवान का दर्शन को सपनों जो आप देखे गये दृष्टो को सब कुछ पुस्तक में लिखना नही भूलना चाहिए। आपका विचार किन कठिनाईयों से आप गुजरे, गुस्सा, द्वेष, आनंद, प्रभु कृपा में अच्छा काम को।
- ६) जैसे आप पुस्तक का प्रयोग करते हैं। आप परिशुद्धात्मा को पा सकते हैं। रोग से मुक्ति प्यार से जुड़े सभी साराँश को लिख सकते हैं। कष्ट समय पर आपको सहारा देता है। जो अच्छा प्रेम एक प्रेमिका को सहारा देता है। जैसा, जैसा समय बीत जाता है हम समझना कि यह सब प्रभु का देन है। जो वाक्य आपको विज्ञान देता है। आप सही तरीका से लिखा हुआ पुस्तक को देखते हैं।

कभी आपका गलतियों को याद दिलाता है।

७) परिशुद्ध बंध बाईबल के बारे में हम सबको ज्ञान रहना चाहिए। जब प्रभु इस बाईबल विज्ञान बारे में अपार बुद्धि देता जो आपका लिखित पुस्तक जैसा हमेशा आपके पास रहता है। प्रभु ने जाशुआ से कहा कि कहा हुआ निबंध पर चलो उस पर ध्यान दो, दिन और रात मेरा आज्ञा का पालन करो मैं उसे कामयाब करता हूँ।(जाश १:८) मैं मन में और तन और मन में प्रभु का वाक्य विज्ञान बरता हूँ।

निबंधन का पालन करता है। मेरा आत्मा उनका ऊपर रहता विचार में बहुत वृद्धि होता है। बाईबल का निबंधन का जानकारी होता है। इसलिए मैं बाईबल के बारे में सच स्वच्छता के बारे में सही जानकारी देता हूँ। एक नियमित रूप से मैं इसका पालन होता है।

८) जो लोग लिखित वाक्य और मजबुत करना चाहता है। तो वे कुछ महान व्यक्ति परिचय, और वस्तु का परिचय दे सकते हैं। जो आ रोज भगवान का ध्यान करते हैं। उनके बारे में ७ सात जगे का नाम परिचय दे सकते हैं। जो प्रार्थना पत्र के पीछे लिख सकते थे कि प्रार्थना में उसे याद कर सके।

९) जब आप लिखते हैं साथ में आप उस बारे में प्रश्न भी लिखना नहीं भुलना चाहिये यह छोटी सी विषय पर ध्यान दे तो आपको प्रार्थना का सफलता मिलता है।

१०) जब आप जरनल करते हैं इस कला को सीखना अच्छा आदत है। जो आपके जीवन इसका उपयोग होता है। जब आपको आसान होता है। हफ्ते में ७ बार लिखना अच्छा है।

११) जब आप बाईबल को पढ़ते हैं। मुख्य विषय पर पेन या पेनसिल से लैन(लकीर) कर सकते जो आपको उपयोग होता है। इस तरह से आपको बाईबल के बारे में बहोत जानकारी होता है।

१२) आप आकिर वाक्य को बार बार पढ़े ताकि उसे याद कर सकते हैं। आखिर वाक्य को स्मर्ण करना है जो अगले दिन आप ध्यान से स्मरण कर सकते हैं।

- १३) जन आपका नोटबुक में लिखा हुआ सब प्रमुख वचन पूरा होता है। वो आप मुख्य साराँश लिखे जो प्रमुख वचन है। प्रभु ने जो वाक्य से आपको नया जीवन मिला यह मुख्य साराँश को पहले पेपर में लिखे।
- १४) मैं कई बार प्रभु से तारीक के बारे में बुया था। पर तारिक पूरा गलत साबित हुआ। इस वजे से तारिक के बारे में सूचना छोड़ दिया था। मैंने समझा कि यह सब शैतान का काम है। जब प्रभु आप से बात करता है। प्रभु का उत्तर से मैं बहुत जल्दी आ रहा हूँ। कभी भी १००० साल में आ सकता हूँ। वह कहते हैं कि मुझमें विश्वास करो। इसलिए आप प्रभु आने का समय को नहीं पूछना अच्छा है।

आपके सफर में सुरक्षा का ध्यान देना

- १) आप कभी दूसरों को संबोध या प्रसंग करते समय विनम्रता से समझाये। प्रभु कहता है। यह सब देना है। सब विषय पर परिक्षा होता है। जब नया काम को सीखते हैं। उसमें आप गलतिया कर सकते हैं। पर गलतियों को स्वीकार करना है।
- २) आपको बाईबल के बारे में अच्छा ज्ञान होना चाहिये। जब आप सबी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं।
- ३) प्रभु आपको एक जगह पर भेजता है। जो प्रभु उनको पूरा जिम्मेदारी और अधिकार देता है। एक अच्छा पत्नी(गृहिणी) घर को संभालती है। और एक पति घर का मालिक है। और रखवाला है। एक अच्छा पास्टर या प्रवक्ता का जिम्मेदारी उनका प्रार्थना मंदिर को और लोगो का देखभाल करता है। उनका जिम्मेदारी निभाता है। जो प्रभु उनको चुनता है। प्रभु ऐसे लोगों को चुनता है। जो समझदारी से अपना जिम्मेदारी निभाता है। और कुछ परिस्थितियों से दूर रहना अच्छा है जो प्रभु का आदेश नहीं होता है।
- ४) परिशुद्धात्मा के अनुसार अपना जगा पर काम निभाना चाहिए। दूसरों से मिल जुल कर रहना चाहिए। बुरे लोगों से अच्छा रहना चाहिए। सब इसलिए कि प्रभु तुम क्या कहा है।
- ५) लिखने से आप बहुत अनुभव होगा कि आप किस तरह महान बनते और लोगों

से प्रेम को दूसरे लोगो से मिल जुलकर रहते है। अगर आप शैतान से या अन्य रोगों से पीडित है तो आप पास्टर के जायें जो इनको प्रार्दनी से दूर कर सकते है।

संक्षिप्त से ईसाई स्वप्न का साकार

एक शक्तिशाली और रोमाँचक अध्याय को समझाने के लिए कोई ईसाई लोगो समझ नहीं पा रहे है क्योंकि इन कोई भी इसके बारे में समझाया नहीं। मैं आपको स्वप्नो के बारे में बता चुका हूँ। इसके बारे आपको कुछ बताना चाहता हूँ। एक ऐसा प्रवक्ता उनका नाम रे. हेरमन रीफिल; एक अच्छा प्रतिभा शाली भक्त है। उनके कई प्रकार का आडियो केसिट भी है। करीब

केसिट जो आधा घंटे का है। जो हेरमन का जिन्होने भविष्य में ईसाई लोगो का क्या स्वप्न से उनका महत्व पूर्ण काम क्या है। इसके साथ आपको एक गैड भी मिलता है जो आपको आर्डर से मिलता है। हेरमन टीफिल का प्रसंग या मीटिंग के लिए भी आप शहर या दुसरे स्थान पर भी आप मिटिंग के लिए बुला सकते है। उनका पता है २०१५ स्टोन रिज, विल्लानोवा, पी.ए, १९०८५ (२१५-५२७-५३८९) एक ऐसा प्रसंग है जो जीवन को बदल सकता है।

नीचे दिये गये दो अध्याय है। हेरमन न् खुद लिखा पिछले गया साल में, जो मैं आपको बता रहा हूँ।

दिन में और रात में

वह एक अच्छे दिन था पर्वत को चडना, आकाश बिलकुल साफ है। और सूरज ने सुबह का ठंडा को बगया है। मेरा पत्नि और मेरे तीन बच्चे और मैं एक पेड के पास थे। जो पहाडों के पास है। और बडा जंगल है। एक तरफ पर्वत दिखने लगा और दुसरा तरफ आप नीचे रास्ता को देख सकते है। जो भयानक है। मेरा परिवार को लेके उनके साथ हूँ। मेरा पत्नी लिल्ली एक शक्तिशाली स्त्री है। ऐलेन, जो दिमाग वाला और समझदार व्यक्ति है और डेविड है जो गणित में होशियार था। और एडवार्ड, नीली आँखवाला बच्चा वह ेक प्रकृति का प्रेमिक है। हम सब जग से जाने के लिए तैयार है। रोड का वैशाल्य तीन फीट लंबाई जो पेबिल से है। जैसे हम गये वह बहोत ही छोटा था। और हम रुक गये है।

मैंने यह पहचाना मैं एक गलत रास्ते में फस गये पर हम बहोत आगे निकल चुके है। मेरा परिवार को बहोत संकट में डाल चुका हूँ।

मैंने सोचा कि मेरा पैरके नीचे जो पत्थर है वो मुझे अचेछा रास्ते में ले जाता पर मुझे हैरान होने लगा कि हम सब नीचे गिरने वाले है। "मैं अचानक नींद में से उठा है"।

मुझे मालुम प्रभु ने मुझसे बात किया। मैं उनका आवाज सुना और पहचाना और मुझे तस्वीर भी दिखाने लगा जो मन का अंदर का स्वभाव है। वह समय में मुझे तस्वीर दिखाया था जैसे लगा कि जैसा प्रभु एजकिल प्रवक्ता को दर्शन में बताया(अध्याय-८) मेरा दर्शन बहोत अचानक था। और स्पष्ट था।

यह संगटन २५ सावल पहले हुआ था। पर मुझे नया लगता है। उस समय प्रभु मुझसे दिन और रात में प्रभु हमसे बात किया था। वो दिन में ही नहीं पर रात में हम से बात किये। जैसा का दिन सब्बात का दिन सायंकाल में शुरू हुआ। प्रभु ने हम से बातचीत रात में भी हुआ था। स्वप्न में, जैसा डैनियल को हुआ था। एक अलग भाषा में जो मानव को समझ नहीं सकते क्योंकि हम सब जो पाश्चात नागरिक में पैदा हुए। हम सब लोगो को मालुम है कि प्रभु दिन में बात करता है। पर मैंने देखा कि वो मुझसे अलग भाषा में बात किया यह सुनने में बहोत लोगो को हैरान होंगा जो धर्म से ईसाई है। मैं प्रभु के सेवा में मैं २५ साल बीत चुका। मेरा पत्नी और मैंने बहोत मीटिंग, सेमिनार में १००० हजार मिशनरी के सामने और कई देशो में हमारा अनुभव का उन लोगो से बातचीत किये। कैसे प्रभु ने उस संकट से हमें बचाये थे। लोग हम से कहते है कि प्रभु का स्वर कैसा रहता है। वो दूसरा स्वर से कितना अलग रहता है। और स्वर को आप कैसे पहचानते मैं इस अदार पर मैंने कई साल काम किया था। इसके आदार पर मैंने एक पुस्तक भी लिखा था। इसका नाम है "द वाइस आफ गाड" उसके बाद मैंने "टु हियर माइ वाइस" है।

यह एक सौभाग्य का बात प्रभु का वचन सुनने का जो सबको काबु में रखता है। इस जगत को आधुनिक वैज्ञानिको करोडो रुपया खर्च किये कि अंतरिक्ष में प्रभु का आवाज सबने का सब पूरा काम व्यर्थ हो गये है। प्रभु मानव को इस धरती में सृष्टि कि भगवान से अच्छा संबंध रहे।

आदाम और अवा को कभी इसके ऊपर पाठ नहीं समझाये कि प्रभु का आवाज पहचानने में किसी प्रकार का शिक्षा नहीं दिया था। वह आवाज का नष्ट हो

गया था समयेल ने आया था। कि प्रभु का आवाज़ सुनना बहोत ही कठिन हो गया था। प्रभु को देखना, या प्रभु को पाना बहोत ही मुश्किल हो गया था। (१ साम-३:१)। आज हमारा देशो में या देश ऐसा में कम लोग है जो प्रभु का आवाज़ को पहचानने का। और चलने का।

यह एक आश्चर्य का बात हो गया कि प्रभु को पाना उनका आवाज़ को पहचानना और उनके आदेश पर चलना। प्रभु हम से अपने सपनों में या वाक्य से दिन में बात करते है। क्योंकि हमारा बीच में वर्ग भेद के कारण और पाश्चात नागरिकता के कारण हम अपने हृदय में से बात करना पडा। और संसार के बारे में सुनना पडा। अगर हम चाहते है प्रभु से बात करने का हम प्रभु से बात कर सकते है। जैसे महान प्रवक्ता ने किया हम भक्ति और श्रद्धा से प्रभु को पा सकते है। ऐसा महत्व काम को हम कभी ध्यान नही देते।

आजकल हमारे बीच में डानियल और जोसप क्यों नही है? वैज्ञानिक क्यों है?

आज हम राष्ट्रपति और नानसी रीगन को दूषण करने से पहले उनका अभिरुचि वैज्ञानिक को या अस्ट्रालजी कोइतना महत्व क्यों दिये। इसको सोचने से पहले हम प्रभु के तरफ ध्यान देना अच्छा है। क्यों आजकल अपना बीच में डानियल और जोसप नही है। जोसप जिन्होंने राजा फेरो के मकाबले में कहे थे। और इज्रएल प्रजा को मुक्ति दिया। जो फेरो के स्वप्नो को भंग कर दिया। हम यह भी जानते है कि डानियल जो मिडे पटिश्यन राजा से और बाबिलोन राजा से मुकाबला किया। पर आज हमारा बीच में ऐसा महान लोग क्यों नही है। क्योंकि भगवान से दूर चले गये और प्रभु को पहचानने में ध्यान नही दे रहे है। और दुश्मन लोगों से संबंध रखते है।

राजा महाराजा, स्त्री और पुरुष, राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री सब जानत है। भगवान को शक्ति क्या है। उन्हे क्यों नही पा रहे है। जब राष्ट्रपति मार डाले या अच्छा व्यक्ति को मार डालो, दूसरे लोगो के तरफ मोड़ जाते है। पाश्चात देशो यह प्रगढ़ विश्वास है कि सपनों को बडा महत्व देते है। जो लोग अद्भूत शक्ति के बारे जानते फिर भी लोग इस मानते है। पर बाईबल एक महान ग्रंथ है जिस से आप उसका आदार चल सकते है। स्वप्नो को समझकर बाईबल का सहारा से चलना चाहिए।

अंध विश्वास आज का नही सैंकडो साल पुराना जो लोग इसे विश्वास करते आ रहे है। एक धार्मिक अंश जैसा माना गया जो चार दिशा में फैल गया है। और

पाश्चात देशों में भी। यह एक अरिस्तोटेलियन धार्मिक सिद्धांत है। जो कहता यह सब पंच कर्म है जो इनसान को चलाता है। पर यह सब गलत है। वैज्ञानिक आदार पर चले तो आप मुशकिल में पडते है। पर यह सच है कि प्रभु का शक्ति हमें आगे चला रहा है। पर मंदिर या चर्च के लोगो ने अद्भुत शक्ति के बारे में बताना मुशकिल था। दुनिया ने दूसर ओर के तरफ बढ गया कि जो विनाश होता है। ड्रग्स माने मादक द्रव्य को अपनाया है।

प्रार्थना मंदिर के लोग बहोत ही संकट में पड गये। इसलिए हम महान प्रभु का शक्ति को पहचानना है। प्रभु का ज्ञान के आधार पर चलना है। और भाषा के बारे में भी जानकारी होना चाहिए।

लोग अंध विश्वास पर विश्वास करने लगे। और प्रभु का दर्शन को नहीं पहचाने मै इस आधार करीब २५ साल इसके बारे में पढा हूँ। मुझे सपनों में प्रभु मुझसे बातचीत किय पर इसके बारे में अध्ययन नहीं किया। अनुभव से प्रकाशित नहीं किया। बाईबल में इस विषय पर कहा गया कि प्रभु ने प्रवक्ताओं से दर्शन में स्वप्नों में उन लोगों के साथ बात किया था। मै बाईबल में पाये गये सब अंश को जो दर्शन के बारे में सपनों के बारे में कहा गया था। सपनों से लोगों ने जान लिए कि सपनों से कार्य कर रहा है। यह अंश को एक साथ जुटाने में मुझे नया ग्रंथ(न्यू टेस्टामेंट) जैसा बडा पुस्तक बन गया। पाश्चात में इसका विश्वास अधिक हो गया है।

अगर हम बाईबल को देखे तो इसमें महान प्रवक्ता के बारे में कहा गया कि कैसे प्रभु उन लोगों दर्शन, सपनों के आधार पर उन लोगों को चेतावनी दीये है। उन लोगों को कठिनाई से कैसे आगे चले, उन लोगो कैसे बचाया दर्शन से, इसमे, अग्रहाम, जाकब, जोसफ, गिडियोन; सोलोमोन, जोन, ऐलिशा, डानियल, एजाकियेल, जकारिया, मटिया, ईसा, पीटर, जान, और पाल इन सब लोगों से प्रभु ने विश्वास और अविश्वास लोगो से भी बात किया था। दर्शनो से इसमें कई दर्शन का स्वप्नो से हुआ था। जैसे प्रभु ने अग्रहाम को अच्छा नींद में सुलाया और दर्शन से बात किया। जोसफ ने प्रभु का दर्शन से महत्वपूर्ण काम किया था। जोसफ ने राजा फेरो के सात बेटे थे। और अपना प्रजा को ईजिप्ट से लोगो को मुक्ति दिलाया था। राजा सोलोमोन ने प्रभु के दर्शन द्वारा ज्ञान को प्राप्त किया। डानियल ने प्रधान मंत्री बने थे। बाबुलोन राज्य में क्योंकि उन्होंने प्रभु का दर्शन को समझते है। ऐजेकियल ने प्रभु का दर्शन देखे है। लोगों को भविष्य के बारे में समझाने लगे। आज भी प्रभु ने अच्छा व्यक्ति को चुनता जो दर्शन को समझे। मै ऊपर दिये गये दो यथार्थ संगटन को मानता हूँ। और समझता हूँ. भगवान लोगों

से दर्शन से बात करते हैं। जब आप इस दर्शन के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। आप हेरमन रीफिल का कीताब खरीदना नहीं इस पुस्तक से आप प्रभु का दर्शन के बारे में जान सकते हैं। नहीं तो इसके बारे में मालुम रहना मुश्किल है।

प्रवचन वाक्य पर आधारित उदाहरण फैसला करने में

आप एक साल से लिखने में बाईबल का मुख्य वाक्य पुस्तक के रूप में लिखना का आदत करीब ६ महीने से एक साल से कर रहे हैं। आप परिशुद्धात्मा का अनुभव और अच्छा ईनाम भी पाये हैं। प्रभु का आत्मा आपके मन से लेकर कलम तक उनका प्रभाव होता है। मैं आदिवार को प्रार्थना मंदिर में प्रमुख वाक्य समझाने के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। वह मुझे मंदिर आरंभ होने से पहले मुझे समझाते हैं। कभी मैं वाक्य को दुसरा पास्टर से चर्चा करता हूँ। जो मुझे प्रभु ने दिया है। वह मुझसे कहता वो मेरा पास आये और वाक्य का प्रसंग करे। एक वाक्य ऐसा है मैंने प्रसंग किया था गोस्पल टोबरनाकिल दिसंबर ५, १९८७ में हुआ था। प्रभु कहता है कि मेरे बच्चे आप कमजोरी से नहीं डरे। और आत्मविश्वास को नहीं खोना है। जो मुझसे भी बड़ा है?नहीं, कभी नहीं हो सकता। मुझसे आप शक्ति पाते हैं। आप मेरा दर्शन होता है। आप जितना भी कमजोर होते हैं आप उसमें प्रभु का शक्ति पाते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि बच्चे मेरा पास आओ आपको मक्ति देता हूँ।

फैसला करने में कुछ गलतियाँ:

कभी समय ऐसा होता है जब पला शुरूआत करते हैं जब हम कुछ छोटा गलतियाँ करते हैं। इसका परिष्कार कैसे करते हैं। जब पहलाबार पहल साल गबरा जाते हैं। कभी डर से कभी गुस्सा से निरुत्साह होता है। मैं सोचने लगा कि यह प्रभु का वाक्य है उनका संदेश है। एक सच्चा वाक्य है, मैं अगर अच्छा नहीं हूँ। मैं भी गलती करता हूँ। मैं जहाँ तक सोया था किस प्रकार मैं प्रभु को समझा है। पहली बार, ठीक से क्यों नहीं कर पाता। जब कोई भी मोटर साईकिल चलाता है। खीसते समय वह गिर सकता है। जब टोनीस का खेल साखता है। पहला बार गेंद को सीधा अच्छा तरह से मार नहीं सकते। यह कहना अच्छा है कि कोशिश करने से, प्रयास करने से सबकुछ सफलता पा सकते हैं। यह गलती कोई भी कर सकते आप इसको पहचानना है।

साधारण तरह से कम करने में कैसे गलतिया होता है

१.लती का साराँश

कभी आपके मन में अचानक बिना सोँचे मन में विग्रह को आराधना करने का मन होता है। जिसका मतलब आप एक वस्तु पर प्रकाश डाल रहे हैं। आप प्रभु से ज्यादा एक वस्तु विग्रह पर ध्यान दे रहे हैं। इसका परिष्कार- आपका ध्यान प्रभु पर दे। आप प्रार्थना करते समय मन से करे।

२.गलतियों पर ध्यान देना-

मैंने एक बार कहा था कि मैं जब बाहर जाऊंगा पर ध्यान करता हूँ। काम को करता हूँ। पर सबी काम ठीक तरह से नहीं होता। जैसा आप सोँचते हैं। मैं घर जाकर बाईबल का वाक्य पढ़ता हूँ। जो मेरा लिखा हुआ पुस्तक में है। मैं एक निर्णय पर आता हूँ इसे सही तरह से वाक्य को ठीक तकह से उसका परिष्कार करता हूँ। परिष्कार-कभी ध्यान देना कि प्रभु का वाक्य को गलत नहीं समझना। प्रभु से पुछे वो अच्छा समझाये।

३.प्रभु के नियम अनुसार से नहीं चलते-

मैंने समझ की प्रभु के नियमित अनुसार वाक्य के अनुसार नहीं चलते हैं। परिष्कार-प्रभु के नियमित अनुसार चलो, जो प्रभु तुमसे कहता है। जो आपको काम करने के लिए कहता है।

४.प्रभु को ज्यादा वक्त नहीं लगता जो शक्ति को दिखाने

प्रभु ने कुछ लोगों को चुनता है जो उन लोगो से अपना शक्ति दिखाई जो आश्चर्यकार्य को दिखाते हैं। ऐसा महत्व कैम के लिए अच्छा लोगों को चुनता है। जो मुझे प्रभु चुनता है मैं उसे ठीक तरीका से काम निभा सकूँ। जो मेरा द्वारा बहोत लोग आश्चर्य को देख सके।

५. प्रत्येक रूप से सही वाक्य का अर्थ नहीं होता जो आपको संतोष नहीं देता।

जब प्रभु आपके सही तरह का अर्थ आपको देता है। अपना हृदय सही अर्थ का खोज करता है। जिसे सही तरह से समझ सके। अगर आपको सही अर्थ नहीं मिलता इसका परिष्कार है सही अर्थ के लिए आप निरिक्षण करना जो आपके मन में सही अर्थ होता है। जो शब्द जो पूरी तरह से आत्मा का महसूस होता है।

६. परिशुद्धात्मा के लिए आप सही वाक्य को चुने जो नियमित रूप से हो।

मैं कभी प्रश्न पुछता हूँ। उसे हाँ या नहीं कहना कठिन है। प्रभु ने भी कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। मुझे उम्मीद है मैं इसका जवाब मिला सकता हूँ। जो मैं सुनना चाहता हूँ। जो मैं प्रभु का दर्शन को रोका था। परिष्कार-आप बहोत होशियार रहना जब नियमित रूप से काम करना जो उसका अन्त नहीं।

७. प के जरनल के कुछ प्रभु का आदेश था वो कभी नहीं सफल हो पाया, वो तो साधारण कारण जुड़े हैं।

अभी इस विषय का चर्चा है कि, प्रभु ने कैसे अब्रहाम को परिक्षा किया था। अब्रहाम से प्रभु ने कहा कि आपका बेटा इसाक जो तुम बहोत प्यार करते हो। मोटिया प्रदेश में जाकर आपका बेटा को बली चडाओ जो पर्वत के पास ले जाकर बलि चडाओ जो मैं तुम्हे आदेश देता हूँ। (आदि कांड २२:१,२) बात में प्रभु दूतों ने अब्रहाम से कहा कि तुम बेटे के ऊपर हाथ नहीं डालना, उन्हें कुछ नहीं करना। मैं समझता हूँ कि तुम प्रभु से डरते हो(आदि-२२:१२)

ऐसा संगठन अपने जीवन में भी हो सकता है। प्रभु अपन को आदेश देता है। पर हम दूसरा काम करते हैं। जब हम वह काम पर जुड़े रहते जब अचानक सभी काम उलट हो जाता है। यह सब प्रभु को महत्व देने के लिए करते हैं। भविष्य में जो परिणाम होता है। उसका सूचना भी देते हैं

८. प्रभु क का स्वतंत्र को उलंगन नहीं किया

प्रभु चाहता है कि सब लोग उनके पास पश्चाताप के लिए आये। पर सब लोग ऐसा नहीं करते। प्रभु प्रति व्यक्ति को प्रत्येक को पश्चाताप के लिए नहीं कहता। जब हम पश्चाताप करते हैं। प्रभु के अनुसार चलना चाहिए।

९. आप सावधान से रहना चाहिए. जब आप एक व्यक्ति के बारे में जो मर चुका जो आपने उसे चुड़ाना चाहते हैं। या मक्ति करना चाहते हैं।

आप यकीन से कहते हैं कि आपका पत्नी मरने वाली है। और आप दूसरा शादी करना चाहते हैं। यह सब आपका दिल में मिट देना चाहिए क्योंकि यह आप के दिल में रक लेना अच्छा बात है। नहीं इसका परिणाम बुरा हो सकता है। हर एक रिश्ते के संबंध में दुःख होता। विचार होता है। इसमें अच्छा हो सकता या बुरा भी हो सकता यह सब प्रभु के नियम अनुसार होता है। जब आप सोचते हैं मैं जैसे सोचा वह नहीं हूँ। यह अच्छा है कि आप उसे भूल जाना। सब प्रभु के आदेश अनुसार होता। दूता भी कभी रोशनी करने के लिए शैतान के लिए शैतान के रूप में भी आ सकता है। वो वाक्य पर चलना का भी आमंत्रित है। उनको साबित करने के लिए कई प्रकार का काम करता है। जो मरण का बारे बात करता है। इस से बेहतर आप प्रभु वाक्य पर ध्यान उनका वाक्य को पालन करें।

१०) किताब जैसा आप अपना आशा को मजबूत रखना चाहिए।

एक विषय पर बहुत ही मजबूत रहते हैं जैसा आपका जर्नल जैसा। जब आसान होता है कि क्वाइश भी अपना पुस्तक जैसा होता है। इसमें कुछ अंश को बहुत प्रमुख अंश जैसा होता है। जैसा, रोमान्स, लैंगिकता पर शक्ति, क्रोध, शारीरिक आकांक्षा पर, और बड़ा नाम पर यह सब पुस्तक में इसे प्रकाश करना बहुत ही आसान है। बिना कष्ट से सब होता जाता है। पर प्रभु ही सब कुछ है। पर इस को थोड़कर आप प्रभु के साथ में क्रॉस के आना कुछ को कुरबान करना चाहिए। यह सब आप अपना पुस्तक में अंश होना चाहिए। इसे कहना बहुत मुश्किल है।

परिष्कार- प्रभु से पूछें और प्रार्थना करें जो प्रभु आप से कहता है। आप हसते मुश्किल को स्वीकार करें। (हेब्री ५:१४)

पुस्तक के रूप में कुछ नमूना

कई लोग पड़े होंगे जो उन्होंने पुस्तक में लिखा था जो उन्हें सहारा देता है। जो प्रभु का सही आवाज है। और सच है कई लोग उनके पुस्तक में लिखकर संभालकर रखे हैं जो

अच्छा गहना जो प्रभु ने अनेक लोगों के जिंदगी प्रभु ने बदल दिए। प्रभु बारे उनका अच्छाई और महान कार्य को हम पड़े।

"आप ऐसा महसूस करते हैं कि जो विजयी हो और शैतान का अन्त हो। आपका एक ही मकसद है वो है विजयी हों एक शैतान विनाश पर यह नहीं हो पाया। इसलिए मेरा तरफ से पुरा कोशिश करता हूँ। मेरा शैतान पर विजयी हो। पर यह सब एक प्रश्न जैसा हुआ। "प्रभु कहता है कि हार में मत डरो। समय आने पर मैं मेरा शत्रु को हरा दूंगा और प्रभु को आराधना करूंगा। आप याद करना कि जोसफ ने जो लोगो को मुक्ति दिलाया था। जो कई सालो से बंधी, गुलाम थे।

समझना उनके पास ४० साल लग चुका था। इसलिए प्रभु कहता है कि मुश्किल से नहीं डरना, विजय से नहीं डरना; यह सब आपको हासिल होता है। यह सब चिन्ता प्रभु के ऊपर डालना चाहिए। जहां रोशनी होता वहां अंधकार भी होता है। पापा मुझे क्यों कई बार गुस्सा करता है।

बेन्जी मैं तुमको परिक्षा देता हूँ। और मैं तुम्हें कई बार समझाया सब विषय पर। तुम अब यवन जवान हो। मैं आत्मा का यवन के बताना चाहता हूँ। आत्मीय यवन के बारे में बताना। तुम बहोत कुछ सीखना है। तुम्हारा ऊपर तुम्हारे दोस्तों को बहोत गुस्सा आ सकता है। क्योंकि तुम आत्मीय यवन हो। जैसा हम तुम्हें प्यार करते हैं। जो तुम्हें प्रभु सहायता करता, जो बी हो तुम्हा स्कूल काम, मैं बडा से कैसा रहना बेन्जी १०, साल का लडका एक प्रार्थना में जो स्प्रिंगफिल्ड में, अक्टूबर ३०, १९८९।.....

याद रखना की नोट पुस्तक ही एक काम का चीज है।

हम काम का चीज को आराधना नहीं करते। जितना हम नोट पुस्तक को ज्यादा ध्यान देते हैं। नहीं हम अपने सृष्टिकर्ता के पास आते हैं। एक अधिकारी है। मैं नोट पुस्तक के बिना मैं प्रभु से बात करता हूँ। हों यही असली काम का

चीज है। और दूसरा है बाईबल है। दूसरा है जीवन से जुड़े कठिनाईयाम और दूसरा है दर्शन। जब यह सब एक साथ होता है। मैं प्रभु के सेवा में हूँ। मैं कभी प्रभु से दूर रहता हूँ। यह कठिन है। हम समझते हैं कि अपने बीच में बच्चे हैं। जो प्रभु के साथ चलना चाहते हैं। कभी गलतिया भी हो सकता है पर मैं प्रभु को नहीं छोड़ना चाहता हूँ।

पुस्तक को एक साथ जमा करते हैं।

पुस्तक प्रदर्शन वह अच्छा नोट पुस्तक है। प्रभु से बातचीत-लेखक, एवलिन, क्लुन्पेन होवर दिनचर्या का पुस्तक ३६५ दिन।

डिवोशनल ऑफ हीब्रुस-रे.पीटर लार्ड पीटर लार्ड एक पास्टर है जो ६००० लोगों को बाप्टिसम दिये हैं। फ्लोरिडा में इनका अध्ययन हीब्रु से करता है। जो एक मजबूत, शक्तिशाली वाक्य है। हियरिंग गॉड-रे. पीटर लार्ड कम्युनियन विथ गॉड-पीटर लार्ड। जो उनका ३० साल का अनुभव सारांश है।

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लाईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

A. हम आत्मा में देखने कि अपनी क्षमता को क्यों उन्नत करें?

1. a)
b)
2. a)
b)
c)
d)

3.

4.

5.

6.

B. आत्मा में देखना कैसे उन्नत करें?

1.

2.

3.

4.

C. गलत इस्तेमाल का निचम

1.

2.

3.

4.

इस का इस्तेमाल अध्यापक के मार्गदर्शन में बताया गया है

9.हबाकुक:दव्य दृष्टि, प्रतिभा और लेखन

मैं एक बार प्रार्थना कर रहा था। मैं एक पेनसिल लिया पेपर लिया उसमें मैंने प्रश्न लिखा कि प्रभु मुझे उत्तर दे। मैं लिखना पुरा हो गया और मेरे दृष्टिको प्रभु पर केन्द्रित किया। मैं चित्रन किया मैं जगा पर कोने में पत्थर के पास बैठा था। उनके लिए देखा, पर अचानक मेरा मन में सोया कि बो आलोचना मेरा नहीं था। पर एक जवाब मिल गया जो मैंने सोया था। मैं उसे पेपर में लिखा उसके बाद देखा मैंने दो पेरोग्राफ पूरा किया था। जब से पड़ा था। मुझे अश्चर्य हुआ कि यह एक समझदार का काम किया। यह सब प्रभु का कार्य है। मैंने यह काम को बार बार किया था। जब मैं प्रार्थना स्मरण करने का वक्त था। जब कोई प्रश्न मेरा मन में आता है। मैं उसे उत्तर देता हूँ। पर यह सब प्रभु का काम है। ऐसा मैं कभी नहीं सोया था प्रभु ऐसा महत्वपूर्ण काम करता है। मेरा अन्वेषण प्रभु के लिए है। जो मेरा संबंध कभी प्रभु से है। सभी ज्ञान मुझे प्रभु से मिलता है। जो प्रार्थना को सुनकर मुझे देता है। प्रति व्यक्ति जो जरन सीखता है उन्हें दूसरों से इसके बारे चर्चा करता है। जो बहोत ही मुख्य विषय है। एक बार प्रभु ने मुझे बताया कि बाईबल का अनुभव क्या है। और बताया कि हबाकुक प्रवक्ता का अनुभव क्या है। यह प्रवक्ता प्रभु का आवाज को पहचाना।

(हबा २:१-३ वह कहता है कि प्रभु का आवाज कैसा सुना। इसके बारे में अगर आप समझते हैं। क्योंकि इस बात पर मैं यकीन करता है। मैं प्रभु के लिए इंतजार करता हूँ। मैं देखता हूँ प्रभु मुझसे क्या कहते हैं। सोचता हूँ इसका उत्तर कैसा जवाब देना। प्रभु मुझसे कहा कि; उत्तर दिया भविष्य को देखो। (हबा २:१,२)

हबाकुक ने परिशुद्धात्मा का अनुभव किया है। उन्होंने प्रभु का महत्व को हासिल करना चाहता है। उन्होंने अकेले में सुमसान जगह पर कडते हैं। प्रभु से अकेले में उनसे बात करना चाहते हैं कि उनका, बारे जाने और उनका महत्वपूर्ण स्थान दे और विश्वास से रहे। तीसरा यह है; प्रभु बात करता है। वो चाहता है कि भविष्य को जानो। हबाकुक ने लिखा है कि प्रभु को किस तरह उन्होंने पाया। और महसूस किया। यह तीन किया है। प्रभु को विश्वास करना। इंतजार करना। भविष्य और लेखन। यह सब हबाकुक प्रवक्ता ने पालन किया। समझता यह एक अच्छा सिद्धांत है प्रभु को पाना। मैं कभी कभी संकट में, और कठिन परिस्थिति में था कि प्रभु मुझे क्या परिक्षा लेते हैं मुझसे क्या चाहते हैं। पर यह सब कुछ प्रभु ने मेरा

जीवन को बदल दिया था। मैं गाना बंद कर दिया और "प्रभु प्रार्थना में मिटास" क्योंकि मैं कभी प्रार्थना का मिटास को नहीं अनुभव नहीं। पर मैं अब प्रभु के बारे में माता हूँ और प्रार्थना करता हूँ।

कुछ प्रत्येक पाठ जो प्रभु का आवाज में

- १ भगवान आप से जरूरत से ज्यादा नहीं मांगते हैं। आप सब तरह का सुविधा देता हूँ जो आप उसे माँगते हैं।
- 2 प्रभु आप से नियमित रूप से बात करता है। वो है वाक्य के अनुसार, महत्वपूर्ण से सिद्धांत से।
- ३) आप अंदर का आवाज को पहचानता, और अंदर का स्वभाव को जानता है। प्रभु सब पता है कि किस तरह से उनका स्वभाव जानते हैं और नियम अनुसार प्रार्थना करते हैं।
- ४) प्रभु का वाक्य या आवाज ठीक तरह से उत्तर नहीं आया जैसे आप समझते हैं। आप प्रभु के जाये और पूछें कि इसका क्या कारण है। अगर यह सब आपको समझ में नहीं आया तो आप उसे भूल जाना। एक दिन आप जरूर समझते हैं कि कारण क्या है मुझे ८ साल लगा प्रभु का उत्तर समझने में जो मुझे दुसरो के द्वारा प्रभु का सारांश को समझा था।
- ५) मैं ज्यादा अनुभव से बहुत कुछ जाना है। पर मैं उसे आधा समझा है। मेरा विश्वास बढ़ते गया जैसा मैं महत्व काम का अनुभव हुआ।
- ६) मैंने मेरा अंदाज़ से और समझ से प्रश्नों को ध्यान देखा। और प्रभु इस प्रश्न पर उत्तर दिया है। मैं अभी इस अंतर को पहचाना है।

कार्य का रूप

- एक बार एक व्यक्ति ने "ओरल राबर्ट से कहा कि मैं कैसा जान सकता हूँ कि प्रभु आवाज सुना है। जब राबर्ट ने कहा कि उसके ऊपर बहुत श्रद्धा से काम करो।
- आप अंदर का दुनिया को नहीं समझ सकते जब तक आप समय के अनुसार खामोसी से नम्रता से देखते हैं।
- अंदर का दुनिया के लिए जानकारी करने के लिए बहुत वक्त लगता क्योंकि वह बड़ा रहता है। जैसे ही मुश्किल है बाहर का दुनिया को जान लेना।

अंदर का दुनिया से आप चलना चाहते हैं से चलना समान होता है। इसमें अच्छाई और बुराई का सामना करना। उतार चढ़ाव जैसा होता है। जब गिर सकते हैं। और उठने के लिए कोशिश करते हैं।

पाश्चात्य देश के लोग समझने में अंतर को समझने में विकसित नहीं है।

क्या आप अंदर से चलना का कोशिश करते हैं।

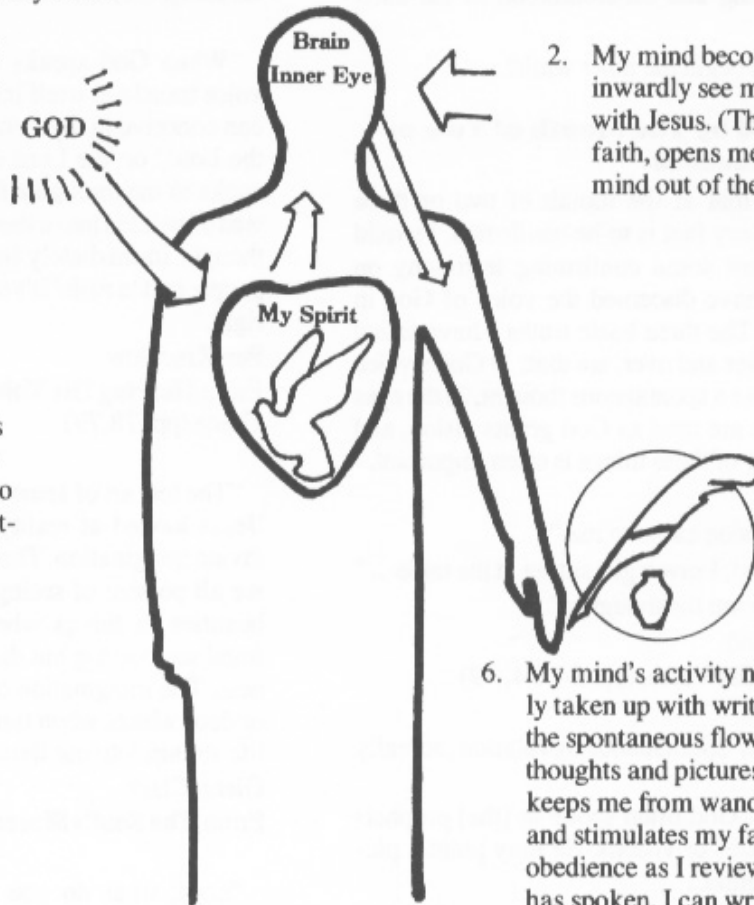
My Experience of Inwardly Quieting Down and Allowing Jesus to Speak

1. I still myself in the Lord's presence, most often through worship, singing in the Spirit, or devotionally entering into a Scripture passage. My outer being is quieted, my inner being is quieted. I am in neutral, poised before my Lord.

3. The Lord speaks His thoughts through His Spirit into my heart (1 Cor. 2:9,10).

4. His Spirit is in union with my spirit (1 Cor. 6:17).

5. Spontaneous thoughts and impressions flow from the Holy Spirit to my spirit, going directly to my mind, where they are registered.



2. My mind becomes active to inwardly see myself talking with Jesus. (This raises my faith, opens me up, gets my mind out of the way.

6. My mind's activity now is partially taken up with writing down the spontaneous flow of thoughts and pictures. This keeps me from wandering off and stimulates my faith and obedience as I review what He has spoken. I can write freely at this time, knowing I will test it later.

7. When desiring God to speak, I no longer look and listen outwardly into the cosmos, but inwardly into my spirit.

8. While momentarily pausing for a new thought or the right word to come forth in the sentence I am writing, my mind tends to easily get involved in meditating on that thought. Instead, I send it back to focus on Jesus. **One's own thoughts** can easily rush ahead of the Spirit, resulting in impurity. As I wait for a moment, focused on Him, He places the "right" word or thought into my heart.

दो से तीन शक्ष्य कासबित

प्रभु कहता है कि दो या तीन लोग के लोग के साक्ष्य के आधार पर सच्चाई का साबित होता है।

मैं आपको ऐसा सक्ष्य के बारे में बताऊँगा की कैसे लोग सच्चाई का फैसला किये जो लोगो के मन में था। तीन प्रमुख विषय है।

१) प्रभु का आवाज एक निश्चय उपाय से होता है। अपन् आँखे

२) हृदय के दृष्टि से प्रभु का दृष्टि और भविष्य जानते है।

३) इसे लिखना और बहोत ही मुख्य विषय है।

दृष्य-प्रभु ने प्रवक्ता से अपने महत्वपूर्ण काम के लिए दृष्य के रूप में बताये थे। लेखन-प्रभु लोगों से बाईबल से मुख्य लेखन हमें समझाते है। इस बारे में प्रभु आपको मुख्य लेखन द्वारा उपदेश देता है।

प्रभु तुम्हे वचन देगा जो तुम्हे सूचना देता है। जो तुमने आज तक वही सोँचा था। जो सूचना प्रभु से मिलता है। सही होता है। जिसमें दूसरा अंश का साराँश नही होता है। जब हम विचार से सोँचते है। या दिन में सपना देखते है। जो अंश से जुड़ा रहता है।

लेखक - लारी टामजाक

जब प्रभु परिशुद्धात्मा से बात करता है। उनका आवाज़ दूसरा अंश में बदल जाता है। जब मैं कहता हूँ। मैं प्रभु का आवाज को पहचाना और प्रभु मुझे उत्तर दिया। मेरा मतलब है कि मुझे अहसास हुआ मुझमें आत्मा है वो आत्मा दूसरा अंश से है। जो मेरा दिमाग में था। और विचार अचानक बदल जाता है। जो जवान युवा सोँचते है।

लेखक-लगेन कार्क

आपके लिखित पुस्तक में जो आपने प्रत्येक सारांश को लिखा है, जो आप सीखना चाहते हैं प्रभु के बारे में यह एक अच्छा संतोष का विषय माना जाता है। मेरा जिंदगी में। जिसके द्वारा मुझे बहोत संतोष मिला है। जो सही रास्ता भी बताया है। मैं साधारण महिला हूँ जो प्रति विषय का ध्यान देता जो कपड़े सेलेकर जो मैं हर दिन पहनता है। र ध्यान में रखता हूँ कि प्रभु का क्या इच्छा है। मेरा पिता का आदेश सुनता हूँ जो खाने पर निबंध रखता है मैं क्या खाना है। इसके कारण मैं ६० पौण्ड का वजन कम हुआ था। पुस्तक का से मुझे बहोत ही फायदा हुआ मुझमें आत्मविश्वास को बढ़ाया है। मैं प्रभु से पुछता हूँ। मैं क्या करना है। मेरे बारे में क्या सोचते हैं। जो प्यार और सुन्दरस्व लगता है। इस धरती में आने से पहले मेरा बारे में सोचा था।

मैं सुबह में उठता हूँ। जब मेरा परिवार के लोग सोते हैं। जब मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। अकेले में रहना मुझे प्रभु से रहना अच्छा लगता है। इस तरह से मेरा दिवना का शुरूआत होता है। कभी ऐसा दिन या जो मैंने प्रभु का याद स्मरण वहीं किया। पर मुझे नहीं मालुम। किस कारण से हुआ अंधेरे में बहोत ही। विचार से रहती थी। पर अब प्रभु का आवाज को पहचान। मेरा प्रति दिन प्रभु का स्मरण से होता है। मैं प्रभु को मेरा दिल से धन्यवाद करता हूँ। आपको मालुम है मैं एक स्वच्छ चीज को देखा है। प्रभु ने मुझसे कहा कि कभी कठिनाई से रहता हूँ। उनका कृपा मेरा ऊपर रहता है। अब मेरा जीवन पहल जैसा नहीं रहा।

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

निम्न दिए गए को पूर्ण रूप से लिख लें। इस शृष्ठ पर (या दूसरे पर अगर आप चाहें) एक प्रश्न लिखिए जो आप परमेश्वर से पूछना चाहेंगे। वह कोई भी प्रश्न हो सकता है जो आप ने चुना हो, जब तक कि वह आप के जीवन का सब से ज्यादा दर्दनाक प्रश्न न हो। ऐसे प्रश्न आप को बेचैन कर देंगे, वे आप को बाईबल के संतुलन से हटा देगा, जो कि परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए ज़रूरी है (भजन ४६:१०) - यह उस वक्त ज़रूरी है जब आप लिखना सीख रहे हों। आप उस से अपने प्रती उस के प्यार के विषय में पूछ सकते हैं या कोई स्थिति जो आपके सामने है या उसे इस पाठ कि सच्चाई के बारे में क्या कहना है या कुछ भी। थोड़ा सोचीए, प्रश्न चुनीए और लिखिए।

10 .आत्मा से परिशुद्धात्मा तक चलना

आज कल पाश्चात्य देशों में देखे जो ज्ञान और विज्ञान से विकासशील देश है। यह बहोत आसान से ईसाई जीवन से संतोष से रह सकते है। आत्म के बिना (बुद्धी से, मर्जी से, विचारो से) उससे ज्यादा एक आत्मा से) गंभीर से, खाने से) गतिविधियाँ, कम समझदारी और चाल चलन) इसाई लोगों का जीवन, जिसमें, प्रार्थना से, जो मन से, परिशुद्धात्मा से, पर आत्मा से नहीं।

परिशुद्धात्मा को फैसला सुनाना

(चाल चलन, कम समझने का गुन, गतिविधियाँ और द्रोही)

- १ आप कानून जैसा फैसला, आत्मा से करना कम समझने का तत्व गतिविधिया चाल चलन यह एक मनुष्य रहता है। उदाहरण:

१राज २१:१-५ गिरा हुआ आत्मा

प्रोव ११:१३ भरोसा का आत्मा

१ पीटर ३:१-४ खामोशी का आत्मा

- २ हम एक परिशुद्धात्मा, या प्रभु आत्मा से रहने में आत्म अन्य काम, कई विचार, समझदार और भविष्य दृष्टि यह सब ध्यान से प्राप्त कर सकते है।

आत्मनिर्भरता

(खाना, पीना, साँस लेना)

प्रभु ईशा से 'आत्मा' को पाने के लिए उन्होंने अपने में रहना चाहते है(जेम-४:५) जैसे ईसा प्रभु ने बडा हुआ उन्होंने परिशुद्धात्मा में शक्ति पाने लगे" हम भी प्रभु आत्म में बढना चाहिए। अपने को पाने के लिए भगवान(प्रभु) से रहना चाहिए। हम निर्भरता से आत्मा को पाते है प्रभु के द्वारा उनका वाक्य को हजम कर लेना चाहिए। आत्मा से साँस लेना चाहिए, आत्म में पीना चाहिए। महत्वपूर्ण से रहना है।

आत्मीय भोजन-महत्वपूर्ण वाक्य का हजम

अपना आत्मीय भोजन है बैबिल; जाशुआ ने कहा कि मैं आत्मीय भोजन से ध्यान करूँगा। कोशिश करूँगा, और उनके बारे बात करूँगा। वो है कामयान।(जाश - १:८) शैतान ने प्रजा को प्रभु से दूर रखने के लिए कोशिश करता है। वो कभी उनका विचारो अपना ऊपर डालना चाहता है।(लूक ८:१२) मैंने कहा कि अपना बुद्धि एक युद्धभूमि है। और हम उसे नष्ट करना है। और प्रति विचार को बंदि बनाते है प्रभु के सामने।(२ कोर-१०:५)

हम देखते है कि शैतान का विचार. सब गलत होता है। और विनाशकारी है। पर प्रभु का विचार सही है। और शैतान अपने को गलतियों से हमला करता है। हराना, गलति का अहसास, भयभीत यह सब परेशान, शक, गुलाम, पागलपन, गर्व, काबू नहीं रहना, विचार, गलत तस्वीर, कमजोरी, गलत उपाय यह सब शैतान का विचार है।

यह एक जरूरी बात है कि आपका बुद्धि को फैसला करना आपके हाथों में है। जो शैतान का काम करता है रोकना प्रभु को प्रार्थना की इन सब कठिनाईयों से दूर कर देना।

प्रभु का वाक्य से बुद्धि का विकास होता है। गलत समझना प्रभु वाक्य को इनकार करना यह शैतान का काम है। पर प्रभु वाक्य को समझना या उनका काम को स्वीकार अपना धर्म है।

आत्मिय का पानी, परिशुद्धात्मा से प्रार्थना करना

प्रभु चाहता है कि हम उनका निर्णय पर चलें उनका आत्मासे रहता था कि प्रभु प्यार को पानी जैसा प्यार को बहाता है।(जान ७:३८:३९) पाल ने करता है। अगर आप आत्मा से बात करते है तो तुम प्रभु से बात करते हो। उस आत्मा से कई महत्वपूर्ण काम कर सकते है।

आत्मीय का सोंस

परिपूर्णता और आत्मा को जीवित होता है।(जान ६:६३) प्रभु मुझसे आत्मा से बात करता है। प्रवचन सुनाने में, मार्ग दिखाने में सहाय करता है।

साराँश

प्रार्थना से परिशुद्धात्मा से जीना

- | | | |
|---|------------------------|--------|
| १ | वाक्य को हजम करता है | - भोजन |
| २ | आत्म से प्रार्थना करना | - पानी |
| ३ | आत्मा से रहना | - साँस |

यह तीन वाक्य एक कुंजी जैसा है। यह पहचाने के लिए मुश्किल है। पर मुझे इसको समझने के लिए ५ साल लग चुका है। इसका अभ्यास करना मुश्किल है। पाश्चात्य लोगो इसका आचरण करना बहोत ही तठीन है। हर दिन दिमाग में शैतान का आलोचना आता है। रंग भेद को चोडना और सब लोग से मिल-जुल कर रहना प्रभु का आत्मा से परिपूर्ण रहना। यह कार्य को आचरण करना मानव को नही होता पर भगवान पर विश्वास रहना सब कार्य प्रभु करता है। पर बहोत लोग इसे आचरण करना पसंद नही है। आत्मा से परिपूर्ण रहना वह लोगो को पसंद नही है। यह जब सफलता होता जब प्रभु पर उनका मार थोडे और मन को प्रभु के पास अर्पित करना है।

निम्न स्थान पर लिखिए।

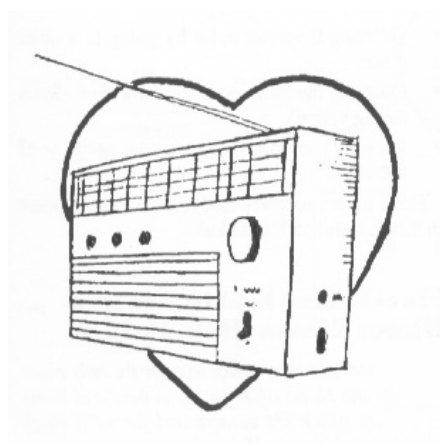
फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

11. प्रभु वाक्य सुनने के लिए रेडियो के तरफ मोड़े

हम अपने आँखे रहने पर आँखो से देख नहीं सकते।

कान है पर कान से सुन नहीं सकते है। क्योंकि प्रभु अपने दिल के अंदर नहीं है। और प्रभु को स्वीकार नहीं करते है। जो प्रभु इस शरीर को बनाया। जो लोग प्रभु स्वीकार करते है। प्रभु उसे प्रार्थना का उत्तर देता है।



आप हृदय रेडियो को प्रभु का सिगनल(तरंग) पाना

अपना दिमाग और शरीर का अंग प्रभु को नहीं स्वीकार करता है। जो परिपूर्ण वाक्य प्रभु ने दिया है। सब कार्य परिशुद्धात्मा प्रवेश करने से सब होता है। (१कोर-२:९,१६)

मैं प्रभु का वाक्य सेरमन वाक्य द्वारा सुना था कि अपना हृदय एक रेडियो जैसा है। जो हम उसे चालु करना है। सुनने के लिए। मैं उससे सहमत करता पर कोई थी मुझे मोक़ा नहीं देते है मुझे रेडियो का बटन चालू करने के लिए। इसलिए मैं वाक्य को सुन नहीं पाया। जो मुझे दुःख होता है। यह अध्याय में देखते है कि किस तरह से उना आवाज को पहचाने का। यह सब काम करने के लिए हृदय के

आधार प्रभाव होता है। प्रभु अपने दिल से बात करता है। और बैबिल से कुछ उदाहरण से प्रभु बात करता है। पहला गतिविधियाँ दूसरा हबाकुक और तीसरा हीब्रु में दिये गये निबंधन(हिब्रु १०:१२)

रेडियो को चालू करने के लिए सीखना

पर्वत पर प्रभु ने मोशे को आचरण मार्ग के लिए एक रूप आकार दिया था। जो हिब्रु में कहा गया ८:५ गया। एक छाया जैसा आकार परिशुद्धात्मा का। इसमें इज्रएल लोगों को किस तरह चलना और प्रभु का आवाज को पहचानना। इस आज्ञा में आत्म, परिशुद्धात्मा और शरीर के बारे दिये गये। और दूसरा वाक्य में प्रभु का प्रवचन का ज्ञान, जो प्रकाश होता है। एक परिशुद्ध स्थान को प्रभु प्रकाश डालता है। जो व्यक्ति को प्रभावित करता है। प्रभु तीन प्रकार से लोगों से बात करता। लूका प्रवचन में "पवित्र स्थान का अनुभव" किया है। प्रभु ने लूका को उनका बुद्धि को प्रभावित किया है जो सत्य है।(लूका १:१४) प्रकटन में पवित्रता के अनुभव में बताया गया है। जो प्रभु ने जान को दर्शन के द्वारा प्रकाशित किया।

टुकड़े के हिस्से में बनाया गया चीजों से प्रभु का अनुभव कर सकते हैं।

१ ब्रेजन आल्टर-प्रभु का सिलवा(क्रास)

(निर-२७:१-८)

इस आधार से प्रभु से समझौता कर सकते हैं। जिस से प्रभु अपना जीवन में कुछ कुरबान प्रभु के लिए करना चाहिए।

२ ब्रेजन लीवर-प्रभु का वाक्य

(निर३०:१७;२१)

यह इसके बारे कहता की शारीरिक शुभ्रता के बारे में। वाक्य शुभ्रता के बारे में कहा गया।

३ टेबल का शी बर्ड-आप के अनुसार

(निर २५:१७-२१)

आटा को पीसा जाता एक अच्छा रोटी बनाने के लिए। उसी तरह से हम

अपना मर्जी से, उसके अनुसार से अपना प्रभु को अर्पन करना चाहिए।

- ४ **७(सात) खंभे का दीप स्तंभ-प्रकाश** का बुद्धि जब आप प्रभु का वाक्य पडते या प्रभु के लिए समझना चाहते है। प्रभु आपका बुद्धि को विकसित करता है।

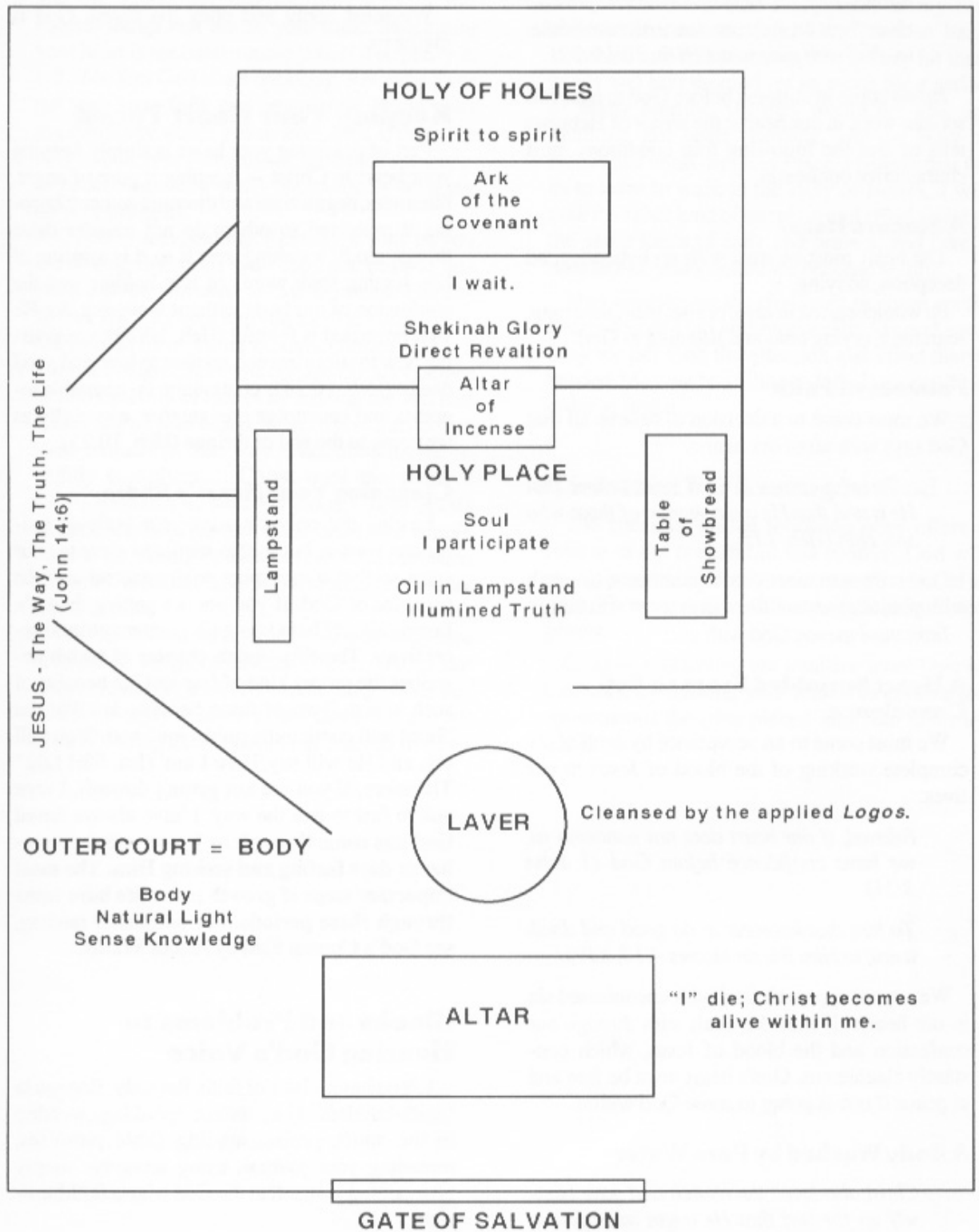
५ **खुशबु-दुःख**

आप प्रभु के रूप में मन का अर्पन करना। जो प्रभु को स्तुति, प्रशंशा करे। दुःख को प्रभु के कृपा से दुर कर सकते है।

६. **नाव-दिल में प्रभु का आत्मा से।**

स्तुति और स्तब्ता, हमप्रभु के मन से मन प्रभु से रहता है।

The Tabernacle Experience — God's Design for Approaching Him



एक सच्चा हृदय

हर एक दिल सच्चा रहना चाहिए। जिसमें कपट नहीं रहना चाहिए। जिसमें दूसरोनुकसान बरबाद नहीं करना और झूठ नहीं बोलना।

प्रभु पर निरीक्षण

हम एक निर्णय पर आते हैं कि प्रभु का वचन को हम दिल से मान लेना है।
(पात्र ११:१६)

प्रभु है तुमसे बात करना, तुम्हारा मन को समझता है। इम्मानेल का अर्थ है प्रभु अपने साथ है।

मन में शैतान का प्रभाव

हम एक निर्णय पर आना चाहिए कि प्रभु अपना साथ है। प्रभु का खून से हम धन्य हैं। अपना जीवन धन्य हो गया। हम प्रभु का पास क्षमा के बिना नहीं जा सकते हैं। प्रभु का खून से हम पाप से मुक्ति मिलता है। जो खून से अपना पाप को मिटाता है।

अपना शरीर स्वच्छ पानी से नहाना है

प्रभु ने भी प्रार्थना मंदिर को बहोत करा है। जिस से विमोचन मिले। हम प्रभु का आज्ञा को पालन करना चाहिए।

अपना प्रभु को अर्पित करना

प्रभु के लिए तुम अपना हृदय को अर्पित करने के लिए निश्चय कर लेना चाहिए। गुस्सा को काबू रखना चाहिए। द्वेष, कपट, निरुत्साह, सबको काबु में रखना चाहिए। था कि दूसरा 'पीडियों में' यह फैलना नहीं। प्रभु पर विश्वास रखना वाक्य ध्यान रकना।

आका हृदय को साफ करो(रेडियो)

उपवास करने से शरीर को बहोत उपयोगी है। क्यों उपवास रहने से शरीर से व्यर्थ पदार्थों को बाहर देता है। उसी तरह से अपना हृदय को साफ रखना चाहिए जिसके परिशुद्धात्म प्रवेश कर सके अगर नहीं पा सके तो आप उपवास करना अच्छा है। जिस से प्रभु तुम्हारा ऊपर उनका कृपा, होता है।(एजया ५८) अध्याय कहता है कि उपवास करने से लाभ और उनका उपयोगी "यह दो उपयोगी प्रभु द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु तुम्हें सूचना देता है। मैं उपवास करना शुरू किया और कई दिन मैं उपवास रहा। इसलिए मुझे प्रभु ने मुझे उत्तर दिया।

सब समस्या दूर होता है प्रभु द्वारा

- १ प्रभु पर विश्वास नहीं है। इसका इलाज: अच्छे विश्वास के लिडर को चुन लेना है। जैसा(भाषा को जान लेना, विश्वास से प्रार्थना करना,बैबिल को पढ़ना, लिखे हुए पाठ को पढ़ना, कल्पना दृष्ट्य से प्रभु को पा सकते हैं)
- २ तुम्हारा दिमाग संचार होता है। जब आप वाक्य को पढ़ना यह जान लेना कि तुम्हारा हृदय इस प्रभु को पाने से रोके।

इसका इलाज: हृदय का स्वच्छ रखना।

- ३ जब तुम जानते हो प्रभु तुम्हें उत्तर नहीं दे रहा है। इसका इलाज: तुम्हारा हृदय संपूर्ण से बरना है। और जो भी उत्तर है उसे लिख लेना अच्छा है। जिस से आत्मा का प्रभाव तुम्हारा ऊपर रहे।
- ४ प्रभु आप से बात नहीं कर रहा है। इलाज: यह हो सकता प्रभु तुम्हें उत्तर नहीं दे रहा है। जब तुम्हें उपवास रहने से जवाब तुम्हें अवष्य मिलेगा। प्रभु अपने लिये द्वार खोला था कि हम प्रभु को पा सके। प्रभु पापो को उनका खून से साफ कर दिया है। प्रभु अपने को नया हृदय देता है। हम प्रभु के लिए तैयार रहना चाहिए। हम प्रभु का महान शक्ति नहीं पहचाने हैं। क्योंकि हम शारीरिक संबंध से इस संसार में रहते हैं। इस रास्ते में चलने के लिए बहुत कष्ट करना है।

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

निम्न दिए गए को पूर्ण रूप से लिख लें। इस पृष्ठ पर (या दूसरे पर अगर आप चाहें) एक प्रश्न लिखिए जो आप परमेश्वर से पूछना चाहेंगे। वह कोई भी प्रश्न हो सकता है जो आप ने चुना हो, जब तक कि वह आप के जीवन का सब से ज्यादा दर्दनाक प्रश्न न हो। ऐसे प्रश्न आप को बेचैन कर देंगे, वे आप को बाईबल के संतुलन से हटा देगा, जो कि परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए ज़रूरी है (भजन ४६:१०) - यह उस वक्त ज़रूरी है जब आप लिखना सीख रहे हों। आप उस से अपने प्रती उस के प्यार के विषय में पूछ सकते हैं या कोई स्थिति जो आपके सामने है या उसे इस पाठ कि सच्चाई के बारे में क्या कहना है या कुछ भी। थोड़ा सोचीए, प्रश्न चुनीए और लिखिए।

12.प्यार में मिल जुलकर रहना

प्रभु ने कहा कि "यह मोक्ष्य का जीवन है" जिसे मुझे जानते हैं। जो सही प्रभु है वह ईसा मसीहा(जान १७:३) यह गंभीर शब्द है। मोक्ष्य का जीवन माने प्रभु के बारे में जाकारी लेना। साधारण जैसा है।" जाकारी से जो सही मित्र होता है।"जिनिस्को" इसका मतलब है। मित्रता को बढ़ाना। इसे ग्रीक में कहते जो नया बैबिल ग्रंथ में पाया जाता है। प्रभु अच्छा शब्द दिया है। मोक्ष्य का जीवन। एक नया जिंदगी, मोक्ष्य का जीवन जो प्रभु से संबंध में होता है।

प्रवक्ता पाल कहता है "अच्छा सत्य(फिलि-३:१०,११) वह कहता मैं प्रभु के बारे में जाकारी करना; जो मोक्ष्य मार्ग पर चलाता है। जिन्होंनेबहोत उटाय़ा और बड़े कठिनाईयों का सामना करना पडा। जो मौत का कारण हुआ। पाल कहता है। मैं उनके बारेमें सब जानना चाहता हूँ। जो उनका सही प्रेम संबंध। इनके बारे में प्राप्त कर सकते हैं। जिन्होंने शरीर को मौत में बदला है अपने लिए। इस लिए हमें मोक्ष्य मिला है।

हिब्रु का सही अर्थ जिनेस्को को याडा कहते हैं। इस शब्द को इसलिएउपयोग किया कि इस बारे में प्रेम को अच्छा अर्थ देना प्रार्थना एक ऐसा है जो प्रभु को दर्शन करता है। प्रेम का अर्थ दूसरा भी है जो प्रेमी प्रेमिका के बीच में होता है। पर यहां प्रभु को प्रेमिक जो भक्त और प्रभु बीच में होता है। यह ेक धन है। जो प्रभु और भक्त के बीच रहता है। जो जुड़े रहते हैं धन जैसा प्रभु के पास सब कुछ बताते हैं। और जीवन भर प्रभु के साथ चलता है। जिसमे कोई भी कहे इसका अर्थ अपार है। इसमे कुछ प्रतिबंद नहीं है। जो प्रेमिक एक साथ जुड़े रहते हैं। जब वे चाहते हैं। और प्यार को मिलकर बाँटते हैं। जो इस संबंध में खुशिया होता है।

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

निम्न दिए गए को पूर्ण रूप से लिख लें। इस षष्ठ पर (या दूसरे पर अगर आप चाहें) एक प्रश्न लिखिए जो आप परमेश्वर से पूछना चाहेंगे। वह कोई भी प्रश्न हो सकता है जो आप ने चुना हो, जब तक कि वह आप के जीवन का सब से ज्यादा दर्दनाक प्रश्न न हो। ऐसे प्रश्न आप को बेचैन कर देंगे, वे आप को बाईबल के संतुलन से हटा देगा, जो कि परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए ज़रूरी है (भजन ४६:१०) - यह उस वक्त ज़रूरी है जब आप लिखना सीख रहे हों। आप उस से अपने प्रती उस के प्यार के विषय में पूछ सकते हैं या कोई स्थिति जो आपके सामने है या उसे इस पाठ कि सच्चाई के बारे में क्या कहना है या कुछ भी। थोड़ा सोचीए, प्रश्न चुनीए और लिखिए।

13.परिशुद्धात्मा का निबंधन

परिशुद्धात्मा से चलना के लिए सफलता से चलना चाहते जो परिशुद्धात्मा का दुनिया है। आप इसके बारेमें कुछ निबंध को समझना चाहिए। इसमें मुख्य निबंधन है कि परिशुद्धात्मा से काम करना। हम पढ़ चुके हैं कि प्रभु कैसे लोगो के मन से बात करते हैं। अब दूसरे तरह से करता है काम।

- १ जब परिशुद्धात्मा रहते हैं। वह प्रभु से कामयाब से चलते हैं। जो आत्मा लोगो होता है(रोम ८:२६)
- २ प्रभु अपने से कमजोरी के बारे में बताना चाहिए जब हम प्रार्थना करते हैं। जब हम प्रशान्त से रहते हैं कमजोरी में जो रहना नहीं चाहते हैं(रोम ८:२६) जो प्रभु का आत्म तुम्हे शक्ति देता जब आप कमजोर होते हैं। हम प्रभु से प्रार्थना करना चाहिए। (हेब्री ४:१६)
- ३ सभी प्रार्थना हम करते आत्मा से रहना चाहिए। परिशुद्धात्मा जो बताते हैं रास्ता दिखाता है। और शक्ति देता है। अगर प्रार्थना नहीं करते जवाब नहीं मिलता(नहीं तो समझना हम शरीर को पूजा कर रहे हैं।

(१कोर १४:१४)(जूड १:२६)

(१कोर १४:१८)(रोम ८:९)

(ऐफे ६:१८)

४. हमे हक है कि प्रभु को पाने के लिए(जब प्रभु का अनुभव करते हैं। जो आत्मा अपने अंदर काम करता है।
(जान १४:६)(ऐफे २:१८)

- ५ हमे दो तरीके हैं जो प्रभु को प्रार्थना करने के लिए।
(रोम ८:२७) (रोम ८:३४)

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

14. नमूना से परिशुद्धात्मा से प्रार्थना करना

प्रार्थना मन से रहना चाहिए। सर से नहीं। अगर प्रार्थना आत्म संबंध हो प्रार्थना चाहिए। सूचना देना है। प्रति एकव्यक्ति प्रार्थना मन से करना चाहिए। जीवन से रहना है, और विश्वास से। कई लोग प्रार्थना में प्रभु से सूचना मिलता है। जो प्रार्थना शक्ति तुम्हें मिलता वह शक्ति दूसरे लोग अनुभव करते हैं। और उनका दर्शन को भी जाने, वक्त को नहीं देखना, वक्त से अनुसार तुम चलना। हृदय का आँखें खोलना और प्रभु से माँगना है। जो तुम्हें देखना है। जब तुम परिपूर्ण शक्ति जानते हो।

वाक्यों को याद करना(ध्यान करना)

धन्यवाद करना कभी नहीं भूलना चाहिए जब आप विश्वास करते हैं। उनको धन्यावाद कहना क्योंकि प्रभु ने आप से क्रिया कर रहे हैं।

। सहन बहोत जरूरी है जब आप कठिन काम करते हैं। जो मुक्ति होता है। आश्चर्यकार्य करते हैं।

आप का विश्वास फिर से जन्म लेना जब आपका मन प्रभु का वाक्य से भरा रहता है।

हर डर को सोचते हैं ----- उस पर विश्वास को सोचना चाहिए।

हर कमजोरी को सोचते हैं.....उस पर मुक्ति के लिये सोचना चाहिए।

हर पल मरण को सोचते हैं-----उस पर जीवन का सोचना चाहिए।

आप प्रेम को पूनर्जीवित करना है। जब प्रभु आपका मन में रहता है।

हर एक मुश्किल को दूर करना चाहिए। प्रति एक मनुष्य और जीव जन्तु प्रेम को जान लेना है। यह साध्य होता जब हर क को प्रेम भाव से रहते हैं इस सृष्टि में अगर युद्ध सब करते हैं। यह सब को पाना बहोत मुश्किल है।

प्रार्थना से अद्भुत कार्य

आश्चर्य कार्य को सब पा सकते प्रभु का श्रेष्ठ ही नहीं। वह प्रभु का प्रकाश का शक्ति है। जो प्रभु का प्रेम सब पा सकते जहां दुनिया अंधकार में होता है। यह एक प्रभु का कार्य है जो मनुष्य को फश्चात्ताप करता है। (रोम २:४) प्रभु ने जब दस कोड़ी रोगों को रोग से मुक्ति किया उसमें नौ लोग प्रभु को अपनाया है। जितना संसार में प्रभु का आश्चर्यकार्य को अनुभव करते। उसमें कम है। प्रभु के लोग। जो प्रभु को मानते है। सारा संसार प्रभु का प्रेम उसका कार्य को जान चुके है। सब कार्य प्रभु के दया से होता है। उनका अनुग्रह होना चाहिए।

प्रत्येक प्रार्थना से जवाब पाना

प्रार्थना करने में कई अविष्कार कर सकते है। जिसमें ४ प्रकार के होते है। पहला है

- १) शांत से रहना
- २) आपका आंखे ऊपर के तरफ देखना चाहिये जो स्वर्ग के देखते है जहाँ प्रभु तुम्हे शक्ति देता है।
- ३) आप प्रभु का नाम लेना चाहिए। जो उनका महत्व, और अच्छाई को जानते है। जो हजारों भक्त उनके सामने जुकते है। और प्रार्थना करते है।
- ४) प्रभुको धन्यवाद देना चाहिए जो तुमने प्रभु से पाया है।

व्यक्तिगत प्रार्थना पत्र

निम्न दिए गए को पूर्ण रूप से लिख लें। इस शृष्ठ पर (या दूसरे पर अगर आप चाहें) एक प्रश्न लिखिए जो आप परमेश्वर से पूछना चाहेंगे। वह कोई भी प्रश्न हो सकता है जो आप ने चुना हो, जब तक कि वह आप के जीवन का सब से ज्यादा दर्दनाक प्रश्न न हो। ऐसे प्रश्न आप को बेचैन कर देंगे, वे आप को बाईबल के संतुलन से हटा देगा, जो कि परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए ज़रूरी है (भजन ४६:१०) - यह उस वक्त ज़रूरी है जब आप लिखना सीख रहे हों। आप उस से अपने प्रती उस के प्यार के विषय में पूछ सकते हैं या कोई स्थिति जो आपके सामने है या उसे इस पाठ कि सच्चाई के बारे में क्या कहना है या कुछ भी। थोड़ा सोचीए, प्रश्न चुनीए और लिखिए।

15.बैबिल के विरुद्ध परिशद्धात्म अनुभव का परीक्षा

हमने जाना कि अंदर का दुनिया को खोज सकते हैं जब हम गंभीर से सोचते हैं! जो इसका दूसरा आंख से नहीं मिलता! इस विषय पर हम प्रश्न करते तो परिपूर्णता को रोक सकता है! इसका विषय पर जगा मिल सकता जब इसके बारे में सोचते हैं! प्रभु का विषय पर यर्या करना इसके बारे में आत्मा का परीक्षा होता जो बैबिल का विरुद्ध है! जो ऐसा अपने को सब कार्टनाईयो से बचाता है! फिर भी समना दिमाग एक ऐसा शरीर का आंग है! इसके बारे में नहीं सोचता है! हमारे पास सिर्फ दो ही रास्ते हैं! जो तुम्हारा दिमाग को लेखन को समझना और अंतर को बताता है! एक व्यार्कत कतता है कि मैं ऐसा बाला धटना देखा ना सोया है था पडा है! इस वाक्य के बारे में यह बिलकुल गलत है! एक बार इसके बारे में अनुभव छोटा है! मैं लेखन के अनुसार चलता है! पर इसडूँ देखने, था पडन में अंदा है (पहचान) इसके बारे में जानकारी करने के लिए: बुद्धी का नरूरत है! आप इसे लेखन के अनुसार पहचान कर सकते हैं! पर ज्यादा लोम सही तरह से दिमाग को उपयोग करना जब आप लेखन पडते हैं! मैं कई लोगो को समझाया कि इसके बारे में अच्छा व्यवहार करना! इसके बदले में मैं लोग लौकिकतत्व को ज्यादा ध्यान दिय है! जो बैबिल का प्रवचन, और अनुभव के विरुद्ध है! इस लैकितत्व को ३०० साले से एक से दूसरों लोगो तक चलते आये! दूसरा गलति ऐसा है कि! जो कुछ वे प्रचार, करते वो बिलकुल गलत होता है! जो अच्छा करने बदले में बुरा करते हैं! इसलिए इस शब्द कानून का विरुद्ध कहते हैं! जो काम कानून का सही पालन करते वो वाक्य सही तरह से बचाया जाते हैं! और दूसरों को प्रोत्साहन करते हैं! (रोम १५:४)

मैंने वाक्य को बहुत में पशचत्तम करता और वाक्य कों एक आश्च्य, प्रसिद्ध विशिष्टता के बारे में समझता हूँ!

परिशद्धात्मा को आँटक करने समस्या

अगर, आप इसाई है! इसाई धर्म को मैंनते है! परिशद्धात्मा से सहवास होता हूँ! (१ कोर ६:१७) पर जो समस्या जो धर्म को आँटक पहुँचता है! इसके बारे में बैबिल में कहा गया हूँ!

जीवन के समस्या (१ साम, १:१ १८)

शेरीरिक समस्या (१ सम ३०:१२)

शैतान (जान १३:२)

मनुष्य का (प्रोव १६:३२)

इसका कई समस्या, और विचार प्रभु से हम सब प्रकार क काम कर सकते है! परिशुद्धात्मा को पा सकते है! प्रभु से उन आत्मा के बिना कुछ आशिर्वाद पाना बहेत ही कतित है!

१.जैसा आप का बुद्धि से आत्म, और परिशुद्धाक्ष्मी से मन शुद्ध होता है!

२.हम उस सुराग को, साक्ष्य से आदारसे प्रभु को पा सकते है!

३. कभी आप ने पाप का प्रायश्चंति किया हुँ!

- कभी प्रभु का परिपूर्ण प्रकाश को जान है!
- कभी आप प्रभु का कहने पर मन को अर्पित किय है!

- कभी प्रभु के लिए निरिक्षन से उनके लिए उनके तरफ देखे है !
- कभीपरिक्षा किया कि अपना विचार, प्रभु का हूँ था शैतान का, या अपने तरफ से सँेचते
- बैबिल कहते है हम आत्मा का परिक्षा कर सकते है !
- जब प्रार्थाना का फल मिलता वह समझते है कि क्या यह प्रभु से प्रेशना मिला !

प्रभु का वाक्य को पहचाने चिन्त के पहचाने

जब हम बैबिल पडते है ! इसके बारे पता चलता है कि सब कटिन परिस्तियो से सामना कर सकते है ! और, परिशद्धात्मा का अनुभ भी होता है ! हमारा बैबिल मे सत्य है ! जो बदल नही सकता ! जैसे आप जब चलने के लिए कोशिश करने करते ! यलने से पहले उसी तरह जैसे आप बैबिल पडते है ! प्रभु का उत्तर मिलता है !

शरीर से संबन्ध (निशचय)

प्रभु अपने दूसरा वरदान दिया है ! प्रभु संबन्ध शरीर हम सुरक्षित मेहसूस करते है जब बैबिल से तालूक रकते है ! जब बडे निर्णय को बैबिल से परिष्कार मिलता है ! (एफे ५:२१) प्रभु के पास सुरक्षा के लिए शरण माँगते ! प्रभु तुम्ह शरण आवष्य देगा !

प्रभु का आधिकारी निबंधन को समझे

आप गौरव और आधिकारी से आपके जीवने पाना चाहते आपड्ढो इस वचनो स्मरण करना चाहिए !

१. प्रभु तुमे सर्व आधिकारी, समस्त आधिकारी देता है !
(रोम - १३:१, प्रभु के बिना आधिकारी, मौख पारा: मुशकिल है !
(कीरतन ७५:६,७),

प्रभु अधिकार से क्षेत्र है! आप प्रभु मे विश्वास और गौरव रहना चाहिए जिस से आपका गौरव बडता हो! एक राजा का दिल पानी के तरह बहता है प्रभु के निर्णय है!

३. आप कारण को जानलेना चाहिए जो प्रभु ने तम्हें अधिकारी दिया है!

४. यह जान लेना मुशकिल है किस कारण से प्रभु तुम्हारा अधिकारी का महत्व दिया है! प्रभु से प्रार्दना है कि अपने अधिकार को सही रुप से संबालने का! अपना प्रार्दना से महत्वपूर्ण से काम निभा सकते है!

(निमो २:१,४)

आके प्रार्दना से प्रभु को महत्व को पहचानलेना जो तुमे सर्व अधिकारी सौपा दिया! (एड्हे १:२०,२२,२६).

प्रभु तुम्हे अधिकारी को किस तरह से सम्बाला, और किस तरह का निर्माण, लेना प्रभु तुम्हे आदेश देता है!

(डानि - ६, अपो - ४:१९, २०).

सकलता का प्राप्त होता है! जाँ प्रभु तुम्हे सही तरह से अधिकारी से सहमत नही होते आप क्रिया कों नियम से सहमत नही होतें तो आप एक शतोट और यंत्र के तरह हूँ!

आप पहचाने को सबी काम और सबी जीत प्रभु के प्यार से शुद्ध है!

आपके जीवन मे अधिकार को बदलते हो

जब समय होता है! जब अधिकार को आप अपना अनुसार बदलते हो! आप जो भी करते हों! जैसा जगा को बदलते हो, प्रार्थाना मंदिर को बदलते है! और शादी जो बी हो! बिना कुछ गलती से करो, शाँती और समदान से करो! आप जो भी करते है! जैसा जगा को बदलते हो, प्रार्थना मंदिर को बदलते है! और शादी जो बी है! बिना कुछ गलती से करो, शाँती और समादान से करो!

जो आप संबन्ध में कार्टनाई का समाना करना पड़ता है! तो आप ऊपर बताये! नियमों को पालन करना है! या आप रिश्ते को बदलता याई चाहते है! और दूसरा मोड के तरफ बदलते है! प्रभु रियम अनुसार से रहना चाहिए!

नियम का आदार

जब कुछ भी आप के बीच और प्रभु के बीच में आर्ेतरे छेता है!
परिशुद्धात्मा को कष्ट पहचत है!
तो आप इन प्रश्नों को याद कीजिए!

इन का पूर्वज कहाँ से तालूक
आप परिशुद्धात्मा का अनुसार चलो!

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपन्ना मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते है। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

Chapter 16

हम सब जानते हैं! बच्चे जब खेलते हैं! उनका नियम नहीं होता है! बच्चे खेल के मैदान में खेलते हैं! स्कूल के मैदान हो या खेल का मैदान जो भी हो जब बच्चे खेलते हैं! उसका कुछ नियम नहीं होता! खेल के मैदान में फ़ैन्सिंग होता हो जो स्टील से बनते थे कि बच्चे बाहर ना जाये! अगर इसका फ़ैन्सिंग नहीं है! बच्चे नियम को नहीं जानने वे बाहर जा सकते उसी तरह प्रभु भी अपने को बचाने के लिए! फ़ैन्सिंग दालते हैं! जिसका हम नियम से पालन करते हैं! गलत रास्ते पे नहीं आये!

१. दूसरों को माफ़ करना है! जो अपने जीवर में हुए घटना जो हुआ उसे भूलना चाहिए! क्योंकि प्रभु तुमसे प्यार करता है!
अपना जीवन प्रभु को अर्पित करना चाहिए

(मार्क - ११:२५)

(जान - १५:९)

(जान - १५, १२, १३)

(१ जान - ४:७, ८)

(१ जान - ४:१२)

(१ जान - ४, १८, २१)

२. परिशुद्धात्मा पर चलना है! उनके अनुसार चलना चाहिए.

(कीर्तन - ६६:१८)

(एशय - ५९:१, २)

(हीब्रु - ५:७)

(हीब्रु - १२:१)

(जेम - ५:१६)

३. प्रार्थना से परिशुद्धात्मा को पा सकते हैं! आत्मासे परिपूर्ण होते हैं! प्रभु उन्हें उत्तर देता है!

(मार्क - ११:२२, २३)

(जान - १५: ७)

(रोम - १०: १० से १७)

(हीब्रु - ११, १६)

(१ जान - ५:१४, १५)

(जेन्मस - १:६, ७)

४. आप प्रभु को दृढय से और मन से प्रार्थना करता चाहिए

(जेम्स - ५:१७, १८)

(१ किंग - १८:४३)

(कीर्तन - ११९:५८)

(२ कोर - १५:१५)

५. इसामसि प्रभु क नाम से प्रार्थन करो !

(जान - १४:१३) (मार्क - १६:१७)

६. प्रायश्चित का प्रार्थना करो, प्रभु से प्रार्थना करो !

(मार्क - ११:२३) (मत्त - ८:२६) (हीब्रु - १०:२३)

७. आप प्रार्थना पर विश्वास करो! जो तुम चाहते हो जो प्रभु तुम्हें प्रार्थना से उत्तर देगा!

(मार्क - ११:२३, २४)

८. प्रभु को प्रशंसा से प्रार्थना करो, जो तुम चाहते हो! प्रभु तुम्हें प्रार्थना से उत्तर देगा और दर्शन को, वचन का उत्तर देगा!

(लूक - ११:८-१०)

(फ़िलि-४: ६, ७)

(लूक - १८: १, ७)

(हीब्रु - ६:१२).

९. प्रभु पर विश्वास करो और सहनसे

(लूक - ११:८-१०)

(फ़िलि-४: ६, ७)

(लूक - १८: १, ७)

(हीब्रु - ६:१२).

१०. उपवासन से प्रार्थना करो

(एश - ५८) को पढो

(मत्त - ९:१५)

(मत्त - १७:२१)

११. प्रभु से वेदना से, कष्ट से, प्रार्थना करो या कि प्रभु का प्रेम को पा सक

(मत्त - २०:३४)

(कीर्तन - ६२:८)

(कीर्तन - ३४:१८)

(हीब्रु - ५:७)

(लूक - २२:४४)

(रोम - ८:२६)

१२. प्रभु से प्रार्थना करो, या कि तुम्हें प्रार्थना से शक्ति मिले

(हीब्रु - ४:१६)

(कीर्तन - ५०:१५)

प्रभु को रहस्य से प्रार्थना करो

(मत्त - ६:६)

१४. प्रभु को प्रत्येक रूप से प्रार्थना करो

(अपो - ४:२९, ३१)

१५. शौतान काम से, शौतान से आटंक से नहीं डरना चाहिए! तुम अकले से नहीं लड़ना प्रभु का शक्ती पुकार, प्रभु का शक्ति लडना चाहिए! नहीं तो तुम ऐतार हार सकते हो!

(२ कोर - १०:३-५)

(जेम्स - ४:६-८)

(एपि - ६:१०-१३)

१६. प्रभु का प्रार्थना से तुम कई आश्चर्य कार्य को देख सकते हो और शक्ती पा सकते है!

(२ कोर - ९:६-८)

(फ़िला - ४:१६, १७, १९)

१७. प्रार्थना से निरुत्साह नहीं होना !

(मत्त - ६:७)

(लूक - २०:४७)

१८. अपना स्वार्थ के लिए उपयोन नहीं करना चाहिए !
(जेम्स - ४:३)

प्रायश्चित करना

प्रभु से प्रेम, मिलता, संतोष होता है ! प्रभु के प्यार में मुक्ति मिलता है ! प्रभु से प्रायश्चित करना, और दूसरो को क्षमा करना ही प्रार्थना का मुख्य अंश है ! आप गलती का अहसास होता है ! या गलतियों का कंडन करते हैं ! या दूसरा को द्वारा करते हैं ! आप कुशी से नहीं रहते हैं ! आप खारे का अजम नहीं होता, तुम्हारा दिमाग, और विचार अच्छा नहीं होता ! यह सब होने से कमजोर होता है ! इस कमजोरी के वजह से मर सकते हैं !

(१) अपने अंदर मे प्रायश्चित होना!

प्रभु के पास प्रायश्चित करने से पाप का प्रायश्चित मिलता है ! अपने पाप को मिटाता है ! मैं बहुत कारणों से कई बार प्रायश्चित किया था ! प्रभु ने कहा अपने आपका प्रायश्चित हारे का जानकारी तुम्हे कैसे मिलता है ! मैंने जाना कि मैं मुक्ति नहीं पाया है ! मैं प्रायश्चित करने के लिए, मैं मेरा कमजोरी को जान लिया और पाप करने से रोक दिया !

४. आप प्रभु को हृदय से और मन से प्रार्थना करना चाहिए!

(जेम्स ५:१७,१८)

(१ डिंढता १८:४३)

(कीर्तन ११९:५८)

(२ कोर १५:७५)

५. इसासमसि प्रभु के नाम से प्रार्थना करो!

(जान १४:१३)

(मार्क १६:१७)

प्रायश्चित्त का प्रार्थना करो, प्रभु से प्रार्थना करो!

(मार्क ११:२३)

(मत्त ८:२६)

(हीब्रु १०:२३)

आप प्रार्थना पर विश्वास करो ! जो तुम चाहते हो जो प्रभु तुम्हे प्रार्थना से उत्तर देगा !

(मार्क ११:२३,२४)

प्रभु को प्रशंसा से प्रार्थना करो ! जो तुम चाहते हो ! प्रभु तम्हे प्रार्थना से उत्तर देगा और दर्शन को वचन का उत्तर देगा !

(लूक ११:८ १०)

(फिल ४:६,७)

(मत्त १७:२१)

१२. प्रभु से वेदना से, कष्ट से, प्रार्थना करो था कि प्रभु का प्रेम को पा सके,

(मत्त २०:३४)

(कीर्तन ६२:८)

(कीर्तन ३४:१८)

(हीब्रु ५:७)

(लूक २२:४४)

(रोम ८:२६)

१२. प्रभु से प्रार्थना करें, था कि तुम्हे प्रार्थना से शक्ति मिले !

(हीब्रु ४:१६)

(कीर्तन ५०:१५)

१३. प्रभु को रहस्य से प्रार्थना करो !
(मत्त ६:६)

१४. प्रभु को प्रत्येक रूप से प्रार्थना करो
(अपो ४:२९,३१)

मैंने जाना कि मेरा सच्चाई ऐसा नहीं जो भक्ति क्षुब्ध से हो! पर मैं प्रभु से सच्चाई को मुक्ति में पाया जो मेरे लिए किया है! प्रभु का दया और कृपा ने मुझे चुन लिया और प्रभु को मैंने पाया है!

(गलाति ३:१,३)

(१ कोर १:३०,३१)

प्रभु ने मुझे दर्शन से भी मुझे मुक्ति पाया जो मैंने पाप का प्रायश्चित्त मिला है! जब आप जानते हैं आप मुक्ति हुए! क्षो आप से बड़ो से, या रिश्तेदार के पास जाकर अपना पाप का प्रायश्चित्त करते हैं! और प्रार्थना कि लिए माँगते हैं! जब भगवान आपको पाप मुक्ति करता है! इस से आपड्डो मालूम होते हैं कैसे प्रभु आपका पाप का प्रायश्चित्त करता है!

२. दूसरो को प्रायश्चित्त

हम कभी अपना रिश्तेदार से था अपना दोस्तो के सात जगडा होता है जो अपने मन को बहुत डेस पहुँचेता है! और, बहुत दुःख भी होने लगता है! इस के कारण अपने प्रार्थना से राकावट आता हय! हम परिशुद्धात्मा से विनम्रता से, दया, करुण से सब पा सकते हैं! शान्ति, और समादान के लिए रास्ते और निरंतर सदनावना के लिए काम करना चाहिए!

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

17. आराधना के जगा (स्थान)

अगर बैबिल मे देखे, प्रभु के प्रार्थन और दूसरा प्रार्थना के लिए पडते है! हम बहुत जगा के बारे मे देखते है! सात जगा के बारे मे बैबिल मे कहा गया! इसे प्रत्येक रूप से नही पाया गया है! इस प्रार्थना स्थानो को परिशुद्धात्मा से प्रकार डाला है! हम कभी प्रभु की आत्मा से मिले! हम सात, और प्रार्थना के बारे देखते हय! और उनका महत्व को पडत है! हम प्रभु के परिशुद्धात्मा से प्रार्थना, आराधना करते है! जो स्वपने से, समझ से, और आत्मा से पाते है! जिस से शांति समादान पा रहे है!

जो प्रार्थना का अर्थ होता हय! इसका कुछ बेद नही होता

(१ जान १:७,१०)

(कीर्तन १३९:२३,२४)

हम पहले से जानते हैं कि प्रभु अपने पाप को दूर करता है! इस पाप के प्रायश्चित के लिए हम प्रार्थना करना चाहिए! जो उसका अर्थ होता है! नहीं तो अर्थ नहीं होता, सफलता नहीं होता है!

(१ कोर १४:२,१८)

(कीर्तन १००:१,४)

(तेस ५:१८)

अपना बुरा वक्त, बुरा दिनो को दूर करता है प्रभु का दर्शना सब काम आसान से हो जाता है!

(कीर्तन ४६:१०)

(एदे ५:१,२)

(हबा १:१,२:२)

(मत्त ६:११)

(मत्त ७:७)

(कीर्तन ५०:१५)

हम दूसरो के लिए प्रार्थना करता चाहिए, मुख्य रूप से जो लोग अधिकार मे होते है! अपना किल दूसरो के लिए कुले रके था कि दूसरो के लिए प्रार्थना करे जो लोगो को प्रभु अपने पास बेजता है! उन लोगो के लिए प्रार्थना करना चाहिए! इस वाक्य मे हम देखते है! कैसे प्रभु उन लोगो को उत्तर देता है! जो लोगो की कमजोरी को दूर करता है!

(अपो ४:२४)

प्रभु के द्वारा दर्शन को देख सकते है! और आश्चर्य कार्य को देख सकते है! जो प्रभु को प्रशंसा होता है!

(१ तिमो २:१)

(१ तिम २:२)

(मत्त ६:१,१)

(मत्त ९:३८)

(मत्त ६:१२)

(मत्त ६:१३)

(फिल ४:६,७)

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

18.प्रार्थना का वचन

प्रार्थना के बारे में बाइबिल में कहा गया है! इसलिए कि जिस प्रार्थना द्वारा से हो प्रोत्साहन मिलता है! इस से आप दूसरा वचन को भी जाड़ा जा सकता है! जो प्रभु ने कहा है!

(२ क्रो १६:९०)

(जान ११:४०)

(जान १४:२१)

(जान १५,७,८)

(जान १६:२४) (हीब्रु ६:१२)

19. कई प्रकार से प्रार्थना

हम लोगो के लिए प्रार्थना करना चाहिए! हम कई प्रकार से प्रार्थना करते हैं! इसमें छ; प्रकार के हैं!

प्रार्थना से शैतान को दूर करना!

(मार्क ३:२७)

(एपि ६:१२)

प्रार्थना से शैतान को दूर करने से पहले प्रभु को पाना है! प्रभु से शक्ति पाना चाहिए! जो शैतान को दूर कर सकते हैं!

20.प्राश्दना से प्रभावित (प्रकाश)

बैबिल कई वाक्य है जो प्रभु ने समान्य लोगो को प्रार्थना से प्रभावित किया है!
जो लोग संसार को बताया कि प्रभु का दर्शन से प्रभावित हुए!

हीब्रु वाक्य इसका अर्थ पागा इसका अर्थ प्रकाश होना!

जो प्रभु प्राश्दना से प्रभावित होते है! और बताते है! प्राश्दना किस प्रकार से करना चाहिए! आप प्राश्दना किस प्रकार से करना चाहिए! आप प्राश्दना से कई महत्व पूर्ण काम कर सकते है!

(१ तिमो ५:५)

(लूक २:३६,३८)

प्राश्दना से कई कटिनाईयो का सामना कर सकते है! प्राश्दना करते समय अपने पास कुछ प्रश्नो रकना चाहिए! जो हमे प्राश्दना से हम उत्तर मिल सके! उस प्रश्न का चुनता हूँ! जो मुझे सही जवाब मिल सके! जो इसका कंडन नही होता है! और गलतिया ना हो! इस जवाब के लिए मै प्राश्दना करूँगा!

मेरा जरनल लिखित पूर्व

मेरा जरनल के देखा मै दूसरा दिन मै प्रभु से प्राश्दना करने के लिए निश्चय कर लिया ! और प्राश्दना का नियम को मुझे ऐसा लगा कि प्राश्दना बहुत मुशिकल समझा ! मै प्रश्दना करने लगा कि है प्रभु इस दिन का दन्व्याद मै तुम्हे प्रेम करता हूँ ! मन से प्राश्दना करता हूँ ! मेरा जीवन आपके हाथो मे सौप देता हूँ ! यह करना बहुत हो मुशकिल पर जो कुछ आप सीक रहे है अप को लाभ होता है ! दूसरा कारण इसडूढो नही रोकना चाहिए ! इसको करने दूर होते है ! इसका को कोई अर्थ नही होता है ! प्राश्दना से विज्ञान और बुद्धि मिलता है ! जिस से शैतान को प्राश्दना से दूर कर सकते है ! और लोगो मे प्यार को बडा सकते है ! प्राश्दना से हुआ महत्व कार्य को नही मूलना चाहिए !

निम्न स्थान पर लिखिए ।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते है। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रुप मे, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

21. प्राश्र्दना और क्रिया

प्रश्र्दना से कई महत्वपूर्ण कार्य को कर सकते हैं! प्राश्र्दना और क्रिया को सोय और समझदारी से काम करना चाहिए! जिसमें चार प्रकार के प्राश्र्दना और क्रिया के बारे बताया गया है!

१. प्राश्र्दना और क्रिया को परिशुद्धात्मा से क्रिया होना

अपना जीवन में प्राश्र्दना एक महत्वपूर्ण काम निनाता है! काम को ज्यादा करना या महनव ज्यादा करना और प्राश्र्दना कम करना इसका परिणाम को कुछ अर्थ नहीं होता यह एक महत्वपूर्ण काम है! जो प्राश्र्दना से प्रभु का आत्मा अपना ऊपर होता है! उनका महत्व ज्यादा होता जिस के कारण नहीं बना सकते हैं! (कीर्तन १२७: १) जो कुछ शरीर से बना हुआ वो शरीर होता है! जो आत्मा से बना हुआ है! वो आत्मा होता है! (जान ३;६) अगर आप शरीर के क्रिया को नहीं चाहते हैं! प्रभु से प्राश्र्दना से परिशुद्धात्मा को पा सकते हैं उस शक्ति से प्रभु का क्रिया करते हैं! कभी हम सोंयते हैं! जो मैंने सोंया वह क्रिया हो नहीं पाया! प्रभु चाहते हैं कि प्रभु के पास पहले आये! जब प्रभु का कृपा से सभी क्रिया को आसान से कर सकते हैं!

२.प्राश्दना जो क्रिया करता है!

(जेम्स २:१७,२२,२६)

जब एक व्यक्ति प्राश्दना करता है! इसे प्रभु से सुचता मिलता है! उन्हे विनम्रता से कैसे चले! जब व्यक्ति विश्वास से क्रिया करता है! यह समझना यह सब प्रभु की कृपा से होता है!

.३.प्राश्दना को बिना रूकावट से करना है

काम करते समय अपना ध्यान दुसद्रा और के तरफ चला जाता है! प्राश्दना करने से रूकावट होता है! आपका का मन प्रभु के तरफ रहना, था ध्यान करना चाहते है! आपका दिल कभी कभी प्रभु के लिए तैयार रहना जब आपको प्रभु तम्हे अवव्य तुम्हारा प्राश्दना को स्विकार करेगा!

४.आप प्रभु के लिए अलग होना! जब आप संसार को शान्ति ला सकते है!

आप प्रभु के लिए अर्पन करना चाहिए ताकि प्रभु आपको उन्नति स्थान पर कडाता है! चाहे जो भी हो दुनिया का परवा नही करना डरना नही! कभी दुनिया के लिए आदरशित होते है! पर इसका कुछ कायदा नही है! आप प्रभु के तरफ देखना चाहिए नाजरेत प्रवड्डत ने प्रभु से बहु अत वाक्य बिताया था उनका शक्ति को पहचाना है! दुनिया पर उतना ध्यान नही दिया! उन्होने अंधकार से बाहर प्रभु के प्रकार मे आया हूँ! इसलिए हम प्रभु को आराधना करना चाहिए, जब आप उनका प्रेम और महत्वपूर्ण को जानते है!

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप मे, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।

22.वाक्य शरीर होना

जब आप प्रभु से प्रार्थना करने के लिए सीखते हैं! जब सीखना चाहते हैं! जब प्रार्थना के बारे में नहीं सोचते हैं! हम प्रार्थना करने वाले लोग को चाहते हैं! आपका प्रार्थना शक्ति देता है!

हम पहली बार प्रभु का वाक्य को सनते हैं! जब अजीब लगता है! और किस तरह से कष्ट को दूर करना आप नहीं भी जहां भी हो आप प्रार्थना करना नहीं भूलना है! यह तक अच्छा आदत है कि प्रभु से बात करना! (हब्रा २:१) डेनियल ने कमरा का चतुर्था कि डिकी के पास जो उसका दिशा जेरुसलेम के तरफ था! प्रार्थना को समय

प्रार्थना को रोकते से बचना है! प्रार्थना से शक्ति मिलना है! जो तुम्हें कटिनाई का सामना करने शक्ति मिलता है! डेनियल कमरा के चतुर्था पर तीन बार रोज प्रार्थना करने के लिए जाते थे! (डेन ६:१०० डेविड ने भी तीन बार प्रभु का आराधना करता था! प्रभु से पूछें आपको प्रार्थना करने के लिए वक्त दें! जो शैतान के काम से बचें! और आदत को अपना लें वो हैं प्रभु का आराधना करता है!

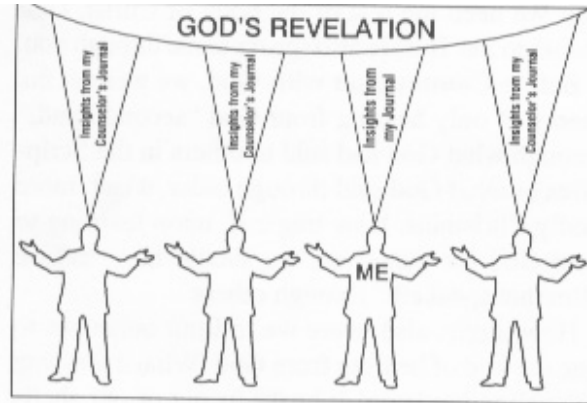
23. प्रभु का सेवा मे रहना चाहिए

प्रभु का सेवा मे रहना चाहिए! ऐसा कैसा हो सकता है! प्रभु का सेवा करने से प्रभु का कृपा आपके ऊपर रहता है! इसमे दो तरीके होते है! जो सच्छाई और नई अनुभव का होता है! पहला का ऐसा होता कि जो कुछ हमे मालुम है! उसे आयरण करने से इनकार करते है! उसे आयरण नही करते है! और, दूसरा है अपना पास है! वह दूसरो बताने से ज्ञानकार करते है! द्वार अच्छा है जिसको हम चुन लेना है! इस आधुनिक जीवन मे प्रभु के पास रहना है और प्रार्थना मे समय बिताना अच्छा है! इसमे जो रूकावट होता प्रार्थना से रोकते है! उसे रोकने चाहिए! हम एलिजा के बारे मे पडते है हम पता चलता है कि कैसे प्रभु ने उने भूक से बचाया है! जो पक्षियो ने रोटी और माँस को एलिगा को देकर उनका सहायता करता है! प्रभु ने उनका सहायता किया है! जो उन्होने कटिन परिस्थियो से गुजरा था! प्रभु ने एलिजा को सहायता करने के लिए एक विदवा को सूचना दिया है! जो एलिजा को उपयोग हो सकता है! यह प्रभु का आश्चर्य कार्य है! सच्छाई कभी सत्य होता है! प्रभु हम से, सबी से बात करते है! जो उनसे प्रार्थना करता चाहिए! प्रभु हमे चाहते है कि हम उनका वचन को स्विकार करे और आज्ञा का पालन करना है! हम प्रभु के पास जाने से पहले हम प्रभु का आवाज सुन ने लिए इच्छा होना चाहिए! जो प्रभु का जानकारी दूसरो से मिलता है! जो जवान से, या बडो से बडो से ज्ञान और विज्ञान से भी हमे प्रभु के बारे जानते है! हम बहुत ही धन्य है! जो प्रभु का वाक्य को सुन रहे है! यह एक इसाई लोगो का अनुभव है! इसका फैसला करना ही एक रास्ता जो प्रभु अपने को सूचना देता है! दूसरा मुश्किल काम है! वाक्य को सही तरह से फैसला करना है!

लिखने में सुलजाने हद

मैं जो करता हूँ! अच्छा कार्य करने में प्रभु से प्रार्थना करना चाहिए! मैं सँचेता हूँ कि प्रभु मुझे मेरा प्रार्थना का सही उत्तर देना है! मैं इसका जवाब दूसरो से प्राप्त करता हूँ! मैं प्रभु से सुरक्षित रहना चाहते हूँ! (प्रो ११:१४) साहित्य के बारे में जानकारी करना उसके बारे में बातचीत करना, इस बारे में संपूर्ण दृष्टि मेरे पास है! जो मैं सँचेता हूँ! जो परिशुद्धात्मा से सही सूचना मिलता है! मैं सब क्रिया से, गर्व अहंकार को छोड़ा है! और परिशुद्ध वाक्य के बारे में जान लिए जो बैबिल में है! पर इस काम को क्रिया के रूप में आचरण करना बहुत कठिन है! और इस को पाना के लिये कोशिश करना चाहिए!

हम बारह शिष्यों के बारे में बैबिल में देखे तो आप इसके बारे में जानकारी कर सकते हैं! कैसे प्रभु के शिष्यों ने प्रभु का महत्व को लोगो तब पहुँचाये है!



प्रत्येक सूचना के लिए फैसले को मुश्किल में ना डालें

साल के बाद मैंने सूचना और लिखित वाक्यों को दूसरों को समझाया है! इस सभी देश विदेश में फैलाया गया है! मैं प्रार्थना में प्रभु से सूचना को उत्तर के लिए देखता हूँ जो मुझे शक्ति देता है! उस आज्ञा के अनुसार चला जाना चाहता हूँ! इसके बारे में तीन प्रकार के होते हैं जो बाइबिल में मिलता है! (१ कोर १४:३) १. बनाना २. सूचना ३. आदर करना

बाइबिल में दो ग्रंथ हैं! नया ग्रंथ और पुराना ग्रंथ है! जिसमें कई प्रवक्तव्यों ने प्रभु का महत्व के बारे में लिखा है! और उनका महान कार्य के बारे में सूचना के बारे में लिखा है!

अगाबस ने पाल को सूचना दिया कि तुम जेरूसालेम को नहीं जाना क्योंकि वहाँ के लोग तुम्हें बंधी बनाते हैं! वृद्धि करना, सूचना और उनका आदर करना यह तीन क्रिया के बारे में बताया गया! सूचना उदाहरण बाइबिल में प्रभु ईसा ने एक औरत को क्षमा करता है! जो लोगों ने उसे गलत काम करने पर पड़कते हैं और पत्तों से मार डालने के लिए सोचते हैं जब प्रभु ने उसे बचाते हैं!

आदर करना उदाहरण प्रभु हमें कई कठिनाईयों से और कष्ट से हमें मुक्ति करता है! हमें प्रेम करता है! यही प्रभु का कृपा है! और प्रभु हमें सूचना देता है! और जो वाक्य को पढ़ते हैं उसे बार दस बार पढ़ना चाहिए जो आप सही तरह से समझ सकें! और कई कष्टों से मुक्ति पाते हैं! जो कई सालों से आप मुश्किल में गुजर रहे हैं! प्रभु कहता है कि उनमें विश्वास रहना, और प्रभु को प्रमुख स्थान देना! इसके परिणाम जो भी हों उनका विश्वास करना चाहिए! और दूसरों को प्रभु के बारे में प्रचार करना था कि लोग प्रभु पर विश्वास करें!

आपका प्रतिभा को पहचानो

जैसा आप प्रभु को विश्वास करते हैं! प्रभु का आश्चर्यकार्य को पहचानते हैं! जैसे हम बड़े होते हैं! प्रभु पर भी विश्वास बढ़ना है! आप प्रभु के बारे में नहीं जान सकते जब तक आपको दूसरों से मालूम नहीं होता! दूसरों से हम यह जान सकते हैं कि प्रभु का महत्व क्या है! और परिशुद्धात्मा को कैसे पा सकते हैं! आप इस महत्व काम के लिए कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है! कई कुरबान करना पड़ता है!



Which level are you at? _____

प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे सही तरह से वाक्य को समझे! पर इसमें कई गलतियाँ होती हैं! बैबिल यह कहा गया कि जो व्यक्ति जो तकलिफ देता था तुम्हें दुःख देता है! उसे क्षमा करना है! क्षमा करना ही अपना कर्तव्य है! जो प्रभु कहता है! मुझे कही महीने लगा है प्रभु का आत्मा को समझने के लिए उनका महत्व को जानलेने के लिए वक्त लगा! पर मैंने प्रभु को पाया है! और उनका महत्व कार्य के बारे में जाना है! इसलिए मेरे अंदर का मन से, अंतरात्मा से प्रभु को पहचाना है!

अगर आप कई कष्ट से गुजर रहे हैं! अर्थक समस्या से परेशान हैं! तो आपको नहीं मालूम क्या करना है! हम प्रभु से प्रार्थना करना चाहिए जो इस समस्या से दूर करता है!

जब प्रभु कहता कि मैं तुम्हें दिया है! जब आप का उत्तर क्या है!

प्रभु ने जो काम को आपको करने के कहाँ! जो मैंने पूछा था तो मैं प्रभु का आराधना करता हूँ! उनका प्रशंसा करता हूँ! हल्लेलूजा प्रभु के पास बैठकर कहता हूँ! कि यह काम क्यों नहीं हुआ है! जब प्रभु हमें कई वादा करता है! इसका कई कारण है! उदाहरण के लिए देखें जब प्रभु ने प्रवक्ता जोना से कहा कि तुम निनिवे जाकर

वहा के लोगो को बताना कि मै उस नगर को ४० दिन में नष्ट कर दूँगा! अगर निनिवे लोग अपना पाप का प्रायश्चित नही करते तो उन सबी लोगो को और नगर को नष्ट करता तब लोगो ने अपने पापो का प्रायश्चित किये है! इस तरह से प्रभु ने निनिवे को नष्ट करने से रोक दिये!

(जोना - १ - ४)

प्रभु कहता है मै, शहर, या राज्य और राज्य से कहता हूँ! कि मै देश को सुरक्षित रकता हूँ! अगर यह लोग मेरे बात को मारे, और लोगो मेरा राज्य को नष्ट करना चाहते था! लोगो को शैतान कार्य को करना चाहते है मै उसे नष्ट करूँगा! जहा आच्छाई होता है! मुझे आराधना करते है मै उन लोगो को सुरक्षित रकता हूँ!(जेरमया - १८:७-१०)

इसी तरह से प्रभु ने इज्राएल लोगो को विश्वास दिलाया कि उन लोगो को मुक्त करेगा पर लोगो इतना आसान से मुक्ति नही मिला वे अपना पाप का प्रायश्चित करके प्रभु को विनम्रता से प्रार्थना करे!उसके बाद प्रभु ने लोगो को मुक्ति मिला है! वे कई राज्यो को हराया है!राज्यो को वश में कर लिए! डेविड ड्रेलिंग ने उनका पुरव में कहता है कि हम ईसाई का जीवन बिना प्रभु के आराधना बिना भक्त नही है! क्योकि इसका कोई अर्थ नही होता है! यह जितने भी बैबिल के बारे जानते है! यह जितना भी प्रभु का सेवा करता है! प्रभु को आराधना करता है! प्रभु से परिशुद्धात्मा को भवष्य के बारे, आश्चर्य कार्य के रूप में, और रोगो से मुक्ति दिलाता है! इस रतह से प्रभु लोगो से प्रवक्ता को सूचना देता है!

प्रभु ने आश्चर्य कार्य से लोगो को मुक्ति करके कई बार कटिनाई का सामना करना पडा! जोसफ़ को कार्य के बारे में कहा गया!मार्टिन लूटर भी कई कटिनाईयो का सामना करना पडा!

जब कटिनाई का सामना करना पडता है! और कई नकलिफ़ से गुजरते है! जब इस का फ़ल मिलता है! बहुत आनन्द मिलता है! जैसा रैल में इंधन जलरे से गाडी चलता है! उस इंधन लोगो को नष्ट भी करता है! इसे बहुत समालकर इसका इस्तेमाल करना पडता है! उनका वाक्य को आच्छा आचरण करना चाहिए! जो उसे सही तरह से प्रभु का वाक्य को उपयोग करे! ऐसा कई भक्त है! जो प्रभु का वचन इसक कोई मूल्य नही होता! एक ऐसा भक्त था! जो प्रभु देवालय को समालता था! उनको वचन मिल कि उनका बेटी किसे शादी होने वाला है! पर वह लडकी इसको ज्ञानकार दिया और दूसरा व्यक्ति को शादी कर लिया है! पर यह भक्त

ने बेटी प्र बहुत गुस्सा हुआ और प्रभु से प्रार्थना किया है! भगवान से भी बहुत गुस्सा हुआ था! उन्होंने बहुत विचार से अपना बात को नहीं माना इस विचार को नहीं भूला! अंत में उन्होंने बच्चे, पत्नी को छोड़कर चला गया! यह एक छोटा सा उदाहरण है! पर दुनिया में ऐसा कई लोग हैं! इस बात को स्वीकार नहीं करते हैं! कहते हैं कि प्रभु ने प्रार्थना में सूचना दिया है! इस तरह से एक माँ बनती है! पर यह नहीं हुआ!

मरिया से प्रभु दूता गाब्रियल ने कहा वे इस धरती पर पहला महिला है! जो प्रभु का आज्ञा के अनुसार चलना है! परिशुद्धात्मा से गर्ब होता (पेट) से होता है! एक बच्चे का जन्म होता है! पर इस विषय से बहुत डर था कि इसका परिणाम क्या होगा! पर प्रभु दूता ने जोसफ को सपने में दिखा कहा कि मेरी को पत्नी का स्वीकार करना जोसफ ने उसी तरफ से दूता का आज्ञा का पालन किया! कटिनाई से मुक्ति पाये है! (लूका २:१९)

हमे मालुम है कि गर्व का परिनाम विनाश है! इस हम पाल के जीवन मे देखते है! उनका परिक्षा लिया था! प्रभु ने पाल के शरीर मे काँटा दिया क्यो कि प्रभु को पाना,

इस कठिनाई से वह प्रभु के पास आता है! था कि मुक्ति मिल सके! इस तरह से प्रभु का प्रशंसा होता है!

प्रभु का वाक्य

(कीर्तन २९:५) वाक्य में कहा गया कि प्रभु का वचन सब को दूर करता उसमें बहुत शक्ति है! जो विश्वास को बढ़ाता है! (जान १४:२९) प्रभु ने उनका शिष्यो यह कुछ नहीं कहा कि उनका आज्ञा का पालन, के बारे में जो अपोस्तल से कहा गया! पर विश्वास को बढ़ाना हो अच्छा कर्तव्य है!

हम प्रभु से विश्वास से रहना चाहिए! उनका वाक्य के अनुसार चलना चाहिए! जो प्रभु हमसे कहता है! गलत के रास्ते में नहीं चलना उनका आज्ञा का पालन करना बाइबिल के अनुसार, वाक्य के अनुसार चलना है!

अबैडिंग इन क्रेडिट इस पुस्तक को कई लोगो ने पड़ा है! और स्पिरिट बोर्न कियेटीविटी इसमें कहा कि आप किस तरफ का दिमाग उपतोग करते हैं! दाये हाथ का दिमाग या बाये हाथ का दिमाग! दा ये तरफ का दिमाग बाये दिमाग से अच्छे होते हैं! पर यह गलत हम प्रभु से कहना है कि हम किस तरह का काम करना चाहिए जो प्रभु तुम्हें अपने वाक्य से चलाता है! उस परिशुद्धात्मा आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए!

निम्न स्थान पर लिखिए।

फिर अपना ध्यान स्वैच्छिकता पर लगईए, अपनी आँखें यीशु पर लागईए और लिखना शुरू करीए एक आसान बच्चों के से विश्वास के बहाव से जो आप के मन में बूल बुलाता है। वह जो आप को कहना चाहता है उसे लिखीए। अभी परीक्षाण मत करीए। बाद में परीक्षण करीए। बस आसानी से बच्चे के से विश्वास में लिखते जाईए। कृपया अभी लिखिए, आगे बढ़ने से पहले। इस लिखने के अश्यास को शुरू करीए, उस प्रश्न को लिखकर जो आप परमेश्वर से पूछना चाहते हैं।

स्वपन और दर्शन को उन्नत करना कक्षा कार्यपत्रा मुख्य विचार - क्यों कि स्वपन और दर्शन परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होते हैं। आत्मिक मिलाप के प्रथम मार्ग के रूप में, हम उन के बहाव को अपने अनदार मेहसू सकरने सीखें।